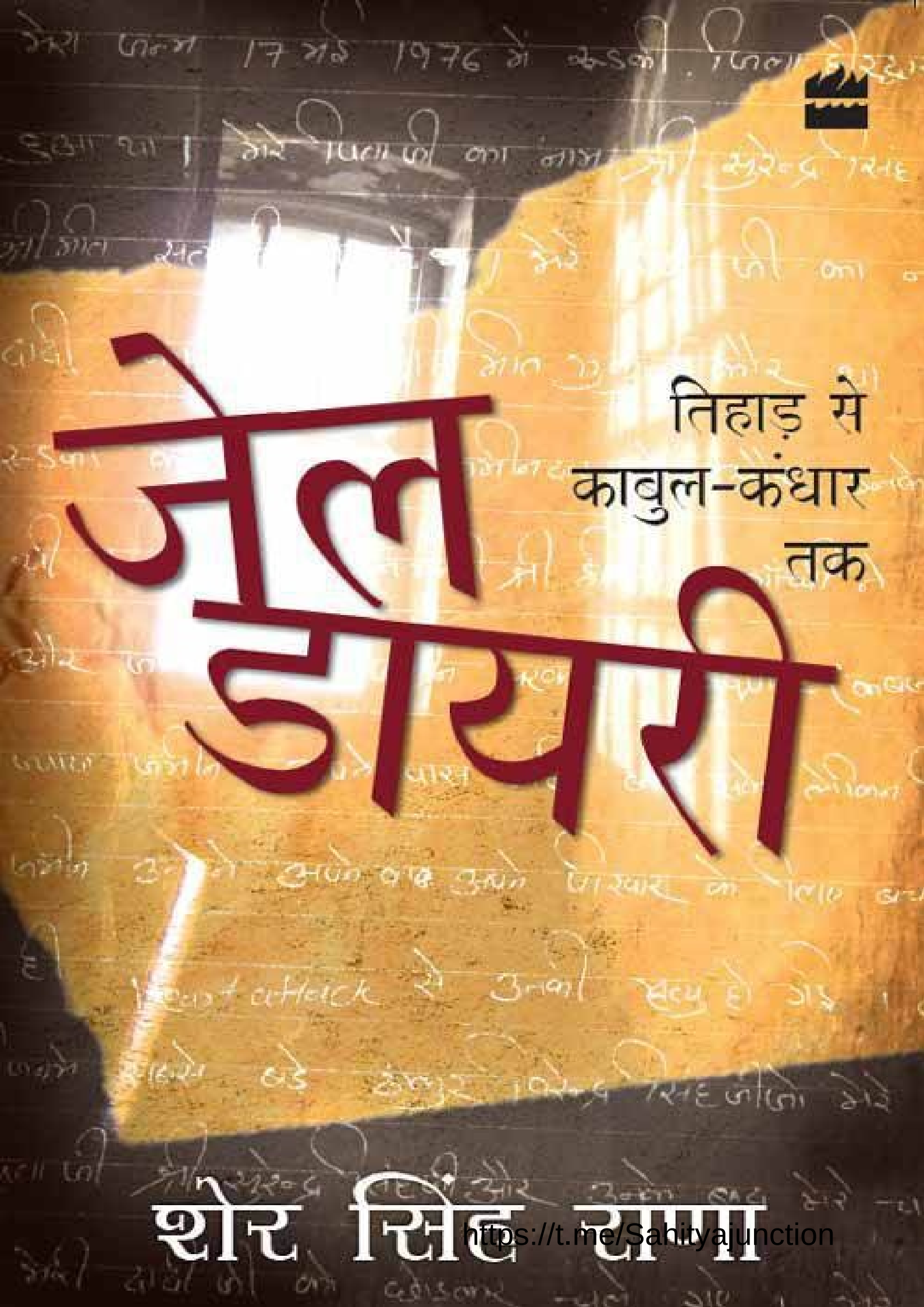

जेल डायरी

तिहाड़ से काबुल-कंधार तक

शेर सिंह राणा

https://t.me/Sahityajunction

जेल डायरी

तिहाड़ से काबुल-कंधार तक

शेर सिंह राणा

हार्परकॉलिंस पब्लिशर्स इंडिया

https://t.me/Sahityajunction

विषय-सूची

भाग : एक

फ़रारी

१. विस्फोट

२. हलचल

३. बांग्लादेश में

४. विश्वविद्यालय में

५. ढाका में

६. वापसी

७. बांग्लादेश

८. अफ़ग़ानिस्तान की ओर

भाग : दो

रुड़की से तिहार तक

९. दुबई में

१०. बचपन के दिन

११. स्कूली जीवन

१२. स्कूली जीवन - २

१३. शरारतें

१४. बोर्ड की वैतरणी

१५. स्कूटर का इनाम

१६. पहला चुनाव

१७. सिमरन

१८. लड़ाई-झगड़े

१९. दूसरा चुनाव

२०. डी.ए.वी. कॉलेज

२१. यू टर्न

https://t.me/Sahityajunction

२२. नया दौर
२३. उलट फेर
२४. तिहाड़ जेल
२५. जेल की दुनिया
२६. समाधि और संकल्प
२७. उड़ने की योजना
२८. फ़रारी

भाग : तीन

अन्तराल

२९. अन्तराल

भाग : चार

अफ़ग़ानिस्तान

३०. काबुल
३१. अमान उल्ला
३२. ग़ज़नी में परिचय
३३. ग़ज़नवी के शहर में
३४. तलाश जारी : कन्धार
३५. तलाश जारी : फिर ग़ज़नी
३६. तलाश जारी : हेरात
३७. मंज़िल की ओर
३८. फिर ग़ज़नी
३९. साथियों की तलाश
४०. शम्भू भाई
४१. प्रगति और बाधाएँ
४२. बाल-बाल बचे
४३. मंज़िल की ओर

https://t.me/Sahityajunction

४४. अन्त में सफलता
४५. वापसी
४६. फिर बांग्लादेश
४७. बर्मा
४८. समर्पण
आभार

https://t.me/Sahityajunction

भाग : एक

फ़रारी

https://t.me/Sahityajunction

1. विस्फोट

दिन : मंगलवार तारीख : 17.02.2004 समय : 6:45 प्रात:

जगह : एशिया की सबसे बड़ी और सुरक्षित मानी जाने वाली तिहाड़ सेण्ट्रल जेल।

आज सुबह-सुबह ही हंगामा मचा हुआ है और जेल का एमरजेंसी सायरन चीख-चीख कर बज रहा है और बता रहा है कि कोई बहुत बड़ी गड़बड़ जेल में हो गयी है, क्योंकि जेल के एमरजेंसी सायरन बजने का यही मतलब है, और जो इसके बजने पर होता है, वही हो रहा है—यानी जेल के वॉर्डर और हेड वॉर्डर सभी बन्दियों और कैदियों को डण्डे से मार-मार कर उनहें उनकी बैरकों में बन्द करने में लगे हुए हैं। जेल की डयूटी में भी ख़ूब हलचल है। जेल का सुपरिंटेण्डेण्ट डयूटी में मौजूद सभी जेल कर्मचारियों को गालियाँ देने में लगा है और बेचारा जब उन्हें गालियाँ दे-दे कर थक गया तो वापस अपने ऑफिस में आ कर कुर्सी पर बैठ गया और अपनी आँखों के पानी को तौलिये से साफ़ करने लगा, क्योंकि उसे मालूम है कि जो आज तिहाड़ जेल में सुबह-सुबह हुआ है, उससे उसकी नौकरी तो जा ही चुकी है, बस अब यह देखना बाक़ी है कि क्या इसी जेल में बन्द हो कर जेल तो नहीं काटनी पड़ेगी।

इसी समय एक वॉर्डर भागा-भागा सुपरिंटेण्डेण्ट के कमरे में आया। सुपरिंटेण्डेण्ट ने वॉर्डर से पूछा—अबे, अब क्या हो गया जो ऐसे गिरते-पड़ते भागा आ रहा है? उसने जल्दी-जल्दी में बताया—साहब, दिल्ली पुलिस की क्राइम ब्रांच और स्पेशल सेल की टीमें आयी हैं और आपसे मिलने के लिए बोल रही हैं। सुपरिंटेण्डेण्ट ने वॉर्डर से कहा—अबे, अगर मैं नहीं भी मिलना चाहूँगा तो क्या वे लोग वापस चले जायेंगे और जल्दी से अपनी कुर्सी से उठ कर सीधा क्राइम ब्रांच और स्पेशल सेल टीम को रिसीव करने के लिए गया।

इस समय क्राइम ब्रांच और स्पेशल सेल टीम के लोग जेल सुपरिंटेण्डेण्ट को साथ ले कर तिहाड़ जेल के हाई रिस्क वॉर्ड में खड़े हैं और जेल सुपरिंटेण्डेण्ट ए.सी.पी. चीमा को, जो इन पुलिस टीम को लीड कर रहा है, बता रहा है— सर, वह इस सेल में था और यह वह सामान है जो वह अपने सेल में छोड़ कर चला गया और यह उसका साथी शेखर सिंह है।

ए.सी.पी. चीमा ने अपने साथ आये टीम के सदस्यों से कहा—जाओ, उसके सेल की दोबारा अच्छे से तलाशी लो और उसका यह सामान भी ठीक से जाँच करो। शायद कोई सबूत मिले और फिर शेखर की तरफ़ देख कर बोला— हाँ पुत्तर, कि भेज दिया अपने यार नू! शेखर ने कहा—सर, मुझे तो कुछ मालूम नहीं है कि क्या हुआ; अभी थोड़ी देर पहले ही जेल सुपरिंटेण्डेण्ट ने बताया कि राजा भाई गये! ए.सी.पी. चीमा ने कहा—ओए पुत्तर, कोई गल नहीं, तू और यह सुपरिंटेण्डेण्ट एकदम तोते की तरह बोलोगे जब मैं तुम्हें अपने क्राइम ब्रांच के ऑफिस में ले जा कर पूछूँगा। तभी पुलिस टीम के सदस्य ए.सी.पी. चीमा के पास आये और बताया—सर, सेल में कुछ भी नहीं है और न ही कुछ ऐसा मिला कि जिससे आगे की लाइन तय कर सकें! ए.सी.पी. चीमा दूसरे पुलिस वाले की तरफ़ देख कर बोला— हाँ, तेन्नूँ कुछ मिला राणा के सामान बीच? उसने कहा—जी

https://t.me/Sahityajunction

सर, 4-5 काग़ज़ के टुकड़े मिले हैं जिस पर कुछ लोगों के नाम और टेलीफोन नम्बर लिखे हैं! ए.सी.पी. चीमा ने कहा—ठीक है वे काग़ज़ और सारा सामान ले चलो।

https://t.me/Sahityajunction

2. हलचल

वही दिन। वही तारीख। समय : 2.15 दोपहर। शहर मुरादाबाद।

जिस इन्सान के कारण पूरे दिल्ली, यू.पी. और उत्तराखण्ड में हाई एलर्ट हो चुका है और तिहाड़ जेल में और पूरी कोर्ट में हलचल हुई थी है, वे महाराज जी यानी मैं, शेर सिंह राणा, इस समय यू.पी. के एक शहर मुरादाबाद में नाई की एक छोटी-सी दुकान में बैठे हुए अपनी शेव बनवा रहे थे। नई ब्रश से झाग बनाने में लगा हुआ था। तभी नाई की दुकान में रखे हुए टी.वी. में से आवाज़ आयी— नमस्कार। अब सुनिए आज के मुख्य समाचार। सांसद और डाकू फूलन देवी का कथित हत्यारा शेर सिंह राणा एशिया की सबसे सुरक्षित माने जाने वाली तिहाड़ जेल से आज सुबह 6:30 बजे के क़रीब फ़रार हो गया है। पूरे दिल्ली, उत्तर प्रदेश और उत्तराखण्ड में हाई एलर्ट कर दिया गया है और पुलिस की कई टीमें बना कर शेर सिंह राणा की खोज-बीन जारी है। ताज़ा हालात जानने के लिए आपको सीधे दिल्ली पुलिस के मुख्यालय ले चलते हैं जहाँ हमारे सहयोगी पुलिस कमिश्नर से सीधे बातचीत कर रहे हैं।

एक न्यूज़ चैनल वाली लड़की अब टी.वी. में दिखाई दे रही थी जो पुलिस कमिश्नर से पूछ रही थी— सर अभी तक कुछ पता चला कि किसने शेर सिंह राणा की तिहाड़ जेल से भागने में मदद की, क्या कोई जेल कर्मचारी भी उसे भगाने में मिला हुआ है। आपकी पुलिस क्या कर रही है?

कमिश्नर—देखिए हमने शेर सिंह के ऊपर 50 हज़ार रुपये का इनाम घोषित कर दिया है और जो भी उसके बारे में कोई सूचना देगा, उसका नाम गुप्त रखा जायेगा। पुलिस की कई टीमें हमने उसे खोजने में लगा दी हैं और जेल के कुछ कर्मचारियों को कस्टडी में ले कर पूछ-ताछ जारी है। इससे ज़्यादा मैं आपको अभी कुछ नहीं बता सकता हूँ और मैं अभी होम मिनिस्टर साहब के पास इसी सिलसिले में मिंटिंग के लिए जा रहा हूँ।

और फिर कमिश्नर साहब फटाफट अपनी गाड़ी में बैठने लगे। न्यूज़ वाली वह लड़की फिर बोली—ये थे दिल्ली पुलिस के कमिश्नर। आगे हमें जो भी जानकारी मिलेगी, हम आप तक पहुँचायेंगे इसके बाद न्यूज़ चैनल वाला वह व्यक्ति टी.वी. पर दोबारा नज़र आने लगा जो अब बोल रहा था कि अब हम आपको शेर सिंह राणा की तस्वीर दिखा रहे हैं, ठीक से देख लीजिए और कोई जानकारी होने पर तुरन्त इन दिये हुए फ़ोन नम्बर पर सम्पर्क कीजिये। शेर सिंह राणा की तस्वीर स्क्रीन पर आने लगी।

नाई को नहीं मालूम था कि जिस आदमी के चेहरे पर वो क्रीम से झाग बना रहा है, वह कोई और नहीं, बल्कि वही शेर सिंह राणा है जिसकी तस्वीर इस समय वह न्यूज़ टी.वी. पर देख रहा है। टी.वी. पर तस्वीर देखते-देखते ही नाई ने मुझ से पूछा, भाई साहब आपकी मूँछों का क्या करूँ। मैंने कहा—अरे भैया, दिल तो नहीं है, लेकिन उड़ा दे यार, आज देखता हूँ कि बिना मूँछों के कैसा दिखूँगा। नाई—ठीक है सर, लेकिन मूँछें आप पर अच्छी लग रही हैं, शायद पहली बार मूँछ कटवा रहे हो।

इतने में ही दुकान पर बैठे दूसरे लोग और वह नाई डिसकशन करने लगे और एक

https://t.me/Sahityajunction

ग्राहक बोला कि यार देखो, ये बड़े-बड़े लोग कैसे जेल से भाग जाते हैं। ज़रूर इसमें जेल वाले मिले हुए होंगे। तभी दूसरा ग्राहक बोला—ठीक कह रहा है, शेर सिंह ने एक-दो करोड़ इन जेल वालों को दे दिये होंगे। तभी नाई इन दोनों की बात काट कर बोला, अरे भाई, अच्छा हुआ जो शेर सिंह भाग गया। बेचारे ने कौन-सा ग़लत काम किया था; डाकू को ही तो मारा था जिसने पचासियों लोगों की हत्या की थी।

तभी मैं अपनी कुर्सी से उठता हुआ बोला—हाँ भैया, कितने पैसे देने हैं, नाई ने तुरन्त कहा—सर, बीस रुपये! मैंने कहा—लो ठीक है। शेव करा कराके जब मैं बाहर आया तो मुझे यह तसल्ली थी कि मूँछ कटवाने के बाद मेरे चेहरे में काफ़ी बदलाव आ गया था। फिर भी मैंने वहीं पर बाहर दुकान से एक ज़ीरो नम्बर का चश्मा ख़रीद कर लगा लिया और मन-ही-मन सोचा कि अब तो मैं ख़ुद ही अपने आप को नहीं पहचान पा रहा हूँ। अब ठीक है। और फिर चल दिया किसी ऐसे होटल की खोज में जहाँ मैं आज की रात बिता सकूँ।

मुरादाबाद के पास ही एक दूसरा शहर है जिसका नाम है कोटद्वार! यह कोटद्वार उत्तराखण्ड में पड़ता है, इस समय मैं शेर सिंह मुरादाबाद में, नहीं रह सकता था और इस शहर की ज़रूरत मुझे एस.टी.डी. से टेलीफोन करने के लिए थी, क्योंकि यही पर मैंने एक लड़के को अपने घर से पैसे ला कर देने के लिए भेजा हुआ था।

शाम के साढ़े सात बजे के क़रीब मैं एक छोटा-सा बैग अपने हाथ में लिये, कोटद्वार के एक छोटे-से होटल की रिसेप्शन पर खड़ा रिसेप्शनिस्ट से एक कमरा, जिसमें टी.वी. लगा हो, देने के लिए कह रहा था। रिसेप्शनिस्ट ने तीन सौ रुपये के हिसाब से एक दिन के पैसे लिये और एक वेटर को बुला कर कमरे में भेज दिया। मैंने कमरे में ही खाना का ऑर्डर दिया और फिर नहा-धो कर खाना खाने लगा। इस समय टी.वी. पर राणा की ही न्यूज़ लगातार आ रही थी। रात 9 बजे एक स्पेशल प्रोग्राम में किरन बेदी 'पूर्व डी. जी.' 'तिहाड़ जेल' जोगिन्दर सिंह (पूर्व डी. जी., सी. बी. आई. और दो और विशिष्ट लोग टी.वी. पर एक प्रोग्राम में आ रहे थे जिसमें ये सभी इस बात पर डिसकशन कर रहे थे कि सिस्टम में क्या कमी रही जो शेर सिंह तिहाड़ जैसी सुरक्षित जेल से भाग गया। सभी अपने-अपने विचार देने में लगे थे। अगर शेर सिंह की जगह कोई आतंकवादी भाग गया होता तो क्या होता।

अगले दिन सुबह-सुबह मैं जल्दी से तैयार हुआ और फटाफट बस स्टैण्ड पर जा कर मुरादाबाद की बस में बैठ गया। पूरी बस में मुश्किल से 8-10 आदमी थे और सभी अख़बार पढ़ने में लगे थे। मैं जान-बूझ कर सबसे पीछे जा कर बैठने लगा तो एक आदमी बोला—यहीं बैठ जाओ, सारी बस ख़ाली तो है। मैं उस बुज़ुर्ग आदमी के पीछे ही बैठ गया। थोड़ी देर बाद वह बुज़ुर्ग आदमी बार-बार मुझे पीछे मुड़-मुड़ कर देखता और फिर अपने अख़बार को देखता, इस पर मैंने कहा कि अंकल जी, क्या हो गया। बुज़ुर्ग बोला—तुम्हारी शक्ल तो बिलकुल अख़बार में दी हुई शेर सिंह राणा की फ़ोटो से मिलती है। मैंने कहा, अंकल जी मरवाओगे क्या? ज़रा दिखाइये अख़बार। जब अख़बार देखा तो फ्रण्ट पेज पर मेरी 12 फ़ोटो हर रूप में (पगड़ी लगा कर, सरदार बना कर, चश्मे के साथ, दाढ़ी के साथ, क्लीन शेव में छपी हुई थी। मैंने बुज़ुर्ग से अख़बार लिया तो बस अपने चेहरे के सामने अख़बार रख कर ऐसे दिखाने लगा जैसे पढ़ रहा हूँ, किन्तु मैं

https://t.me/Sahityajunction

अपना चेहरा दूसरे लोगों से छिपा रहा था।

मुरादाबाद पहुँच कर मैं एक एस.टी.डी. में पहुँचा और एक मोबाइल नम्बर पर फ़ोन मिलाया, फ़ोन नहीं मिला और उधर से आवाज़ आयी की जिस नम्बर पर आप सम्पर्क करना चाहते हैं वह अभी बन्द है। शाम 6 बजे तक मैं थोड़ी-थोड़ी देर में उसी फ़ोन नम्बर पर फ़ोन करता रहा किन्तु वही जवाब मिला कि अभी बन्द है। जब ज़्यादा देर होने लगी तो मुझे वापस कोटद्वार के उसी होटल में जाना पड़ा।

दो दिन तक शेर सिंह रोज़ इसी तरह सुबह मुरादाबाद आ जाता और उस फ़ोन नम्बर पर फ़ोन करता। किन्तु बात न होने के कारण वापस कोटद्वार उसी होटल में चला जाता।

इधर दिल्ली पुलिस अपनी छापामार कार्रवाई में लगी हुई थी। मेरे मामा के घर, बुलन्दशहर के बराल गाँव में रहते थे, रात में 40-50 पुलिस वाले मुझे खोज रहे थे। यहाँ तक कि जो लोग मेरे साथ जेल में रहे थे और जेल से छूट गये थे, उनके घरों पर भी दबिश चल रही थी, क्योंकि पुलिस की कुछ टीमों का अन्दाज़ा था कि मैं अभी दिल्ली से बाहर नहीं निकल पाया। एक बेचारा आदमी जो मेरे साथ जेल में रहा था और अब बाहर था, उसे तो पुलिस ने 3 दिन से निक्कर में ही थाने में बैठाया हुआ था। उस बेचारे को उसके घर से रात को 12 बजे निक्कर में ही पूछ-ताछ के लिए लाये थे।

तीन दिन बाद मैं रोज़ की तरह एक एस.टी.डी. बूथ में फ़ोन करने के लिए घुस रहा था और मन-ही-मन सोच रहा था कि अगर आज फ़ोन पर बात नहीं होती है तो मैं यहाँ से बहुत दूर चला जाऊँगा, क्योंकि अब यहाँ रुकना ख़तरनाक हो सकता है। मुरादाबाद दिल्ली से ज़्यादा दूर नहीं है और किसी भी समय किसी की निगाह में आया जा सकता है। अगर मजबूरी न होती तो मैं अभी तक यहाँ से बहुत दूर चला गया होता, परन्तु जिससे फ़ोन पर बात करनी थी उसे मेरे घर से दो लाख रुपये ले कर आने थे और इस समय बिना पैसों के आगे जाने में परेशानी थी।

मेरी िकस्मत आज अच्छी थी, इसीलिए आज जैसे ही मैंने नम्बर मिलाया तो बेल जाने लगी और फिर कुछ ही पल में उधर से आवाज़ आयी—हलो। तब मैंने कहा—3 दिन से कहाँ ग़ायब हो गया था, मैं लगातार फ़ोन कर रहा हूँ, अगर आज न मिलता तो मैं बिना पैसों के ही चला जाता, मेरे घर से पैसे ले लिये? तब उधर से सुनील ने कहा कि हाँ भैया, पैसे 17 तारीख को ही ले लिये थे, मैं तो आपके फ़ोन का उसी दिन से इन्तज़ार कर रहा हूँ। मैंने कहा—चल, अब मिल कर बात करूँगा। तू जल्दी से एक टैक्सी किराये पर ले और तुरन्त मुरादाबाद आ कर मुझे पैसे ला कर दे! कितनी देर लगेगी? सुनील बोला —भैया, मैं 3 घण्टे के अन्दर आ जाऊँगा, लेकिन आना कहाँ है? मैंने कहा—तू ठीक मुरादाबाद रेलवे स्टेशन के सामने आ जा, मैं ख़ुद तुझे देख कर आ जाऊँगा और ध्यान रखना कि कोई पुलिस वाला पीछे न हो! ठीक है भैया।

क़रीब डेढ़-दो बजे दिन के सुनील जैसे ही एक इण्डिका गाड़ी से मुरादाबाद रेलवे स्टेशन पर आया। मैं ऐसी जगह पर खड़ा था कि कोई मुझे न देख सके किन्तु मैं सबको देख सकूँ। 10-15 मिनट तक मैं सुनील को ऐसे ही देखता रहा और जब पूरा यक़ीन हो गया कि पुलिस नहीं है तो उसके पास गया। सुनील एक दम से पीछे मुड़ा और बोला—भैया मैं तो काफ़ी देर से आपका यहाँ पर वेट कर रहा हूँ। मैंने कहा—अच्छा चलो,

https://t.me/Sahityajunction

किसी रेस्टोरेण्ट में जा कर खाना खाते हैं वहीं पर बातें करेंगे।

गाड़ी में बैठ कर हम एक अच्छे रेस्टोरेण्ट में पहुँचे और खाने का ऑर्डर दिया। फिर मैंने उससे पूछा—हाँ सुनील, पैसे लाया? ''हाँ भैया'' ''कहाँ है''? ''इस बैग में'', ''दिखा'' ठीक है, कितने हैं? ''दो लाख''। ''अच्छा सुनील'' अब मुझे पहले यह बता कि मेरे घर पर सब ठीक है? पुलिस ने किसी को परेशान तो नहीं किया और तेरे ऊपर शक तो नहीं है पुलिस को? ''भैया, अभी तक तो पुलिस को मेरे ऊपर शक नहीं है, क्योंकि मेरे से तो किसी ने कोई पूछ-ताछ नहीं की, लेकिन भैया आपके घर पर बहुत सारी पुलिस गयी थी और अब भी आपके घर के सामने चौकी कर डेरा जमा कर बैठे हैं। बहुत सारी मीडिया वालों की गाड़ियाँ भी आपके घर के सामने खड़ी थीं और मीडिया वालों के डर से ही पुलिस ने अभी तक आपके भाई विक्रम को कुछ नहीं कहा है; बस रोज़ पूछ-ताछ करने के लिए बुला रहे हैं और पूछ-ताछ करने के बाद शाम को छोड़ देते हैं!'' ''मेरी मम्मी और पापा की तबियत ठीक है।'' ''जी ठीक है!''

''अच्छा सुनील'' मैं तुझे एक सलाह देना चाहता हूँ।'' भैया, आप हुकम कीजिये।'' ''मेरे भाई सुनील तू दिल्ली पुलिस को नहीं जानता। थोड़े दिन में ही पुलिस को पता चल जायेगा कि तू मुझे भगाने में शामिल था। और मैं नहीं चाहता कि तू पुलिस के हत्थे चढ़े; इसलिए तू हमेशा के लिए अभी मेरे साथ चल। जब मैं अपने मक़सद में कामयाब हो जाऊँगा तो दोनों वापस आ जायेंगे। ''भैया इस हफ़्ते मेरी बहन को देखने के लिए लड़के वाले आ रहे हैं। इसके बाद में आप जहाँ कहेंगे मैं आ जाऊँगा!'' ''सुनील मेरी मजबूरी है कि इसके बाद शायद मैं तेरे से बात न कर पाऊँ क्योंकि मुझे लगता है कि पुलिस तुझे तब तक पकड़ लेगी। मैं तो आज ही यहाँ से बहुत दूर चला जाऊँगा। फिर भी अगर तो ठीक रहा तो मैं तुझे बाद में अपने पास बुला लूँगा!'' ''ठीक है भैया'' ठीक है, अब तू जा। यह कह कर मैंने अपनी जेब से 20 हज़ार रुपये निकाल कर सुनील को दिये और कहा, ''ले, अपने पास ये पैसे रख, तेरे काम आयेंगे। अपनी बहन को इससे अच्छा तोहफ़ा देना और अपने लिये नये कपड़े ख़रीद लेना।''

इसके बाद हम दोनों खड़े हो गये और सुनील मेरे पाँव छू कर इण्डिका में बैठ कर चला गया। चूँकि अब मेरे पास पैसे आ चुके थे जिसके इन्तज़ार में मैं इतना रिस्क उठा कर यहाँ रुका हुआ था, इसलिए अब मैं यहाँ से बहुत दूर जा सकता था, जहाँ मैं अपने आपको कुछ दिन छुपा सकूँ। सुनील से पेसे लेने के बाद मैं सीधा कोटद्वार गया, क्योंकि वहाँ होटल में मेरा सामान था। होटल पहुँचते-पहुँचते लगभग रात के 8 बज चुके थे, इसलिए मैंने अगले दिन सुबह यहाँ से जाने का निर्णय लिया। रात में पुलिस की गश्त तेज़ रहती है, और कहीं पर भी पुलिस वाले रोक कर किसी से भी उसकी आइडेण्टिटी पूछ सकते हैं और मेरे पास किसी तरह की कोई आइडेण्टिटी पुलिस को दिखाने के लिए नहीं थी।

अगली सुबह होटल से चेक आउट कर के मैं सीधा मुरादाबाद आया और मुरादाबाद आ कर बरेली वाली बस में बैठ गया और लगभग एक बजे दिन में बरेली पहुँच गया। बरेली पहुँच कर पहले एक होटल में खाना खाया और फिर अपने लिए कपड़े और जूते ख़रीदने के लिए एक शोरूम में गया। इतने दिन से कपड़े इसलिए नहीं ख़रीद पाया था, क्योंकि पैसे कम थे। मैंने कलर प्लस कम्पनी के 3-4 जोड़ी कपड़े

https://t.me/Sahityajunction

ख़रीदे तो शोरूम का मैनेजर बोला—सर, क्या घर में किसी की शादी है? मैंने उससे कहा —नहीं भाई साहब, ताज़ा-ताज़ा आज़ादी मिली है, इसलिए ख़रीद रहा हूँ। मैनेजर ने पूछा —किससे आज़ादी मिली है, सर? मैंने कहा—अपने ससुराल वालों से। इस बात पर मैनेजर और मैं, दोनों हँसने लगे। 17-18 हज़ार का बिल देने के बाद बाहर आ कर मैं सीधा बस स्टैण्ड गया और शाहजहाँपुर के लिए बस पकड़ ली। क़रीब 8 बजे शाहजहाँपुर जा कर एक होटल लिया और रात वहीं पर बितायी। रात में ही अगले दिन गोरखपुर जाने के लिए टिकट बुक करा लिया और फिर खाना खा कर होटल में सो गया।

सुबह 9 बजे तक नाश्ता करके मैंने होटल से चेक आउट किया और ट्रेन पकड़ कर उसी शाम तक गोरखपुर आ गया और गोरखपुर में एक अच्छे होटल में कमरा ले कर आगे की रणनीति सोचने लगा, क्योंकि जिस मक़सद के लिए मैं जेल से फ़रार हुआ था, उस मक़सद को पूरा करने के लिए पासपोर्ट की बहुत ज़रूरत थी और अब मुझे किसी ऐसे शहर में डेरा डालना था जहाँ भारत सरकार का पासपोर्ट ऑफिस हो और जहाँ दलाल को पैसे दे कर पासपोर्ट बनवाया जा सकता हो। इस बात पर विचार करते-करते 5-6 दिन और बीत गये।

एक दिन शाम के समय जब मैं होटल के कमरे में हिन्दी फ़िल्म देख कर ख़ूब हँस रहा था तो एकदम से फ़िल्म में ब्रेक आ गया। ब्रेक के दौरान मैंने ''आज तक'' चैनल पर टी.वी. लगाया तो देखा कि मेरी ख़बर चैनल पर आ रही है और न्यूज़ रीडर बता रहा है कि दिल्ली पुलिस क्राइम ब्रांच ने राणा के छोटे भाई विक्रम सिंह राणा और सुनील को गिरफ़्तार कर लिया है, इसके तुरन्त बाद ही विक्रम और सुनील को पुलिस द्वारा कोर्ट में पेश करते हुऐ दिखाया जाने लगा और बताया गया कि दोनों को रुड़की शहर से उसी दिन सुबह गिरफ़्तार किया गया है और कोर्ट में पेश करके क्राईम ब्रांच ने उन दोनों से पूछ-ताछ के लिए 10 दिन का पुलिस रिमाण्ड लिया है। विक्रम राणा से एक लाख रुपये भी पुलिस ने बरामद दिखाये हैं और पुलिस का कहना है कि ये पैसे वह अपने भाई शेर सिंह को भिजवाने वाला था। इसके बाद दूसरी न्यूज़ आने लगी। यह ख़बर सुनते ही मेरा मन बहुत भारी हो गया, लेकिन यह सोच कर कि जो ईश्वर ने लिखा है वही होगा मैं आगे की प्लानिंग बनाने लगा। फिर कुछ देर सोचने के बाद खड़ा हुआ और सीधे होटल से बाहर आया सीधा रेलवे स्टेशन पहुँच कर राँची जाने के लिए अगले दिन सुबह का टिकट रिज़र्व करवाया और वापस अपने होटल में आ कर लेट गया।

फिर अगली सुबह जल्दी उठ कर मैंने सामान पैक किया और होटल का कमरा चेक आउट करके राँची जाने वाली ट्रेन में अपनी सीट पर बैठ गया। अगले दिन सुबह क़रीब 11 बजे रेलगाड़ी राँची स्टेशन पर रुकी, जहाँ उतर कर मैं एक होटल में गया और एक कमरा ले लिया। नहा-धो कर खाना खाया और यह सोचने लगा कि अब आगे कया किया जाये।

राँची मैं इसलिए आया था, क्योंकि यहाँ पर पासपोर्ट ऑफिस है और यह इलाक़ा बहुत पिछड़ा हुआ है और मुझे लगता था कि यहाँ पैसा ख़र्च करके पासपोर्ट बनवाया जा सकता है। अगले दिन सुबह पासपोर्ट ऑफ़िस का पता मालूम करके सीधा उसके ऑफिस पहुँचा और किसी दलाल की खोज करने लगा जिससे काम करवाया जा सकता

https://t.me/Sahityajunction

हो। काफ़ी देर ऑफिस में घूमने के बाद भी ऐसा कोई नहीं मिला, जिससे बात की जाये, इसीलिए वहाँ से वापस होटल आ गया। होटल वाले से उस दिन का अख़बार मँगाया और विज्ञापन वाले पेज पर किसी पासपोर्ट बनाने वाले का पता खोजने लगा। तीन-चार पते उस अख़बार में से काग़ज़ पर लिखे और उसी समय सभी पतों पर जा कर बात की और एक को पासपोर्ट बनवाने के लिए राज़ी कर लिया और अगले दिन सुबह आ कर पैसे देने की बात कह कर वापस होटल में आ गया।

अगले दिन सुबह 10 बजे मैं उस पासपोर्ट बनवाने वाले के ऑफिस में गया। उसकी कम्पनी का नाम ''ईगल पासपोर्ट एण्ड वीजा सर्विस'' था और बॉस का नाम था बादल, जिसकी उम्र क़रीब 40 साल थी। आज इन बादल जी से ही मुझे मिलना था, क्योंकि पहले रोज़ वे नहीं मिले थे। क़रीब 15-20 मिनट रिसेप्शनिस्ट ने अपने पास बैठा कर शेर सिंह को बादल के कमरे में बात करने के लिए अन्दर भेजा।

बादल झारखण्ड का एक आदिवासी काला-सा आदमी था। और उसकी बीवी पंजाबी गोरी थी। जिस समय मैं उनके ऑफ़िस में अन्दर गया तो दोनों मियाँ-बीवी बैठे थे। काफ़ी देर दोनों ने मुझ से बात की और यह जानना चाहा कि मैं किसी दूसरे के नाम से पासपोर्ट क्यों बनवाना चाहता था, जिस पर मैंने उनसे कहा कि मेरे असली नाम से जो पासपोर्ट है, वह अब बेकार हो चुका है, क्योंकि उस पर मैं दुबई काम करने के लिए गया था और वहाँ पर कुछ ग़लती होने से मेरे पासपोर्ट पर यह लिख कर वापस भारत भेज दिया गया कि मुझे दोबारा दुबई का वीजा नहीं दिया जायेगा। मैंने बादल से कहा कि भैया, मैं दुबई जा कर फिर से काम करना चाहता हूँ, इसलिए मुझे दूसरे नाम से पासपोर्ट चाहिये। बहुत देर तक समझाने पर भी बादल नहीं माना, पर उसने मुझे अगले दिन आने के लिए कहा और कहा कि तुम अपना पहले वाला पासपोर्ट ला कर मुझे दिखा दो, क्योंकि आजकल किसी का कोई भरोसा नहीं है। क्या पता तुम भारतीय न हो कर पाकिस्तानी निकले और कोई बम-वम यहाँ फोड़ दो।

दोनों मियाँ-बीवी से बहुत देर बात कर के मैं वापस अपने होटल में आ गया। मैं आज काफ़ी दिन बाद थोड़ा ख़ुश था, क्योंकि मुझे लग रहा था कि मैं बादल से अपना पासपोर्ट बनवा लूँगा। इसके बाद मैं अगले दिन फिर उनके ऑफिस में गया परन्तु तब बादल नहीं था और उसकी बीवी काम सँभाल रही थी। मैंने बादल की बीवी को दीदी कह कर बात करनी शुरू की और ऐसा प्रभाव डाला कि वह कहने लगी कि मैं अपने पति से तुम्हारे बारे में बात करूँगी।

3-4 दिन उनके ऑफिस में लगातार जाने के बाद बड़ी मुश्किल से बादल मान गया और 25 हज़ार में बात तय हो गयी और मैंने 10 हज़ार एडवांस दे दिये। बादल ने मुझे एक महीने बाद अपना पासपोर्ट ले जाने के लिए कह दिया। वापस होटल में आने के बाद मैंने सोचा कि अब एक महीना राँची में रुकने का कोई फ़ायदा नहीं है, इसलिए अगले दिन ही मैं कलकत्ता पहुँच गया। एक-दो दिन कलकत्ता रुकने और वहाँ पर बांग्लादेश के दूतावास का पता लगाने के बाद जहाँ से मुझे पासपोर्ट लेने के बाद बांग्लादेश का वीजा लेना था, दार्जिलिंग घूमने के लिए चला गया, क्योंकि गर्मियाँ शुरू हो चुकी थीं और इस समय एक महीना काटने के लिए सबसे अच्छा दार्जिलिंग ही था।

करीब 20-25 दिन दार्जिलिंग रुकने के बाद मैं पासपोर्ट लेने के लिए वापस राँची आ

https://t.me/Sahityajunction

गया। जब बादल से उसके ऑफ़िस में जा कर मिला तो बादल ने कहा कि अभी पासपोर्ट नहीं बना है और बनेगा भी नहीं। जब मैंने न बनने का कारण पूछा तो बादल ने कहा कि अगर तुम थाने जा कर पासपोर्ट के लिए खुद अपनी वेरिफिकेशन करा सकते हो तो बन जायेगा। मैंने बादल से कहा कि ठीक है, मैं ख़ुद थाने जा कर अपनी जाँच पास करा दूँगा, आप सिर्फ मुझे बता दीजिये कि कब जाना है और थाने में जा कर किससे मिलना है।

अगली सुबह मैं ख़ुद थाने में गया और वहाँ जा कर एल.आई.यू. के सब इन्स्पेक्टर से मिला जो पासपोर्ट बनाने के लिए आवेदनकर्ताओं की जाँच करता था। पुलिस एस.आई. ने मुझे को अपने ऑफिस में बैठाया और पूछ-ताछ करने लगा कि घर का क्या पता है? कब से राँची में रह रहे हो? घर में और कौनकौन है? सभी प्रश्नों का सही-सही जवाब देने के बाद मैं उस एस.आई. को 15 सौ रुपये देने लगा तो उसने कहा कि नहीं यार, इसकी कोई ज़रूरत नहीं है, लेकिन मैंने कहा कि सर, मुझे पता है कि जैसे बिना पेट्रोल के गाड़ी नहीं चलती, उसी तरह से बिना आपको दक्षिणा चढ़ाये यहाँ किसी का पासपोर्ट नहीं बनता। मेरी इस बात पर वह एस.आई. ज़ोर-ज़ोर हँसने लगा और बोला कि ठीक है, जब तुम इतना कहते हो तो थाने के गेट के सामने जो पान का खोका है, उस पान वाले को मेरा नाम बता कर दो हज़ार रुपये दे देना। मुझे मिल जायेंगे और तुम्हारी फ़ाइल भी मैं आज ही पूरी करके आगे की कार्रवाई के लिए भिजवा दूँगा।

इसके बाद एस.आई. को नमस्कार करके मैं सीधा थाने से बाहर आया और एस.आई. के बताये अनुसार पैसे जमा करके बादल के ऑफिस में बादल के पास आ गया। बादल ने मुझ से पुलिस जाँच के बारे में पूछा तो मैंने बादल से कहा कि जाँच ठीक-ठाक पास हो गयी है और अब बताइये कि मेरा पासपोर्ट कब मिलेगा। बादल ने कहा कि अब तुम 10 दिन बाद किसी भी समय आ कर अपना पासपोर्ट ले जाना। बादल ने मुझ से अपने बचे हुए पैसे माँगे तो मैंने कहा कि जब आप मेरे हाथ में मेरा पासपोर्ट देंगे तो मैं आपके बचे हुए 15 हज़ार भी दे दूँगा।

वापस अपने होटल आ कर रात को क़रीब 11 बजे मैं अपने होटल के कमरे में टी.वी. पर न्यूज़ देख रहा था तो अचानक एक ऐसी ख़बर टी.वी. पर आयी कि मेरी तो दुनिया ही बदल गयी; और ख़बर सुनते ही मेरी आँखों से टपटप करके आँसू गिरने लगे और मैं अपने बेड से उठ कर कमरे में गुमसुम टहलने लगा। टी.वी. न्यूज़ में यह ख़बर दिखाई जा रही थी कि तिहाड़ जेल से फ़रार फूलन देवी के कथित हत्यारे शेर सिंह राणा के पिता श्री सुरेन्द्र राणा का लम्बी बीमारी के कारण आज स्वर्गवास हो गया और पुलिस को उम्मीद है कि शेर सिंह अपने पिता के अन्तिम संस्कार के लिए ज़रूर आयेगा इसलिए रुड़की में सादी वर्दी में क्राइम ब्रांच के लोग उसे पकड़ने के लिए लग गये हैं। पुलिस को यह भी शक है कि वह अपना भेस बदल कर आ सकता है, इसलिए पुलिस ने अपने साथ उन लोगों को भी रखा हुआ है जो शेर सिंह को बहुत अच्छी तरह से जानते हैं और किसी भी रूप में पहचान सकते हैं।

जब मैं रात को क़रीब 2-3 बजे तक अपने होटल के कमरे में घूमते-घूमते थक गया तो अपने बेड पर लेट गया और अगले दिन की प्लानिंग बनाने लगा कि कैसे मैं अपने पिता का अन्तिम संस्कार कर सकता था और राँची से इतनी दूर उत्तराखण्ड रुड़की जा

https://t.me/Sahityajunction

सकता था। मैं अपने घर पर फ़ोन से बात भी करना चाहता था, लेकिन मैं जानता था कि पुलिस ने मेरे घर के दोनों फ़ोन नम्बर सर्विलांस पर लगाये होंगे और मैं जो भी बात करूँगा सब पुलिस वाले सुन लेंगे। पुलिस को यह भी पता चल जायेगा कि मैं इस समय राँची में हूँ। राँची की जानकारी मैं पुलिस को किसी भी हालत में नहीं देना चाहता था। यही बातें सोचते हुए मैं सो गया।

सुबह 6 बजे ही अपना सामान ले कर मैं राँची के बस स्टैण्ड पर खड़ा था और सोच रहा था कि अब मुझे यहाँ से यू.पी. की तरफ़ जाना चाहिये, ताकि ज़्यादा-से-ज़्यादा अपने शहर के क़रीब पहुँच सकूँ। और यही सब सोचते हुए मैं गया जाने वाली बस में बैठ गया। दिन में 12 बजे के क़रीब बस एक जगह रुकी जहाँ पर सब लोग खाना खाने लगे; मैं इतना परेशान था कि भूख लगने के बाद भी कुछ खाने का मन नहीं बना पा रहा था। थोड़ी देर ऐसे ही सोचने के बाद ख़याल आया कि आख़िर कब तक खाना नहीं खाऊँगा कभी-न-कभी तो खाना ही पड़ेगा और जो इस धरती पर आया है, वह जायेगा भी। यह सब सोच कर मैंने कुछ सन्तरे ख़रीदे और खा लिये।

शाम को क़रीब 5-6 बजे बस गया बस स्टैण्ड पर रुकी। मैं बस स्टैण्ड से सीधा गया शहर के रेलवे स्टेशन गया और यू.पी. की तरफ़ जाने वाली रेल गाड़ियों के बारे में पता किया। वहाँ से मुग़लसराय जाने के लिए टिकट बुक करा था और फ़ोन पर अपने घर बात करने के लिए स्टेशन के बाहर आ गया। यहाँ से घर फ़ोन पर बात की जा सकती थी, क्योंकि यह शहर एक घण्टे बाद ही मुझे छोड़ देना था। एक एस.टी.डी. पर जा कर घर फ़ोन मिलाया तो माताजी ने फ़ोन उठाया और बताया कि तुम्हारे दोनों भाइयों विक्रम सिंह राणा और विजय राणा की पैरोल की अ़र्जी कोर्ट में लगवायी है। कल वो लोग आ कर ही तुम्हारे पिताजी का अन्तिम संस्कार करेंगे। फ़ोन पर बात करते-करते हम दोनों माँ-बेटे रोने लगे और थोड़ी देर और बात करके फ़ोन रख दिया। ये सभी बातें पुलिस वाले भी मेरे घर का फ़ोन टेप करके सुन रहे थे। मेरे जेल से भागने के बाद पुलिस को आज पहली बार पता चला कि मेरी लोकेशन क्या है और मैं कहाँ हूँ, लेकिन उन्हें यह मालूम नहीं था कि यहाँ एक घण्टे के लिए ही हूँ और फिर शायद ही कभी इस शहर में वापस आऊँ।

मैं अपने घर अपनी माताजी से फ़ोन पर बात करके मैं अब काफ़ी मानसिक रूप से अच्छा महसूस कर रहा था, क्योंकि अब मुझे मालूम हो चुका था कि मेरे पिताजी का अन्तिम संस्कार करने के लिए जेल से मेरे छोटे भाई विक्रम और विजय आने वाले थे। माताजी ने मुझ से यह भी कहा था कि बेटे, तुम यहाँ मत आना, क्योंकि पुलिस तुम्हें पकड़ कर मारना चाहती है और पिताजी का अन्तिम संस्कार तुम्हारे छोटे भाई कर देंगे। जब मैंने अपनी माताजी से अन्तिम संस्कार में आने के लिए ज़ोर दिया तो माता जी ने कहा कि बेटे, प्रभु श्री राम जी भी अपने पिता श्री दशरथजी का अन्तिम संस्कार नहीं कर पाये थे; उनका अन्तिम संस्कार भी छोटे भाइयों ने किया था। अपनी माता जी की इन बातों को सोच कर ही अब मैं राहत महसूस कर रहा था। यह सब सोचते-सोचते ही मैं सुबह 4 बजे के क़रीब मुगल सराय रेलवे स्टेशन पर उतर गया और स्टेशन के सामने जा कर होटल में एक कमरा ले कर सो गया।

सुबह 8 बजे उठ कर और तैयार हो कर मैंने टैक्सी स्टैण्ड से एक टैक्सी बनारस

https://t.me/Sahityajunction

सेण्ट्रल जेल जाने के लिए बुक करायी और टैक्सी में बैठ कर 9 बजे के क़रीब बनारस सेण्ट्रल जेल के गेट पर जा कर अण्डरवर्ल्ड डॉन सुभाष ठाकुर से मुलाक़ात करने के लिए जानकारी हासिल करने लगा। जेल कर्मचारियों ने बताया कि सामने जो 13-14 साल का बच्चा बैठा है, उसके पास जा कर अपना नाम मुलाक़ात करने के लिए लिखवा दो। 11 बजे से मुलाक़ात करवायेंगे। मैंने उस बच्चे से जा कर बात की और मुलाक़ात लिखने को कहा और उस बच्चे को मुलाक़ात करने के लिए 200 रूपये फ़ीस के रूप में देने लगा तो उस बच्चे ने कहा कि नहीं भैया, ठाकुर साहब को पता चलेगा तो नाराज़ होंगे। वे हर महीने के हिसाब से मुझे पैसे दिलवा देते हैं और उन्होंने मना किया हुआ है कि जो भी हमसे मिलने आये, उससे फ़ीस मत लेना। मैंने उस बच्चे को ज़बरदस्ती 200 रूपये दे दिये। यह कह कर कि यह फ़ीस नहीं है, यह तुम्हारी मिठाई के लिए है।

वहाँ पर खड़ा एक लड़का जो किसी और से मुलाक़ात करने आया था यह सब देख रहा था। वह मेरे पास आया और पूछने लगा कि आप कहाँ से आये हैं और सुभाष ठाकुर को कैसा जानते हैं, और क्या काम है? उस लड़के के दिमाग़ में यह था कि मैं कोई मुर्गा हूँ और सुभाष ठाकुर ने मुझे पैसे झटकने के लिए बुलाया है। असल में यह लड़का जेल में बन्द एक दूसरे डॉन का परिचित था और इसकी इच्छा थी कि मैं सुभाष ठाकुर की जगह अपना काम उसके परिचित डॉन से करवा लूँ, क्योंकि ऐसा होने पर इस लड़के को कमीशन मिलता। ऐसे ही वह लड़का मुझे काफ़ी देर तक अपनी बातों में लपेटने की कोशिश करता रहा और अपनी और अपने परिचित डॉन की डींगें मारता रहा। उस मूर्ख को यह नहीं पता था कि उसके सामने शेर सिंह राणा खड़ा है और अन्दर बन्द दोनों डॉनों से ज़्यादा ख़ुद अपने काम करवाने में सक्षम है।

इतने में ही वहाँ पर 4-5 लोग और भी आ गये जिन्हें दूसरों से मुलाक़ात करनी थी। जेल की ऊँची दीवारों को देख कर वहाँ पर सब लोग आपस में बात करने लगे कि क्या इस जेल से कोई भाग सकता है तो वही लड़का, जो मुझ से काफ़ी देर से अपनी डींगें मार रहा था, बोला कि यहाँ से तो सिर्फ शेर सिंह राणा भाग सकता है, क्योंकि जिसने तिहाड़ की सिक्योरिटी तोड़ दी, उसके लिए यह जेल क्या मायने रखती है?

थोड़ी देर में ही वहाँ पर क़रीब 300 के आस-पास मुलाक़ात करने वाले इकट्ठा हो गये जिनमें से क़रीब 50 लोग तो सिर्फ सुभाष ठाकुर से ही मिलने आये हुए थे। इनमें अधिकतर महिलायें थीं जब सब लोग जेल के अन्दर जाने लगे तो वह लड़का भी लाइन में मेरे साथ अन्दर जाने के लिए खड़ा था, क्योंकि उस लड़के को ही बताना था कि कौन सुभाष ठाकुर है? मैंने उस लड़के को अपना परिचय संजय गुप्ता के नाम से दिया हुआ था और कहा हुआ था कि मैं सुभाष भाई को नहीं पहचानता हूँ और पहली बार मिल रहा हूँ, जबकि मैं और सुभाष ठाकुर आपस में बहुत अच्छे मित्र थे। जब मैं और वह लड़का अन्दर जेल में पहुँचे तो उस लड़के ने पहले मेरा परिचय अपने परिचित डॉन से कराया और उस डॉन से कहा कि इनका नाम संजय गुप्ता है, गोरखपुर से आये है, सुभाष ठाकुर से इन्हें अपना काम करवाना है। वह डॉन, जिसका नाम विनीत सिंह था, बोला— अरे भई, गुप्ता जी, हमें आप सेवा का मौक़ा दीजिये आपका जो भी काम होगा हम करवा देंगे। मैंने कहा—भाई साहब, आपका बहुत धन्यवाद, लेकिन मुझे सुभाष ठाकुरजी से ही कुछ परिवारिक काम है। विनीत सिंह—ठीक है तुम्हारी मर्ज़ी, सुभाष भाई वो सामने बैठे हैं।

https://t.me/Sahityajunction

मैं सुभाष भाई की तरफ़ गया तो उस समय चबूतरे पर सुभाष भाई नीचे चादर बिछा कर बैठे थे और 25-30 लोग उनके साथ बैठे थे। जब मैं सुभाष भाई के सामने जा कर खड़ा हुआ और हाथ जोड़ कर नमस्कार किया तो कुछ पल तो सुभाष भाई देखते रहे और फिर एकदम से ऐसे झटके से खड़े हुए जैसे करण्ट लगा हो। यह दृश्य सीन वह दूसरा डॉन भी देख रहा था। उस दूसरे डॉन और सुभाष भाई से मिलने के लिए आये लोगों को यह देख कर बहुत आश्चर्य हुआ कि मुझे देखते ही सुभाष भाई तुरन्त हाथ जोड़ते हुए खड़े हो गये। और बोले—नमस्कार, अरे आप यहाँ आइये, उधर चल कर बात करते हैं।

थोड़ा एक तरफ़ जा कर उन्होंने कहा—पहले आप मेरे गले लगिये। मैं शुरू में आपको पहचान ही नहीं पाया, लेकिन आपने इतना रिस्क क्यों लिया? जेल में आ कर मिलने का, आपको कोई भी पहचान सकता है, क्योंकि आये दिन टी.वी. और अख़बार में आपकी फ़ोटो आती रहती है। मैंने कहा—भैया, आपका प्यार खींच कर ले आया। वैसे जब आप मुझे नहीं पहचान पाये तो यहाँ दूसरा कोई कैसे पहचानेगा। वो जो सामने विनीत दूसरा डॉन बैठा है, वह मुझे मुर्गी समझ रहा था और काटने के चक्कर में था, मूर्ख को यह नहीं पता कि आप मेरे भैया की तरह हो। सुभाष भाई बोले—वह ऐसे ही करता रहता है, इसको आज समझाऊँगा। वैसे आपका बहुत बड़ा फ़ैन है। अगर इसे अभी बताऊँ कि जिसे तू मुर्गी समझ रहा है, वह शेर सिंह है तो आपसे मिल कर बहुत ख़ुश होगा। मैंने कहा—नहीं भैया, रहने दीजिए किसी को बताने की क्या ज़रूरत है। अब काम की बात सुनिये मेरे पिताजी की डेथ हो गयी है। आप मेरी थोड़ी सहायता कीजिये जिससे मैं अपने पिता के अन्तिम संस्कार में जा सकूँ। वैसे मैंने कल गया शहर से अपनी माताजी से बात की थी। वो कह रही थीं कि आज या कल मेरे दोनों भाई तिहाड़ से पैरोल पर आ कर अन्तिम संस्कार करेंगे, लेकिन फिर भी मैं भी जाना चाहता हूँ।

सुभाष भाई ने जवाब दिया—आपको जैसी सहायता चाहिए मैं करूँगा, लेकिन आपका वहाँ जाना तो बहुत ख़तरनाक होगा, वहाँ तो पुलिस-ही-पुलिस होगी। मेरी राय तो आपको यह है कि आप इस माहौल में वहाँ न जायें, क्योंकि तिहाड़ से भाग कर आज़ाद होना हैं बहुत बड़ी बात है और दोबारा फिर वहीं पर अपने को फँसाना ठीक नहीं है। बाक़ी आप देख लीजिए, आप जैसा कहेंगे, मैं इन्तज़ाम करवाने की कोशिश करूँगा। मैंने कहा—भैया, वैसे माताजी मना कर रही थीं, कह रही थीं कि यहाँ अभी मत आना, तुम्हारे भाई सारा काम निपटा लेंगे। सुभाष भाई ने कहा—हाँ तो ठीक है फिर आप माताजी का और मेरा कहना मानिए, आप अभी वहाँ मत जाइये। वैसे भी पिताजी की डेथ हुए दो दिन हो चुके हैं और अगर आप बनारस से किसी भी तरह रुड़की जाने की कोशिश करेंगे तो दो दिन और लगेंगे, ही यह पक्का है, इसलिए वैसे भी आपका पहुँचना मुश्किल है। मैंने कहा—बात तो आपकी ठीक है कि दो दिन से पहले तो वहाँ नहीं पहुँचा जा सकता। ये सब बातें होने के दौरान सुभाष भाई मुझे सान्त्वना भी दिये जा रहे थे और बार-बार अपने गले भी लगा रहे थे। यह दृश्य वहाँ सुभाष भाई से मिलने आये हुए लोग भी देख रहे थे और दूसरा डॉन विनीत सिंह भी देख रहा था और सभी लोग आश्चर्य में थे कि ये कौन है जिससे यह ऐसे मिल रहे हैं।

सुभाष भाई ने आगे कहा—अब आप मुझे यह बताइए कि आगे का क्या प्रोग्राम है, कहाँ रह रहे हैं? अगर ठिकाना नहीं है तो मैं इन्तज़ाम करता हूँ, मैं बहुत दिनों से कोशिश

https://t.me/Sahityajunction

कर रहा था आपके बारे में पता करने की कि आप कहाँ हैं? मैंने कहा—भैया, मैंने अपना पासपोर्ट बनने के लिए दिया हुआ है। 5-6 दिन में मिल जायेगा; फिर सबसे पहले मैं बांग्लादेश जाऊँगा और वहाँ जा कर आपसे फ़ोन पर बात करूँगा। फ़ोन तो आपने यहाँ रखा होगा। सुभाष भाई बोले— हाँ, फ़ोन तो है, मैं आपको दो नम्बर देता हूँ, लेकिन सिर्फ रात को और सुबह 10 बजे से पहले ही करियेगा, क्योंकि 10 बजे के बाद मैं यहाँ मुलाक़ात करने के लिए आ जाता हूँ। मैंने कहा—ठीक है और जब आप तिहाड़ में थे तो मुझसे अपने जेल से भागने की इच्छा भी बता रहे थे, उसका क्या हुआ। आप चाहें तो मैं आपको भगवा देता हूँ, मेरे पास 2-3 प्लानिंग हैं आपके लिए। सुभाष भाई ने जवाब दिया —नहीं, मैं आपको ख़तरे में नहीं डालना चाहता। आप पहले बांग्लादेश जाइये। वैसे भी मेरी अपील सुप्रीम कोर्ट में लगी हुई है और उम्मीद है कि दो महीने में अच्छी ख़बर आयेगी। लेकिन बांग्लादेश जा कर आप करेंगे क्या? अगर आप चाहें तो में आपका दुबई जाने का इन्तज़ाम कर देता हूँ, वहाँ हमारे काफ़ी लोग हैं।

मैंने कहा—नहीं भैया, मैं अभी दुबई वाली लाइन पर नहीं जाना चाहता और अभी कोई क्राइम भी नहीं करूँगा। असल में मैं अफ़ग़ानिस्तान जाना चाहता हूँ। मैंने आपसे तिहाड़ में भी बताया था कि मैं वहाँ से सम्राट पृथ्वीराज चौहान की समाधि लाना चाहता हूँ और इसी काम के लिए ही मैं तिहाड़ से भागा हूँ। हाँ, अगर आपका कोई पर्सनल काम है तो मैं कर दूँगा; जैसे आपको जेल से भागना है तो मैं भगवा दूँगा, पर अभी दूसरा कोई क्राइम नहीं करूँगा। सुभाष भाई ने कहा—चलिए, जैसा आप ठीक समझें, मैं तो हमेशा आपके साथ हूँ। लीजिए यह दो नम्बर लिख लीजिये और बांग्लादेश जा कर बात ज़रूर कर कीजिएगा। और हाँ, आप माता जी की टेंशन मत लीजिएगा। मैं आज ही कुछ लोगों को रुड़की भेज देता हूँ। वे घर पर सारा इन्तज़ाम कर देंगे। मैंने कहा—नहीं भैया, वैसे घर पर तो कोई प्रॉब्लम नहीं है, क्योंकि ताऊजी और चाचाजी का परिवार भी साथ में ही रहता है और अन्तिम संस्कार का इन्तज़ाम उन्होंने कल ही कर दिया था। बस मेरी ही कमी थी। सुभाष भाई ने अपने गले से लगा कर कहा—आप परेशान मत होइए, ईश्वर की शायद यही इच्छा है। मैंने कहा—आप ठीक कहते हैं, शायद ईश्वर की यही इच्छा है, लेकिन भैया यह बात मुझे अपने जीवन में सदा चुभती रहेगी कि मैं अपने पिताजी का अन्तिम संस्कार नहीं कर पाया। ठीक है, अब मैं चलता हूँ। बांग्लादेश पहुँचने पर मैं आपको फ़ोन करूँगा। सुभाष भाई बोले—चलिए मैं आपको ड्यूटी के गेट तक छोड़ आता हूँ। और हाँ, मैं आपके टच में अपने भाँजे डॉक्टर को डाल दूँगा, मेरा एकदम विश्वास का आदमी है। अगर कोई भी बात होगी तो वह आपसे कहीं भी आ कर मिल लेगा। मैंने पूछा—यह सच का डॉक्टर है या आपने उसे नाम से ही डॉक्टर बना दिया।

सुभाष भाई ने कहा—नहीं, बस नाम का डॉक्टर है।

यह तो मैं जानता ही था कि अण्डरवर्ल्ड में हर किसी का निकनेम रखा जाता है। जैसे—डॉक्टर, इन्जीनियर वग़ैरा जिससे अगर पुलिस मोबाइल को सिंवलांस पर लगा कर बातें सुन रही हो तो उसको मालूम न पड़े कि बात करने वाले कौन हैं।

अब मैं आगे के बारे में सोचते-सोचते टैक्सी से वापस मुगल सराय वाले अपने होटल में आ गया। यहाँ से रात को ही ट्रेन से वापस राँची के लिए बैठ गया। राँची पहुँचने के बाद जिस एजेण्ट बादल के पास पासपोर्ट बनने के लिए दिया था, उसके

https://t.me/Sahityajunction

ऑफिस में गया और उससे मिल कर अपना पासपोर्ट माँगा। बादल ने अपने एक कर्मचारी को मेरे साथ पासपोर्ट ऑफिस पासपोर्ट लेने के लिए भेज दिया। ऑफिस से मैंने अपना पासपोर्ट लिया और वापस बादल के पास आ कर उसके बक़ाया पैसे दिये और उसको और उसकी बीवी को धन्यवाद कह कर वहाँ से चल दिया। इसी दिन रात को ही कलकत्ता के लिए टैक्सी ले कर रवानगी कर दी और सुबह कलकत्ता पहुँच गया।

अब मैं जल्दी-से-जल्दी भारत की सीमा से बाहर जाना चाहता था जिससे कि पुलिस के झंझट ख़त्म हों। इसलिए समय न ख़राब करते हुए सुबह 11 बजे कलकत्ता में बांग्लादेश कॉन्सलेट में अपने वीज़ा की बातचीत करने के लिए गया। लेकिन तब तक कॉन्सलेट ऑफिस का वीज़ा सेक्शन बन्द हो गया था। इस कॉन्सलेट के सामने ही एक टूर्स ऐण्ड ट्रैवल्स का ऑफिस था जिसका काम पैसे ले कर बांग्लादेश का वीज़ा लगवाने का था। उस ऑफिस में जाकर मैंने उनसे बात की तो उन्होंने बताया कि 15 दिन का वीज़ा 1500 रुपये में 30 दिन का वीज़ा 2500 रुपये में लगवा देंगे।

मैंने उनसे पूछा कि मुझे ज़्यादा-से-ज़्यादा दिन का वीज़ा चाहिये तो उन्होंने कहाँ कि आपको हम स्टूडेंट वीज़ा दिलवा सकते हैं, लेकिन उसके लिए आपको ख़ुद जा कर वीज़ा काउन्सलर को अपना इण्टरव्यू देना पड़ेगा और इसके लिए 15000 रुपये लगेंगे। मैंने उनसे कहा कि जब मैं अपना इण्टरव्यू ख़ुद ही दूँगा तो फिर आप 15,000 रुपये इस काम के क्यों माँग रहे हैं। मैं आपको 150,000 दे दूँगा अगर आप मेरे पासपोर्ट पर ख़ुद ही एक साल का मल्टीपल वीज़ा लगवा दो और मैं इण्टरव्यू नहीं दूँगा। उन्होंने मुझसे कहा कि 8-10 दिन से इस काउन्सलेट में नया वीज़ा देने वाला अफ़सर आया है और वह बहुत ही ईमानदार और सख़्त है और बिना इण्टरव्यू के किसी को भी इतना लम्बा वीज़ा नहीं दे रहा है और इण्टरव्यू देने के बाद भी अगर वह आपको एक साल का मल्टीपल वीज़ा दे दे तो बहुत बड़ी बात है। तब मैंने उनसे कहा कि ठीक है मैं आपको 5 हज़ार रुपये देता हूँ, कि आप सिर्फ मुझे वे काग़ज़ तैयार करके दे दीजिये जिनकी ज़रूरत एक साल का स्टूडेण्ट वीज़ा लेने के लिए पड़ेगी। वे मेरी बात मान गये और कहा कि आप कल सुबह आ कर अपने काग़ज़ ले लीजिए, लेकिन आपको वीज़ा मिले या न मिले, हमारी कोई ज़िम्मेदारी नहीं होगी, आपको ख़ुद ही अपना इण्टरव्यू दे कर अपना वीज़ा लेना पड़ेगा और हम सिर्फ आपको स्टूडेण्ट वीज़ा लेने के लिए जिन काग़ज़ात की ज़रूरत होगी वह आपसे 5 हज़ार रुपये ले कर दे देंगे।

अगले दिन सुबह मैं उनके ऑफिस में गया और 5 हज़ार रुपये दे कर उनसे सभी काग़ज़ात ले कर अपने पासपोर्ट समेत ऑफिस के सामने स्थित बांग्लादेश काउन्सलेट में जमा करा दिये। काउन्सलेट वालों ने मुझे एक पर्ची दी और कहा कि आप इस पर्ची पर लिखे हुए फ़ोन नम्बर पर शाम को फ़ोन कीजियेगा तब आपको बताया जायेगा कि आपको इण्टरव्यू के लिए कब आना है। शाम को मैंने उन्हें फ़ोन किया तो उधर से फ़ोन उठाने वाली मैडम ने कहा कि आप परसों सुबह आ जाइए ठीक 10 बजे। अगले दिन मैं सुबह फिर उनके ऑफिस में गया जिन्होंने मुझसे 5 हज़ार रुपये ले कर काग़ज़ उपलब्ध कराये थे। मैं उनसे और उनके ऑफिस में बैठे हुए लोगों से जो बांग्लादेश जाना चाहते थे कई घण्टे तक बातचीत करता रहा जिससे कि मुझे बांग्लादेश के बारे में ज़्यादा-से-ज़्यादा जानकारी हो सके।

https://t.me/Sahityajunction

बांग्लादेश का एक पता मेरे पास भी था। यह पता एक राशिद नाम के लड़के का था जो मेरे साथ तिहाड़ जेल में बन्द था और बांग्लादेशी था। इस बांग्लादेशी राशिद के बारे में भी मैंने पता किया कि यह शहर बांग्लादेश में कहाँ पड़ता है और कलकत्ता से कितना टाइम और किस रूट से जाना पड़ेगा। राशिद के शहर का नाम खुलना था और यह खुलना शहर बांग्लादेश का एक मेट्रोपोलिटन शहर माना जाता है। जिस कॉलेज में ऐडमिशन के काग़ज़ात उन ऑफिस वालों ने 5000 रुपये ले कर मुझे दिये थे, वह कॉलेज भी खुलना शहर में ही था। खुलना शहर के बारे में ज़्यादा-से-ज़्यादा जानकारी ले कर मैं अगले दिन सुबह 10 बजे बांग्लादेश कॉन्सलेट में चला गया। वहाँ जा कर देखा तो मुझसे पहले ही वहाँ पर 15-20 लोग इण्टरव्यू देने के लिए बैठे हुए थे। एक-एक करके वीज़ा काउन्सलर अपने ऑफिस में सबको बुलाने लगे। थोड़ी देर बाद मुझे भी बुलाया। मैं वीज़ा काउन्सलर के ऑफिस में गया तो सबसे पहले उन्होंने मुझे अपने सामने वाली कुर्सी पर बैठाया और प्रश्न किया कि आप इंग्लिश में बात करेंगे या बंगाली में। मुझे बंगाली नहीं आती थी, इसलिए मैंने इंग्लिश में जवाब देने के लिए कहा। उन्होंने मेरा पासपोर्ट देख कर कहा कि आप राँची में रहते है? मैंने कहा—जी हाँ।

उन्होंने पूछा—आप नक्सली तो नहीं है? आपका राज्य झारखण्ड तो नक्सली इलाक़ा है।

मैंने कहा—जी सर, हमारे इलाक़े में कुछ नक्सली प्राब्लम है, लेकिन मैं नक्सली नहीं हूँ, क्या आपको मैं नक्सली लगता हूँ? तो उन्होंने कहा कि मैं सिर्फ चेहरा देख कर कैसे बता सकता हूँ कि कौन नक्सली है? और कौन नहीं! चलिए, अब आप बताइये आप बांग्लादेश क्यों जाना चाहते हैं? मैंने कहा — सर, पढ़ाई के लिए! मेरा यह जवाब सुन कर वह मुझे घूरने लगा और बोला, क्यों मजाक करते हो, सारे बांगलादेशी इण्डिया पढ़ने के लिए आते हैं, क्योंकि इण्डिया में पढ़ाई की अच्छी फ़ैसिलिटीस हैं और आप पढ़ाई के लिए बांग्लादेश जाना चाहते हैं, यह बात मैं नहीं मान सकता।

मैंने कहा, सर आपकी बात ठीक है कि सभी लोग बांग्लादेश से इण्डिया पढ़ाई के लिए आते हैं, लेकिन सर, मेरी एक प्राब्लम है जिसकी वजह से मैं बांग्लादेश पढ़ाई के लिए जाना चाहता हूँ। उसने पूछा, अच्छा, क्या प्रॉब्लम है बताइए? मैंने कहा, सर, दरअसल बात यह है कि एक बांग्लादेशी लड़की मेरे साथ राँची में पढ़ती थी और अब वह यहाँ से अपनी पढ़ाई ख़त्म करके वापस खुलना चली गयी है और उसने वहाँ जा कर नॉर्थर्न यूनिवर्सिटी खुलना में आगे की पढ़ाई के लिए दाख़िला ले लिया हे। मेरा यह जवाब सुन कर वह मेरी तरफ़ करीब 30 सैकण्ड तक बिना कुछ बोले देखता रहा। वह शायद वह यह अनुमान लगा रहा था कि मैं झूठ बोल रहा हूँ या सच! वैसे प्रेमिका की कहानी मैंने वहीं खड़े-खड़े ही बनायी थी, लेकिन फिर भी वह मेरे जवाब और चेहरे से मुझे नहीं पकड़ पाया! उसने मुझसे कहा, अच्छा तो दिल का मामला है। कितने साल से लड़की को जानते हो? सर दो साल से। उसने पूछा, लड़की हिन्दू है या मुसलमान? मैंने कहा, सर, हिन्दू है। उसने कहा, लड़की से शादी करोगे या टाइम पास फ़्रैंड है! मैंने जवाब दिया, सर, शादी करूँगा। उसने कहा, तुम्हारे घरवाले इसके लिए रज़ामन्द हैं, मैंने कहा, सर, रज़ामन्द नहीं थे, लेकिन मैंने उन्हें अब मना लिया है, सर, प्लीज आप मुझे वीज़ा ज़रूर दे दीजियेगा, मैं उस लड़की से बहुत प्रेम करता हूँ। तब अफ़सर ने कहा उस लड़की का नाम तो तुमने बताया ही नहीं।

https://t.me/Sahityajunction

मैंने कहा सर, स्मृति नाम है। सर, मुझे बाहर सब लोग बता रहे थे कि आप बहुत सख़्त मिजाज के है, लेकिन आप तो नेचर में मुझे बहुत अच्छे लग रहे है। वह बोला— बच्चे, माई डियर, मेरे ऊपर मक्खन बाज़ी नहीं चलेगा, लेकिन मैं कोशिश करूँगा कि मेरे कारण किसी का प्रेम ख़त्म न हो। तुमने किसी एजेण्ट को वीज़ा के लिए पैसे तो नहीं दिये। मैंने कहा, नहीं सर। वह बोला, ठीक है तुम जाओ, अपना पासपोर्ट शाम को 5 बजे काउण्टर से ले लेना। मैं उसे धन्यवाद कह कर उसके ऑफिस से बाहर आ गया। शहर आ कर मैंने होटल में खाना वग़ैरा खाया और फिर टाइम पास करने के लिए पिक्चर हॉल में फ़िल्म देखने चला गया। शाम को 5 बजे जब मैं बांग्लादेश कॉन्सलेट पहुँचा तो देखा वहाँ पर काउण्टर पर बहुत अधिक भीड़ थी सब लोग अपनी-अपनी पर्ची दिखा कर अपना पासपोर्ट काउण्टर से वापस ले रहे थे। मैंने भी अपना पासपोर्ट वापस लिया और देखा तो उसमें 6 महीने का मल्टीपल वीज़ा दिया हुआ था। वहाँ पर खड़े हुए सभी लोग मेरा वीज़ा 6 महीने का देख कर आश्चर्यचकित हो गये, क्योंकि उस वीज़ा काउन्सलर ने मेरे अलावा किसी को भी एक महीने से ज़्यादा का वीज़ा नहीं दिया था और कई लोगों को तो वीज़ा दिया ही नहीं था।

उस एजेण्ट ने, जिससे मैंने 5 हज़ार रुपये दे कर काग़ज़ात लिये थे, मेरा वीज़ा देख कर कहा कि भई, आपने उस खडूस अफ़सर को क्या घुट्टी पिलाई जो उस साले ने आपको 6 महीने का वीज़ा दे दिया। मैंने कहा प्रेम की घुट्टी यह कह कर मैं अपने होटल में वापस आ गया और अगले दिन बांग्लादेश जाने की तैयारी करने लगा। अगले दिन सुबह-सुबह ही मैं सियालदह स्टेशन से बैनापूल वाली ट्रेन में बैठ गया। बैनापूल भारत की तरफ़ आख़री स्टेशन है। यहाँ से मैं बॉर्डर पर गया और सभी फ़ॉरमैलिटी पूरी करके बांग्लादेश की सीमा में प्रवेश कर गया।

https://t.me/Sahityajunction

3. बांग्लादेश में

बांग्लादेश की सीमा में घुसते ही मेरी यह ग़लतफहमी दूर हो गयी कि भारत में बहुत भ्रष्टाचार है, क्योंकि बांग्लादेश इस काम में भारत का भी गुरु है। जब मैं अपना सामान बांग्लादेश कस्टम वालों से चेक कराने लगा तो उन्होंने मुझसे कहा कि दादा, हर बैग पर 100 टका बांग्लादेश करंसी दो और जाओ। क्योंकि मैं पहली बार गया था, मैंने उनको 200 टका दे दिया और अपने दोनों बैग उठा कर इमीग्रेशन ऑफिस में गया वहाँ पर 4-5 एजेण्ट आ गये और मुझसे मेरा पासपोर्ट माँगने लगे। वे सब लोग बंगाली में बोल रहे थे और मुझे उनका एक भी शब्द समझ में नहीं आ रहा था। फिर टूटी-फूटी इंग्लिश में एक कर्मचारी ने मुझे जवाब दिया कि आप अपना पासपोर्ट इनमें किसी को दे दीजिए, यह आपका पूरा काम करा देंगे। मैंने कहा कि नहीं, मैं ख़ुद ही कर लूँगा और मैंने वहाँ रखे हुए इमिग्रेशन फ़ॉर्म को ख़ुद ही भरना शुरू कर दिया।

फ़ॉर्म भरने के बाद पासपोर्ट के साथ मैंने ऑफिस में बैठे एक अफ़सर को दे दिया। मैं क़रीब 15-20 मिनट तक उस अफ़सर के सामने ही खड़ा रहा और उसने मेरे सामने ही उन एजेण्टों द्वारा लाये हुए पासपोर्टों पर आगमन की एण्ट्री कर दी, लेकिन मेरा काम नहीं किया। जब मैंने कारण पूछा तो उसने मुझे बग़ल में एक ख़ाली कुर्सी को दिखाते हुए कहा कि जो साहब इस कुर्सी पर बैठते हैं, वे आपका काम करेंगे। अभी 10-15 मिनट में आ जायेंगे! उन एजेण्टो ने इस अफ़सर को इशारा कर दिया था, इसलिए यह मेरा काम टाल रहा था। 10-15 मिनट बाद ख़ाली कुर्सी वाला भी आ गया।

उन दोनों अफ़सरों ने बंगाली में बात की और फिर वह ख़ाली कुर्सी वाला मुझसे बोला कि आप अपना काम उन एजेण्टों से क्यों नहीं करा रहे हो। मैंने कहा कि मेरे ख़ुद करने पर आपको क्या परेशानी है। उसने मुझसे कहा कि ठीक है, लेकिन आपको मुझे 500 टका देने पड़ेंगे, क्योंकि हम यहाँ जितने पासपोर्ट पर अराइवल स्टैम्प लगाते हैं उन पर हर पासपोर्ट के हिसाब से हमें 500 टका अपने ऊपर वाले अफ़सर के देना पड़ता है। मैंने कहा कि मैं तो सोचता था कि इण्डिया में ही करप्शन है, लेकिन आप तो हमारे भी गुरु लगते हो, खुले आम पैसे माँग रहे हो। मैंने आगे कहा कि 500 टका ज़्यादा बड़ी रकम नहीं है, पर मैं पैसे नहीं दूँगा। या तो आप मेरे पासपोर्ट पर स्टैम्प लगाइये, वरना मुझे बता दीजिए कि आपके सबसे बड़े अफ़सर कहाँ बैठते हैं। मेरी यह बात सुन कर वह कुछ देर सोच कर बोला कि लाइए अपना पासपोर्ट। आपका 500 टका आज मुझे अपनी जेब से ही देना पड़ेगा और उसने मेरे पासपोर्ट पर अराइवल स्टैम्प लगा कर मुझे वापस दे दिया।

जब मेरा काम यहाँ से पूरा हो गया तो मैंने उस स्टैम्प लगाने वाले को एक हज़ार टका दिया और कहा कि यह रिश्वत नहीं है यह मेरी तरफ़ से आपको गिफ़्ट है और मैं कोई भी काम ज़बरदस्ती में नहीं करता। वह बहुत ख़ुश हुआ और मुझे बाहर सड़क तक छोड़ने आ गया। मैंने उससे कहा कि मुझे खुलना जाना है और यहाँ से कैसे जाऊँ तो उसने मुझे खुलना वाली बस में बैठा दिया और बताया कि क़रीब 3 घण्टे में आप वहाँ पहुँच जायेंगे मैंने उसे धन्यवाद कहा और वह वहाँ से चला गया। इस समय मैं मानसिक रूप से बहुत ही सन्तुष्ट था, क्योंकि अब मैं जानता था कि पुलिस अब मुझे नहीं पकड़

https://t.me/Sahityajunction

सकती और मैं एक आज़ादी-सी महसूस कर रहा था। मैं अपने घर के बारे में भी सोच रहा था कि अब तक तो पिताजी का अन्तिम संस्कार ठीक-ठाक हो गया होगा, लेकिन मुझे यह मालूम नहीं था कि कोर्ट ने मेरे दोनों भाइयों विक्रम राणा और विजय राणा को पिताजी के अन्तिम संस्कार के लिए पैरोल या ज़मानत देने से मना कर दिया था और पिताजी का अन्तिम संस्कार इस स्थिति में मेरे ताऊ जी के लड़के ने कर दिया था।

जिस बस में मैं बैठा था, वह बहुत ही धीरे-धीरे चल रही थी जिसके कारण 3 घण्टे की जगह क़रीब 5 घण्टे बस में बैठे-बैठे हो गये थे और रात भी हो गयी थी। रात 9 बजे के क़रीब जब बस खुलनें पहुँची तो लोग एक-एक करके बस से अलग-अलग जगहों पर उतरने लगे। मैं यह तय नहीं कर पा रहा था कि मुझे कहाँ उतरना चाहिये, क्योंकि मुझे न तो बंगाली भाषा समझ आती थी न बोलनी आती थी। सिर्फ 3-4 शब्द जैसे—खाने को—खाबा, घर को—बाड़ी, कहाँ जाना है को—कोथे जान और कुछ अन्य शब्द मैंने एक बंगाली से पूछ कर अपनी किताब में लिख लिये थे।

एक समय आया जब बस से मुझे छोड़ कर सभी लोग उतर गये और बस ख़ाली हो गयी तब कण्डक्टर मेरे पास आया और बंगाली में बोला कि आप भी उतर जाइये। मैं कुछ समझा नहीं, लेकिन मैंने उसको कहा कि बस स्टैण्ड खुलना उतरना है तो वह समझ गया कि मैं बंगाली नहीं हूँ। उसने इंग्लिश में कहा कि यह आख़िरी स्टॉप और फिर मेरा बैग ले कर बस से नीचे उतर गया। मैं भी नीचे आ गया। थोड़ी देर में वहाँ बहुत-सी भीड़ हो गयी और उस भीड़ में कोई भी हिन्दी या इंग्लिश नहीं समझ रहा था और मैं यह सोच कर परेशान था कि रात काफ़ी हो गई है और अब इन लोगों को कैसे समझाऊँ कि मुझे होटल में जाना है और किस पर विश्वास करूँ।

मैं यह सोच ही रहा था कि इतने में क़रीब 50 साल का एक आदमी वहाँ आया और उसने मुझसे इंग्लिश में पूछा कि आप कहाँ जायेंगे। मैंने उनको बताया कि आप मुझे किसी अच्छे से होटल में रुकवा दीजिये। वे अंकलजी मुझे अपने साथ ले कर एक होटल में आ गये और अपना फ़ोन नम्बर दे दिया कि अगर कोई परेशानी हो तो उन्हें फ़ोन कर दूँ। ये अंकलजी बैंक में एसिस्टेंट मैनेजर थे। इसके बाद वे चले गये। रात को खाना खा कर मैं सो गया। सुबह को होटल के रेस्टोरेण्ट में जा कर नाश्ता किया और होटल के मैनेजर से बात करने लगा।

इस होटल के मैनेजर को बहुत अच्छी हिन्दी बोलनी आती थी, क्योंकि इसकी माँ इण्डिया की थी। मैंने इसे इण्डिया से लाये हुए उस पते को दिखाया जो राशिद नाम के लड़के ने मुझे तिहाड़ जेल में यह कह कर दिया था कि यह मेरे घर का पता है और आप जब चाहे आ सकते हैं। होटल के मैनेजर का नाम निपोन भाई था। उसने पता देख कर कहा कि यह शहर से क़रीब 15-20 किलोमीटर है और मैं तो होटल से नहीं जा सकता हूँ, लेकिन मैं आपके साथ अपने एक-दो दोस्तों को कल भेज दूँगा। मैंने कहा, ठीक है। क्योंकि मैं पूरी तरह शाकाहारी था, इसलिए मैंने निपोन भाई को रिक्वेस्ट किया कि सुबह बने हुए पराँठे और सब्ज़ी ही वे मेरे लिए शाम तक रखवा दें, क्योंकि होटल के दिन और रात के खाने में हर चीज़ में किसी-न-किसी रूप में मीट ज़रूर मिक्स होना था। निपोन भाई ने वेटर को बुला कर बोल दिया कि इन भाई साहब के लिए सब्ज़ी और पराँठे रख लेना। इसके बाद मैं निपोन भाई से शहर के बारे में जानकारी ले कर पैदल ही

https://t.me/Sahityajunction

घूमने निकल गया और वह दिन ऐसे ही पूरा कर गया।

अगले दिन सुबह जब मैंने नाश्ता किया तो निपोन भाई ने तब तक अपने छोटे भाई महमूद और अपने दो दोस्तों को मिलवाया जिनमें एक का नाम शाहीन था और जो आगे चल कर मेरा बहुत अच्छा मित्र बना और जब तक मैं बांग्लादेश में रहा

महमूद ने मुझे बताया कि यह पता फ़र्जी है। वैसे इस गाँव में क़रीब हर घर से एक-दो सदस्य इण्डिया में रहते हैं लेकिन वे लोग आपको इण्डिया पुलिस का आदमी मान रहे थे, इसलिए राशिद के बारे में नहीं बता रहे थे, क्योंकि ये लोग इण्डिया में ग़लत काम करके वापस गाँव भाग आते हैं। हम तीनों वापस होटल में आ गये। मैंने निपोन को बताया कि यह पता राशिद का नहीं है। निपोन ने मुझसे कहा कि कोई बात नहीं, आपको जैसी भी सहायता चाहिये, हम लोग आपकी करेंगे। 4-5 दिन ऐसे ही निपोन, महमूद और शाहीन भाई से बात करते-करते बीत गये। इस दौरान मैंने एक मोबाइल फ़ोन ख़रीद लिया और सिमकार्ड महमूद के नाम से ले लिया। यहाँ से मैंने सुभाष ठाकुर से बात की और उनका हाल-चाल जाना और अपना हाल-चाल दिया।

इन थोड़े दिनों में ही मेरी शाहीन भाई से अच्छी दोस्ती होने लगी थी और इस दौरान एक बार मैं उनके घर भी गया था और उनके बीवी-बच्चे और माताजी से मिल लिया था। ऐसे ही कुछ दिन और बीत गये। मेरे होटल के कमरे के बग़ल में एक आदमी 4-5 दिन पहले आ कर रुका था। उससे भी मेरी ठीक-ठाक जानपहचान हो गयी। एक दिन यह आदमी मेरे कमरे में आया और बोला कि संजय भाई, मैंने अपना जो पासपोर्ट बनवाया था, वह संजय गुप्ता के नाम से बना था, इसलिए हर जगह अब मैं अपने आप को संजय गुप्ता बताता था और सभी लोग मुझे संजय के नाम से ही जानते और पहचानते थे, मुझे आपसे कुछ सहायता चाहिये। मैंने कहा, बोलिये। उन्होंने मुझसे कहा कि मैं खुलना में एक टेण्डर डालने आया था और मुझे 25 हज़ार टका कम पड़ रहे हैं और अगर आप मुझे अभी 25 हज़ार टका दे दे तो मेरा एक आदमी कल टका ले कर आ जायेगा मैं आपको वापस कर दूँगा।

मैं तुरन्त समझ गया कि यह मुझे बेवकूफ बनाने की कोशिश कर रहा है। मैंने कहा कि मेरे पास तो अभी 25 हज़ार टका नहीं है। मेरे पास अमेरिकन डॉलर है और आज डॉलर चेंज नहीं हो पायेंगे, क्योंकि आज हड़ताल है। मेरे पास इस समय क़रीब 10 हज़ार टका था। उसने मुझसे जब कहा कि चलिए 25 हज़ार टका नहीं, आप जितना कर सकते हैं, कर दीजिए, बाक़ी बचा हुआ मैं कहीं और से बन्दोबस्त कर लूँगा। मुझे 15 हज़ार टका दे दीजिए। मैंने कहा 15 हज़ार भी नहीं हैं। उसने कहा, चलिए, दस ही दे दीजिए। उसकी इन बातों से मैं पूरी तरह समझ चुका था कि यह मुझे ठगने की कोशिश कर रहा है, क्योंकि जिसका काम 25 हज़ार टके से होना है, वह काम 25 हज़ार टके से ही होता है, फिर भी मैंने उसको जान बूझ कर चार हज़ार टका दे दिया और बोला कि में जानता हूँ कि मुझे ये पैसे वापस नहीं मिलेंगे, लेकिन फिर भी मैं आपको दोस्त होने के कारण और आपने जो मुझे जानकारियाँ दी हैं उनकी फ़ीस के रूप में दे रहा हूँ।

मेरी यह बात सुन कर वह बोला कि नहीं संजय भाई, ऐसी बात नहीं है मैं आपके टके कल ही दे दूँगा। इसके बाद वह चला गया। 3-4 दिन तक वह मुझे होटल में नहीं दिखा तो मैंने निपोन भाई से उसके बारे में पूछा तो निपोन ने मुझे बताया कि उसके ऊपर

https://t.me/Sahityajunction

10 दिन का होटल के कमरे का किराया हो गया है और हम लोग भी उसका इन्तज़ार कर रहे हैं अगर एक-दो दिन और नहीं आया तो हम दूसरी चाभी से उसके कमरे को खोल लेंगे। निपोन ने मुझसे पूछा कि वह मुझ से तो कुछ ले कर नहीं गया, क्योंकि यहाँ पर इस तरह के ठग घूमते रहते हैं और मैं ज़रा सावधान रहूँ। मैंने बताया कि मुझसे कुछ नहीं लिया। दो दिन बाद जब उसका कमरा खोला तो उसके कमरे में एक पुराना फटा-सा बैग रखा था जिसमें 2-3 फटे-पुराने कपड़े रखे हुए थे और वह सच में ही ठग था।

निपोन और अन्य लोगों ने मुझसे कई बार पूछा कि वह मुझसे तो कुछ नहीं ले गया। मैंने हर बार उनकी इस बात को हँस कर टाल दिया, क्योंकि मैं अगर उनको बताता तो वे लोग मुझ पर हँसते और यह बात कभी न मानते कि मैंने उसे जान कर पैसे दिये थे। फिर भी इन्हें शक था कि वह मुझ से भी कुछ टका ले गया है। इसके कुछ दिनों बाद एक दिन मैं महमूद के साथ, जो निपोन का सगा छोटा भाई था और महमूद के एक अन्य दोस्त के साथ खुलना की एक मार्किट में घूम रहा था, रात के क़रीब 7-8 बजे थे। महमूद ने मुझसे मेरा मोबाइल फ़ोन करने के लिए लिया और फ़ोन करता-करता थोड़ी दूर चला गया।

जब काफ़ी देर हो गयी तो मुझे शक हुआ और मैंने महमूद के दोस्त से, जिसने मुझे बातों में लगाया हुआ था, कहा कि भाई महमूद अब तक नहीं आया और मेरा इण्डिया से बहुत ज़रूरी फ़ोन मेरे मोबाइल पर आना था। उसने मेरे साथ 10-15 मिनट इधर-उधर महमूद को ढूँढने का ड्रामा किया और कहने लगा कि मुझे अब जाना है देर हो रही है। मैंने एक एस.टी.डी. से उस मोबाइल पर फ़ोन किया तो महमूद ने उधर से फ़ोन उठाया और एकदम से मेरी आवाज़ सुन कर बोला कि मैं एक ज़रूरी काम से 4-5 दिन के लिए खुलना से बाहर जा रहा हूँ और वापस आ कर तुम्हारा मोबाइल दे दूँगा।

उसकी बात सुन कर और उसके बात करने के तरीके से मैं समझ गया कि यह मुझे धोखा दे रहा है फिर भी मैंने उसे कुछ नहीं कहा, क्योंकि मैंने सोचा कि इसका बड़ा भाई निपोन जो उस होटल का आधा मालिक भी था, मेरा दोस्त है उससे बात करूँगा। मैंने जा कर निपोन भाई से बात की और उन्हें महमूद के किये गये व्यवहार के बारे में बताया तो निपोन ने कहा कि हमने महमूद को घर से निकाल दिया है और अब उससे हमारा कोई मतलब नहीं रहा है। मैं अपने कमरे में आ कर सो गया और अगले दिन शाहीन भाई से जा कर मिला और उन्हें सारी बात बतायी।

मैंने शाहीन भाई को कहा कि आप मुझे एक फ़्लैट दो कमरों वाला किराये पर दिला दीजिए, मैं अब होटल में नहीं रहना चाहता, क्योंकि मुझे बांग्लादेश में कई साल तक रहना है। उसने कहा कई साल तक रह कर क्या करोगे तो मैंने उसको कहा कि मैं यहाँ स्टूडेण्ट वीज़ा पर आया हूँ और मुझे यहाँ नार्थर्न यूनिवर्सिटी में ऐडमिशन लेना है और पढ़ाई के साथ-साथ कोई बिज़नेसभी शुरू करना है। जिस घर में शाहीन भाई अपने परिवार के साथ रहते थे, वह तीन मंज़िला बिल्डिंग थी, जिसके हर फ़्लोर पर थ्री रूम सेट था और उनका ग्राउण्ड फ़्लोर ख़ाली पड़ा था।

उन्होंने मुझसे कहा कि तुम चाहो तो इसमें आ कर रह सकते हो। मैंने उनसे वो प्रोर्शन 5 हज़ार टका महीने पर रहने के लिए उसी दिन ले लिया और होटल से अपना सारा सामान ला कर और अन्य सामान जिनकी ज़रूरत थी बाज़ार से ख़रीद कर उसी

https://t.me/Sahityajunction

दिन उस फ़्लैट में शिफ्ट कर दिया। इस बिल्डिंग के सबसे ऊपर के तले पर शाहीन भाई अपनी बीवी, जिनका नाम तृप्ति था, एक 4 साल के लड़के, जिसका नाम तौफ़ीक था, और अपनी माताजी के साथ रहते थे। इसी दिन रात को मैंने शाहीन भाई को बताया कि कल मैंने महमूद को अपना फ़ोन करने के लिए मोबाइल फ़ोन दिया था लेकिन वह फ़ोन ले कर चला गया और अब फ़ोन वापस नहीं कर रहा है। मैंने उसके बड़े भाई निपोन को भी कहा, लेकिन वह बोलता है कि हमारा महमूद से कोई मतलब नहीं है, हमने उसे घर से निकाल दिया है। मैंने शाहीन भाई से कहा कि कल आप मेरे साथ निपोन से बात करने के लिए चलना और अगर कल भी उसने ठीक से जवाब नहीं दिया तो मैं पुलिस में महमूद की रिपोर्ट करवा दूँगा।

शाहीन भाई ने कहा कि इतनी-सी बात पर पुलिस के पास जाने की क्या ज़रूरत है तो मैंने कहा कि भइया 6-7 हज़ार टके के मोबाइल की बात नहीं है, बात यह है कि उसने मुझे धोखा दिया और अगर मुझे अपना मोबाइल वापस लेने के लिए 20-30 हज़ार टके पुलिस को भी देने पड़ेंगे तो मैं ख़र्च करूँगा क्योंकि मैं उनको सबक सिखना चाहता हूँ, कि धोखे का फल क्या मिलता है और मैं कमज़ोर या डरपोक नहीं हूँ। उन्होंने कहा जैसी तुम्हारी मर्ज़ी कल सुबह निपोन से बात करेंगे। अगले दिन मैं और शाहीन भाई निपोन के होटल में गये और निपोन से बात की और बताया कि अगर महमूद से आप मोबाइल वापस नहीं दिलाते हैं तो मैं पुलिस थाने जा रहा हूँ, महमूद के ि़खलाफ़ रिपोर्ट करवाने। शाहीन भाई ने भी समझाया, लेकिन उसका पहले वाला ही जवाब था। मैं और शाहीन भाई वहीं से तुरन्त थाने में गये। मैंने थाने के ओ. सी. से बात की और उन्हें पूरी बात बतायी तो उन्होंने एक एस.आई. को जिसका नाम मसूद था, मेरे साथ निपोन के पास होटल में भेज दिया।

एस.आई. ने निपोन से कहा कि तुम इतने इज्ज़तदार आदमी हो और तुम्हारा भाई ऐसी हरकतें करता है और तुम इनका मोबाइल हर हालात में वापस दिलवा दो, वरना यह तुम लोगों के लिए ठीक नहीं रहेगा। अभी हमने रिपोर्ट दर्ज नहीं की है, क्योंकि तुम परिचित हो, लेकिन आज शाम तक तुम अगर महमूद से इनका फ़ोन वापस नहीं दिलाओगे तो तुम्हारे ि़खलाफ़ मुझे कोई ऐक्शन लेना पड़ेगा। निपोन ने उस एस.आई. की दो लोगों से मोबाइल पर बात करवाई जो एस.आई. के जानने वाले थे लेकिन एस.आई. ने उनको यही जवाब दिया कि बात फ़ॉरेनर आदमी की है और ओ. सी. साहब की जानकारी में है, इसलिए मैं कुछ नहीं कर सकता। बस आज न दे तो कल तक दिलवा देना। फिर हम लोग एस.आई. समेत वापस आ गये और एस.आई. ने अपना मोबाइल नम्बर मुझे दे दिया और कहा कि कल मुझे फ़ोन कर लेना, कल ही तुम्हारा फ़ोन वापस मिल जायेगा।

अगले दिन सुबह शाहीन भाई मेरे पास आये और कहा कि निपोन ने मुझे फ़ोन किया था और तुम्हें और मुझे होटल बात करने के लिए बुला रहा है। हम दोनों जब होटल में गये तो वहाँ पर वह लड़का, जो उस दिन महमूद के साथ था जिस दिन मोबाइल महमूद ले गया था। क़रीब 40 साल के एक आदमी के साथ बैठा हुआ था। उस आदमी ने बहाने से शाहीन भाई के नीचे काम से भेज दिया। शाहीन भाई उसके कहने से नीचे चले गये थे, क्योंकि वह उसे जानते थे। उस आदमी ने मुझे अपना परिचय यह कह कर दिया कि मैं लीटू भाई का सगा छोटा भाई हूँ और यह जो लड़का है, मेरा साला है। तुमने

https://t.me/Sahityajunction

पुलिस के पास जा कर ठीक नहीं किया, लेकिन कोई बात नहीं अब पुलिस के पास मत जाना और अगर जाओ तो पहले लीटू भाई के बारे में पता कर लेना और अब तुम्हारा मोबाइल नहीं मिल पायेगा, क्योंकि महमूद का कुछ पता नहीं चल रहा है।

मैं उनकी सारी बातें सुन कर वापस आ गया और शाहीन भाई को फ़ोन करके वापस अपने फ़्लैट पर बुला लिया। शाहीन भाई से मैंने लीटू के बारे में पूछा तो उन्होंने मुझे बताया कि लीटू भाई पूरे बांग्लादेश का पहले तीन डॉन में आता है और इनके सगे चाचा खुलना के सांसद है और अपने मोबाइल को छोड़ो, वह कोई इतनी बड़ी चीज़ नहीं है। मैंने कहा, भैया, मोबाइल तो अब हर हालत में मैं वापस लूँगा, ज़्यादा-से-ज़्यादा ये होगा कि मुझे खुलना छोड़ कर किसी बांग्लादेश के अन्य शहर में जाना होगा। मैं जानता हूँ कि आपको खुलना में इन्हीं के साथ रहना है इसलिए आप खुल कर मेरे साथ मत आइये। बस पीछे रह कर मेरी हल्की-सी सहायता करते रहिए। मैं अपने दिल में यही विचार बना चुका था कि अगर इन्होंने मुझे किसी भी रूप में परेशान किया तो मैं इन्हें सबक सिखा कर यहाँ से ग़ायब हो जाऊँगा और यह बात शाहीन भाई को भी मैंने समझा दी थी।

मैं शाम को ही उस एस.आई. को ले कर निपोन के पास पहुँच गया, लेकिन निपोन ने पहले की तरह ही बहाने बनाये और उस दिन भी फ़ोन नहीं मिला। मैंने नीचे आ कर एस.आई. से कहा कि आप मुझे मेरा मोबाइल वापस दिला देंगे तो मैं आपको 10 हज़ार टका गिफ़्ट में दूँगा। वह यह बात सुन कर ख़ुश हो गया और कहने लगा कि कल ही दिला दूँगा। जब मैं वापस अपने फ़्लैट पर आया तो शाहीन भाई मेरे पास आये और बोले की लीटू के उसी भाई का फ़ोन मेरे पास आया था और बहुत नाराज़ हो रहा था कि तुम दोबारा एस.आई. को ले कर निपोन के होटल में गये। शाहीन भाई ने मुझसे यह भी कहा कि संजय भाई, ये लोग बहुत ख़तरनाक हैं और उन्होंने और भी बातें इन लोगों के बारे में बतायीं।

मैंने उनकी सारी बातें सुन कर उनसे सिर्फ यह कहा कि भैया मेरी यह मजबूरी है कि मैं यहाँ पर बिना किसी झंझट के रहना चाहता हूँ, लेकिन कोई मुझे डराने की कोशिश करे और मैं डरूँ, ऐसा नहीं हो सकता, अगर आपको डर है तो मेरा साथ भले ही मत दीजिए। उन्होंने मुझसे कहा कि पीछे से मैं आपके साथ हूँ और उसने मुझे रात को ही इनके सांसद चाचा से घर पर ले जा कर मिलवाया। इन सांसद महोदय का घर मेरे फ़्लैट से बिलकुल पास में ही था और शाहीन भाई उनको अच्छी तरह से जानते थे। सांसद महोदय ने शाहीन भाई से कहा कि तुम लोग चिन्ता मत करो बाक़ी मैं उन लोगों से ज़्यादा मतलब नहीं रखता हूँ।

अगले दिन मैं एस.आई. को ले कर निपोन के पास होटल में गया। एस.आई. ने निपोन को चेतावनी दी तो निपोन इस बात के लिए तैयार हो गया, कि मैं तुम्हें एक नया मोबाइल और सिमकार्ड ले कर दे देता हूँ। एस.आई. भी इसके लिए तुरन्त तैयार हो गया, लेकिन मैंने मना कर दिया और कहा कि मुझे अपना वही मोबाइल चाहिये। हम लोग वहाँ से वापस आ गये। सभी ने मुझे समझाया कि तुम नया मोबाइल फ़ोन उससे ले लो, लेकिन मैं नहीं माना। एस.आई. को ले कर 2-3 दिन मैं निपोन के होटल लगातार गया तो परेशान हो कर निपोन ने महमूद से मेरा मोबाइल मँगा कर मुझे दे दिया। जिस

https://t.me/Sahityajunction

दिन मोबाइल दिया उस दिन शाहीन भाई भी मेरे साथ थे।

मैंने उस मोबाइल फ़ोन और सिम कार्ड को उनके सामने ही तोड़ दिया और नीचे आ कर उस एस.आई. को 10 हज़ार टका दिया जो मैंने उससे मोबाइल दिलाने के बाद देने का वादा किया था। वह एस.आई. यह कह कर चला गया कि अगर आगे कोई काम हो तो मुझे बता देना और कोई परेशानी हो तब भी और जब तक खुलना में हो, थोड़ा सावधानी से रहना, क्योंकि यह शहर हमारे देश का सबसे ख़तरनाक शहर है। बस यह मोबाइल का मसला यहीं ख़त्म हो गया।

https://t.me/Sahityajunction

4. विश्वविद्यालय में

इसके बाद आगे की प्लानिंग बनाते हुए मैंने विचार किया कि मुझे अब जल्दी से नार्थर्न यूनिवर्सिटी में दाख़िला ले लेना चाहिए, क्योंकि अब तक मुझे जो भी खुलना शहर में मिला, वह यही पूछता था कि मैं यहाँ पर किसलिए आया हूँ, इसलिए मैंने शाहीन भाई से दाख़िले के बारे में बात की। मैं और शाहीन भाई अगले दिन नार्थर्न यूनिवर्सिटी के ऑफिस में गये और हमने दाख़िले के बारे में पूरी जानकारी हासिल की। ऐडमिशन में जिन-जिन काग़ज़ों की ज़रूरत थी वे सभी काग़ज़ शाहीन भाई ने मेरे कहे अनुसार कम्प्यूटर वाले से फ़र्जी तैयार करवा दिये। उन काग़ज़ों को दिखा कर मैंने ऐडमिशन ले लिया। मेरा सब्जेक्ट था इंगलिश ऑनर्स।

नार्थर्न यूनिवर्सिटी प्राइवेट यूनिवर्सिटी थी जिसमें लगभग 500 लड़के-लड़कियाँ अलग-अलग क्लासों में पढ़ते। क्योंकि मुझे बिलकुल भी बांग्ला बोलनी नहीं आती थी और जो भी बंगाली मैं बोलता था, वह उल्टा-पुल्टा ही बोलता था, इसलिए पूरी क्लास और पूरे कैम्पस के लिए मैं सेण्टर ऑफ़ अट्रेक्शन था और सभी लड़के-लड़कियाँ मुझसे बात करने के लिए उत्सुक रहते थे। क्लास की कुछ लड़कियाँ मुझे बंगाली भाषा सिखाने की कोशिश करती रहती थीं। इनमें एक लड़की का नाम आयशा था जो काफ़ी सुन्दर थी और मुझे पसन्द भी करने लगी थी। यह लड़की बहुत पैसे वाले अमीर घराने से थी और इसके पिता की बहुत बड़ी ा़fफश फ़ैक्टरी थी। इसकी एक छोटी बहन भी थी और ये लोग मुस्लिम थे।

क्लास में एक और लड़की थी जो मुझसे ख़ूब बातें करती थी। यह लड़की हमेशा बुर्के में रहती थी और इसकी सिर्फ आँखें ही दिखती थीं। एक हुसैन नाम का लड़का, जो बिलकुल जोकर की तरह दिखता था, इस बुर्के वाली लड़की पर ख़ूब लाइन मारता, लेकिन यह बुर्के वाली उसको बिलकुल भी घास नहीं डालती थी। हुसैन सोचता था कि वह मेरे कारण उसको घास नहीं डालती, इसलिए हुसैन मुझे अपनी बदमाशी और बहादुरी के ि़कस्से सुना-सुना कर डराने की नाकाम कोशिश किया करता था। और मैं यह सोच-सोच कर मन-ही-मन हँसता रहता था कि अगर इस चूज़े को यह पता चल जाये कि मैंने क्या-क्या कारनामे किये हैं तो इसको कई दिनों तक नींद भी नहीं आयेगी। इस बुर्के वाली लड़की का किसी ने भी चेहरा नहीं देखा था, इसलिए पूरी क्लास ने आपस में शर्त लगायी कि जो इसके चेहरे से नक़ाब हटवा देगा, उसे सब मिल कर एक हज़ार टका इनाम में देंगे। कुछ लड़के-लड़कियों ने कोशिश की, लेकिन उसके चेहरे से नक़ाब नहीं हटवा पाये। मैंने उनसे कहा कि मैं आज र्शितया ही इसके चेहरे से नकाब हटवा दूँगा।

जब क्लास ख़त्म हुई तो मैंने सभी लड़के-लड़कियों से कहा कि आज मेरा बर्थ-डे है और आज सबको मेरी तरफ़ से कॉफ़ी हाउस में पार्टी है। हम 15-20 लड़के-लड़कियाँ और बुर्के वाली लड़की कॉफ़ी हाउस में पहुँच गये। मैंने सबके लिए एक-एक बर्गर और कोल्ड ड्रिन्क का ऑर्डर किया और इस बुर्के वाली लड़की को अपने हाथ से बर्गर दिया और कहा कि इसे तुम्हें खाना ही पड़ेगा। उसने ख़ूब ननुनच और आना-कानी की, लेकिन आा़fखर में उसको अपने चेहरे से नक़ाब हटा कर बर्गर खाना पड़ा और मैंने हुसैन को छोड़ कर लगभग सभी लड़के-लड़कियों से अपने जीते हुए हज़ार टके इकट्ठा किये और

https://t.me/Sahityajunction

क़रीब 800 टके का बिल दे कर 200 अपनी जेब में रखे और सबको ख़ुशी-ख़ुशी वापस भेज दिया।

अगले दिन हुसैन मुझे मिला तो मैंने उससे कहा कि भाई मुझे रोज़-रोज़ चमकाना छोड़ दे और कल हम सबने तेरी नक़ाबपोश को देख लिया है, बस दाँत थोड़े खरगोश की तरह हैं, बाक़ी तेरे लिए फ़िट है।

आयशा इस बात से बहुत नाराज रहती थी कि मैं दूसरी लड़कियों से क्यों बात करता हूँ और जब मैं बात करता था तो आयशा बीच में ज़रूर आ जाती थी। इन्हीं दिनों मेरे मोबाइल पर बार-बार एक मैसेज आता था जिसमें लिखा रहता था— टेक टू रोज़ेज़ इन योर हैण्ड ऐण्ड स्टैण्ड इन फ्रण्ट ऑफ़ द मिरर, यू विल सी थ्री रोज़ेज़, बिकॉज़ यू आर द थर्ड वन।

कई दिनों तक यह मैसेज मुझ परेशान करता रहा। जब भी मैं मैसेज ने वाले नम्बर पर रिडायल करता तो वह नम्बर हमेशा बन्द मिलता। वैसे मुझे आयशा पर ही शक था, क्योंकि वही मुझ से बातों-बातों में कहती कि आजकल तो बहुत लड़कियों के फ़ोन कॉल और एस. एम. एस. तुम्हारे मोबाइल पर आते हैं, लेकिन एक दिन जैसे ही मैसेज आया, मैंने अपने दूसरे मोबाइल नम्बर से उस फ़ोन पर कॉल किया तो आयशा की छोटी बहन ने फ़ोन रिसीव किया और फिर एकदम से आयशा ने अपनी छोटी बहन से फ़ोन ले कर मुझसे बात की और कहने लगी कि सॉरी ये मेरी छोटी बहन आपको बार-बार फ़ोन करके परेशान कर रही थी, जिसकी मुझे जानकारी नहीं थी, लेकिन मुझे मालूम था कि यह मैसेज आयशा ही किया करती थी, क्योंकि उसकी छोटी बहन सिर्फ छठी क्लास में पढ़ती थी। आयशा ने अपने पूरे परिवार से मुझे मिलवाया हुआ था और उसके मम्मी-पापा भी मुझे काफ़ी पसन्द करते थे।

एक दिन आयशा की मम्मी ने मुझे फ़ोन किया और कहा कि बेटे इस आयशा पर एयर होस्टेस बनने का भूत सवार है ज़रा तुम इसे समझाओ कि अपनी पढ़ाई में ध्यान दे। मैंने कहा आण्टी जी यह तो बहुत आसान है। आप एक बार इसे अपने साथ हवाई जहाज़ के सफ़र में ले जा कर दिखा दीजिये कि कैसे एयर होस्टेस को लोगों के जूठे बर्तन खाने के बाद उठाने पड़ते हैं तब इसको मालूम पड़ जायेगा कि एयर होस्टेस और वेटर में सिर्फ इतना फ़र्क है कि वेटर धरती पर सर्व करके जूठे बर्तन उठाता है और वो हवा में। इसके अलावा एयर होस्टेस का कोई काम नहीं।

आण्टी जी ने मुझे घर पर खाने के लिए बुलवाया ताकि मैं यही बात आयशा को भी समझा सकूँ। जो फ़्लैट मैंने किराये पर लिया हुआ था उसकी साफ़-सफाई के लिए एक बुज़ुर्ग महिला आती थी, लेकिन अपने लिए दाल-सब्ज़ी मैं ख़ुद बनाता था। वह महिला मेरे लिए सिर्फ रोटियाँ बना देती थी। इन महिला के साथ इनकी एक पोती भी रोज़ साथ में आती जिसकी उम्र क़रीब 4 साल थी और उसका नाम ईमा था। मैं सुबह क़रीब 6 बजे सो कर उठता था और फिर घूमने जाता था। क़रीब 7.30 बजे वापस आता तो वह महिला और उनकी पोती ईमा मेरे फ़्लैट के दरवाज़े पर खड़ी मिला करती थी।

महिला अपने काम साफ़-सफाई में लग जाती थी और मैं सब्ज़ी बनाने में लग जाता था। सब्ज़ी बनाते-बनाते मैं ईमा के साथ खेलता रहता था। यह छोटीसी और काली-सी,

https://t.me/Sahityajunction

लेकिन बहुत तेज़ बच्ची थी और थोड़ी-थोड़ी देर के बाद मुझे बात-बात पर हाथ का इशारा करते हुए थप्पड़ दिखाती थी, जब मैं इसको कहीं बन्द कर देता था तो चिल्ला कर बोलती थी—अंकल अब कोरबो ना। जब खोलता था फिर वैसे ही करती थी। क़रीब 9.30 बजे मैं नहा-धो-कर तैयार हो जाता था और फिर ईमा और मैं दोनों फटाफट नाश्ता करते थे। इसके बाद ईमा और उसकी दादी चले जाते थे और 10 बजे के क़रीब मैं यूनिवर्सिटी चला जाता था।

कैम्पस में टेबल-टेनिस, इण्टरनेट, आयशा और दूसरी लड़कियों से बातचीत करता। क्लास में मैं न जाता क्योंकि मैं इण्डिया में ही ग्रेजुएशन कर चुका था। यही सब करते-करते दिन का एक-डेढ़ बज जाता था। 2 बजे के क़रीब अपने फ़्लैट पर आ कर खाना खा कर 5 बजे तक आराम करता था। क़रीब 6 बजे के आस-पास नहा-धो कर मैं शाहीन भाई के साथ खुलना शहर की एक मार्किट जिसका नाम न्यू मर्केंट था में घूमने जाता था। जब मैं 6 बजे फ़्लैट से निकलता था तो रोज़ मुझे शाहीन भाई का 4 साल का लड़का तौफ़ीक बिल्डिंग के कम्पाउण्ड में खेलता हुआ मिलता था। जब मैं उससे पूछता था अब्बू कोथाय—पापा कहाँ है? तो वह रोज़ एक ही जवाब देता था—अंकल आप कोथाय जान—अंकल आप कहा जायेंगे? मैं उसको बोलता—आमी घूरते जाबो—मैं घूमने जाऊँगा। तो वह बोलता— अंकल, आपनी ऐकला जाते होबे ना। आपनी की बाड़ीर एड्रेस चिन्नी, आपनी की रकम वापस आशबे—अंकल, आप क्या अकेले जायेंगे, आपको घर का पता मालूम है। जब मैं उसको बोलता—पता नहीं मालूम मुझे तो वह बोलता कि आप वापस कैसे आओगे। आपनी आमा के साथी नीये जान आमी बाड़ीर एड्रेस जानी—आप मुझे अपने साथ ले चलिए, मुझे घर का पता मालूम है।

तब मैं तौफ़ीक को अपने साथ कॉलोनी से बाहर एक छोटी मार्किट तक घुमाने ले जाता था। जब भी हम दोनों जाते थे तो उस कॉलोनी के 7-8 गरीब बच्चे भी हमारे पीछे-पीछे हो लेते थे। इस छोटी मार्किट से मैं, तौफिक और इन सभी बच्चों को किसी दिन आइसक्रीम, किसी दिन चॉकलेट, किसी दिन जूस, जो भी तौफ़ीक बोलता था, दिला देता था। जैसे ही तौफ़ीक के हाथ में खाने-पीने की चीज़ आती थी वह मुझसे बोलता था —अंकल अब बाड़ीर जाते होबे, अम्मा राग करबो अंकल अब घर चलिए अम्मी इन्तज़ार करती होंगी और नाराज होंगी। जब मैं उससे बोलता कि तुम्हारे बिना मैं वापस घर कैसे जाऊँगा क्योंकि मुझे तो घर का पता मालूम नहीं तो वह मुझे हाथ पकड़ कर घर तक ले आता।

जितनी देर में जब तक हम बाज़ार से वापस आते तो इसके पिता शाहीन भाई भी नीचे कम्पाउण्ड में आ चुके होते थे। कम्पाउण्ड में आने के बाद तौफ़ीक रोज़ मुझसे बोलता कि अंकल आपनी जान अंकल अब आप जाओ, अगर आप खो जाओ तो किसी भी रिक्शे वाले से बोलना कि मुझे निराला शिशु पार्क के सामने छोड़ दो फिर आप घर आ जाओगे। तौफ़ीक मुझसे 2-3 बार पता पूछता कि मुझे याद हुआ या नहीं और मैं कहीं खो न जाऊँ।

यह रूटीन क़रीब-क़रीब रोज़ ऐसा ही रहता था। सिर्फ मंगलवार या कोई ज़रूरी काम पड़ने पर ही कुछ बदलाव होता था। हर मंगलवार को मैं तौफ़ीक को ले कर शाम को 6 बजे मन्दिर घुमाने ले जाता था। खुलना शहर के बड़ा बाज़ार में यह मन्दिर था जब

https://t.me/Sahityajunction

हम मन्दिर के नज़दीक पहुँचते थे तो मैं तौफ़ीक को मन्दिर के बाहर एक दुकान पर बैठा दिया करता था और फिर फटा-फट पूजा-पाठ करके वापसी में तौफ़ीक को दुकान से साथ ले लेता था। ऐसा मैं इसलिए करता था, क्योंकि तौफ़ीक मुस्लिम था और मैं यह नहीं चाहता था कि उसके माता-पिता या अन्य कोई धर्म को ले कर बात बनाये।

वापसी में हर मंगलवार को हम दोनों रॉयल होटल में जा कर खाना खाते थे। रॉयल होटल एक थ्री स्टार होटल था। जब मैं इस होटल में पहली-पहली बार खाना खाने गया तो मैं अकेला था। मैंने मीनू देख कर सब्ज़ी-पुलाव और चपाती मँगाई तो वेटर ने मुझसे कहा, कि सर, हम सिर्फ सब्ज़ी रोटी सव्र नहीं कर सकते हैं। मैंने मैनेजर से जा कर कारण पूछा तो उसने मुझसे कहा, कि सर, आप माइण्ड मत करना असल में सब्ज़ी-रोटी का बिल मात्र डेढ़-दो सौ टका ही आयेगा। मैंने उससे कहा—भई, आपके मीनू में वैजेटेरियन फूड, में जब इसके सिवा कुछ है ही नहीं तो मैं क्या करूँ? मैं प्योर वेजिटेरियन हूँ। अगर ज़्यादा बिल लेना है तो आप मुझसे डबल पैसे ले लेना, उसने कहा, नहीं सर, डबल पैसे नहीं लेंगे, आप बैठ जाइए मैं समझ गया हूँ कि आप निरामिष हैं, वेटर आपको खाना सर्व कर देगा।

खाना खाने के बाद मैंने आइसक्रीम बगैरा मँगा ली, जिससे कि बिल कुछ ज़्यादा आये। होटल में ऐसा होने के बाद से ही मैं तौफ़ीक को अपने साथ ले जाने लगा था, क्योंकि मैं उसको तरह-तरह की मछलियों का सालन खिलाया करता था, और ख़ुद सब्ज़ी-रोटी ही खाया करता था। इससे बिल कुछ ज़्यादा आता था और होटल वाले को कोई दिक़्क़त भी नहीं होती थी। बाद में मुझे यह भी पता चल गया था कि बांग्लादेश में जो लोग सब्ज़ी-दाल-रोटी, खाते हैं, उन्हें ग़रीब माना जाता है; लेकिन मेरी मजबूरी थी क्योंकि मैं वेजिटेरियन था। एक दिन जब मैं और तौफ़ीक मन्दिर से वापस आ रहे थे तो तौफ़ीक ने मुझसे पूछा कि अंकल आप मुझे दुकान पर बिठा कर कहाँ जाते हैं तो मैंने उससे कहा कि अल्लाह के पास। जैसे ही मैंने तौफ़ीक को यह कहा तो सामने मस्जिद में अज़ान हो रही थी। उसने मुझसे अज़ान के बारे में पूछा कि ये क्या बोल रहे हैं। मैंने तौफ़ीक को बताया कि ये लोग अल्लाह को याद कर रहे है।

उसने मुझसे कहा कि अल्लाह की करबो, अल्लाह क्या करते हैं? मैंने कहा कि तुम जो अल्लाह से माँगोगे वो तुम्हें वही देंगे। उसने कहा कि मुझे क्या करना पड़ेगा अल्लाह से चीज़ लेने के लिए। मैंने कहा कि आज जब तुम्हारी अम्मी नमाज़ पढ़ेगी तो तुम फटाफट जा-नमाज़ बिछा देना जो तुम्हारे कमरे में अलमारी है उसके पीछे से अल्लाह तुम्हें देखता रहेगा। फिर अल्लाह तुम्हें अच्छी-अच्छी चीजें खाने को देगा, अगर तुम नमाज़ पढ़ते हुए अपनी अम्मी को परेशान नहीं करोगे। उस दिन तौफ़ीक ने घर जा कर नमाज़ के टाइम से पहले ही कमरे में अलमारी के सामने ज़ा-नमाज़ बिछा दी और अपनी अम्मी और दूसरे लोगों को घर के हाथ से पकड़-पकड़ कर कहने लगा कि नमाज़ पढ़ो, अलमारी के पीछे से अल्लाह देख रहा है।

तौफ़ीक की इस हरकत पर सबको आश्चर्य हुआ, क्योंकि रोज़ वह नमाज़ के टाइम पर ही टी.वी. चला देता था, तब मैंने तौफ़ीक के बारे में घरवालों को बताया कि मैंने तौफ़ीक को ऐसा करने को बताया था कि ऐसा करने पर तुम्हें चाकलेट और अन्य चीजें मिलेगी। मैंने फटा-फट उसको अलमारी के पीछे जा कर जेब से निकाल कर चाकलेट दे

https://t.me/Sahityajunction

दी। वह बहुत ख़ुश हुआ और रोज़ ऐसे ही करने लगा। ऐसे ही घूमते-घूमते मैं और तौफ़ीक बाज़ार से जब एक बार घर आ रहे थे तो मैं उसको अपने साथ ए. टी. एम. मशीन से पैसे निकालने साथ ले गया, जब तौफ़ीक ने ए. टी. एम. मशीन से टके निकलते देखे तो वह बहुत ख़ुश होते हुए पूछने लगा और बताने लगा कि अंकल कहाँ से टका निकल रहा है। मैंने कहा बेटे, ये टका मशीन है, यहाँ से टका मिलता है। इसके बाद जब भी वह मेरे या अपनी अम्मी-अब्बू के साथ उस ए. टी. एम. के सामने से जाता तो ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाने लगता कि अंकल, टका लेते होबे—यहाँ से टका लेंगे, क्योंकि मुझे टके से बहुत चीजें ख़रीदनी हैं।

वह 4 साल का तौफ़ीक यह सोचता था कि मशीन से जो चाहे टका ले सकता है, इसलिए मुझे जब भी टका निकालना होता तो मैं तौफ़ीक को साथ ले जा कर उसी से टका निकलवाता था। कभी-कभी मैं तौफ़ीक को अपने साथ इण्टरनेट कैफे में ले जाता था। तौफ़ीक वहाँ पर शरारत न करे, इसलिए मैं उसको बताता था कि तुम यहाँ आराम से बैठ कर कम्प्यूटर के सामने रखे माउस से खेलते रहो। मैंने उससे कहा कि तौफ़ीक, तुम कुछ देर ऐसा करोगे तो माउस के नीचे से यह कम्प्यूटर तुम्हें टका देगा। वह हर थोड़ी देर में उस माउस को उठा कर देखता रहता कि टका आ गया कि नहीं और मैं तौफ़ीक की बग़ल में बैठ कर दूसरे कम्प्यूटर पर अपना काम करता रहता था। जब मेरा काम पूरा हो जाता था, तो मैं तौफिक की नज़र बचा कर चुपचाप माउस के नीचे टका रख देता था और उससे कहता कि अब देखो तो, टका आया कि नहीं। वह देखता तो उसे मेरा रखा हुआ टका मिल जाता था। तब तौफ़ीक बहुत ख़ुश हो जाता था। ऐसा मैं इसलिए करता था कि इससे तौफ़ीक की दिलचस्पी कम्प्यूटर में पैदा हो।

https://t.me/Sahityajunction

5. ढाका में

ऐसे ही समय कट रहा था और क़रीब 3-4 महीने इसमें कट गये। लेकिन ऐसा नहीं था कि मैं अपने मक़सद से भटक गया था। मैं फ़ोन पर लगातार ऐसे लोगों से सम्पर्क करने में लगा हुआ था जो अफ़ग़ानिस्तान से आख़री हिन्दू-सम्राट पृथ्वीराज चौहान की समाधि को वापस हिन्दुस्तान की धरती पर लाने में मेरी मदद कर सकते थे और ऐसे ही फ़ोन पर मेरा सम्पर्क क्षत्रिय महासभा के कार्यकारी अध्यक्ष डॉक्टर शिवराम सिंह गौर से हो गया। उन्होंने मुझसे कहा कि हम हर तरह से आपकी मदद करेंगे।

मुझे कई धार्मिक संगठनों के नेता और कुछ बड़े राज-नेताओं ने भी फ़ोन पर आश्वासन दिया था कि वे इस कार्य में मेरी हर तरह से सहायता करने को तैयार हैं। क्योंकि अब मैं पूरी तरह से बांग्लादेश में सेट हो चुका और बंगाली भाषा भी कुछ-कुछ बोलना और समझना सीख गया था, इस दौरान मैंने शाहीन भाई की सहायता से शादाब ख़ान के नाम से अपना एक बांगलादेशी पासपोर्ट भी बनवा लिया था। मैं अपने दोनों पासपोर्ट संजय गुप्ता के नाम से, भारतीय पासपोर्ट और शादाब ख़ान के नाम से बांगलादेशी पासपोर्ट ले कर शाहीन भाई को साथ ले कर बांग्लादेश की राजधानी ढाका आ गया, क्योंकि सभी देशों के दूतावास ढाका में ही थे।

मैंने शाहीन भाई को अफ़ग़ानिस्तान एम्बेसी में भेजा और पता कराया कि बांग्लादेशी आदमी को वहाँ का वीज़ा लेने के लिए क्या-क्या फ़ॉरमैलिटी करनी पड़ेगी। मैं इसलिए नहीं गया था क्योंकि मेरी बंगाली अभी इतनी अच्छी नहीं थी और वे समझ सकते थे कि मैं बांग्लादेशी नहीं हूँ। शाहीन भाई ने सभी फ़ॉरमैलिटी जो बांग्लादेशी को अफ़ग़ानिस्तान जाने के लिए करनी थी, मुझे आ कर बतायी। वह इतनी सख़्त थी कि उसे पूरा करने में बहुत परेशानियाँ थीं। शाहीन भाई के वापस आने के बाद मैं ख़ुद अपना इण्डियन पासपोर्ट ले कर अफ़ग़ानिस्तान एम्बेसी में गया और उनसे वीज़ा के बारे में पता किया तो एम्बेसी वालों ने बताया कि हम आपको यहाँ से वीज़ा नहीं दे सकते, क्योंकि आपके पास इण्डियन पासपोर्ट है और आपको दिल्ली या मुम्बई से वीज़ा मिल जायेगा। मुम्बई से वीज़ा लेने के लिए मुझे किन-किन काग़ज़ों की ज़रूरत पड़ेगी और क्या-क्या फ़ॉरमैलिटी पूरी करनी होगी यह जानकारी ले कर मैं वापस आ गया।

इसके बाद शाहीन भाई और मैं वापस अपने होटल में आ गये। क्योंकि शाहीन भाई भी ढाका कम ही आये थे और मैं तो पहली बार आया था, इसलिए हम ग़लती से ऐसे होटल में रुक गये थे, जिसमें ज़बरदस्त कॉल गर्ल रैकेट चलता था। यह होटल ढाका की एयरपोर्ट रोड पर था और यहाँ से सभी एम्बेसियाँ पास में थीं इसलिए हम लोग यहाँ रुक गये थे। हमें बाद में यह भी पता चला था कि इस एयरपोर्ट रोड पर जितने ही होटल हैं, उन सभी में कॉल गर्ल का रैकेट चलता है, क्योंकि इन होटलों में बहुत ज़्यादा फॉरेनर आते थे। सुबह जब हमने चेक इन किया था तब यहाँ का माहौल ऐसा नहीं लगा था, लेकिन जब हम उस रात को वापस आये थे तो लगभग हर कमरे के सामने लड़कियाँ घूम रही थीं।

शाहीन भाई और मैं अपने कमरे में गये तो थोड़ी देर में ही एक आदमी आया और उसने शाहीन भाई से लड़की के बारे में पूछा कि क्या आप लोगों को लड़की चाहिये। शाहीन

https://t.me/Sahityajunction

भाई ने मुझे उस आदमी के आने का पऱपज बताया और पूछा कि क्या तुम्हें लड़की चाहिए? पहले तो मैंने उसे मना कर दिया फिर मैंने यह सोच कर उनसे हाँ कर दी कि देखता हूँ कि कॉल गर्ल का काम करने वाली लड़कियाँ कैसी होती हैं? और ये लोग ऐसा क्यों करती हैं? शाहीन भाई ने कमरे से बाहर निकल कर उस आदमी से बात की और वापस आ कर मुझे बताया कि एक लड़की के 2 हज़ार टका माँग रहा है। मैंने कहा कोई बात नहीं 2 हज़ार टके में कोई शिक्षा ही दे कर जायेगी।

थोड़ी देर बाद वह आदमी एक लड़की के साथ कमरे में आया। वह लड़की कमरे में एक सोफ़े पर बैठ गयी और शाहीन भाई यह कह कर उस आदमी के साथ बाहर चले गये कि जब तुम फ्री हो जाओ तो मेरे मोबाइल पर फ़ोन कर देना। उनके जाने के बाद उस लड़की से बंगाली भाषा में बात करनी शुरू की। मैंने उस लड़की से पहले उसका नाम पूछा तो उसने मुझे अपना नाम मिष्टी बताया। मैंने उससे कहा कि क्या तुम हिन्दू हो तो उसने कहा हाँ। मैंने जब उससे कहा कि तुम इतनी सुन्दर हो और ऐसा काम क्यों करती हो तो उसने बंगाली भाषा में ही जवाब दिया कि तुम अपना काम जल्दी करो और मुझे फ्री करो। मैंने उससे कहा कि तुम बस मुझसे एक घण्टे बात करो और अपने और यहाँ के बारे में बताओ। पहले वह तैयार नहीं हुई, क्योंकि वह मुझे पुलिस वाला समझ रही थी, लेकिन जब मैंने उसे बताया कि मैं तो इण्डियन आदमी हूँ और क्या तुम मेरे बंगाली भाषा बोलने के तारीके से नहीं समझ रही हो कि मैं बांग्लादेशी नहीं हूँ तो उसे यक़ीन हो गया और वह मुझसे ख़ूब दिल खोल कर बात करने लगी।

वह मुझसे बोली कि अभी तुम मुझे सुन्दर कह रहे थे तो क्या मुझे मुम्बई की फ़िल्मों में काम मिल सकता है। मैंने उसको कहा कि उसके लिए वहाँ पर जानपहचान होनी चाहिये और एिंक्टग भी आनी चाहिये। उस लड़की ने अपने परिवार और अपनी पढ़ाई-लिखाई के बारे में भी बताया और आिख़र में यह बताया कि वह मुस्लिम है, लेकिन होटल में जितनी भी लड़कियाँ हैं उन सभी लड़कियों को हिन्दू नाम दिये हुए हैं और अपनी पहचान भी हिन्दू के रूप में ही देने को कहा हुआ है। इस बातचीत के दौरान उसने मुझे 3-4 बार सेक्स करने को भी कहा, किन्तु मैंने मना कर दिया, क्योंकि मैं सेक्स करना नहीं चाहता था। इसका कारण यह था कि मैंने कभी सेक्स नहीं किया था, और मेरी यह इच्छा भी नहीं थी कि मैं किसी कॉलगर्ल के साथ सेक्स करूँ।

बातचीत करते-करते क़रीब 2 घण्टे बीत गये तो उधर से शाहीन भाई का फ़ोन आया और बोले कि क्या रात को मुझे बाहर सड़क पर ही सोना पड़ेगा। मैंने उनसे कहा कि आप तुरन्त आ जाइये, मुझे समय का पता ही नहीं चला। जब शाहीन भाई वापस कमरे में आये तो मैंने उस कॉलगर्ल को जिसका नाम मिष्टी था वापस भेज दिया। जब मैंने शाहीन भाई को बताया कि मैंने उस लड़की के साथ सेक्स नहीं किया और सिर्फ बातें कीं तो उन्हें मेरी बातों पर यक़ीन नहीं हुआ लेकिन बाद में मैंने उन्हें यक़ीन दिलवा दिया। शाहीन भाई बोले कि सिर्फ बात करने के लिए 2 हज़ार टका ख़राब करने की क्या ज़रूरत थी, तो मैंने बस इतना ही कहा कि लोग-बाग हज़ारों की किताबें पढ़ते हैं अपनी सेक्स नॉलेज बढ़ाने के लिए मैंने तो सिर्फ 2 हज़ार टके में ही बिलकुल असली जानकारियाँ उससे ले ली हैं, जो शायद किताबों में भी न मिलें।

सुबह उठ कर सबसे पहले हमने होटल से चेक आउट किया, लेकिन अपना सामान

https://t.me/Sahityajunction

काउण्टर पर हीं रख दिया। और मैं अपना इण्डियन पासपोर्ट ले कर शाहीन भाई के साथ पाकिस्तानी एम्बेसी में गया। जब हम लोग वहाँ पहुँचे तो पता चला कि जिन लोगों को पाकिस्तान का वीज़ा लेना होता है उन्हें सुबह 4-5 बजे ही लाइन में आ कर खड़ा होना पड़ता है और इस समय क़रीब 10 बज रहे थे, इसलिए वहाँ कोई नहीं था। हमने एम्बेसी के गेट पर बातचीत की और गेट वाले को यह बताया कि मैं भारतीय हूँ तो उसने इण्टरकॉम पर किसी से अन्दर कही बात की। फिर थोड़ी देर में एक आदमी आया जिसने अपना नाम इरशाद बताया और मुझसे हिन्दी भाषा में ही बात करने लगा। मैंने उससे पाकिस्तान जाने के लिए वीज़ा की जानकारी माँगी तो उसने कहा कि आप लोग कल आ जाइये। उसने कहा कि आप लोगों को लाइन में लगने की ज़रूरत नहीं है। आप सुबह आ कर मेरे मोबाइल पर फ़ोन कर लेना, मैं साहब से मिलवा दूँगा।

अगले दिन हम वहाँ नहीं गये और उसी दिन अपना सामान होटल से ले कर वापस खुलना आ गये। खुलना वापस आने के बाद मैंने इण्डिया वापस आने का प्रोग्राम बना लिया था, क्योंकि अफ़ग़ानिस्तान जाने के लिए मुझे मुम्बई जा कर अफ़ग़ानिस्तान के वीज़ा के लिए अप्लाई करना था। इतने दिनों से यहाँ बांग्लादेश में रहते-रहते मेरे पास घर से लाये पैसे भी ख़त्म होने वाले थे और पैसों का इन्तज़ाम भी मुझे भारत जा कर करना था, जिसका ख़ाका मैंने बांग्लादेश से ही फ़ोन पर कई लोगों से बातचीत करके बना लिया था। अगले दिन मैं अपने इंस्टीटयूट गया जहाँ मैंने ऐडमिशन लिया हुआ था और वहाँ पर ऐप्लीकेशन लगा कर इण्डिया जाने के लिए 15 दिन की हाज़िरी माफ़ी करा ली। आयशा और अपने दूसरे मित्रों को भी मैंने बताया कि कल मैं इण्डिया जाऊँगा।

अगले दिन मैं शाहीन भाई को अपने साथ ले कर इण्डिया बांग्लादेश बॉर्डर पर आया और सभी फॉरमैलिटी पूरी करके इण्डिया की सीमा में चला गया और शाहीन भाई बॉर्डर से वापस खुलना चले गये।

https://t.me/Sahityajunction

6. वापसी

बॉर्डर से सीधा मैं कलकत्ता पहुँचा और कलकत्ता पहुँच कर सबसे पहले मैंने अपने घर पर माताजी को फ़ोन किया। मैंने बांग्लादेश से कभी अपने घर पर फ़ोन नहीं किया था, क्योंकि मैं जानता था कि पुलिस वाले मेरे घर का टेलीफ़ोन टैप कर के सुन रहे होंगे और घर पर फ़ोन करने से उन्हें मालूम पड़ जाता कि मैं बांग्ला देश में हूँ जो कि मैं नहीं चाहता था और मैं पुलिस को यही दिखाना चाहता था कि मैं अभी भारत में ही अपनी फ़रारी काट रहा हूँ। मैंने अपनी माताजी से फ़ोन पर बात करके उनका हाल-चाल जाना और उनको बातों-बातों में ही यह समझा दिया कि आप शाम को 6 बजे के आस-पास घर के सामने जो वकील साहब का घर है वहाँ पर चले जाना। ऐसा मैंने माताजी को इसलिए कहा था क्योंकि मैं शाम को 6 बजे वकील साहब के घर फ़ोन करके वहाँ पर माताजी से खुल कर बात कर सकता था।

माता जी से बात करने के बाद मैंने दूसरी एस.टी.डी. से जा कर डॉक्टर शिवराम सिंह गौर, कार्यकारी अध्यक्ष, क्षत्रिय महासभा से बात की और उनसे मिलने की जगह और समय तय किया। शाम तलक मैं होटल में रहा और फिर 6 बजे के क़रीब अपने घर के सामने वाले वकील भाई साहब के घर पर फ़ोन किया। मेरी माताजी उस समय वहीं पर थी। मैंने माताजी से उनकी तबियत के बारे में पूछा और पिताजी के अन्तिम संस्कार के बारे में पता किया। माता जी ने बताया कि सब ठीक है और अन्तिम संस्कार ठीक हो गया था।

माता जी ने मुझे यह नहीं बताया कि मेरे दोनों भाइयों विक्रम और विजय को, जो उस समय जेल में थे, कोर्ट ने पिताजी के अन्तिम संस्कार के लिए भी पैरोल और ज़मानत नहीं दी थी। माता जी ने मुझे यह बात इसलिए नहीं बताई जिससे कि मैं परेशान न हो जाऊँ। मैंने माताजी से घर के ख़र्चे और पैसों वग़ैरा के बारे में पूछा तो उन्होंने बताया कि जो बिल्डिंग बैंक को किराये पर दी हुई है उसके किराये और ज़मीन से जो पैसे आ रहे हैं उससे उनका ख़र्चा आराम से चल जाता है। कुछ समय पहले जो ज़मीन बेची थी, उसमें से अब सिर्फ 5 लाख रूपये के आस-पास बचे हैं, और इन्हीं पैसों में से वे वकील और मेरे दोनों भाइयों को पैसे देती हैं। मैंने अपनी माता जी को अफ़ग़ानिस्तान जा कर वहाँ से आख़री हिन्दू सम्राट पृथ्वीराज चौहान की समाधि को वापस लाने के प्रोग्राम के बारे में बताया जो बात कि माताजी को पहले से मालूम थी। मैंने माता जी से बताया कि इस काम में काफ़ी ख़र्चा होगा, उन्होंने मुझसे ख़र्चा पूछा तो मैंने उनको बताया कि लगभग मेरे पास 5 लाख रुपये होने ही चाहिएँ। मेरी माताजी ने कहा कि बेटे, तुम इतना अच्छा देश-भक्ति का काम करने जा रहे हो, और तुम पैसों के लिए कोई ग़लत काम मत करना, तुम्हें जितने पैसों की ज़रूरत होगी मैं तुम्हें दूँगी चाहे मुझे कुछ और ज़मीन क्यों न बेचनी पड़े।

मैंने उनको बताया कि मैंने कुछ लोगों से बात की हुई है जो इस काम में मेरी सहायता करने के लिए तैयार हैं और आप मुझे अगर 2 लाख रूपये दे देगी तो मेरा काम चल जायेगा। जो पैसे आपके पास बचेंगे उनको आप वकील और अन्य ख़र्चों में इस्तेमाल कर लेना। मैंने उनको यह भी बताया कि आप पैसे उस मारवाड़ी दुकानदार

https://t.me/Sahityajunction

को, जो घर के पास ही था और जिसे माताजी अच्छी तरह जानती थीं, दे देना। वह पैसे मेरे पास पहुँचा देगा। आपका पैसे ले कर आना कहीं ठीक नहीं है, क्योंकि पुलिस की नज़र आप पर भी हो सकती है। मेरी माता जी ने मुझे बहुत हौसला दिया और कहा कि बेटे ऐसा कोई काम मत करना जिसके कारण समाज में हमारे परिवार की इज़्ज़त ख़राब हो और उन्होंने मुझे मेरे अफ़ग़ानिस्तान वाले कार्य के लिए सफलता का आशीर्वाद भी दिया।

इसके बाद मैंने मारवाड़ी दुकानदार को फ़ोन करके बता दिया कि मेरे घर से 2 लाख रुपये ला कर मुझे कानपुर में देने हैं, जगह और दिन मैंने बाद में फ़ोन करके बताने के लिए कहा। अगले दिन मैं कलकत्ता से कानपुर आ गया, और कानपुर आ कर डाक्टर शिवराम सिंह गौर से उस कॉलेज में जा कर मुलाक़ात की जिस कालेज के उस समय वे प्रिसिंपल थे। मैंने डॉक्टर गौर से कन्धार जा कर वहाँ से सम्राट पृथ्वीराज चौहान की समाधि वापस लाने के अपने कार्य के बारे में बताया, जो कि मैंने उनको पहले टेलीफ़ोन पर बांग्लादेश से बात करके भी बताया हुआ था। डॉक्टर गौर ने मुझसे कहा कि इस शुभ-कार्य के लिए पूरा देश आपके साथ है और यह बड़े दुख की बात है कि जो काम हमारी भारत सरकार को करना चाहिये वह कार्य आपको अकेले करने के लिए मजबूर होना पड़ रहा हे।

मैंने उनको वहाँ जाने के लिए ख़र्च के बारे में बताया तो उन्होंने मुझसे कहा कि मैं आपकी बात जल्द होने वाली क्षत्रिय महासभा की मिंटिग में रखूँगा अगर सभा ने सहायता नहीं भी की तो मैं इस शुभ-कार्य के लिए अपने पास से भी आर्थिक सहायता करूँगा, क्योंकि यह आपका पर्सनल काम नहीं है और आप तो समाज और देश के लिए यह कार्य कर रहे है। उन्होंने मुझे क़रीब 15-20 दिन बाद फ़ोन करके पता करने के लिए कहा कि क्षत्रिय महासभा का क्या जवाब है?

मैंने उस मारवाड़ी को भी कानपुर बुला लिया था और उससे अपने माताजी के द्वारा भेजे हुए 2 लाख रुपये ले लिये थे। इसके बाद मैं कानपुर से मुम्बई आने के लिए वहाँ से निकल गया जिससे कि मुम्बई में अफ़ग़ानिस्तान कॉन्सलेट में अपने अफग़ानिस्तान जाने के लिए वीज़ा की कार्रवाई शुरू कर सकूँ। मुम्बई पहुँचने के बाद मैं जिस होटल में रुका, उसके रिसेप्शनिस्ट से मेरी दोस्ती हो गयी, क्योंकि वह राँची का था और मेरा संजय गुप्ता नाम से जो पासपोर्ट था, जिसको मैंने होटल के रजिस्टर में एण्ट्री करने के लिए इस्तेमाल किया था उसमें मेरा पता भी राँची का था। मैंने रिसेप्शनिस्ट से अफ़ग़ानिस्तान एम्बेसी के बारे में पता किया, क्योंकि मैं पहली बार मुम्बई आया था और मुझे यहाँ के बारे में कुछ भी पता नहीं था।

मैं अगले दिन सुबह क़रीब 11 बजे के आस-पास अफ़ग़ानिस्तान कॉन्सलेट में पहुँचा और वहाँ पर ऑफिस में बैठे हुए एक आदमी से वीज़ा के बारे में जानकारी हासिल की। उस आदमी ने मुझे एक फ़ॉर्म दिया और कहा कि इसे भर कर अपने पासपोर्ट की फ़ोटो-काॅपी के साथ और 4 फ़ोटो लगा कर मेरे पास जमा कर दीजिए, फिर बड़े साहब आपको इण्टरव्यू के लिए उसी समय या लगभग 2 घण्टे बुला लेंगे। मैं फ़ॉर्म ले कर ऑफिस से बाहर आ गया और वहीं कॉन्सलेट के बाहर खड़े हो कर दूसरे लोगों से बात करने लगा जो अफ़ग़ानिस्तान जाना चाहते थे, क्योंकि मैं यह जानना चाहता था कि

https://t.me/Sahityajunction

लोग-बाग वहाँ क्यों और किस काम से जाते हैं, क्योंकि अगर कोई यह लिखेगा कि मुझे वहाँ घूमने जाना है तो एम्बेसी वाले उसकी बात पर कभी विश्वास नहीं करेंगे, क्योंकि वहाँ का माहौल ऐसा नहीं था कि कोई वहाँ घूमने जाये। मैं अपने वहाँ जाने का असली कारण भी फ़ॉर्म में नहीं लिख सकता था।

वहाँ पर कई लोगों से बात करके मैं इस निर्णय पर पहुँचा कि मुझे अपने फ़ॉर्म में यह लिखना चाहिये कि मैं अफ़ग़ानिस्तान जा कर यह देखना चाहता हूँ कि वहाँ से क्या-क्या चीज़ें भारत ला कर बेची जा सकती हैं मैंने अपना फ़ॉर्म वहीं पर भर कर तुरन्त ही ऑफिस में जमा करा दिया। ऑफिस वालों ने मुझे बताया कि आप दिन में 3 बजे आ जाइए। बड़े साहब आपका इण्टरव्यू लेंगे। मैं एक होटल में खाना खा कर फिर 3 बजे के आस-पास वापस वहाँ आ गया। 3 बजे के बाद उस ऑफिस वाले आदमी ने मुझे बड़े अफ़सर के ऑफिस में भेजा। वह अफ़सर क़रीब 50 साल का बड़ा ही रोबीला आदमी था और सूट पहन कर बैठा हुआ था। मैंने पहले ही सोच लिया था कि उस अफ़सर से क्या और कैसे बात करनी है।

सबसे पहले उस अफ़सर ने मुझसे मेरा नाम पूछा, मैंने अपना नाम बताया। और इससे पहले कि वह मुझसे दूसरा प्रश्न करता, मैंने उससे कहा कि सर, मैं आपसे एक चीज़ पूछना चाहता हूँ? उसने कहा कि हाँ पूछो, तो मैंने कहा कि सर मैंने सुना है कि अफ़ग़ानिस्तान में बहुत ही ख़तरा रहता है, तो उसने कहा कि ऐसा किसने कहा? तो मैंने कहा कि सर जो लोग बाहर एम्बेसी के कम्पाउण्ड में खड़े थे वे लोग आपस में बात कर रहे थे। मैंने उसको यह भी कहा कि सर अब मैंने वहाँ जाने के लिए फ़ॉर्म तो भर दिया है, लेकिन अब मुझे उन लोगों की बात सुन कर बहुत डर लग रहा है। ये सब बातें उससे कहते हुए मैंने अपने शरीर और चेहरे के भाव भी ऐसे ही भी ऐसे ही बना लिये थे जैसे मैं बहुत डरपोक आदमी हूँ और इस समय बहुत डर रहा हूँ।

मुझे डरता महसूस करके वह मुझे समझाने लगा और मेरा डर निकालने के लिए अपने देश की तारीफें करने लगा, जिससे कि मुझे दिलचस्पी पैदा हो और मैं वहाँ जाने का अपना इरादा न बदलूँ। मैंने जैसा सोचा था, वैसा ही हुआ और क़रीब 15-20 मिनट तक जब तक मैं उसके ऑफिस में रहा उसने मुझसे कोई प्रश्न नहीं किया कि मैं अफ़ग़ानिस्तान क्यों जाना चाहता हूँ। उसने एक महिला को जिसकी उम्र क़रीब 35 साल होगी, अपने ऑफिस में बुलाया और कहा कि आप मिस्टर संजय गुप्ता को बाहर अपने ऑफिस में समझाइए कि अफ़ग़ानिस्तान कितना अच्छा है, इनको एम्बेसी के बाहर खड़े कुछ लोगों ने मिसगाइड कर दिया है।

मैं उस महिला के साथ उसके ऑफिस में आ गया जहाँ पर 3-4 आदमी और भी बैठे थे। मैं जानता था कि मेरा काम काफ़ी हद तक हो गया है, कुछ देर उस महिला ने भी मुझे समझाया तो मैंने उस महिला से पूछा कि मैडम, अगर मैं वहाँ जाऊँगा तो क्या मेरा पासपोर्ट ख़राब हो जायेगा। उसने कहा क्यों? तो मैंने मन से ही बात बना कर कहा कि बाहर लोग कह रहे थे कि जिस पासपोर्ट पर एक बार अफ़ग़ानिस्तान के वीज़ा की मोहर लग गयी, उसे कोई दूसरा देश डर के मारे वीज़ा नहीं देता है, क्योंकि वे सोचते हैं कि यह कोई जासूस या आतंकवादी हो सकता है। उस महिला ने भी मेरी इन बातों को सुन कर मुझे समझाया कि ऐसा नहीं है, और तुम एक बार वहाँ जा कर ज़रूर देखो। तुम 15

https://t.me/Sahityajunction

दिन के दिन के बाद हमारे ऑफिस में फ़ोन करके पूछ लेना कि तुम्हें वीज़ा मिला है या नहीं। हम लोग तुम्हारे पासपोर्ट की फ़ोटोकापी और जो फ़ॉर्म तुमने हमें भर कर दिया है, उसकी एक कापी और जो तुमने इण्टरव्यू दिया है, उसका नतीज़ा काबुल भेजेंगे। वहाँ से जो जवाब आयेगा तुम फ़ोन पर या ख़ुद आ कर पता कर लेना।

मैं दो फ़ोन नम्बर उनके ऑफिस के ले कर वापस अपने होटल में आ गया। होटल में जा कर मैंने सोचा कि 15-20 दिन मुम्बई या भारत में रुकना ख़तरे से ख़ाली नहीं है, क्योंकि पुलिस मुझे पकड़ने के लिए बुरी तरह से पीछे पड़ी हुई थी और मैं किसी भी हालत में अपने अफ़ग़ानिस्तान वाले काम के सफल होने के पहले पकड़ा नहीं जाना चाहता था। यही सोच कर मैं रात को ही मुम्बई से कलकत्ता वाली ट्रेन में बैठ गया और कलकत्ता आ गया।

कलकत्ता आने के बाद मैंने अपने और अपने दोस्तों के लिए जो मेरे साथ कॉलेज में पढ़ते थे, कुछ कपड़ों वग़ैरा की शॉपिंग की। एक लड़की के लिए, जो मेरी बिल्डिंग के ऊपर वाले फ़्लैट में ही रहती थी, स्काई शॉप से एक गोरा करने वाली क्रीम लेने के लिए गया, जो दीदी स्काई शॉप पर मिली वो मुझे देख कर बोली कि दादा आप इस क्रीम पर दो हज़ार रुपये क्यों जाया करते हो, आप तो पहले से ही इतने गोरे हो। मैंने उनसे कहा कि यह मैंने अपनी एक फ़्रैंड के लिए ली है।

सबके लिए कुछ-न-कुछ सामान ख़रीद कर मैंने एक एस.टी.डी. से शाहीन भाई को बांग्लादेश फ़ोन किया और उनसे कहा कि कल आप बॉर्डर पर आ जाना, मैं सुबह इण्डिया बॉर्डर पर 11 बजे के क़रीब पहुँच जाऊँगा। जब मैं शाहीन भाई से बात कर रहा था तो एस.टी.डी. वाला और उसके साथ जो आदमी बैठा था, वह मेरी बातें सुन-सन कर ख़ूब जोर-जोर से हँस रहे थे। फ़ोन पर बात ख़त्म करके जब मैं बिल देने लगा तो मैंने उस एस.टी.डी. वाले से पूछा कि भैया इतना क्यों हँस रहे हो, तो उन दोनों ने मुझसे कहा कि दादा, आप यह कौन-सी भाषा बोल रहे थे। आपने बंगाली, हिन्दी और इंग्लिश को ऐसे मिला दिया है कि हर सुनने वाले को हँसी आयेगी। मैंने कहा कि भैया, क्या करूँ ताज़ा-ताज़ा बंगाली सीखी है, वैसे आप बताइये इतनी बंगाली भाषा तो मैं बोल लेता हूँ न कि सामने वाला समझ जाये कि मैं क्या बताना चाहता हूँ। वे फिर हँसने लगे और मैं भी हँसने लगा।

https://t.me/Sahityajunction

7. बांग्लादेश

अगले दिन मैं सुबह सारा ख़रीदा हुआ सामान ले कर करीब 11 बजे के आसपास इण्डियन बॉर्डर पर पहुँच गया। मैंने शाहीन भाई के मोबाइल पर फ़ोन किया और उन्हें बताया कि मैं बिना पासपोर्ट के इस बार आपकी तरफ़ बांग्लादेश आना चाहता हूँ। शाहीन भाई ने मुझसे कारण पूछा तो मैंने उनको बताया कि 15 दिन के बाद मुझे दोबारा से इण्डिया वापस आना पड़ सकता है। और अगर मैंने इमीग्रेशन वालों से अपने पासपोर्ट पर दोबारा बांग्लादेश में एण्ट्री का स्टाम्प लगवाया तो फिर मुझे दोबारा वीज़ा लेना पड़ेगा क्योंकि जो मुझे वीज़ा मिला हुआ है, उसमें दो बार ही एण्ट्री करने की इजाज़त है और अगर अब दूसरी बार मैंने उधर एण्ट्री पासपोर्ट से की तो मुझे दोबारा आने में परेशानी होगी।

शाहीन भाई ने मेरी बात सुन कर मुझसे कहा कि तुम मुझे 15 मिनट बाद फ़ोन करो, मैं इधर किसी एजेण्ट से बात करके बताता हूँ। मैंने शाहीन भाई को 15-20 मिनट बाद फ़ोन किया तो उन्होंने मुझे इण्डियन साइड पर एक मनी चेंजर के पास जाने के लिए कहा और उसे जा कर इरशाद भाई से जो शाहीन भाई की तरफ़ मनी एक्सचेंज का काम करता था से बात करने के लिए कहा ताकि इरशाद भाई मेरे बारे में उसे समझा सके। मैं इण्डियन साइड वाले मनी चेंजर के ऑफिस में गया, जिसका नाम चन्दन था। मैंने उसको बांग्लादेश की तरफ़ इरशाद भाई से मेरे बारे में बात करने के लिए कहा। उसने तुरन्त इरशद से बात की और फ़ोन रख कर मुझसे बोला कि तुम्हारे और तुम्हारे दोनों बैग के एक हज़ार रुपये लगेंगे। मैंने उसे एक हज़ार रुपये तुरन्त दिये।

चन्दन ने मुझसे कहा कि तुम्हारे दोनों बैग तुम्हारे साथ नहीं जायेंगे, इसलिए अगर इन बैगों में पैसे या कीमती सामान हो तो पहले ही हमें बता दो, बाद में हमारी कोई ज़िम्मेदारी नहीं होगी। मैंने कहा कि इसमें सिर्फ कपड़े हैं, उसने कहा ठीक है तुम इस लड़के के साथ जाओ यह तुम्हें दूसरी तरफ़ छोड़ देगा। वह लड़का मुझे वहाँ से बॉर्डर के पास ही बने एक मकान में ले आया और मुझे एक अन्य आदमी को सुपुर्द करके बोला कि चन्दन ने भेजा है, दूसरी तरफ़ पहुँचा दो।

इस घर में पहले से ही क़रीब 10-12 आदमी, औरत और बच्चे बॉर्डर पार जाने के लिए बैठे हुए थे। जब मुझे वहाँ बैठे-बैठे क़रीब एक घण्टा हो गया तो मैंने उस आदमी से देर होने का कारण पूछा उसने कहा कि अभी थोड़ी देर में हमारे परिचित बी. एस. एफ़. और बी. डी. आर. वाले ड्यूटी पर आयेंगे और तब हम तुम्हें बॉर्डर पार करायेंगे। उसने मुझ से पूछा कि मेरे पास अगर पैसे ज़्यादा हों तो उसे दे दूँ, बॉर्डर पार करने के बाद वापस मिल जायेंगे। मैंने कहा कि मेरे पास पैसे नहीं हैं; जो थे चन्दन को दे दिये, सिर्फ 300-400 रुपये हैं मेरे पास। ऐसा मैंने इसलिए कहा था, क्योंकि बॉर्डर की दोनों तरफ़ पर लगभग सभी चीटर और धोखेबाज़ क़िस्म के लोग बॉर्डर पार करवाने का काम करवाते थे और मैं जानता था कि अगर इनको पता चल जाये कि मेरे पास दो लाख रुपये हैं, जिन्हें मैंने कलकत्ता में ही अमेरीकी डॉलरों में बदलवा लिया था, तो ये मुझे बॉर्डर पार कराते हुए झंझट में फँसा कर, मुझसे पैसे छीन सकते हैं।

मैंने दो लाख रुपयों को अमेरीकी डॉलरों में बदलवा कर डॉलर अपनी पैण्ट की

https://t.me/Sahityajunction

अन्दर वाली जेब में रखे हुए थे और ऊपर वाली जेब में सिर्फ ज़रूरत के लिए थोड़े-से पैसे रखे हुए थे। काफ़ी देर इस घर में बैठे रहने पर अब यहाँ क़रीब 3040 लोग बॉर्डर पार जाने के लिए हो चुके थे। क़रीब 3 बजे के आस-पास वह आदमी हम सबको ले कर खेतों और नालों से होता हुआ एक नदी के किनारे पहुँचा। वहाँ पर हम सबका 10-10 आदमियों का दल बना कर नाव में बैठा कर नदी पार करवाने लगा नदी पार करने के बाद हम सभी लोग बांग्लादेश में थे। बी. एस. एफ़. के दो सिपाहियों ने हमारी गिनती करके उस आदमी से, जो हमें बॉर्डर पार कराने लाया था, इशारा कर दिया कि इतने पंछी हैं, इतने पैसे हमारे लिख लेना। ऐसा ही बी. डी. आर. वालों ने उधर बांग्लादेश बॉर्डर में हमारी गिनती करके किया था।

अब मेरी परेशानी यह थी कि जहाँ इस आदमी ने हमें छोड़ा था, वहाँ से वह जगह जहाँ शाहीन भाई मेरा इन्तज़ार कर रहे थे क़रीब 10 कि. मी. की दूरी पर थी और मुझे रास्ता भी समझ नहीं आ रहा था। जो लोग मेरे साथ बॉर्डर पार कर के आये थे, उनसे भी मैं बात नहीं कर सकता था, क्योंकि मेरे बोलते ही वे समझ जाते कि मैं एकदम नया हूँ और बंगाली आदमी नहीं हूँ। मैं चुपचाप उन लोगों के साथ-साथ चलने लगा, क्योंकि मैंने सोचा कि इन लोगों का भी सामान, बैग वगैरा बॉर्डर के मेन गेट के पास ही पहुँचेगा और ये सभी लोग वहीं जा रहे होगे।

जिस बांगलादेशी गाँव में उस एजेण्ट ने नदी पार कराके उतारा था उस गाँव के बहुत-से लोग मोटर साइकिलें ले कर आ गये और 200 टका में मेन गेट तक पहुँचाने की बात करने लगे। कई लोग, जो बॉर्डर पार करके आये थे, मोटर साइकिल वालों के साथ बैठ कर मेन गेट तक चले गये। लेकिन मैं नहीं गया, क्योंकि मैं अगर मोटर साइकिल वाले से बात करता तो वह समझ जाता कि मैं बंगाली नहीं हूँ। बचे हुए लोगों के साथ क़रीब एक किमी. उस गाँव से पैदल चलते-चलते हम गाँव से बाहर निकल कर एक पतली सड़क पर आये जहाँ टेम्पो वगैरा इधर-उधर आ जा रहे थे।

मेरे साथ आये हुए लोगों में से कुछ लोग टेम्पो में बैठ कर चले गये और हम लोग दूसरे टेम्पो का इन्तज़ार करने लगे। इस समय मैं मन-ही-मन यह सोच रहा था कि मुझे किस दिशा में जाने वाले टेम्पो में बैठना चाहिये, जिससे कि मैं मेन गेट पहुँच जाऊँ, जहाँ शाहीन भाई मेरा इन्तज़ार कर रहे थे। मैंने मन-ही-मन अन्दाजा लगाया कि वह आदमी एजेण्ट हमें उस मेन गेट से किस तरफ़ किस दिशा में लाया है? और उसी हिसाब से अन्दाज़ा लगा कर मैं टी.एस.आर. में बैठ गया। यह पतली सड़क जहाँ मेन सड़क से जुड़ती थी, जो सीधी बॉर्डर के मेन गेट तक जाती थी, वहाँ पर बांग्लादेश पुलिस बैरिकेड लगा कर बैठी रहती थी। जब वह टी.एस.आर. जिसमें मैं बैठा था उस बैरिकेड के पास आया तो टी.एस.आर. वाला बोला कि जो बॉर्डर पार करके आये हाँ वे यही उतर जाये आगे पुलिस बेरिकेट पर पुलिस पूछ-ताछ करती है। 3-4 लोग वहाँ उतर गये, लेकिन मैं नहीं उतरा, क्योंकि मुझे रास्ता नहीं मालूम था और मैं पैदल नहीं जा सकता था।

टी.एस.आर. जब उस पुलिस बेरिकेड के पास पहुँचा तो पुलिस वालों ने टी.एस.आर. को रुकवाया और आगे बैठे एक-दो लोगों से पूछा कि कहाँ से आ रहे हो? उन्होंने अपने-अपने गाँवों का नाम बता दिया मुझसे पुलिस वालों ने कुछ नहीं पूछा,

https://t.me/Sahityajunction

क्योंकि मेरे पास कोई भी सामान नहीं था और पुलिस वाले उन्हीं लोगों से पूछ-ताछ करते थे जिन के पास बैग और अन्य सामान होता था। जहाँ टी.एस.आर. ने मुझे छोड़ा वह जगह बिलकुल बॉर्डर के मेन गेट के पास की थी और मुझे देखते ही रास्ता याद आ गया। मैं यहाँ से सीधा इरशाद के मनी एक्सचेंज ऑफिस में पहुँचा जहाँ शाहीन भाई काफ़ी देर से मेरा इन्तज़ार कर रहे थे। मेरे दोनों बैग भी यहाँ रखे हुए थे।

शाहीन भाई ने मुझे बताया कि तुम्हारे ये बैग तो तभी 5-10 मिनट में आ गये थे, तुम्हें इतना समय क्यों लग गया? मैंने कहा कि बैग उठा कर चलते हैं, बातें रास्ते में बताऊँगा। मेरा मूड इस समय काफ़ी ख़राब था, लेकिन दिल में ख़ुशी थी कि मैं ठीक-ठाक यहाँ पहुँच गया था। शाहीन भाई और मैं रात को क़रीब 10 बजे के आस-पास खुलना पहुँचे और मैं अपने फ़्लैट में जा कर सो गया और वे भी उसी बिल्डिंग में अपने ऊपर वाले फ़्लैट में चले गये। 4-5 दिन मैंने अपने पहले वाले समयानुसार रूटीन से बिताये और इस दौरान जिस-जिस के लिए मैं भारत से सामान लाया था, उस को उसका सामान दे दिया।

आयशा को भी मैंने इण्डिया से एक रेडिमेड सलवार सूट ला कर दिया था जिसे ले कर वे और दूसरे लोग ख़ुश थे। एक-दो लोगों ने मुझे पैसे देने की कोशिश की, लेकिन मैंने उनसे पैसे नहीं लिये। एक हफ़्ता बिताने के बाद मैंने शाहीन भाई को ढाका की पाकिस्तान एम्बेसी में चलने के लिए कहा। खुलना से जब हम ढाका पहुँचे तो शाहीन भाई ने शरारत करते हुए कहा कि उसी होटल में रुकना है जहाँ हम पहले रुके थे या किसी दूसरे होटल में रूकना है। मैंने भी शाहीन भाई से शरारत करते हुए कहा कि पिछली बार तो बच गये थे, इसलिए किसी शराफ़त वाले होटल में चलो।

हमने एक अच्छे होटल में किराये पर कमरा लिया और यहाँ रात बिता कर सुबह पाकिस्तान एम्बेसी में गये। जब हम एम्बेसी के गेट पर पहुँचे तो वहाँ सब कुछ सुनसान था। हमने वहाँ गेट पर गेट कीपर से बात की और उनसे कहा कि अन्दर से इरशाद जी को बुलवा दीजिये। इण्टरकॉम फ़ोन से एक गेट कीपर ने बात की और थोड़ी देर में ही वही आदमी, जिससे हम तब मिले थे जब हम पहली बार ढाका आये थे, आया और उसने मुझे और शाहीन भाई को अन्दर एम्बेसी में रिसेप्शन पर ले जा कर और एक बड़े से हॉल में, जहाँ कई सोफ़े और कुर्सियाँ रखी हुई थीं, बैठा दिया। इरशाद ने हमसे कहा कि आप लोग यहाँ बैठ कर मैगज़ीन और किताबें पढ़िये और थोड़ी देर इन्तज़ार कीजिए, फिर मैं आपको वीज़ा काउन्सलर से मिलवा दूँगा और वही आपको बतायेंगे कि आपको ट्रांसिट वीज़ा मिलेगा या नहीं।

मुझे पाकिस्तान का ट्रांसिट वीज़ा इसलिए चाहिये था, क्योंकि उस समय अफ़ग़ानिस्तान जाने के लिए सिर्फ तीन जगहों से ही हवाई जहाज़ काबुल जाते थे। इन तीन जगहों में से एक दिल्ली एयरपोर्ट, दूसरा दुबई एयरपोर्ट और तीसरा इस्लामाबाद एयर पोर्ट था। दिल्ली से मैं जा नहीं सकता था। दुबई से जाने में एयर टिकट ज़्यादा था और दुबई-काबुल का हवाई टिकट पहले ही ख़रीदना पड़ता और उस टिकट को कूरियर से बांग्लादेश मँगाना पड़ता जिससे कि उस टिकट को दिखा कर यह बताया जा सकता कि मेरी दुबई से काबुल के लिए कनेक्टिंग फ़्लाइट है जिससे कि दुबई के बिना वीज़ा के ही ढाका से दुबई जा सकते थे।

https://t.me/Sahityajunction

उस बड़े हॉल में बैठे-बैठे मुझे और शाहीन भाई को क़रीब एक घण्टा हो गया तो वही इरशाद नाम का आदमी हमारे पास आया और मुझसे कहा कि आप ऊपर कमरे में मेरे साथ चलिए और शाहीन भाई को उसी हॉल में बैठे रहने के लिए कहा। रिसेप्शन के बग़ल से सीढ़ियाँ ऊपर की तरफ़ जा रही थीं और फ़र्स्ट फ़्लोर पर कई कमरे लाइन से बने हुए थे। इनमें से एक कमरे में, जो कि बहुत छोटा था और उसमें सिर्फ दो सोफ़े आमने-सामने थे, मुझे ले जा कर बैठा दिया और कहा कि मैं अभी सर को बुला कर लाता हूँ।

वह कमरे का दरवाज़ा बन्द करके चला गया तो मैं उस कमरे को ठीक से देखने लगा और मुझे ऐसा महसूस हुआ कि जैसे ए. सी. के बग़ल में कैमरा लगा हो और कोई उस कैमरे के द्वारा मुझे वॉच कर रहा हो। क़रीब दस मिनट बाद तक साढ़े 5 फ़ूट का एक गोरा-चिट्टा आदमी जिसकी उम्र क़रीब 40 साल होगी और उसने पंजाबी स्टाइल का सलवार-कमीज़ पहना हुआ था, कमरे में इरशाद के साथ आया। उसने बड़े गर्म-जोशी से मुझसे हाथ मिलाया और बैठने के लिए कहा और ख़ुद भी बैठ गया। हम दोनों को बैठा कर इरशाद कमरे से बाहर चला गया। इस पंजाबी आदमी ने अपना परिचय वीज़ा काउन्सलर के रूप में दिया और मुझसे कहने लगा कि क्षमा कीजियेगा, आपको काफ़ी देर इन्तज़ार करना पड़ा, क्योंकि मैं इण्टरव्यू लेने में व्यस्त था। मैंने कहा—सर कोई बात नहीं, बाक़ी आपसे बात करके मुझे बहुत अच्छा लग रहा है, क्योंकि आज कई दिनों के बाद बांग्लादेश में मुझ से कोई हिन्दी भाषा में बात कर रहा है। वह मुस्कुराया और बोला कि हाँ, हिन्दी और उर्दू भाषा तो ऐसे ही भाई-भाई हैं, जैसे—भारतीय आदमी और पाकिस्तानी।

फिर उसने मुझसे कहा कि आप अपना पासपोर्ट अभी साथ लाये हैं। मैंने कहा कि हाँ और उनको अपना पासपोर्ट दिखाया। उन्होंने मेरा पासपोर्ट देखा और बोले कि आपका नाम संजय गुप्ता है तो क्या आप हिन्दू हैं? मैंने कहा जी हाँ— इतने में ही उसने घण्टी बजायी तो तुरन्त वही आदमी इरशाद दरवाज़ा खोल कर कमरे में आ गया मानो वह दरवाज़े के गेट पर ही खड़ा हुआ इन्तज़ार कर रहा था। इरशाद के आने पर उस पंजाबी आदमी ने मेरा पासपोर्ट इरशाद को थमा दिया और कहा कि ज़रा इस पासपोर्ट को देख लीजिए। इरशाद कमरे से पासपोर्ट ले कर तुरन्त चला गया और दरवाज़ा पहले की तरह बन्द कर दिया। इरशाद के जाने के बाद उस पंजाबी आदमी ने कहा कि मिस्टर संजय अगर आप बुरा न माने तो मैं आपसे कुछ प्रश्न आपके धर्म के बारे में पूछ सकता हूँ। मैंने कहा—जी सर क्यों नहीं, उन्होंने मुझसे कहा कि क्या आपकी शादी हो चुकी है। मैंने कहा— नहीं सर। उन्होंने कहा कि आपके घर में किसी की शादी तो हुई होगी, मैंने कहा कि सर, बहन की हो गयी है तो उन्होंने मुझसे कहा कि आपके धर्म में शादी के समय लड़का-लड़की आग के चारों ओर चक्कर क्यों काटते हैं?

मैंने कहा कि सर चार बार लड़का लड़की से आगे रहता है और अग्नि के चारों तरफ़ चक्कर काट कर चार तरह की क़समें खाता है और तीन बार लड़की लड़के से आगे रहती है जिसमें लड़की को तीन तरह की क़समें खानी होती हैं। उन्होंने कहा कि किस तरह की क़समें होती है? तो मैंने कहा कि सारी क़समें तो याद नहीं बस यह बोलते हैं कि हम एक-दूसरे का सदा साथ देंगे। हम सातों जन्म एक साथ रहेंगे। सात जन्म की बात सुन कर उन्होंने मुझसे कहा कि अगर अगले जन्म में लड़की ने जानवर के रूप में

https://t.me/Sahityajunction

जन्म लिया तो कैसे साथ होगा तो मैंने कहा कि सर, यह तो हर धर्म में इस तरह की बातें है जिन पर कि आज विश्वास नहीं किया जा सकता, लेकिन फिर भी लोग-बाग उन्हें निभाते और मानते हैं।

तब उस पंजाबी आदमी ने कहा कि चलो छोड़िये ये बात, यह बताइये कि आप पाकिस्तान क्यों जाना चाहते हैं? मैंने कहा कि सर, मैं अफ़ग़ानिस्तान जाना चाहता हूँ, क्योंकि वहाँ से इस्लामाबाद से काबुल के लिए फ़्लाइट है और फ़्लाइट की समय सारणी इस तरह की है कि मुझे एक दिन इस्लामाबाद में रुकना पड़ेगा काबुल जाने के लिए। उन्होंने कहा कि आप दिल्ली से क्यों नहीं चले जाते, दिल्ली से तो काबुल की फ़्लाइट है।

मैंने कहा कि सर, मैं दिल्ली से नहीं जाना चाहता, क्योंकि मैं अब अगर ढाका से दिल्ली जाऊँगा और फिर वहाँ से काबुल तो मेरे ज़्यादा पैसे ख़र्च हो जायेंगे। उन्होंने कहा कि ऐसा नहीं है, लेकिन फिर भी अगर आप पाकिस्तान जाना चाहते हैं तो उसके लिए भी आपको दिल्ली से ही वीज़ा मिलेगा, क्योंकि हमारे यहाँ यह नियम लागू हो गया है कि जो आदमी जिस देश का है, उसे उस देश में हमारी एम्बेसी से पाकिस्तान जाने का वीज़ा मिलेगा, आज-कल तो हमने इतनी सख़्ती की हुई है कि अमेरीकी पासपोर्ट वाले को भी दूसरे देश से पाकिस्तान का वीज़ा नहीं दे रहे हैं। अगर आपको हमारी दिल्ली एम्बेसी में जाने में कोई परेशानी है तो हमारे बहुत-से परिचित दिल्ली में वीज़ा का काम करते हैं और आप सिर्फ उनको अपना पासपोर्ट दे देना वे आपका वीज़ा लगवा देंगे। हम भी आपकी यहाँ से फ़ोन करके सिफ़ारिश कर देंगे। मैंने कहा कि सर, आप यहाँ से कर सकते हैं तो अच्छा है, क्योंकि मैं दिल्ली नहीं जाना चाहता।

उन्होंने कहा कि चलिए, ठीक है मैं आपके लिए पाकिस्तान सचिवालय में बात करके देखूँगा, लेकिन उसके लिए आपको दो हफ़्ते इन्तज़ार करना होगा। इतने में ही इरशाद दरवाज़ा खोल कर अन्दर कमरे में आ गया और मेरा पासपोर्ट उस पंजाबी आदमी के हाथ में दिया और उस पंजाबी आदमी ने मेरे हाथ में मेरा पासपोर्ट थमा दिया। जैसे ही मैंने अपना पासपोर्ट हाथ में लिया तो मैंने कहा कि, सर, पासपोर्ट की फ़ोटोकापी की है क्या? मेरी यह बात सुन कर उन्होंने इरशाद की तरफ़ देखा और मुझसे पूछा कि आपको कैसे लगा कि हमने पासपोर्ट की फ़ोटोकापी की मैंने कहा कि पासपोर्ट गर्म है जैसे अभी एक्सेस फ़ोटो स्टैट मशीन से निकला हो।

उन्होंने फिर इरशाद से पूछा कि क्या फ़ोटो कापी की पासपोर्ट की। तो इरशाद ने कहा—जी हाँ तो पंजाबी आदमी ने कहा कि फ़ोटो कापी करने की क्या ज़रूरत थी, बस ऐसे ही देख लेते। चलिए, कोई बात नहीं। इरशाद उसके बाद तुरन्त कमरे से बाहर चला गया। उसके बाद पंजाबी आदमी ने मुझसे कहा कि मिस्टर संजय, जासूसी वग़ैरा करते हैं क्या आप? मैं मुस्कुराया और बोला कि नहीं सर। ऐसा आप क्यों सोच रहे हैं? तो वह बोले अरे भई, पासपोर्ट हाथ में लेते ही बता दिया कि पासपोर्ट की फ़ोटो कापी की है। मैंने कहा कि ऐसा कुछ नहीं है वह तो मैंने पासपोर्ट गर्म देख कर ऐसे ही बोल दिया। उस पंजाबी आदमी ने मुझसे कहा कि चलिए, अपने बारे में कुछ बताइये। आप तो बहुत इण्टरेसिंटग आदमी लग रहे हैं। यहाँ बांग्लादेश में कहाँ रहते है? और क्या करते हैं? मैंने कहा कि सर, मैं खुलना में रहता हूँ और यहाँ बांग्लादेश में स्टूडेण्ट वीज़ा पर हूँ और कोई ऐसा बिज़नेसखोज रहा हूँ जो बांग्लादेश में भारत से इम्पोर्ट किया जा सके और

https://t.me/Sahityajunction

उसमें अच्छा मुनाफ़ा भी हो।

उन्होंने मुझसे कहा कि फिर आप खुलना में रह कर अपना समय क्यों ख़राब कर रहे हैं, वह तो छोटा शहर है, आप यहाँ ढाका शिफ्ट हो जाइये, हम आपको यहाँ ढाका में फ़्लैट दिलवा देंगे और हमारे बहुत अच्छे बिजनेसमैनों से सम्पर्क हैं जो हमारे एम्बेसी में भी आते रहते हैं, हम उनसे आपका परिचय करा देंगे और आपका अच्छा काम शुरू करा देंगे। मैंने कहा कि सर, आपका बहुत धन्यवाद, लेकिन आप पहले मेरा पाकिस्तान जाने का वीज़ा यहीं ढाका से ही बन्दोबस्त करा दीजिये। उन्होंने कहा कि ठीक है और फिर से इरशाद को घंटी बजा कर बुलाया। इरशाद तुरन्त कमरे के अन्दर आ गया। उन्होंने मुझसे कहा कि आप अपना मोबाइल नम्बर इरशाद को लिखवा दीजिये, यह आपको अगले हफ़्ते आपके वीज़ा के बारे में बता देगा और आप भी इरशाद का नम्बर लिख लीजिये और हमारे सम्पर्क में रहियेगा। अगर पाकिस्तान न भी जा पाये तो भी सम्पर्क में रहियेगा आपको काफ़ी फ़ायदा होगा। मैंने कहा जी सर।

फिर उस पंजाबी आदमी ने सोफ़े से मुझसे गर्मजोशी से हाथ मिलाया और कहा—मिस्टर संजय माफ कीजियेगा, रमज़ान का टाइम चल रहा है और हम सभी रोज़े से हैं, इसलिए हम आपको चाय-नाश्ता नहीं करा सके। आपसे मेरी प्रार्थना है कि ईद के बाद किसी दिन आईयेगा फिर हम साथ में मिल कर डिनर करेंगे। मैंने कहा—जी सर उसने मुझसे जाते समय यह भी कहा कि इन बंगालियों पर ज़्यादा विश्वास मत कीजियेगा, ये धोखेबाज़ होते हैं। और फिर वह इरशाद को यह कह कर चला गया कि मिस्टर संजय को बाहर तक विदा करके आइये। मैं और शाहीन भाई वहाँ से अपने होटल आ गये और ढाका में घूम-फिर कर वापस खुलना आ गये। खुलना में पहले की तरह ही समय कट रहा था।

https://t.me/Sahityajunction

8. अफ़ग़ानिस्तान की ओर

मुझे भारत से आये हुए अब क़रीब 15 दिन से ज़्यादा हो चुके थे, इसलिए मैंने मुम्बई के अफ़ग़ानिस्तान कॉन्सलेट में अपने वीज़ा के बारे में जानने के लिए फ़ोन किया। एम्बेसी से जिस आदमी ने फ़ोन उठाया उसने फ़ोन पर ही मुझसे मेरी पूरी डिटेल ली और एक मिनट इन्तज़ार कराने के बाद बोला कि आपका 15 दिन का वीज़ा आ गया है और आप अपना पासपोर्ट ले कर किसी भी वर्किंग डे में 10 से 5 के बीच में आ जाइये। यह जान कर मुझे बहुत ख़ुशी हुई कि मेरा अफ़ग़ानिस्तान का वीज़ा लग गया था और अब मैं अपने मक़सद के और नज़दीक पहुँच रहा था।

मैंने शाहीन भाई से बताया कि मैं कल भारत जाना चाहता हूँ, लेकिन जिस पागल एजेण्ट के द्वारा आपने मुझे बॉर्डर पार कराया था, उससे काम नहीं करवाना है और न ही उस रास्ते से वापस जाना है जिससे कि मैं आया था, क्योंकि आते समय बहुत परेशानियाँ हुई थी। शाहीन भाई ने कहा कि ठीक है, इस बार किसी दूसरे एजेण्ट से बात करेंगे जो बॉर्डर के मेन गेट से ही जहाँ से पासपोर्ट के द्वारा आया-जाया जाता था तुम्हें बिना पासपोर्ट के बॉर्डर पार करा दे, लेकिन इस काम में कुछ ज़्यादा पैसे लगेंगे। मैंने कहा, ठीक है और अगले दिन मैं अपने 2-3 जोड़ी कपड़े ले कर शाहीन भाई के साथ सुबह ही बॉर्डर पर पहुँच गये।

इस बार मैंने अपनी जेब में साथ में इतने ही पैसे रखे थे जितनी मुझे भारत में ज़रूरत पड़ सकती थी और बाक़ी बचे हुए पैसे मैंने शाहीन भाई के घर उनके पास ही रख दिये थे। क्योंकि बार-बार पैसे ले जाने में दिक़्क़त थी और वैसे भी मुझे इण्डिया से और पैसे लाने थे। इस बार शाहीन भाई ने एक नये एजेण्ट से बात की जो दो हज़ार टका ले कर मेन गेट से ही बॉर्डर पार कराने के लिए कहने लगा। हमने उसे दो हज़ार टका दिये और उसने मुझे थोड़ी देर में ही मेन गेट से ही अपने साथ ले जा कर इण्डिया की तरफ़ छोड़ दिया और वह वापस चला गया। मैं बॉर्डर से कलकत्ता आया और डाक्टर शिवराम सिंह गौर से बात की और उनसे बताया कि मेरा अफ़ग़ानिस्तान का वीज़ा लग गया है और क्या आपने पैसों के लिए क्षत्रिय महासभा की मिंटग में मेरे लिए बात की तो उन्होंने कहा कि मिंटग में बात की थी, लेकिन अभी इसमें समय लगेगा। मैंने कहा कि मुझे तो जल्दी जाना है और आप जानते हैं कि पुलिस मेरे पीछे कितनी बुरी तरह से लगी हुई है और मैं ज़्यादा दिन इण्डिया में नहीं रह सकता। डाक्टर शिवराम सिंह गौर ने कहा कि आप कल फ़ोन कर लीजिये। मैंने कहा, ठीक है।

इसके बाद मैंने 4-5 लोगों से और बात की और उनसे पैसों के लिए कहा। इन 4-5 लोगों में दो सांसद भी थे और एक-दो लोग हिन्दू संगठनों के बड़े नेता भी थे। इन्होंने भी मुझे अफ़ग़ानिस्तान जाने के लिए आर्थिक सहायता देने का पूरा वादा किया। कलकत्ता से ट्रेन पकड़कर मैं रात के क़रीब 8 बजे मुम्बई पहुँच गया। मैं मुम्बई के उस पहले वाले होटल में गया जहाँ पहली बार रुका था तो मुझे वही रिसेप्शनिस्ट जिससे मेरी दोस्ती हो गयी थी और जिसने मुझे अफ़ग़ानिस्तान कॉन्सलेट का पता भी बताया था, मिला।

रिसेप्शनिस्ट ने मुझसे कहा कि संजय भाई होटल में इस समय एक भी कमरा ख़ाली नहीं है, क्योंकि लड़कियों के कॉलेज का एक बड़ा ग्रुप अपने टीचरों के साथ होटल में

https://t.me/Sahityajunction

रुका हुआ है। मैंने कहा कि भई, अब इतनी रात में मैं कहाँ जाऊँगा। मुझे तो मुम्बई के बारे में इतनी ज़्यादा जानकारी भी नहीं है। उसने कहा कि हमारे होटल के ऊपर वाले फ़्लोर में एक बड़ा ए. सी. हॉल है जिसमें कई बेड लगे हुए है और उसमें क़रीब 80 लड़कियाँ रुकी हुई हैं। आप मेरे परिचित हैं और अच्छे आदमी हैं, अगर आप कहे तो वहाँ पर आपको मैं एक बेड दे सकता हूँ। मैंने कहा, ठीक है, वही दे दीजिए।

उसने रजिस्टर में मेरी एण्ट्री करके मुझे वेटर के साथ ऊपर हॉल में भेज दिया। ऊपर उस हॉल में एक के ऊपर एक 3 बेड का बिंडग था, जैसे ट्रेन में होता है। एक कॉर्नर पर 2, 3 बेड का पूरा बिंडग ख़ाली पड़ा था उसमें सबसे ऊपर वाला मैंने ले लिया। मैं नहा-धो कर वापस अपने बेड पर आ कर बैठ गया और वहाँ रखे टी.वी. को देखने की कोशिश करने लगा, लेकिन जिस ओर मेरा बेड था वहाँ से टी.वी. ठीक से नहीं दिख रहा था। इस हॉल में 10-15 टी.वी. अलग-अलग जगहों में रखे हुए थे। मेरे बेड के बग़ल में ही एक लड़की फ़ोन पर किसी से बैठ कर बात कर रही थी।

जब उस लड़की ने फ़ोन पर अपनी बात पूरी कर ली तो मैंने उस लड़की से कहा कि आप हरियाणा की जाट हो क्या? वह बोली, आपको कैसे पता चला? मैंने कहा कि आपकी तो शकल पर लिखा हुआ है। वह बोली, मतलब, मैंने कहा कि जब आप फ़ोन पर बात कर रही थी तो मैं आपके बोलने के तरीके से समझ गया कि आप हरियाणा की जाट हो। मेरी यह बात सुन कर उसने अपनी 4-5 सहेलियों को अपने पास बुला लिया और उनसे बोली कि ये भैया आवाज़ से और बातचीत करने के तरीके से बता देते हैं कि कौन किस राज्य का और किस जाति का है। और फिर उसने मेरी तरफ़ देखते हुए एक चैलेंज के रूप में मुझसे कहा कि मेरी सहेलियों से बात करके आप बताइये? कि ये कौन-सी जाति की हैं?

एक लड़की ने मुझसे बात की और अपना नाम बताया, तो मैंने बताया कि तुम बनिया हो। उसने कहा—हाँ। और फिर एक-दो लड़कियों को भी मैंने बातचीत से बता दिया कि वे कौन हैं। इसके बाद उन्होंने आवाज़ दे कर दूसरी तरफ़ से एक लड़की को बुलाया जो देखने में काफ़ी सुन्दर थी। जब वह सुन्दर लड़की मेरे पास आयी तो उन लड़कियों ने कहा कि बताओ ये कौन है? मैंने उस लड़की से बात की तो मेरे दिल में आया कि यह पंजाबन है, लेकिन मेरी ज़बान से पता नहीं कैसे निकल गया कि तुम ब्राह्मण हो। मेरी बात सुन कर वह सभी लड़कियाँ ज़ोर-ज़ोर से अपनी जीत का हल्ला मचा कर चिल्लाने लगीं और मुझ पर हँसने लगी। मैंने कहा कि आप लोग इतना ख़ुश क्यों हो रही हो? और फिर उस लड़की से पूछा कि तुम कौन हो? तो वह बोली, हम तो पंजाबी है।

मैंने कहा कि मेरे दिल में यही बात आयी थी कि तुम पंजाबन हो, लेकिन अब तुम मेरी इस बात पर यक़ीन नहीं करोगी। उस पंजाबन लड़की ने मुझसे पूछा कि अच्छा बताइये, आपके दिल में कैसे आया था और मेरी किस बात से आपको लगा था कि मैं पंजाबन हूँ। मैंने कहा कि असल में पंजाबी लोग देखने में लुक वाइज़ सुन्दर होते हैं और ज़बान से मीठे होते हैं। उस पंजाबी लड़की ने कहा कि अच्छा, तो क्या आप भी पंजाबी हैं, आप भी देखने में सुन्दर है और बातें भी अच्छी करते हैं। मैंने कहा—कि नहीं। मैं तो बनिया हूँ।

https://t.me/Sahityajunction

मैंने अपने आप को बनिया इसलिए बताया था क्योंकि मैंने होटल के रिसेप्शन में अपनी एण्ट्री संजय गुप्ता के नाम से करवायी हुई थी और वे लड़कियाँ रिसेप्शन से मेरा पूरा नाम पता करके जान सकतीं थी कि मैं कौन हूँ। ऐसे ही क़रीब एक घण्टे तक वे लड़कियाँ मुझसे बातें करती रहीं और अपने मुम्बई टूर के बारे में बताती रहीं। अगली सुबह जब मैं उठा तो उस पंजाबी लड़की की एक सहेली मेरे पास आयी और बोली कि भइया, आज हम सभी लोग एस्सेल वल्र्ड घूमने जायेंगी आप भी वहाँ पर आ जाना। मैंने कहा कि मुझे आज काम है, लेकिन अगर मैं जल्दी काम से फ्री हो गया तो मैं ज़रूर आऊँगा।

इसके बाद वे सभी लड़कियाँ अपनी टीचरों के साथ बसों में बैठ कर घूमने निकल गयी और मैं 11 बजे के आस-पास तैयार हो कर अफ़ग़ानिस्तान की कॉन्सलेट में वीज़ा लेने के लिए पहुँच गया। मैने ऑफिस में उसी आदमी से, जिसने मुझे पहले ख़ाली वीज़ा फ़ॉर्म दिया था, अपने वीज़ा के बारे में पूछा तो उसने मुझे बताया कि अभी बड़े साहब नहीं आये हैं ओर आप अभी बाहर थोड़ा इन्तज़ार कीजिये। क़रीब एक घण्टे बाद एक लम्बी-सी गाड़ी में वही आदमी आया जिसने मेरा शुरू में इण्टरव्यू लिया था। उसने उतरते समय गाड़ी में से मुझे देख लिया था।

अपने ऑफिस में जाने के बाद उसने मुझे अपने ऑफिस में बुलवाया और कहा कि हमने तुम्हारा वीज़ा 15 दिन का लगवा दिया है और मेरी इच्छा है कि तुम वहाँ जा कर देखो कि मेरा देश कितना सुन्दर है। मैंने कहा—जी सर, लेकिन 15 दिन तो घूमने के लिए कम होते हैं। उसने कहा कि अगर तुम्हें अच्छा लगेगा तो तुम काबुल में जा कर अपना टाइम बढ़वा सकते हो। मैंने कहा—ठीक है, सर। और मैंने अपनी जेब से डेरी मिल्क की एक फ्रूट ऐण्ड नट की चाकलेट निकाल कर कहा कि—सर, ये मैं आपको गिफ़्ट देना चाहता हूँ, क्योंकि मुझे तो बाहर लोगों ने अफ़ग़ानिस्तान के नाम से इतना डरा दिया था कि मैंने जाने का विचार ही छोड़ दिया था, लेकिन आपने जो मेरा हौसला बढ़ाया, उससे ही अब मैं अफ़ग़ानिस्तान जाना चाहता हूँ।

इसके बाद मैं अपने पासपोर्ट पर अफ़ग़ानिस्तान के वीज़ा की मोहर लगवा कर एक टैक्सी में एस्सेल वल्र्ड जाने के लिए बैठ गया। यहाँ से एस्सेल वल्र्ड टैक्सी से जाने में क़रीब एक घण्टे से ज़्यादा का टाइम लगता था। उस पूरे एक घण्टे के दौरान मैं जब तक टैक्सी में रहा, यही सोचता रहा कि मुझे उन लड़कियों के पास एस्सेल वल्र्ड जाना चाहिये या नहीं। टैक्सी वाले ने मुझे एक जगह उतार दिया और कहा कि थोड़ा सामने जाने के बाद वहाँ से आपको एस्सेल वल्र्ड के लिए टिकट मिलेगा और फिर वो आपको शिप से वहाँ टापू पर ले जायेंगे। अब तक मेरे दिमाग़ ने यह फैसला कर लिया था कि मैं एस्सेल वल्र्ड नहीं जाऊँगा, क्योंकि वहाँ पर घूमने के लिए दूर-दूर से लोग आते हैं और कोई ऐसा भी वहाँ हो सकता है जो मुझे देखते ही पहचान ले। मैंने मन में कहा ज़्यादा आशिकी ठीक नहीं और पहले मुझे उस काम पर अपना ध्यान लगाना चाहिये जिसके लिए मैं जेल से भागा हूँ और जिसके लिए मेरी माता जी ने मुझे अपनी ज़मीन बेच कर पैसे दे दिये।

मैंने उस टैक्सी वाले से कहा कि भैया, आप मुझे वहीं वापस ले चलिए जहाँ से मुझे बैठाया था। मैं एस्सेल वल्र्ड नहीं जाना चाहता हूँ। वहाँ से सीधा मैं अपने होटल पर आ

https://t.me/Sahityajunction

गया और उसी रात को एक एजेण्ट से कानपुर जाने के लिए किसी ट्रेन में रिज़र्वेशन करवाने के लिए कहा, लेकिन एजेण्ट ने बताया कि आज रात की किसी ट्रेन में कोई सीट ख़ाली नहीं है। कल दिन की गाड़ी में रिज़र्वेशन करा देता हूँ। मैंने कहा, ठीक है और उससे अगले दिन का रिज़र्वेशन करा के टिकट ले लिया। रात को वे सभी लड़कियाँ वापस आयीं तो वह पंजाबन लड़की और उसकी सहेली मेरे पास आयी और कहा कि आप एस्सेल वल्ड नहीं आये, हम आपका इन्तज़ार कर रहे थे।

मैंने उनसे कहा कि मुझे पूरे दिन समय नहीं मिला और मैं इसी वजह से नहीं आ पाया। फिर वह मुझे अपने बेड की तरफ़ ले गये जहाँ से टी.वी. साफ़-साफ़ देखा जा सकता था। मैंने थोड़ी देर तक टी.वी. देखा और इधर-उधर की बातें उन लड़कियों से की और फिर अपने बेड पर आ कर सो गया। सुबह उन लड़कियों ने मुझे बताया कि आज हमारी वापसी की ट्रेन है और अब हम वापस होटल में नहीं आयेंगे और अपना सभी सामान अभी साथ ले कर गाड़ियों में बैठ जायेंगे और एक बजे तक घूम-फिर कर ये गाड़ियाँ हमें सीधा स्टेशन छोड़ देंगी। मैंने उस पंजाबन लड़की और उसकी सहेली से कहा कि आप लोगों से मिल कर मुझे बहुत ख़ुशी हुई। उन्होंने भी कहा कि हमें भी आपसे मिल कर ख़ुशी हुई।

उस पंजाबी लड़की की सहेली ने मुझसे कहा कि भइया, आप मुझे अपना फ़ोन नम्बर दे दीजिए, मैं आपसे बात करती रहूँगी। मैंने कहा कि मेरा कोई फ़ोन नम्बर नहीं है। उसने कहा कि ऐसा कैसे हो सकता है, आजकल तो रिक्शे वाला आदमी भी मोबाइल रख रहा है, आप अपना फ़ोन नम्बर देना नहीं चाहते। मैंने कहा कि सच में ही मेरे पास मोबाइल नहीं है। वह नाराज़ हो कर वहाँ से चली गयी। दिन में 2 बजे के क़रीब जब मैं कानपुर जाने के लिए स्टेशन पहुँचा तो इत्तफ़ाक से उन लड़कियों की ट्रेन भी मेरे वाले प्लेटफ़ॉर्म के सामने थी और वह वहीं खड़ी थी जहाँ से मुझे कानपुर के लिए ट्रेन में बैठना था।

ट्रेन में बैठने से पहले मैं जब खाने-पीने की कैंटीन से पानी की बोतल ख़रीद रहा था तो वह पंजाबन लड़की और उसकी सहेली वहाँ पर आयी और मुझसे कहा कि आप आ गये न। उनको यह ग़लतफ़हमी थी कि मैं उनके लिए आया हूँ। मैंने कहा मैडम जी, मेरी ट्रेन सामने खड़ी है, मुझे भी अभी कानपुर जाना है। उस पंजाबन की सहेली ने कहा कि हम तो सोच रहे थे कि आप हमसे मिलने आये हो, चलिए ठीक है आप तो अपना फ़ोन नम्बर नहीं देते और उस लड़की ने एक पर्ची पर अपना नाम और फ़ोन नम्बर लिख कर दिया और कहा कि समय मिले तो आप मुझसे बात ज़रूर कर लीजियेगा, फिर वह अपनी अन्य सहेलियों के बुलाने पर चली गयी और मैं अपनी कानपुर वाली ट्रेन में बैठ गया, क्योंकि वह चलने वाली थी।

अगले दिन मैंने कानपुर पहुँच कर डाक्टर शिव राम सिंह गौर से उस कॉलेज में जा कर मुलाक़ात की जहाँ वे प्रिंसिपल थे। और मैंने उनसे कहा कि मुझे अफ़ग़ानिस्तान का वीज़ा मिल गया है और मैं जल्दी से वहाँ जा कर पृथ्वीराज चौहान की समाधि को खोद कर वहाँ से अपने देश लाना चाहता हूँ। मैंने उनसे कहा कि इस काम में 4-5 लाख ख़र्च होंगे मैंने अपनी माताजी से इस काम के लिए 2 लाख रुपये लिये हैं और अगर क्षत्रिय महासभा भी 2-3 लाख दे दे तो मैं अपने काम में सफल हो जाऊँगा।

https://t.me/Sahityajunction

डाक्टर गौर ने मुझसे कहा कि क्षत्रिय महासभा से पैसे मिलने में अभी और समय लग सकता है, लेकिन तुम इतना अच्छा काम करने जा रहे हो और मैं भी इस नेक काम में अपना सहयोग देना चाहता हूँ और उन्होंने अपने पास से मुझे 2 लाख रुपये दे दिये। मैंने इस काम के लिए 4-5 और भी लोगों से पैसों की बातचीत की हुई थी, लेकिन मेरा काम अभी माता जी और डाक्टर गौर के दिए हुए पैसों से चल सकता था इसलिए मैंने उनसे पैसे नहीं लिये न उनसे मिला। डाक्टर गौर से पैसे ले कर मैं सीधा कलकत्ता पहुँच गया और वहाँ जा कर अपने लिए गर्म जैकेट, गर्म कपड़े और रिबॉक के स्पोर्ट जूते लिये जिनकी ज़रूरत मुझे अफ़ग़ानिस्तान के ठण्डे मौसम में पड़ने वाली थी।

इसके बाद मैंने शाहीन भाई को अगले दिन बॉर्डर पर बुला लिया और मैं पासपोर्ट से लीगल तरीके से सभी फ़ॉरमैलिटी पूरी करके बांग्लादेश पहुँच गया। खुलना पहुँच कर मैंने शाहीन भाई से कहा कि मुझे बिज़नेसके लिए कुछ दिनों के लिए अफ़ग़ानिस्तान जाना होगा। खुलना में मैंने दो-तीन दिन आराम किया और और आयशा से मिला, और फिर शाहीन भाई को साथ ले कर ढाका गया। हमने ढाका पहुँच कर एक ट्रैवेल एजेण्ट से बात की और उससे अफ़ग़ानिस्तान जाने के लिए मालूमात की तो उसने हमें बताया कि ढाका से वाया दिल्ली, ढाका से वाया इस्लामाबाद और ढाका से वाया दुबई अफ़ग़ानिस्तान जा सकते हो। दिल्ली का आपको वीज़ा नहीं लेना पड़ेगा, क्योंकि आपके पास इण्डियन पासपोर्ट है। मैंने कहा कि अगर मैं दिल्ली से न जाना चाहूँ तो? तो उसने कहा कि आपको दुबई या इस्लामाबाद का वीज़ा पहले लेना पड़ेगा और फिर वहाँ से जा कर ख़ुद काबुल के लिए टिकट ख़रीदना पड़ेगा, क्योंकि जो काबुल के लिए फ़्लाइट देती है, उसका ऑफिस यहाँ बांग्लादेश में नहीं है। अगर आप दुबई से अपने लिए एयर लाइन्स का दुबई/काबुल का टिकट कटवा कर बांग्लादेश कूरियर से मँगवा लें तो फिर आप ढाका से दुबई जा कर काबुल के लिए कॉनेक्टिंग फ़्लाइट ले सकते हैं।

मैंने कहा कि आप ही दुबई मेरे लिए टिकट मँगवा दीजिये मैं आपको यहाँ पैसे दे देता हूँ तो उन्होंने कहा कि हमारा वहाँ कोई एजेण्ट नहीं है, आप ख़ुद ही अपने परिचित से मँगा लीजिये, हम आपको ढाका-दुबई की टिकट दे देंगे। शाहीन भाई के साथ मैं वापस होटल आ गया और सोचने लगा कि दुबई से काबुल का टिकट कैसे मँगाऊँ और फिर मेरे दिमाग़ में सुभाष ठाकुर का नाम आया। सुभाष ठाकुर उस समय बनारस जेल में बन्द थे। उनको मैंने ढाका से फ़ोन किया और उनसे कहा कि क्या आपका दुबई में कोई परिचित या ख़ास जानकार है जो मुझे काबुल का टिकट ख़रीद कर दुबई से कूरियर करके ढाका भेज सके। अगर आप मेरी इस काम में सहायता करें तो मुझे बहुत अच्छा लगेगा। वैसे भी अफ़ग़ानिस्तान से पृथ्वीराज चौहान की समाधि लाने के बाद हमें मिल कर ही काम करना है। उन्होंने मुझे अगले दिन रात को फ़ोन करने को कहा।

अगले दिन मैंने और शाहीन भाई ने ढाका की एक दुकान से ही सोनी का हैण्डीकैम, विडियो कैमरा ख़रीदा, जिसकी ज़रूरत अफ़ग़ानिस्तान में मुझे समाधि को खोदते समय उसकी रिकॉर्डिंग के लिए चाहिये थी, क्योंकि मैं जानता था कि हमारे देश में ज़्यादा जनसंख्या ऐसी है जो ख़ुद तो देश और समाज के लिए कुछ कर नहीं सकते लेकिन दूसरों के द्वारा किए गये देश भक्ति के कार्यों में कमियाँ ज़रूर निकाल देते हैं। अगर मैं समाधि खोदते समय वहाँ की रिकार्डिंग कैमरे से न करूँ तो कोई भी यक़ीन नहीं करता कि मैं अफ़ग़ानिस्तान गया और वहाँ से समाधि लाया। यह पूरा दिन और अगला दिन मैं

https://t.me/Sahityajunction

और शाहीन भाई घूमते-फिरते रहे और मैं उस हैण्डीकैम से रिकार्डिग कर के उसको चलाने की पै्रक्टिस करता रहा।

सुभाष ठाकुर के बताये गये समय पर मैंने उन्हें दोबारा फ़ोन किया तो सुभाष भाई ने मुझे दुबई का एक मोबाइल नम्बर दिया और कहा कि यह नम्बर कुमार भाई का है और इनका कोड इन्जीनियर है। आप इनसे जब बात करें तो इन्हें इन्जीनियर साहब ही पुकारना, मैंने इन्हें आपके और आपके काम के बारे में बता दिया है। मैंने सुभाष भाई को धन्यवाद कहा और फिर इन्जीनियर कुमार साहब के पास दुबई फ़ोन किया और उनसे कहा कि आप मुझे एयर लाइन्स का दुबई-काबुल का किसी भी फ़्लाइट का टिकट मेरे नाम से ख़रीद कर ढाका कूरियर करके मेरे बताये हुए पते पर भेज दीजिए और फिर मैंने उन्हें उसी ट्रैवेल एजेण्ट का पता लिखवा दिया जिससे मैंने ढाका-दुबई की बात की हुई थी।

मैंने इन्जीनियर साहब से उनका फैक्स नम्बर ले कर उन्हें अपने पासपोर्ट की पूरी जानकारी फैक्स भी कर दी जिससे टिकट ख़रीदते समय नाम वग़ैरा में कोई ग़लती न हो जाये। चूँकि वहाँ से टिकट ढाका अने में 6-7 दिन लगने थे इसलिए मैं और शाहीन भाई ढाका से खुलना वापस आ गये। जब मैं खुलना वापस आया तो पाकिस्तान एम्बेसी से इरशाद का फ़ोन आया। हालचाल जानने के बाद इरशाद ने मुझसे कहा कि आप ढाका हमारी एम्बेसी में आ जाइये, साहब (वही पंजाबी आदमी जिससे मेरी मुलाक़ात पाकिस्तान एम्बेसी में हो चुकी थी) आपसे मिलना चाहते हैं।

मैंने कहा किस सिलसिले में, तो इरशाद बोला कि शायद साहब आपको ढाका से ही पाकिस्तान का वीज़ा दिलवाना चाहते हैं। मैंने कहा—इरशाद भाई, मैं अब पाकिस्तान जाना नहीं चाहता तो इरशाद बोला कि क्या बात हो गयी, हमसे नाराज़ क्यों हो गये। मैंने कहा—भाई साहब, नाराजगी वाली कोई बात नहीं है। मेरे घरवालों ने मना कर दिया है। इसके बाद मैंने फ़ोन डिसकनेक्ट कर दिया। 2-3 दिन बाद इरशाद का दोबारा फ़ोन आया तो उसने मेरी उस पंजाबी आदमी से ही बात करायी। उस पंजाबी आदमी ने हालचाल पूछने के बाद कहा कि मिस्टर संजय मैंने तो आपके लिए नियम में छूट दिलवा कर ढाका से ही पाकिस्तान जाने का वीज़ा देने की बात कर रखी है और वैसे भी आपने हमसे वादा किया था कि ईद के बाद आप हमारे साथ डिनर करेंगे। मैंने कहा कि सर, मुझे एक-दो दिन में ही वापस अपने घर भारत जाना है और 2-3 महीने बाद ही मैं वापस बांग्लादेश में आऊँगा।

उन्होंने कहा कि मिस्टर संजय, आप बहुत समझदार और हमारे प्रिय है और मैं जानता हूँ कि आप अपने घर नहीं जा सकते हैं, क्योंकि वहाँ की पुलिस आपको खोज रही है। मैं जानता हूँ कि आपका असली नाम संजय नहीं है, बल्कि शेर सिंह राणा है और आप तिहाड़ जेल दिल्ली से फ़रार हो रखे हो। मैं उनकी यह बात सुन कर एकदम सन्न रह गया, क्योंकि मैं सोच भी नहीं पा रहा था कि इन्हें, मेरे बारे में और मेरे नाम के बारे में कैसे पता चला। मैं चुप हो गया तो वह पंजाबी आदमी बोला कि आप हमारे पास एम्बेसी में आइये तब बैठ कर आराम से बात करेंगे और आप सोच भी नहीं सकते कि हम आपके कितने काम के हैं।

मैंने कहा वह कैसे तो उन्होंने जवाब दिया कि हम आपको भारतीय पुलिस से

https://t.me/Sahityajunction

बचायेंगे और आपको ढाका में बहुत अच्छा व्यापार शुरू करा देंगे। अगर आप चाहेंगे तो आपको हमेशा के लिए पाकिस्तान में भी सैटल करा सकते हैं। मैंने कहा कि इसके लिए मुझे आप लोगों के लिए क्या करना होगा? तो उन्होंने कहा कि कुछ भी नहीं, हम तो हर उस शख़्स की सहायता करने के लिए तैयार रहते हैं जिसको भारत से कोई परेशानी हो। हम आपका वह काम भी, जिस काम के लिए आप अफ़ग़ानिस्तान जाना चाहते थे, यहीं बैठे-बैठे करा देंगे, अफ़ग़ानिस्तान में हमारी बहुत जान-पहचान है।

मैंने कहा कि—सर, मैं अफ़ग़ानिस्तान तो ऐसे ही घूमने जाना चाहता था और मुझे वहाँ कोई काम नहीं था और मेरा अब अफ़ग़ानिस्तान जाने का विचार भी कैंसिल हो गया है। फिर मैंने कहा—सर, मुझे एक बात बता दीजिए कि आपने कैसे पता किया कि मेरा नाम शेर सिंह है। उसने कहा मिस्टर संजय हम देश चलाते हैं, आपका नाम पता करना तो बहुत छोटा काम है। मैंने कहा, सर, ठीक है मैं 2-3 दिन में आपके पास ढाका आ कर मिलूँगा तो उसने कहा कि हम आपके आने का इन्तज़ार करेंगे। उसके बाद फ़ोन डिसकनेक्ट हो गया। मेरे चेहरे से हवाइयाँ उड़ती देख शाहीन भाई ने, जो उस समय मेरे साथ थे, पूछा किसका फ़ोन था, फ़ोन पर बात करने के बाद परेशान क्यों दिख रहे हो। मैंने कहा, ऐसी कोई बात नहीं है। मैंने इन्जीनियर कुमार साहब से दुबई बात की तो उन्होंने मुझे बताया कि कल मैं आपका टिकट ख़रीद कर कूरियर से आपके बताये गये पते पर भेज दूँगा। मैंने कहा कि भैया, आप कल ज़रूर भेज देना, क्योंकि मुझे जल्दी है।

दो दिन और बीत गये तो मैंने सोचा कि अभी मुझे 4-5 दिन और अफ़ग़ानिस्तान जाने में लग सकते हैं। मैं अपना वह फ़ोन नम्बर, जो पाकिस्तान एम्बेसी वालों को मालूम था, बन्द करने की सोच रहा था, लेकिन यह नम्बर कई लोगों के पास था, जिनसे मुझे काम की बातें करनी थीं इसलिए मैं इस नम्बर को बन्द नहीं करना चाहता था। मैंने सोचा कि पाकिस्तान एम्बेसी वालों को अभी मीठी-मीठी बातें करके ही टालना अच्छा है, क्योंकि 4-5 दिन में तो मैं अपने काम से अफ़ग़ानिस्तान चला ही जाऊँगा। यही सब सोच कर मैंने अपना फ़ोन बन्द नहीं किया। अपनी इन्स्टीटचूट में भी मैं इस दौरान लगातार जाता रहा।

आयशा से भी मैंने बताया कि मैं 2-3 महीने तक अब नहीं आऊँगा, क्योंकि मैं दुबई जा रहा हूँ, लेकिन मैं उसे सदा की तरह वहाँ से फ़ोन करता रहूँगा। वह मेरी यह बात सुन कर कि मैं 2-3 महीने अब नहीं मिलूँगा तो वह बड़ी परेशान हो गयी और कहने लगी कि तुम इतनी जल्दी-जल्दी खुलना से बाहर क्यों जाते हो? मैंने कहा कि काम के सिलसिले में, तो वह बोली कि तुम मेरे अब्बू के साथ मिल कर बांग्लादेश में ही काम क्यों नहीं करते, हमारी इतनी बड़ी फ़िश फ़ैक्टरी है और मैं अब्बू से तुम्हारे लिए बात कर सकती हूँ।

मैंने कहा, मैं ख़ुद अपने आप कुछ करना चाहता हूँ। अगर किसी की सहायता लेनी होती तो मैं भारत से बांग्लादेश क्यों आता? फिर मैंने उसका मन रखने के लिए कहा कि मैं जब 2-3 महीने बाद दुबई से वापस आऊँगा तब उसकी इस बात पर विचार करूँगा। अगले दिन इरशाद का मेरे पास दोबारा फ़ोन आ गया तो मैंने उसको टालते हुए कहा कि मैं 3-4 दिन बाद आऊँगा। मैं यहाँ किसी काम में फँस रहा हूँ। मेरी यह बात सुन कर वह मुझसे बोला कि आप शायद हमें टालना चाहते हैं और उसने मुझे बातों-ही-बातों में यह एहसास कराने की कोशिश की कि अगर मैं उनकी बात नहीं मानूँगा तो ज़्यादा दिन

https://t.me/Sahityajunction

आज़ादी का जीवन भी नहीं जा सकूँगा। मैंने उसकी बात का कोई विरोध नहीं किया, क्योंकि मेरे ऐसा करने पर मेरा नुक़सान था और अभी मेरा समय नहीं आया था। मैंने उससे 3-4 दिन बाद का, मिलने का पक्का वादा कर लिया।

अगले दिन मैंने फ़ोन पर दुबई इन्जीनियर साहब कुमार भाई और ढाका में ट्रेवेल एजेण्ट से बात करके यह मालूम कर लिया कि मेरे नाम का टिकट ट्रैवेल एजेण्ट के ऑफिस में आ गया है। इससे अगले दिन मैं और शाहीन भाई सुबह ही ढाका पहुँच गये। इस बार मैं अपना सारा सामान, जो मुझे अफ़ग़ानिस्तान साथ ले जाना था, पैक करके अपने साथ ही ले आया था। हम दोनों ट्रेवेल एजेण्ट के पास गये तो उसने हमें अपने ऑफिस के पास ही इमीरेट्स एयर लाइन्स के ऑफिस में एक लड़की का नाम बता कर टिकट के लिए भेज दिया और जो दुबई से कॅरियर के द्वारा मेरा टिकट आया था, वह मुझे दे दिया, क्योंकि इस टिकट को दिखा कर ही दुबई से कनेक्टिंग फ़्लाइट का टिकट मुझे लेना था। मैं और शाहीन भाई इमीरेट्स के ऑफिस में जा कर उस लड़की से मिल और मैंने उसे बताया कि मुझे उस ट्रैवेल एजेण्ट ने भेजा है और अपना टिकट भी, जो दुबई से आया था, दिखा दिया।

यह लड़की बातचीत और व्यवहार में बहुत अच्छी थी और बहुत अच्छी हिन्दी बोलती थी। जब मैंने लड़की से बंगाली भाषा में बात की तो उस लड़की ने मेरी उल्टी-पुल्टी बांग्ला को सुन कर कहा कि आप मुझसे हिन्दी में बात कर सकते हैं। मैंने कहा कि आपको इतनी अच्छी हिन्दी कैसे आ गयी तो वह बोली कि मैं हिन्दी के धारावाहिक नाटक टी.वी. पर बहुत पसन्द करती हूँ और उन्हें देखदेख कर ही ठीक-ठाक हिन्दी मुझे आ गयी है। लेकिन फिर भी कुछ शब्द मैं समझ नहीं पाती हूँ।

मैंने मज़ाक में ही कहा कि मैं आपको सिखा दूँगा, तो वह इसे सच मान कर बहुत ख़ुश हुई। उस लड़की ने मुझसे कहा कि आप पहली बार बाइ एयर बाहर जा रहे हैं, इसलिए एयर पोर्ट पर आपको कोई परेशानी न हो, आप मेरा मोबाइल नम्बर लिख लीजिए। मैं अपने साथ में काम करने वालों को, जो एयर पोर्ट के हमारे एयर लाइन्स के काउण्टर पर रहते हैं, आपके लिए कह दूँगी कि आप मेरे फ्रैंण्ड है। उस लड़की को धन्यवाद कह कर मैं और शाहीन भाई वापस होटल में आ गये।

मेरी फ़्लाइट दुबई के लिए दो दिन बाद शाम के 4 बजे के आस-पास थी; और अब दो दिन ढाका में ही घूम-फिर कर हमें गुज़ारने थे। जिस दिन मेरी फ़्लाइट थी, उसी दिन मैंने दोपहर में पाकिस्तान एम्बेसी में इरशाद के मोबाइल पर फ़ोन किया। उसने मेरी आवाज़ सुन कर कहा कि आप ढाका आ गये। मैंने इस बात का कोई जवाब नहीं दिया और कहा कि आप मेरी अपने सर से बात करा दीजिये। उसने उस पंजाबी आदमी को फ़ोन दे दिया, मैंने उस पंजाबी आदमी से कहा कि—सर, आप मेरी क्या सहायता कर सकते हैं? उसने पूछा कि किस सिलसिले में। मैंने कहा कि हर सिलसिले में। उसने कहा कि अगर आप हमारे कहे अनुसार चलें तो आप एक साल में ही करोड़पति बन सकते हैं और भारतीय पुलिस का डर भी आपको नहीं रहेगा।

मैंने कहा कि मुझे आपके कहे अनुसार हिन्दुस्तान में बम फोड़ने पड़ेंगे, जैसे आप दूसरे लोगों से कराते हैं और आपके ऐसे बहुत लोगों से मैं तिहाड़ जेल में मिल चुका हूँ। उस पंजाबी आदमी ने मेरी यह बात सुन कर कहा कि हम तो किसी से भी बम नहीं

https://t.me/Sahityajunction

फूड़वाते हैं और वैसे भी आदमी-आदमी देख कर काम लिया जाता है। हम तो सिर्फ आपको आपके फ़ायदे वाले काम ही बतायेंगे। मैंने कहा जैसे— उसने कहा कि हम आपको ढाका में 25 लाख की इण्डियन करेन्सी दिलवा देते हैं। आप उसको इण्डिया जा कर इस्तेमाल कर लीजिए, ऐसे ही एक-दो काम उन्होंने मुझे और भी बताये।

मुझे उनकी बातें सुन कर हँसी आने लगी तो वह बोला कि आप हँस क्यों रहे हैं? क्या आपको मेरी बात पर विश्वास नहीं? मैंने उनसे कहा कि सर, मुझे आपकी बात पर पूरा विश्वास है कि जो आप मुझसे कह रहे हैं, वह सब मेरे लिए करेंगे, लेकिन मैं यह भी जानता हूँ कि आपके लिए मुझे क्या करना होगा? सर, आपने मुझे ग़लत समझ लिया है। भले ही भारतीय पुलिस मुझे मार दे या पकड़ कर सारी ज़िन्दगी जेल में रखे, फिर भी मैं ऐसा कोई काम करना तो सोच भी नहीं सकता, जिससे मेरे देश को कोई हानि होती हो।

मैं तो आपसे बातचीत कर रहा हूँ, इसी बात को सोच कर मुझे अच्छा नहीं लगता और अगर मेरी मजबूरी न होती तो मैं आपकी एम्बेसी में कभी न आता। आप चाहे मुझे कितने भी पैसों का या कोई भी लालच दीजिए। मुझ पर कोई फ़र्क नहीं पड़ेगा, क्योंकि मैं जानता हूँ कि जो और जितना मेरे भाग्य में होगा, मुझे अपने देश के साथ वफ़ादारी करने में ही मिल जायेगा। मैंने कहा कि आप एक पढ़े-लिखे सभ्य आदमी हैं और मैं आपसे कोई ग़लत बात नहीं करना चाहता, क्योंकि यह मेरी सभ्यता नहीं है। इरशाद मुझे पिछली बार पुलिस से पकड़वाने की धमकी दे रहा था। मैं इन धमकियों से डरने वाला नहीं हूँ आप इरशाद जी को बता दीजियेगा कि ऐसी ग़लत बातें नहीं करनी चाहिएँ।

फिर मैंने तुरन्त ही फ़ोन डिसकनेक्ट कर दिया। फ़ोन डिसकनेक्ट करने के बाद मैंने वह मोबाइल फ़ोन वहीं पर पत्थर से तोड़ दिया और उसका सिमकार्ड भी निकाल कर तोड़ दिया। शाहीन भाई ने मुझसे कहा कि तोड़ क्यों रहे हो? इससे अच्छा तो मुझे ही दे देते। मैंने कहा भइया, जब मैं दुबई से वापस आऊँगा तब आपको एक नया मोबाइल फ़ोन गिफ़्ट में दूँगा तब तक आप मेरा यह दूसरा मोबाइल फ़ोन अपने पास रख लीजिए। इसे तोड़ना ज़रूरी था, क्योंकि कुछ पागलों के फ़ोन इस पर आते थे। इसके बाद मैंने इन्जीनियर साहब कुमार भाई को एक एस.टी.डी. से फ़ोन किया और अपनी फ़्लाइट के बारे में बताया।

उन्होंने कहा कि मेरी बात मानिये, आप एक दिन मेरे पास ही दुबई में रुक जाना, क्योंकि आपकी जो काबुल की फ़्लाइट है, वह आपके दुबई आने के क़रीब 12-13 घण्टे बाद काबुल जायेगी। मैं आपको ऑन अराइवल वीज़ा के तहत आपकी गारण्टी ले कर एयर पोर्ट से बाहर ले जाऊँगा। क्योंकि मैं पहले ही दुबई में घूमने का प्रोग्राम बना चुका था, इसलिए मैंने ढाका से दुबई वाली फ़्लाइट और काबुल वाली फ़्लाइट में इतना समय का अन्तर रखा था। मैंने अपने आने का समय इन्जीनियर साहब को बता दिया और उनसे एयर पोर्ट से मुझे ले जाने के लिए कहा। शाहीन भाई मुझे एयर पोर्ट पर छोड़ कर वापस खुलना चले गये। मैं एयर पोर्ट पर सारी फ़ारमैलिटी पूरी करके इमीरेटेस एयर लाइन्स के हवाई जहाज़ में बैठ गया।

https://t.me/Sahityajunction

भाग : दो

रुड़की से तिहार तक

https://t.me/Sahityajunction

9. दुबई में

हवाई जहाज़ में मेरे बग़ल की सीट पर एक बंगाली आदमी बैठा था, जिसकी उम्र क़रीब 40 साल के आस-पास थी और जो कई बरसों से दुबई में रह रहा था। मेरी सीट के सामने एक टच स्क्रीन टी.वी. लगा हुआ था, जिसको मैं ऑन करना चाहता था, लेकिन मेरी समझ में नहीं आ रहा था कि ये टी.वी. कैसे ऑन होगा, लेकिन मैंने बग़ल की सीट वाले व्यक्ति को देख कर जैसे-तैसे टी.वी. को ऑन कर लिया। इस समय टी.वी. पर कोई इंग्लिश मूवी आ रही थी, और मेरी बग़ल के सीट वाले व्यक्ति के टी.वी. की स्क्रीन पर हिन्दी मूवी आ रही थी। मैं भी वही हिन्दी फ़िल्म अपनी टी.वी. की स्क्रीन पर लगाना चाहता था, लेकिन उस स्क्रीन पर मुझे कोई भी बटन नहीं दिख रहा था जिससे कि मैं टी.वी. चैनल बदल सकता। काफ़ी देर तक मैं वह इंग्लिश मूवी झेलता रहा, फिर मैंने शरमाते हुए उस बैठे बंगाली आदमी से इंग्लिश में पूछा, कि मुझे अपनी टी.वी. की स्क्रीन पर हिन्दी फ़िल्म देखनी है जो आप देख रहे हैं, लेकिन मुझे चैनल बदलने के लिए कोई बटन नहीं दिख रहा है।

वह मुस्कुराया और बोला कि आप फ़र्स्ट टाइम हवाई यात्रा कर रहे हैं। मैंने कहा, जी, तो उसने कहा आपको हवाई यात्रा में कैसा लग रहा है। मैंने कहा, एकदम नॉर्मल। उसने कहा, जब मैं पहली बार हवाई जहाज़ में बैठा था तो मैं तो बहुत ख़ुश और एक्साइटेड था। बातें करते-करते उस आदमी ने मेरी टी.वी. स्क्रीन पर वह हिन्दी फ़िल्म लगा दी और मैं भी उस टच स्क्रीन को ऑपरेट करना सीख गया। इससे पहले मैंने कभी टच स्क्रीन किसी भी चीज़ में नहीं देखी थी, इसलिए मुझे इस टी.वी. को ऑपरेट करने में बड़ा मज़ा आया।

शाम के समय हवाई जहाज़ दुबई एयरपोर्ट पर उतर गया। मैंने एयरपोर्ट से कुमार भाई को फ़ोन किया तो उन्होंने मुझे अपने एक परिचित के पास भेजा जो एयरपोर्ट के अन्दर ही काम करता था और फिर थोड़ी ही देर में इन्जिनियर साहब भी वहाँ आ गये। उन्होंने सारी काग़ज़ी कार्रवाई एयरपोर्ट पर मेरे साथ करवायी और एयरपोर्ट से गाड़ी में बैठा कर सीधा मुझे अपने दुबई वाले फ़्लैट पर ले गये। फ़्लैट पर जा कर मैं वहाँ नहा-धो कर फ्रेश हुआ और फिर हल्का नाश्ता करके कुमार साहब उर्फ़ इंजीनियर से बातें करने लगा। इंजीनियर क़रीब 45 साल के साउथ इण्डियन आदमी थे। वे 6 फ़ूट के हट्टे-कट्टे साँवले रंग के हैंडसम और बहुत ही मिलनसार आदमी थे और क़रीब 15 साल से दुबई में अपना बिज़नेसकर रहे थे।

वे मेरे असली नाम और काम के बारे में सब कुछ जानते थे, क्योंकि सुभाष भाई ने इनको पहले ही मेरे बारे में सब बता दिया था। उन्होंने मुझसे कहा कि आपसे बात करके और आपको देख कर बिलकुल भी ऐसा नहीं लगता है कि आपके ऊपर फूलन देवी जैसी डाकू को मारने का केस होगा और आप तिहाड़ जेल को तोड़ कर भागे होंगे। मैंने कहा कि भैया, समय बहुत बलवान है ओर किसके हाथों से क्या होगा। यह तो सिर्फ ऊपर वाला ही जानता है। उन्होंने कहा यह बात तो ठीक है, लेकिन आपसे बात करके ऐसा लगता है, कि आप अच्छे-ख़ासे पढ़े-लिखे हो और अच्छे परिवार से हो, फिर आपको जेल वाली लाइन में आने की क्या ज़रूरत पड़ गयी। ऐसी क्या मजबूरी हो गयी

https://t.me/Sahityajunction

जो आपको यह सब करना पड़ा। अगर आप बुरा न मानें तो मुझे अच्छा लगेगा कि आप अपने बारे में मुझे बतायें। मैंने कहा—ठीक है, भैया। मैं आपको पूरी कहानी बताऊँगा, लेकिन अभी तो कुछ आराम करिये और मुझे दुबई घुमाने की सोचिये। उन्होंने कहा—क्योंकि आपको कल सुबह ही अफ़ग़ानिस्तान जाना है, इसलिए आप ज़्यादा तो घूम नहीं पायेंगे, लेकिन आप जब अफ़ग़ानिस्तान से वापस आयेंगे तब आप 15-20 दिन मेरे पास यहाँ रुकिएगा, और तब मैं आपको सब जगह घुमाऊँगा। यहाँ पास में ही फ़ाइव स्टार होटल है और आज वहाँ जा कर हम डिनर कर लेंगे, वहाँ पर आपको होटल में बॉलीवुड प्रोग्राम भी देखने को मिलेगा। अब आप मुझे बस अपनी स्टोरी बताइये, अपने बचपन से अब तक की। मैंने कहा ठीक है और फिर मैंने उन्हें अपने बचपन से अब तक की सभी बातें बतानी शुरू कीं।

https://t.me/Sahityajunction

10. बचपन के दिन

मेरा जन्म 17 मई, 1976 में रुड़की (ज़िला हरिद्वार) में एक ज़मींदार परिवार में हुआ था। मेरे पिताजी का नाम श्री सुरेन्द्र सिंह राणा और माता जी का नाम श्रीमती सत्यवती राणा है। मेरे दादा जी का नाम ठाकुर किशन सिंह और दादी का नाम श्रीमती मुकुन्द कौर था। मेरे दादा ठाकुर किशनसिंह रुड़की के सबसे बड़े ज़मींदार थे और उनके पास क़रीब 7 हज़ार बीघा ज़मीन थी। जब सरकार ने ज़मींदारों की ज़मीन अक्वायर की, तो मेरे दादाजी अपने पास ज़्यादा ज़मीन नहीं बचा सके, लेकिन फिर भी क़रीब 300 सौ बीघा ज़मीन उन्होंने अपने और अपने परिवार के लिए बचा ली। 55 साल की उम्र में ही हार्ट अटैक से उनकी मृत्यु हो गयी।

दादा जी अपने पीछे तीन लड़के जिनमें सबसे बड़े ठाकुर वीरेन्द्र सिंह जी जो मेरे ताऊजी लगे, उसके बाद मेरे पिताजी श्री सुरेन्द्र सिंह जी और उनके बाद मेरे चाचाजी श्री राजकुमार सिंह जी और मेरी दादी जी को छोड़ कर चले गये। मेरे ताऊजी और मेरे पिताजी की शादी भी दादा जी की मृत्यु के बाद हुई। दादाजी ने रुड़की में सबसे पहले एक बिल्डिंग बना कर उसमें सेण्ट्रल बैंक ऑफ़ इण्डिया की शाखा खुलवायी और इस बैंक की बिल्डिंग के पीछे और ऊपर एक मकान बनाया जिसमें हमारा और हमारे पिताजी के भाइयों का परिवार कम्बाइण्ड फैमिली के रूप में आज भी रहता है।

एक ही घर में रहने के बाद भी सबकी किचन अलग-अलग थी, लेकिन आपस में बहुत प्रेम भाव था। दादा जी से अच्छी-ख़ासी जायदाद मिलने के कारण पिताजी ने कोई नौकरी या व्यवसाय नहीं किया। वे सिर्फ कभी-कभी खेत पर जा कर यह देख लेते थे कि जिन लोगों को ज़मीन में खेती करने के लिए रखा हुआ है, वे ठीक से अपना काम कर रहे हैं या नहीं। मेरे बाद मेरे दो छोटे भाइयों का भी जन्म हुआ जिनमें बीच वाले का नाम विक्रमसिंह राणा और सबसे छोटे का नाम विजयसिंह राणा रखा गया।

मैं बहुत ही तन्दुरुस्त और मोटा-ताज़ा पैदा हुआ था इसलिए मेरे ताऊजी ने मेरी सेहत को देख कर कहा कि यह तो शेर की तरह है और इसका नाम शेर सिंह रखेंगे और ये जीवन में शेरों वाले काम ही करेगा। तब से मेरा नाम शेर सिंह पड़ गया। जब मैं क़रीब तीन साढ़े तीन साल का हुआ तो मेरे माता-पिता ने मेरा दाख़िला घर के पास में ही एक छोटे-से स्कूल में करवा दिया। शुरू-शुरू में स्कूल जाने में मैं बहुत आना-कानी करता था जैसे सभी बच्चे करते हैं, लेकिन बाद में मुझे स्कूल जाने में मज़ा आने लगा, क्योंकि स्कूल के सामने मिठाई की बहुत अच्छी दुकान थी, जहाँ से मेरे पिताजी जब भी स्कूल से छुट्टी होने पर मुझे लेने आते थे तो हमेशा बर्फ़ी खिलाते थे, और यही बर्फ़ी खाने का लालच मुझे रोज़ स्कूल ले जाता था।

एक साल कलावती स्कूल में पढ़ने के बाद मेरा दाख़िला पास में ही एक दूसरे स्कूल में करा दिया गया, क्योंकि यह स्कूल कलावती स्कूल से अच्छा था। स्कूल की एक आया मुझे रोज़ सुबह घर से स्कूल ले जाती थी। कलावती स्कूल में तो मैं बर्फ़ी के लालच में चला जाया करता था, लेकिन इस नये स्कूल में बर्फ़ी न मिलने के कारण स्कूल जाने का मतलब भी ख़त्म हो गया था। इसलिए मैं रोज़ आया के साथ स्कूल जाने में आना-कानी करता था। इसका तोड़ मेरी माताजी ने यह निकाला कि मेरे लंच बॉक्स में

https://t.me/Sahityajunction

मेरी मनपसन्द चीजें जैसे—पेस्ट्री, क्रीम रोल और क्रीम पफ़ रख कर मुझे मेरा लंच बॉक्स दिखाती थीं और मेरे सामने ही वह लंच बॉक्स आया के हाथ में दे देती थीं और मुझसे कहती थीं कि बेटे, यह आपको ब्रेक-फ़ास्ट के टाइम पर खाने के लिए तुम्हारा लंच बॉक्स देगी। इस लंच बॉक्स के लालच में ही अब मैं सीधी तरह से स्कूल जाने लगा था।

स्कूल जाते-जाते पढ़ाई में भी अब मेरा मन लगने लगा था, और 3-4 महीने बाद ही बड़ी मैडम प्रिंसिंपल ने मेरे पिताजी को बुलाया और कहा कि आपका बच्चा पढ़ाई में ख़ूब तेज़ है, इसलिए अगर आप कहें तो हम इसे एल. के. जी. क्लास से यू. के. जी. क्लास में बैठा देते हैं, यह यू. के. जी. की पढ़ाई आराम से कर लेगा। मेरे पिताजी के हाँ कहने पर—बिग मैडम ने मेरा ट्रान्सफ़र एल. के. जी. से यू. के. जी. क्लास में कर दिया। यू. के. जी. क्लास की पढ़ाई भी मैं ठीक से अब समझने लगा था और इस क्लास के सभी बच्चे मेरे दोस्त बन गये थे। मेरी इस यू. के. जी. क्लास में बिग मैडम का पोता भी पढ़ता था fजिसका नाम बन्नी था। बिग मैडम का पोता बन्नी स्कूल के सभी बच्चों पर ख़ूब रोब दिखाता था, क्योंकि वे लोग स्कूल के मालिक थे और उसकी माँ ही पूरे दिन स्कूल में रह कर स्कूल को संचालित करती थी। एक दिन जब हम सभी बच्चे स्कूल के ग्राउण्ड में ़फ़ूटबॉल खेल रहे थे, तो बन्नी ने मेरे एक दोस्त को बिना वजह धक्का दे दिया और नीचे ज़मीन पर गिरा कर मारने लगा। सब बच्चे बन्नी को ऐसा करते हुए देखते रहे और डर के मारे कोई भी बीच में नहीं बोला, क्योंकि वह बिग मैडम का पोता था।

मेरा जो दोस्त पिट रहा था, वह ज़ोर-ज़ोर से मेरा नाम बोल कर अपने को बन्नी से बचाने के लिए मुझे पुकारने लगा। मैं अपने दोस्त को बचाने के लिए गया और बन्नी को पकड़ कर उसके ऊपर से उठा दिया। इस बात से नाराज़ हो कर बन्नी मुझसे लड़ने लगा तो मैंने उसे अड़ंगी लगा कर ज़मीन पर नीचे गिरा दिया। ज़मीन पर गाय का ढेर सारा गोबर गिरा हुआ था। बन्नी मेरी अड़ंगी से जब ज़मीन पर गिरा तो उसका चेहरा गोबर से सन गया और वह फिर अपना चेहरा साफ़ करते-करते, रोता-रोता बिग मैडम के पास चला गया बिग मैडम उस दिन ऑफिस में नहीं थीं और उनका काम उस दिन बन्नी की मम्मी सँभाल रही थीं। उन्होंने मुझे अपने ऑफिस में बुलाया और मेरी स्कूल डायरी में एक नोट लिख दिया कि मैं कल अपने पापा को स्कूल साथ ले कर आऊँ? और 2-3 स्केल भी मेरे हाथों पर सज़ा के तौर पर लगा दिये।

मैंने घर जा कर मम्मी -पापा को डायरी का नोट दिखाया और पूरी स्कूल की बात बतायी तो मेरे पापाजी बोले कि बेटे बिना वजह किसी से कभी मत लड़ना, लेकिन अगर कोई लड़ाई करे तो कभी पिट के मत आना। अगले दिन मैं अपने पापा को स्कूल ले गया। तो उस दिन बिग मैडम भी ऑफिस में थीं। बिग मैडम को बन्नी के साथ हुई बात के बारे में पता नहीं था, इसलिए उन्होंने बन्नी और उसकी मम्मी को क्लास रूम से अपने ऑफिस में बुलाया और उनसे पहले सारी बात मालूम की और फिर मुझसे भी बात पूछी। मेरी बातें सुन कर उन्होंने बन्नी और उसकी मम्मी को डाँटा और मुझे मेरी क्लास में पढ़ने के लिए भेज दिया।

एक दिन जब मैं स्कूल की छुट्टी होने पर घर अकेला ही पैदल वापस आ रहा था तो बीच में सड़क पर मुझे एक पर्स पड़ा हुआ मिला जिसमें ख़ूब सारे नोट थे। मैं उसे उठा कर अपने स्कूल बैग में रख कर घर ले आया और घर आ कर मम्मी को बताया कि मुझे

https://t.me/Sahityajunction

ख़ूब सारे पैसे सड़क पर गिरे हुए मिले हैं। मेरी मम्मी ने मुझे ख़ूब डाँटा और कहा कि ऐसे सड़क से कोई भी चीज़ उठा कर मत लाया करो और मुझे वह पर्स वहीं पर दोबारा वापस रख कर आने के लिए कहा और फिर मम्मी के कहे अनुसार मैं वह पर्स वहीं सड़क पर रख आया जहाँ से मैंने उसे उठाया था।

जिस स्कूल में मैं इस समय पढ़ रहा था, वह सिर्फ पहली कक्षा तक था और इस स्कूल का मक़सद बच्चों को ऐसी पढ़ाई कराना था, जिससे कि बच्चे शहर के बड़े स्कूलों में दाख़िला ले सकें, क्योंकि सभी बड़े स्कूल पहली कक्षा से शुरू होते थे। रुड़की शहर का सबसे अच्छा इंग्लिश मीडियम स्कूल सेण्ट गेब्रियल्स अकैडेमी माना जाता था। यह स्कूल ईसाई मिशनरियों का था और आज़ादी से पहले अंग्रेज़ी सरकार ने इसे आर्मी के कैण्ट एरिया में अपने अंग्रेज़ आर्मी अफ़सरों के बच्चों और शहर के अमीर आदमियों के बच्चों के लिए खुलवाया था। शहर के जो भी ठीक ठाक लोग थे वह अपने बच्चों को इस स्कूल में दाख़िला दिलाने की कोशिश करते थे। यह पहली क्लास से शुरू होता था और पहली क्लास में दाख़िले के लिए स्कूल के लोग लिखित और इण्टरव्यू इक्ज़ाम सभी बच्चों का लेते थे। मेरे मम्मी-पापा भी मेरा दाख़िला सेंट गेब्रियल्स अकैडेमी में कराना चाहते थे, इसलिए पापा इस स्कूल का फ़ॉर्म ले आये। मैंने स्कूल में दाख़िले के लिए लिखित परीक्षा दी और मेरा दाख़िला सेण्ट गेब्रियल्स अकैडेमी में पहली कक्षा में हो गया। यह स्कूल पहली कक्षा से 12वीं कक्षा तक था, इसलिए अब मेरी स्कूल की पढ़ाई को ले कर मेरे मम्मी-पापा की चिन्ता ख़त्म हो गयी थी। स्कूल में जो बच्चे मेरे साथ पढ़ते थे उनमें से भी 4-5 बच्चों का दाख़िला मेरे साथ सेण्ट गेब्रियल्स अकैडेमी में हो गया था, और क्योंकि ये सभी बच्चे मेरे घर के पास ही रहते थे, इसलिए हम सब एक रिक्शे में रोज़ स्कूल आने-जाने लगे, क्योंकि यह नया स्कूल हमारे घर से काफ़ी दूर था।

हमारे घर में एक आईशर कम्पनी का ट्रैक्टर भी था जिसे मेरे पापाजी और चाचाजी कभी-कभी खेतों पर ले जाते थे। मैं भी कभी-कभार उनके साथ ट्रैक्टर पर बैठ कर खेतों में साथ चला जाता था। एक दिन मैं अपने पापाजी के साथ खेतों पर गया तो मैंने पापाजी से कहा कि मैं घर के लिए खीरे तोड़ लूँ, तो उन्होंने मुझे खेत से खीरे तोड़ने के लिए भेज दिया और ख़ुद एक जगह कुर्सी पर बैठ गये। मैं क़रीब 20-25 मिनट तक खेत में बड़ा-सा खीरा तोड़ने के लिए ढूँढता रहा, और फिर एक बहुत बड़ा खीरा मुझे दिखा। उसे मैंने तोड़ लिया वह इतना बड़ा था कि मुझसे ठीक प्रकार से उठाया भी नहीं जा रहा था, इसलिए मैं उसे वहीं छोड़ कर पापाजी के पास आया और बहुत ख़ुशी-ख़ुशी बताया कि मैंने बहुत बड़ा खीरा ढूँढ कर तोड़ लिया है।

मेरे पापाजी की बग़ल में एक आदमी खड़ा था जिसका नाम शंकर था और वह हमारे खेतों पर काम करता था और वहीं खेतों पर ही रहता था। शंकर ने मेरी बात सुन कर मेरे पापा जी से कहा कि बाऊजी, इसने कहीं खीरे का बीज तो नहीं तोड़ दिया। यह सुन कर मेरे पापाजी मुझे वहाँ ले कर गये जहाँ मैंने उस खीरे को तोड़ कर रखा था। जब शंकर ने उस खीरे को देखा तो वह अपना माथा पकड़ कर ज़मीन पर बैठ गया और बोला कि बाऊजी इसने तो सच में ही खीरे का बीज तोड़ लिया है, मैंने इस बीज को बड़ी मेहनत से तैयार किया था।

मेरे पापाजी ने बोला कि कोई बात नहीं अब तो टूट गया तुम दूसरा बीज तैयार कर

https://t.me/Sahityajunction

लेना और फिर उस खीरे के साथ और दूसरे खीरे, जो शंकर ने हमारे लिए तोड़े थे, ले कर घर आ गये और मुझे मेरी ग़लती के लिए कुछ भी नहीं कहा। एक दिन मैं फिर अपने पापाजी के साथ खेत पर गया तो वहाँ पर जो पानी का टयूबवेल था उसमें मैं अपने सारे कपड़े उतार कर नंगा ही नहाने के लिए घुस गया। मैं बहुत देर से पानी के पम्प के नीचे खड़ा हो कर नहा रहा था कि अचानक ही खेतों में से एक बहुत लम्बा साँप मेरे ऊपर चढ़ा और चढ़ कर पार कर गया, लेकिन मुझे बहुत ज़्यादा पानी होने और नहाते हुए आँखें बन्द रहने के कारण नहीं दिखा। जब साँप मेरे ऊपर से ग़ुजर कर दूसरी तरफ़ पहुँच गया और मामूली-सा हिस्सा उस साँप का मेरे ऊपर बचा तो मैंने उस साँप को देखा। मैं नंगा ही डर के मारे जोर-जोर से साँप-साँप चिल्लाते हुए टयूबवेल से सड़क की तरफ़ आ गया।

मेरे साँप-साँप चिल्लाने से शंकर भैया जो वही पास में ही खेतों पर काम कर रहे थे मेरी तरफ़ भागे हुए आये और फावड़े से उस साँप को मार दिया। इतने में मेरे पापाजी भी वहाँ आ गये और शंकर को धन्यवाद कहा और 500 रुपये का इनाम भी दिया। मुझे भी पापा ने कपड़े पहनाये और घर ले आये। मेरे दिल में साँप का ऐसा डर बैठा कि मैं फिर कभी खेतों पर जा कर टयूबवेल पर नहीं नहाया। पापाजी और चाचाजी को ट्रैक्टर चलाते हुए जब मैं देखता तो मेरा मन भी उसे चलाने का होता। ट्रैक्टर हमारे घर के बाहर ही खड़ा रहता था। मुझे जब भी मौ़का मिलता, मैं अपने छोटे भाइयों को ले कर ट्रैक्टर पर बैठ जाता और ट्रैक्टर का स्टेरिंग घुमा-घुमा कर ऐसे करता जैसे वह चल रहा हो। एक दिन ऐसे ही करते-करते मैं ट्रैक्टर के गियर रॉड को हाथ से पकड़ कर हिला रहा था तो वह न्यूट्रल पर हो गयी। गियर न्यूट्रल पर होते ही ट्रैक्टर आगे को चलने लगा, क्योंकि वह चढ़ाई पर खड़ा था।

जैसे ही वह चढ़ाई से नीचे तेज़ी से जाने लगा मैं बहुत घबरा गया और स्टेरिंग को घुमाने लगा और मेरे स्टेरिंग घुमाने से वह ट्रैक्टर हमारे बग़ल के घर वालों की दीवार से टकरा कर रुक गया लेकिन ट्रैक्टर की टक्कर से उनकी दीवार थोड़ी-सी टूट गयी। मैं और मेरा भाई ट्रैक्टर से कूद कर वहाँ से भाग गये। घर के पास में एक मन्दिर था, जो मेरे दादा जी ने बनवाया था। उस मन्दिर में हम दोनों भाई शाम तक छुप कर बैठे रहे।

शाम होने पर हम एक-एक करके घर आये तो मम्मी ने पूछा कि तुम दिन भर कहाँ रहे तो हमने कहा कि यहां मन्दिर में थे। हमें इस बात की ख़ुशी थी कि किसी को यह पता नहीं चला था कि ट्रैक्टर से छेड़ख़ानी करके मैंने पड़ोसियों की दीवार तोड़ी थी और आज तक पता नहीं चलने दिया। मेरे दोनो छोटे भाइयों का दाख़िला भी मेरे पापाजी ने मेरे साथ सेण्ट गेब्रियल्स अकैडेमी में कराने की बहुत कोशिश की, लेकिन वे दोनों हर बार इण्टरेन्स इक्ज़ाम में फ़ेल हो गये। उनका दाख़िला दूसरे स्कूल में करवाना पड़ा।

हम तीनों भाई बहुत ही शरारती थे और जब भी मम्मी घर से कहीं बाहर जाती थी तो हमारा सबसे मनपसन्द खेल डबल-बेड पर आपस में कुश्ती लड़ना और डबल बेड और सोफ़े पर ऊँचाई से छलाँग लगाना होता था, जिसके कारण कई सालों तक हमारे कई डबलबेड और सोफ़े टूटते रहे, लेकिन फिर भी हमारे मम्मी-पापा ने हमें कभी मारा-पीटा नहीं। हाँ, मम्मी इन बातों पर हम तीनों को बहुत डाँटती थीं। दूसरी बात जिस पर हमारी मम्मी हमें बहुत डाँटती थीं वह यह थी कि जब भी मम्मी बाहर जाती थी तो खाने की

https://t.me/Sahityajunction

चीजें अलमारी में रख कर ताला लगा कर जाती थीं, लेकिन हम हर बार अलमारी की चाभी ढूँढ लेते थे, और जितनी भी चीजें उसमें खाने की रखी रहती थीं, हम तीनों भाई खा लेते थे जिससे कभी-कभी हमारे पेट भी ख़राब हो जाते थे। मम्मी जी हमेशा समझाती थीं कि यह सब तुम्हारे खाने के लिए ही है, पर फिर भी हर बार हम पूरी अलमारी ख़ाली कर देते थे।

https://t.me/Sahityajunction

11. स्कूली जीवन

ऐसे ही मज़े से बचपना कट रहा था और मैं अब फ़र्स्ट स्टैण्डर्ड से थर्ड स्टैण्डर्ड में आ गया था। फ़र्स्ट और सेकेण्ड स्टैण्डर्ड में दोनों साल मैं अपनी कक्षा में फ़र्स्ट आया था हर बार की तरह थर्ड स्टैण्डर्ड में भी टीचर ने मुझे क्लास मॉनीटर बना दिया। एक दिन हमारी हिन्दी की टीचर ने मुझसे कहा कि शेर सिंह मैं अभी आ रही हूँ, तुम ज़रा क्लास को देखो, मेरे पीछे कोई शोर न करे। जैसे ही मैडम क्लास से बाहर गयीं सब बच्चे ज़ोर-ज़ोर से शोर करने लगे और मैं भी उनके साथ शोर करने में शामिल हो गया, इतने में ही शोर सुन कर मैडम आ गयीं और उन्होंने मुझे ख़ूब हँसते और शोर करते हुए देख लिया।

मैडम को देख कर सब बच्चे चुप हो गये, लेकिन क्योंकि मैं दरवाज़े की तरफ़ पीठ करके खड़ा था, इसलिए उन्हें देख नहीं पाया। मैडम ने सज़ा के तौर पर मेरे गाल पर ज़ोर से थप्पड़ रसीद कर दिया। स्कूली जीवन में वह मेरा पहला और आख़िरी थप्पड़ था। इसके बाद भी मैंने ख़ूब शरारतें कीं, लेकिन कभी पकड़ा नहीं गया। हमारे स्कूल में हर साल बदल-बदल कर ऐनुअल डे और स्पोर्टस डे होता था। इस साल स्कूल में स्पोर्ट्स डे था। जितना अच्छा मैं पढ़ाई में था, उससे भी अच्छा खेल-कूद में था और जितने भी खेल हमारे ग्रुप के लिए हुए थे, उन सबमें मैंने पहला इनाम जीत लिया।

जिस दिन फ़ाइनल स्पोर्ट्स डे होता था उस दिन आर्मी के पैवेलियन में बहुत बड़ा कार्यक्रम होता था, जिसमें सभी बच्चों के परिवार के लोग इनवाइट होते थे और इस कार्यक्रम के चीफ़ गेस्ट हमेशा जो रुड़की में आर्मी के कमाण्डेण्ट और उनकी बीवी होती थीं। फाइनल स्पोर्ट्स वाले दिन की शुरुआत मार्च पास्ट से होती थी जिसकी अगुवाई हमारे स्कूल का हेड बॉय स्कूल का झण्डा ले कर सबसे आगे-आगे करता था। मार्च पास्ट में सबसे आगे आर्मी बैण्ड, देश भक्ति की धुन बजाते हुए चलाता था और बैण्ड के पीछे हेड बॉय और पूरे स्कूल के बच्चे। मैंने भी मार्च पास्ट को देख कर मन में इच्छा कर ली थी कि मैं भी बड़ा हो कर हेड बॉय बनूँगा और सबसे आगे रह कर पूरी परेड की अगुवाई करूँगा और ऐसा मैंने आगे चल कर किया भी।

जब प्रोग्राम के अन्त में इनाम देने के लिए कमाण्डेण्ट और उनकी बीवी इनाम मिलने वाले स्टैण्ड के पास आयी तो उन बच्चों के नाम माइक से पुकारे जाने लगे जिन्हें इनाम मिलने थे। जब मेरा नाम इनाम के लिए पुकारा गया तो मैंने कमाण्डेण्ट की बीवी से जा कर अपना कप ले लिया। जैसे ही मैं अपना कप ले कर वापस मुड़ा और थोड़ी दूर तक गया तो मेरा नाम माइक से दूसरे इनाम के लिए दोबारा पुकारा गया और ऐसा आठ बार हुआ क्योंकि मुझे आठ पहले इनाम मिले थे। बार-बार और इतने सारे इनाम मुझे देते हुए कमाण्डेण्ट की बीवी ने अपने पति और हमारे प्रिंसिपल जिन्हें हम ब्रदर कहते थे, कहा कि सारे इनाम तो इस अकेले बच्चे ने ही जीत लिये और मेरे गाल पर प्यार से हाथ फेर कर कहा, वेरी गुड। मेरे मम्मी-पापा भी मेरे इतने सारे इनाम जीतने पर बहुत ख़ुश हुए और मैंने जितने भी कप जीते थे, घर में शो-केस में ला कर सजा दिये।

खेलों से इनाम जीतने का यह सिलसिला मेरी स्कूल की पढ़ाई के दौरान आख़र तक चलता रहा। हमारे स्कूल में चौथे पीरियड के बाद इण्टरवेल होता था। प्ले ग्राउण्ड में कई झूले लगे हुए थे जिन पर बच्चे इण्टरवल में झूलते थे। जो बच्चे सबसे पहले झूले पर

https://t.me/Sahityajunction

बैठता था, उस दिन के पूरे इण्टरवल तक झूला उसी के कमाण्ड में रहता था। सबसे पहले बैठने के लिए झूले पर मैं लगभग रोज़ ही चौथे पीरियड के ख़त्म होने से पहले टीचर से कहता था कि मैडम मुझे टॉयलेट जाना है और फिर टॉयलेट में जब तक रहता था तब तक पीरियड ख़त्म होने की घण्टी न बज जाये। जैसे ही घण्टी बजती थी, मैं फटा-फट टॉयलेट प्ले ग्राउण्ड की तरफ़ भाग कर अपने मनपसन्द झूले पर जा कर बैठ जाता था। इस झूले पर हम सभी दोस्त ख़ूब तेज़-तेज़ झूलते हुए ऊँचाई पर जा कर सामने छलाँग लगाते थे, और जो सबसे लम्बी और ऊँची छलाँग लगाता था वही विजेता माना जाता था।

एक दिन ऐसे ही छलाँग लगाते समय मैं इतना ज़्यादा ऊँचा और लम्बा गया कि एक पेड़ की एक डाल से टकराया और फिर नीचे ज़मीन पर गिर गया और मेरे हाथ में चोट लग गयी। पापाजी ने मेरा हाथ डाक्टर को दिखाया तो उसने कहा कि बाँये हाथ में हल्का फ्रैक्चर है और एक महीने तक प्लास्टर बाँधना पड़ेगा। पता नहीं उसके बाद क्या हुआ कि उस तरह के झूले में अगर आज भी बैठता हूँ तो मुझे चक्कर आने लगते हैं।

अब मैं थोड़ा बड़ा भी हो गया था तो मैंने झूला झुलना छोड़ दिया और फ़ूटबॉल ज़्यादा खेलने लगा। इण्टरवेल में मैं फ़ूटबॉल को ऊँची-ऊँची किकें मार कर प्ले ग्राउण्ड में लगे एक इमली के पेड़ से इमलियाँ तोड़ता था। फ़ूटबॉल से टकरा कर जब पेड़ से बहुत सारी इमलियाँ नीचे ज़मीन पर गिरतीं तो सभी बच्चे उन्हें उठाते थे। एक दिन जब मैंने इमली के पेड़ पर से इमलियाँ तोड़ने के लिए ख़ूब तेज़ फ़ूटबॉल पर किक मारी तो फ़ूटबॉल उस इमली के पेड़ पर लगे एक मधुमक्खी के छत्ते पर लग गया और वह छत्ता टूट गया। मधुमक्खी का छत्ता टूटते ही सारी मधु मक्खियाँ प्ले ग्राउण्ड में खेल रहे सारे बच्चों पर चिपट गयीं। मेरे ऊपर भी मक्खियाँ चिपटी थीं, लेकिन मैंने प्ले ग्राउण्ड में जल रहे कूड़े के पास, जिसमें से धुआँ निकल रहा था, ज़मीन पर लेट कर अपनी जान बचा ली और दूसरे बच्चों को भी आवाज़ें लगा कर बुलाने लगा लेकिन फिर भी कुछ बच्चों को मधुमक्खियों ने बहुत ज़्यादा काट लिया था।

जब ब्रदर प्रिंसिपल को मालूम हुआ कि यह सब मेरे फ़ूटबॉल से इमली तोड़ने के कारण हुआ है तो उन्होंने मुझे अपने ऑफिस में बुलाया, लेकिन मेरे यह बताने पर की सर, ग़लती से फ़ूटबॉल खेलते समय वहाँ छत्ते पर लग गयी तो उन्होंने मुझे चेतावनी दे कर छोड़ दिया। मैं स्कूल में मौक़ा मिलते ही फ़ूटबॉल खेलता तो घर जा कर साइकिल चलाने की कोशिश करता। हमारे घर पर जो भैया काम करते थे, उनकी साइकिल बहुत ऊँची थी और मेरे सीधा खड़े होने पर भी साइकिल मुझसे ऊँची ही रहती थी। मैं साइकिल के बीच के डण्डे में अपने पैर दे कर चलाने की कोशिश करता और इस कोशिश में कितनी बार मैंने गिर कर चोटें खायीं मुझे याद नहीं है। साइकिल के बीच के डण्डे में अपने पैर दे कर चलाने के स्टाइल को हम कैंची स्टाइल से चलाना बोलते थे, और इस स्टाइल से चोटें बहुत लगती थी। मेरे बार-बार चोट लगने के कारण मेरे पापा को मेरे साइकिल सीखने का पता चला तो उन्होंने मुझसे कहा कि पास में ही एक साइकिल मिस्त्री किराये पर छोटी साइकिल देता है, तुम वहाँ जा कर उससे अपने साइज़ की साइकिल लिया करो और उस पर चलाना सीखो।

एक बार पापाजी ने उस साइकिल वाले की दुकान पर जा कर मुझे साइकिल

https://t.me/Sahityajunction

दिलवायी और उस दुकान वाले से बता दिया कि जब भी यह आये इसे एक-दो घण्टे के लिए छोटी साइकिल दे दिया करो। इसके बाद तो मैं और मेरे दोनों भाई रोज़ उस साइकिल वाले से अपने साइज़ की साइकिल ले आते और अपने घर के पास ही चलाने की ट्रिंनग लेते। साइकिल सीखते हुए मैं हमेशा सोचता था कि जब मुझे साइकिल चलानी आ जायेगी तो मैं साइकिल पर रोज़ ख़ूब दूरदूर घूमने जाया करूँगा। जिनके पास भी मैं साइकिल देखता तो मैं हमेशा यह सोचता कि यह पागल अपनी साइकिल हमेशा ऐसे ही खड़ी क्यों रखता है और दूर-दूर घूमने क्यों नहीं जाता है?

जब मैं साइकिल चलाने में एकदम पक्का हो गया तो मैंने अपने पापाजी से मुझे साइकिल दिलवाने के लिए कहा और साइकिल ख़ुद चला कर स्कूल जाने की इच्छा भी बतायी। मम्मी ने यह कह कर टाँग अड़ाने की कोशिश की कि मैं अभी बहुत छोटा हूँ और मुझे साइकिल से स्कूल भेजना अभी ठीक नहीं है, क्योंकि सड़क पर बहुत सारी गाड़ियाँ चलती हैं, लेकिन मेरे पापा ने कहा कि अगर मैं फ़ोर्थ स्टैण्डर्ड में भी फ़र्स्ट आया तो वह मुझे फ़िफ़्थ स्टैण्डर्ड में साइकिल दिलवा कर उससे स्कूल भेज देंगे। मैं फ़ोर्थ स्टैण्डर्ड में भी फ़र्स्ट ही आया और फिर मैं साइकिल से ही स्कूल आने-जाने लगा।

शुरू-शुरू में जब मैं साइकिल से स्कूल आता-जाता तो जान कर घूमने के चक्कर में लम्बे-लम्बे रास्तों से आता-जाता, लेकिन थोड़े समय बाद यह शौक भी पूरा हो गया और फिर सीधे स्कूल जाने लगा। हमारे स्कूल में एक गोल चक्कर था जिसमें सभी बच्चे इण्टरवल में उस चक्कर के चारों ओर सफ्ल रेस किया करते थे, मैं भी हमेशा इस साइकिल रेस में शामिल हो जाता था और सबको धक्का-धुक्का दे कर क़रीब रोज़ ही साइकिल रेस जीत लेता था, लेकिन पता नहीं शरीर कैसा था कि इतने गिरने पर भी कुछ नहीं होता था और सभी चोटें पलक झपकते ही ठीक हो जाया करती थीं। इस साइकिल रेस में कई दूसरे बच्चों के भी ख़ूब चोटें लगी और बच्चों के चोटें लगने के कारण बच्चों के घर वालों ने ब्रदर से शिकायत की तो ब्रदर ने इस साइकिल रेस पर पूरी पाबन्दी लगा दी, लेकिन फिर भी स्कूल की छुट्टी होने के बाद जब हम घर जाते तो मेरी तरह रेस लगाने वाले कुछ सनकी बच्चे मुझे मिल ही जाते थे।

स्कूल से घर आने के बाद पहले की तरह साइकिल ले कर इधर-उधर घूमने का शौक अब ख़त्म हो गया था और मेरे दोनों छोटे भाई उस साइकिल को मेरे घर आते ही इधर-उधर ले जा कर रोज़ तोड़ देते थे, जिस पर हम तीनों भाइयों में डबल-बेड पर ख़ूब कुश्ती होती थी।

https://t.me/Sahityajunction

12. स्कूली जीवन - 2

सिक्स्थ स्टैण्डर्ड से मेरे स्कूल में सीनियर सेक्शन शुरू होता था, जिसकी बिल्डिंग जूनियर सेक्शन के पास दूसरी तरफ़ थी। जब तक मैं और मेरे दोस्त फ़िफ़्थ स्टैण्डर्ड में थे तो हमारी ख़ूब शरारतें चलती थीं क्योंकि फ़िफ़्थ स्टैण्डर्ड जूनियर सेक्शन में सबसे बड़ी क्लास थी और हम सबसे बड़े बच्चे थे, लेकिन सीनियर सेक्शन में जाते ही सिक्स्थ स्टैण्डर्ड सबसे छोटी क्लास थी और हमने सुना था कि बड़े बच्चे छोटे बच्चों को परेशान करते हैं। फ़िफ़्थ स्टैण्डर्ड में भी फ़र्स्ट आ कर मैंने परीक्षा पास की और सिक्स्थ स्टैण्डर्ड में दूसरी तरफ़ चले गये। सीनियर सेक्शन में हमारे दूसरे ब्रदर प्रिंसिपल थे, जिनका नाम था ब्रदर मनी और पुराने सभी टीचर भी हमारे वही जूनियर सेक्शन में ही छूट गये थे, जो मुझसे बहुत प्यार करते थे, और यहाँ सीनियर सेक्शन में सभी टीचर हमारे लिए नये थे, और इन नये टीचरों और नये ब्रदर को भी मुझे अपना अच्छा इम्प्रेशन देना था जिससे सब मामला ठीक चले।

सीनियर सेक्शन की तरफ़ खेल-कूद की लगभग सभी सुविधाएँ थी और दो बहुत बड़े-बड़े प्ले ग्राउण्ड थे जिसमें एक फ़ूटबॉल और हॉकी के लिए दूसरा क्रिकेट के लिए बना था। सीनियर सेक्शन में आ कर पहले के सभी आलतू-फ़ालतू खेल छूट गये, क्योंकि यहाँ पर हमारे लिए पूरे दिन में एक पीरियड खेल-कूद का होता था, जिसमें हमारे पी. टी. सर हमें हमारी इच्छा के खेल खेलना सिखाते थे। यहाँ पर मैंने क्रिकेट खेलना शुरू कर दिया और क्रिकेट का ऐसा चस्का लगा कि घर जाते ही घर के पास पड़ी एक ख़ाली जगह पर मोहल्ले के सभी लड़कों को बुला कर क्रिकेट खेला करता था। घर के पास ख़ाली जगह पर क्रिकेट खेलने के कारण वहाँ पर जो 4-5 मकान थे, उनमें रहने वाले लोग हम सभी बच्चों से बहुत परेशान रहते थे, क्योंकि हम रबड़ की बॉल से उन घर के ट्यूब लाइट और बल्ब तोड़ दिया करते थे और पता नहीं क्या कुण्डली थी कि सबसे ज़्यादा बल्ब मेरे ही हाथों टूटे होंगे।

घर के पास जहाँ पर हम क्रिकेट खेलते थे, वहाँ पर 2-3 गन्दे पानी की खुली नालियाँ भी थीं और बार-बार हमारी रबड़ की बॉल उन नालियों में गिर जाया करती थी और उन नालियों में हाथ दे कर हम बच्चे अपनी बॉल ऐसे निकालते थे जैसे चाशनी में से रसगुल्ला निकाल रहे हों। उस समय पर रबड़ की एक बॉल एक रुपये में आया करती थी, और हम सभी बच्चे आपस में पैसे मिला कर एक साथ दस गेंदे लाते थे जो 5-6 दिन तक चलती थी। मेरे पापा इस समय पर मुझे और मेरे दोनों भाइयों को एक-एक रुपया रोज़ जेब ख़र्च देते थे, जब पापाजी मुझे एक रुपया देते तो मैं हमेशा अपने पापाजी की जेब में ख़ूब सारे रुपये देख कर यह सोचता था कि जब पापाजी की जेब में इतने सारे पैसे हैं तो वे इन सब पैसों की मिठाई क्यों नहीं खाते हैं और सोचता कि जब मैं बड़ा हो जाऊँगा तो मेरे पास भी ख़ूब सारे पैसे रहेंगे जिससे मैं बहुत सारे क्रिकेट बैट, बॉल ख़रीदूँगा और बहुत सारी मिठाई भी रोज़ ख़रीदूँगा। फ़िलहाल रोज़ मिलने वाले इस एक रुपये से ही मुझे अपनी क्रिकेट बॉल और मिठाई-टॉफ़ियों का ख़र्चा निकालना पड़ता था।

मेरे पापा मुझे आर्मी अफ़सर बनाना चाहते थे, इसलिए उन्होंने मेरा दाख़िला देहरादून के एक स्कूल जिसका नाम आर. आई. एम. सी. था में कराने की कोशिश की, क्योंकि

https://t.me/Sahityajunction

आर. आई. एम. सी. राष्ट्रीय इण्डियन मिल्ट्री कॉलेज में दाख़िला होने का मतलब उनके हिसाब से होता था कि बच्चा अब वहाँ से आर्मी अफ़सर ही बन कर निकलेगा। आर. आई. एम. सी. में दाख़िले के लिए पूरे भारत में इण्टरेन्स इक्ज़ाम होता था और हमारे पूरे राज्य से सिर्फ 4 बच्चों के लिए सीट ख़ाली थी। आर. आई. एम. सी. में दाख़िले के लिए जिस उम्र का बच्चा होना चाहिये मेरी उम्र उससे 4-5 दिन ज़्यादा हो रही थी, इसलिए उन्होंने जब आर. आई. एम. सी. के लिए मेरा फ़ॉर्म भरवाया तो मेरी जन्मतिथि 17 मई से घटा कर 4 दिन कम करके 13 मई कर दी और सेंट गेब्रियल अकैडेमी स्कूल के रिकॉर्ड में भी मेरी जन्मतिथि 13 मई करवा दी। मैंने पापाजी के साथ लखनऊ जा कर आर. आई. एम. सी. में दाख़िले के लिए इक्ज़ाम दिया, लेकिन उसमें मेरा नम्बर नहीं आया और मैं पहले की तरह ही सेंट गेब्रियल अकैडेमी में पढ़ता रहा।

मैंने अपने स्कूल के सीनियर सेक्शन में भी अपनी पढ़ाई-लिखाई ठीक रखी और अपने सभी नये टीचर्स को अपना सभी काम समय पर पूरा करके ख़ुश रखा, लेकिन ऐसा ज़्यादा समय तक नहीं रह सका। क्योंकि सिक्स्थ स्टैण्डर्ड में मुझे एक ऐसी चीज़ का चस्का लगा कि उसकी वजह से मेरा अपनी पढ़ाई-लिखाई और खेल-कूद से ध्यान कम होता चला गया और वह चस्का था पतंग उड़ाने का। हमारे शहर में सिंदयों के मौसम में ख़ूब पतंगें उड़ती थीं और मैंने भी आस-पड़ोस में पतंगें उड़ती देख पतंग उड़ाना सीख लिया। मुझे पतंग उड़ाने का ऐसा शौक़ लगा कि जब मैं स्कूल से घर आता तो अँधेरा होने तक पतंग उड़ाने में ही लगा रहता जिससे मेरी पढ़ाई और शाम को घर आ कर खेलना छूट गया। पतंग उड़ाने के चक्कर के कारण पढ़ाई-लिखाई वैसे ही कम हो गयी थी और उस पर एक ग़लती इक्ज़ाम में मुझ से और हो गयी। हुआ यह कि मेरा इक्ज़ाम साइन्स का था और थोड़ी-बहुत मैंने जो पढ़ाई की वह सोशल स्टडीज़ की की थी, क्योंकि मैं सोच रहा था कि मेरा सोशल स्टडीज़ का इक्ज़ाम है जबकि वह इम्तहान बाद में था। जब मैं इक्ज़ाम देने स्कूल पहुँचा तो वहाँ जा कर मुझे पता चला कि मैं ग़लत तैयारी करके आया हूँ और इम्तहान तो साइन्स का है। मैंने साइन्स का इक्ज़ाम दिया और फिर भी मेरे बहुत अच्छे नम्बर आये।

बस, यह बिना तैयारी के अच्छे नम्बर आना ही मेरे लिए पढ़ाई-लिखाई की लाइन में अभिशाप साबित हुआ, क्योंकि मुझे यह ग़लतफहमी हो गयी कि मेरे बिना पढ़ाई-लिखाई और तैयारी के भी मेरे हमेशा अच्छे नम्बर ही आयेंगे। फ़ाइनल इक्ज़ाम में भी मैंने इसी ग़लतफहमी में सभी इक्ज़ाम दिये। मैं पास तो हो गया, लेकिन हर बार की तरह इस बार मैं सिक्स्थ स्टैण्डर्ड में फ़र्स्ट नहीं आया, छठे-सातवें नम्बर पर चला गया। इक्ज़ाम की तैयारी न करने की आदत के कारण ही मेरा आर. आई. एम. सी. में भी दाख़िला नहीं हुआ था। जब मैं सेवेन्थ स्टैण्डर्ड में आया तो शुरू-शुरू में तो मैंने थोड़ा पढ़ाई पर ध्यान दिया, लेकिन जैसे ही सिंदयों का मौसम आया और पतंगबाज़ी शुरू हुई तो मेरी हालत यह हो गयी के जो बच्चे मुझसे अपना पूरा काम मेरी कॉपी से देख कर करने के लिए मेरी कापियाँ घर ले जाते थे, उन बच्चों से अब मुझे कभी-कभी जा कर अपना काम पूरा करने के लिए कॉपी लानी पड़ती थी, क्योंकि पतंग उड़ाने के चक्कर में मैं अपना स्कूल का काम पूरा नहीं कर पाता था।

मेरे पतंग उड़ाने के चस्के के कारण मेरे घरवाले मुझसे बहुत परेशान थे, क्योंकि पढ़ाई-लिखाई का जो नुक़सान हो रहा था वह तो हो ही रहा था, इसके अलावा मैं

https://t.me/Sahityajunction

अपनी और दूसरों की कटी हुई पतंगों को लूटने के चक्कर में पड़ोसियों के घरों की छतों पर कूदता-फाँदता रहता था और एक घर से दूसरे घर में छलाँगें लगाता था जिसकी शिकायत पड़ोसी मेरे घर पर मम्मी से करते थे। हमारे पड़ोस में जो 30-40 घर थे उन घरों की छत पर गिरने वाली हर पतंग पर मैं अपना जन्म सिद्ध अधिकार समझता था।

कई बार तो ऐसा होता था कि जैसे मैंने पड़ोस के एक घर में घण्टी बजायी जिससे कि मैं उनके घर की छत पर जा कर पतंग उठा सकूँ और घण्टी बजाने पर उन्होंने घर का दरवाज़ा खोला तो मैं उनसे कुछ भी पूछता नहीं था और उन्हें बिना कुछ कहे उनके हाथ के नीचे से निकल कर सीधा उनके घर की छत पर पतंग उठाने चला जाता था। वह आण्टी जी या अंकल जी समझ जाते थे कि मैं ऊपर छत पर पतंग उठाने गया हूँ और नीचे घर के दरवाज़े के पास मेरा इन्तज़ार करते थे कि मैं पतंग उठा कर जल्दी ही वापस आऊँगा, लेकिन वापस न आ कर मैं कई बार उनकी छत से पड़ोस की छत पर कूद कर दूसरी गिरी हुई पतंगों को लेने चला जाता था और फिर दूसरों के छत से नीचे आ कर उनके घरवालों से कहता था कि मुझे घर से बाहर जाना है, आप अपने घर का दरवाज़ा खोल दीजिए।

शुरू-शुरू में तो सब आश्चर्यचकित हो जाते थे कि यह घर के अन्दर कहाँ से आ गया और बाद में सभी आस-पड़ोस वाले घर के सभी लोगों को आदत हो गयी। हमारे सम्बन्ध आस-पड़ोस में इतने अच्छे थे कि मेरे इतना परेशान करने के बाद भी जल्दी से मेरी शिकायत कोई मेरे घर पर नहीं करता था, जिस कारण दिन-पर-दिन मेरी शरारतें बढ़ती जा रही थी। एक दिन मैं पतंग उड़ा रहा था तो पड़ोस के एक घर से मेरी पतंग तोड़ ली गयी जिस पर मुझे बहुत आश्चर्य हुआ, क्योंकि आस-पड़ोस की सभी पतंगों को तोड़ने का काम तो हम अपना समझते थे। जब जा कर मैंने देखा कि किसमें इतनी हिम्मत हुई जिसने मेरी पतंग तोड़ी तो एक बच्चे ने जिसकी उम्र मुझसे 2-3 साल छोटी थी और उसकी एक बहन थी जो मेरी उम्र की थी, उन दोनों भाई-बहन ने मिल कर मेरी पतंग तोड़ी थी। मैंने उन दोनों भाई-बहन से लड़ाई कर ली तो उनकी मम्मी ने मेरी पतंग वापस दिला दी।

इन बच्चों की मम्मी ने मुझे बताया कि तेरी मम्मी और मैं आपस में बहनें लगती हैं और तुम तो हमारे रिश्तेदार हो और अपने बच्चों की तरफ़ इशारा करते हुए बताया कि ये दोनों तेरे भाई-बहन लगते हैं। और मुझे लड़के का नाम शेखर बताया और लड़की का नाम नीतू बताया। इसके बाद शेखर भी हमारे साथ खेलनेकूदने लगा। हमारे घर के पास एक खँडहर मकान था, उस खँडहर मकान में से एक दिन शेखर ऐसी चीज़ उठा कर ले आया जो जोगी तान्त्रिक इस्तेमाल करते हैं जिसमें एक बजाने वाली चिमटी भी थी। मैंने शेखर से वह चिमटी बजाने के लिए माँगी तो वह आना-कानी करने लगा। दूसरे दिन जब मुझे शेखर मिला तो हमने प्लानिंग के तहत उससे कहा कि उस खँडहर मकान में भूत-वग़ैरा रहते हैं और वहाँ की हर चीज़ में भूतों का वास है, अच्छा हुआ तुमने कल मुझे वह चिमटी नहीं दी, क्योंकि मुझे पता चला है कि उस चिमटी को बजाते ही भूत उसे पागल कर सकता है। और भी कई बातें बना कर हमने शेखर को इतना डरा दिया कि वह हमसे पूछने लगा कि अब मुझे क्या करना चाहिये।

मैंने उससे कहा कि अगर तुम पागल नहीं होना चाहते तो वह जो सारा सामान जो

https://t.me/Sahityajunction

तुम कल खँडहर से लाये हो, उसे मन्दिर में ले जा कर रख दो और भगवान के सामने अपनी नाक ज़मीन पर रगड़ कर माफ़ी माँगो, तब तुम इस भूत के चक्कर से बच सकते हो। शेखर जल्दी से अपने घर जा कर वह सामान उठा लाया और हमारे सामने सारा सामान मन्दिर में रख कर अपनी नाक ज़मीन पर रगड़ कर भगवान जी की मूर्ति के सामने माफ़ी माँगने लगा। हम सभी बच्चे शेखर को ऐसा करते देख बहुत खिलखिला रहे थे। फिर हम शेखर को मन्दिर से वापस घर की तरफ़ ले आये और पीछे से हमारा एक साथी वह सामान भी उठा लाया जो शेखर ने वहाँ रखा था।

अगले दिन शेखर ने वह सारा सामान हमारे हाथों में देखा जिससे उस समय हम खेल रहे थे तो वह बोला कि यह तो वही सामान है जो कल मैंने मन्दिर में रखा था, और तुम इससे खेलोगे तो तुम्हें भूत लग सकता है। हम सब उसकी बात पर ख़ूब हँसे और कहा कि हम भूत से नहीं डरते। शेखर हमारी बात समझ गया कि हम सबने उसको बेवकूफ बनाया है और उसने सबसे वादा किया कि अब मैं हर चीज़ को आपस में बाँटूँगा। क्योंकि शेखर बहुत ही समझदार और दिल का बहुत अच्छा था, इसलिए उससे हमारी पक्की दोस्ती हो गयी और मुझसे तो कुछ ज़्यादा ही। अब हम साथ मिल कर ही पतंगें उड़ाते और लूटते थे।

एक दिन पड़ोस के मन्दिर की छत पर एक पतंग कट कर गिरी तो हम दोनों उसे उठाने के लिए भागे। तभी वहाँ पर पीछे से हमारे पड़ोस के दो बड़े लड़के जो हम से उम्र में काफ़ी बड़े थे उस पतंग को उठाने के लिए आ गये। ऊपर छत पर जाने के लिए सीढ़ियाँ नहीं थी और दीवार पर जो ईंटें बाहर निकली हुई थीं उन पर ही चढ़ कर दूसरी तरफ़ जाना था, जहाँ पर पतंग गिरी हुई थी। मैं उन ईंटों पर पैर रख कर ऊपर चढ़ रहा था तो वे बड़े लड़के आ गये और उनमें से एक लड़के ने मेरी टाँग पकड़ ली और दूसरा शेखर को धक्का दे कर ख़ुद दूसरी तरफ़ से ऊपर चढ़ने लगा, जब वह दीवार पर चढ़ कर बिलकुल ऊपर पहुँच गया और दूसरी तरफ़ उतरने लगा तो नीचे दीवार से तो उसके साथी ने जिसने मेरी टाँग पकड़ी हुई थी, ज़ोर-ज़ोर से हँसते हुए मेरी टाँग यह कह कर छोड़ दी कि अब मेरा साथी दीवार के दूसरी तरफ़ नीचे उतरने वाला है, अब तुम दीवार की दूसरी तरफ़ छत पर गिरी हुई पतंग उठाना चाहते हो तो उठा लो।

जैसे ही उसने मेरा पैर छोड़ा, मैं दीवार पर फूर्ती से चढ़ने लगा। यह देख कर शेखर बोला कि हमें हारना नहीं है। जब मैं दीवार के ऊपर की तरफ़ पहुँचा तो मैंने देखा कि उस बड़े लड़के का साथी दीवार से उतर कर छत पर पहुँचने वाला था। मेरे दिल-दिमाग़ में शेखर की यह बात एकदम से आयी कि हमें हारना नहीं है और मैं एकदम से उस दीवार से जो बाहर ईंटें निकली हुई थीं उनसे आराम से न उतर कर सीधा छत पर ऊपर से ही कूद गया और एकदम से पतंग उठा कर नीचे सड़क पर यह सोच कर कूद गया कि छत पर दोबारा चढ़ा तो यह बड़ा लड़का मुझसे पतंग छीन लेगा। नीचे सड़क पर पतंग समेत कूद कर मैं पतंग ले कर सीधा अपने घर भाग गया और वे दोनों बड़े लड़के यह सब आश्चर्य से देखते ही रह गये। उधर से शेखर भी फटाफट भाग कर घर आ गया।

जिस दीवार और छत से मैं पतंग के पीछे कूदा था, वह दोनों ही एक-एक मंज़िल की थी और इस एक-एक मंज़िल से कूदने के कारण मेरी एड़ी में चोट लग गयी थी जिससे एक डेढ़ महीना मैं अपनी एड़ी ज़मीन पर नहीं रख सका और मजबूरी में मुझे अपने पंजों

https://t.me/Sahityajunction

पर ही चलना होता था। ऐसा करते हुए मम्मी-पापा ने मुझे देखा तो मैंने उनसे कहा कि स्कूल में फ़ूटबॉल खेलते हुए पाँव में थोड़ी चोट लग गयी थी। चोट लगने के बाद मैंने पतंग लूटने का झंझट काफ़ी कम कर दिया था। इस पतंगबाज़ी के चक्कर में अब मैं स्कूल में पढ़ाई पर बिलकुल ध्यान नहीं दे रहा था और अब नौबत ऐसी आ गयी थी कि इक्ज़ाम में पास होने के लिए मुझे अपने आगे-पीछे बैठे बच्चों के पेपरों की नक़ल भी करनी पड़ती थी मेरी आगे और पीछे की सीट पर मेरे वही दोस्त बैठें जो मुझे इक्ज़ाम में अपनी आन्सर शीट दिखा दे, इसके लिए मैं जिस दिन पहला इक्ज़ाम होता था उस दिन जल्दी स्कूल जा कर ब्लैक बोर्ड पर लिखे हुए इक्ज़ाम के सीटिंग प्लान जिसके तहत हर बच्चे को बैठना होता था, बदल देता था और उसे ऐसा करता था कि मेरे दोस्त ही मेरे आगे-पीछे की सीटों पर आये।

हम तीनों जो आगे-पीछे लड़के-बैठते थे यह प्लानिंग बनाते थे कि जैसे साइन्स का इक्ज़ाम है, उसमें एक लड़का फ़िज़िक्स की तैयारी करेगा, दूसरा केमेस्ट्री की तैयारी करेगा और तीसरा बायोलॉजी की, और फिर इक्ज़ाम वाले दिन, जिसने फ़िज़िक्स की तैयारी की होगी, वह लड़का अपने और आगे पीछे दोनों लड़कों के लिए सिर्फ फ़िज़िक्स के ही आन्सर लिखेगा और दूसरे भी अपने सिर्फ केमेस्ट्री और बॉयलोजी के ही लिखेंगे। जब इक्ज़ाम का समय ख़त्म होने वाला होता तो हर लड़का अपनी लिखी हुई आन्सर शीट जिसकी उसने 3 कापियाँ बनायी थीं उनमें से एक-एक आगे-पीछे दे देता था। और आगे-पीछे वाले भी ऐसे ही करते थे। ऐसा करने से हर लड़के के पास फ़िज़िक्स, केमेस्ट्री और बॉयलोजी की आन्सर शीट हो जाती थी। और फिर तीनों ही लड़के बिना ज़्यादा मेहनत किये इक्ज़ाम में पास हो जाते थे।

https://t.me/Sahityajunction

13. शरारतें

इक्ज़ाम में इस चिंटग स्टाइल के अलावा और भी कई तरीके हम अपनाते थे। इधर घर पर आने के बाद मेरे हर समय पतंगों में उलझे रहने के कारण मेरे मम्मीपापा मुझे डाँटते रहते थे कि मैं हर समय इस पतंगबाज़ी के चक्कर में न रहूँ, लेकिन मैं उनसे बोलता था कि इक्ज़ाम में तो मेरे नम्बर अब भी अच्छे आते हैं और मेरे पतंग उड़ाने से पढ़ाई में कोई बाधा नहीं पड़ती। एक दिन एक रिश्तेदार की शादी में मुझे अपने घरवालों के साथ जाना था, पतंग उड़ाने के चक्कर में मैं देर से जब घर आया तो देखा कि मेरे दोनों भाई और मम्मी-पापा शादी में जाने के लिए तैयार है।

मेरे आते ही मम्मी मुझे फटाफट कपड़े पहना कर तैयार करने लगी तो मैंने मम्मी के द्वारा शादी में जाने के लिए पहनाया गया स्वेटर उतार कर फेंक दिया और कहा कि मुझे यह स्वेटर अच्छा नहीं लगता और मैं दूसरा स्वेटर पहन कर जाऊँगा। जब मेरी मम्मी ने मुझे दूसरा स्वेटर पहनाया तो मैंने उसे भी उतार दिया और कहा कि मुझे दूसरे वाला स्वेटर पहनना है, मेरे ऐसा व्यवहार करने पर मेरी मम्मी ने नाराज़ हो कर पापा जी से कहा कि यह स्वेटर नहीं पहन रहा। सभी लोग मेरी वजह से देर होने के कारण पहले ही ग़ुस्से में थे, मेरे स्वेटर न पहनने और देरी होने के कारण मेरे पापा जी को भी ग़ुस्सा आ गया और उन्होंने मुझे पहली और आख़री बार गाल पर दो थप्पड़ लगा दिये। थप्पड़ लगने से मैं रोने लगा और कमरे से निकल कर बाहर की तरफ़ भाग गया और घर की छत पर पानी की टंकी के पास जा कर छुप गया और रोता रहा।

मेरे पापाजी दोनों छोटे भाइयों को शादी में ले कर चले गये, लेकिन मेरी मम्मी मेरे कारण शादी में नहीं गयी और मुझे घर पर ही ढूँढने लगी। हमारा घर बहुत बड़ा था, इसलिए मैं मम्मी को नहीं मिला, जब शादी से मेरे पापा और भाई वापस घर आये तो मम्मी ने पापा जी से कहा कि पता नहीं वह कहाँ चला गया तब सबने मिल कर मुझे ढूँढा तो मैं पापा जी को पानी की टंकी के पास छुपा हुआ मिल गया। मैं पापा को देख कर रोने लगा तो वे मुझे गोद में उठा कर नीचे कमरे में ले आये और मम्मी-पापा ने मिल कर मुझे चुप कराया और समझाया कि ग़लत बात पर ज़िद करना अच्छा नहीं है। और मुझे अगले दिन नया स्वेटर दिलाने का वादा भी किया।

मुझे और मेरे दोनों भाइयों को पूरे साल दो त्योहारों का विशेष रूप से इन्तज़ार रहता था। पहला था दीवाली और दूसरा था होली। दोनों ही त्योहार हम तीनों भाई पड़ोस के दूसरे बच्चों के साथ मिल कर क़रीब एक महीना पहले से ही मनाना शुरू कर देते थे। दीवाली से एक महीना पहले ही पापाजी से रोज़ पैसे ले कर हम तरह-तरह के बम ले कर आते थे और फिर शरारत करते हुए उन्हें किसी पड़ोसी के घर के दरवाज़े के आगे या फिर किसी के घर की खिड़की पर रख कर जलाते और फिर वहाँ से भाग जाते। यह सिलसिला दीवाली के 2-3 दिन बाद तक भी चलता रहता था।

दीवाली वाले दिन तो मैं बम को सीधा अपने और दूसरों के घरों के सामने रखे हुए दियों और मोमबत्तियों की आग पर ही रख दिया करता था। दीवाली ख़त्म होने पर मुझे ऐसा लगता था जैसे सब सुनसान हो गया हो। और कई दिनों तक किसी भी काम में मन नहीं लगता था। दीवाली वाले दिन जब सब घर के लोग पूजा में बैठते थे तो मैं यही

https://t.me/Sahityajunction

सोचता रहता था कि जल्दी से पूजा पूरी हो और हम जल्दी से पटाखे छुड़ाना शुरू कर सकें, क्योंकि पूजा के बाद ही मिलते थे। मम्मी यह देख कर बहुत नाराज़ होती थी कि मैं बम और रॉकेटों को हाथ में पकड़ कर चला दिया करता हूँ और हमेशा चिल्लाते हुए कहती थी कि हाथ में बम फट गया तो हाथ में चोट लग जायेगी, लेकिन फिर भी हम अपनी हरकत से बाज़ नहीं आते थे और मम्मी की निगाह बचा कर हाथों से ही बम और राकेट छोड़ दिया करते थे।

आज मैं सोचता हूँ कि हाथों से बम-रॉकेट को पकड़ कर छोड़ना जिसे तब मैं बहादुरी मानता था कितनी मूर्खता और बचपना था और बस ईश्वर की ही कृपा रही के इतने सालों तक ऐसी मूर्खतापूर्ण हरकतों को करने के बाद भी मेरे साथ कोई अनहोनी नहीं हुई और मेरे हाथ-पैर नहीं जले। जितनी धमा-चौकड़ी मैं मोहल्ले के बच्चों के साथ मिल कर दीवाली के समय करता था, होली पर उससे भी दो क़दम आगे ही।

होली से एक महीना पहले ही हम सभी बच्चे जिनमें मैं, शेखर, अमित, मीतू, धवल, विशाल और मेरे दोनों भाई और मफेहलले के पड़ोस के हमारी उम्र के बच्चे इस धमाचौकड़ी से शामिल रहते थे और सबने मिल कर मुझे अपना लीडर बनाया हुआ था। हम सब मिल कर पानी के छोटे ग़ुब्बारे भर कर दूसरे मोहल्ले में जाते थे और वहाँ पर खेल रहे बच्चों पर पानी के ग़ुब्बारों की ऐसी बौछार करते थे जैसे एक सेना दूसरी सेना पर बम फेंक रही हो। क्योंकि हमारा घर एक-दम बाज़ार में था और जब होली का त्योहार बिलकुल पास आ जाता था, तो हम अपनी छत से बाज़ार में किसी को भी पानी का ग़ुब्बारा मार कर भिगो देते थे, और फिर छत पर छुप जाते थे। ऐसा करने पर हम कई बार पिटते-पिटते बचे।

जिस दिन होलिका दहन होता था, उस दिन मैं जल्दी सो जाता था, क्योंकि हमारे घर के सामने शहर की, सबसे बड़ी होली बनती थी, उस दहन हमारे परिवार का ही कोई सदस्य करता था और ऐसा रिवाज कई सौ साल से चलता आ रहा है, क्योंकि मेरे दादा जी रुड़की शहर के ज़मींदार थे। होलिका दहन हमेशा रात को 12-1 बजे के आस पास होता था और मैं जल्दी सो कर होलिका दहन से पहले-पहले उठ जाता था, और फिर मुझी से पूजा-पाठ कराने के बाद होलिका दहन होता था। जब मैं बहुत छोटा था तो बहुत सारे पड़ोस के लोग आ कर मुझे अपनी गोद में उठा कर ले जाते थे और होलिका दहन मुझसे कराते थे।

एक बार होली पर मेरे बहुत सारे स्कूल के दोस्त मेरे घर पर मुझसे होली खेलने आये। उनमें से एक दोस्त मेरे चेहरे पर रंग लगाते समय मेरी कमीज़ फाड़ने लगा और मुझे उठा कर घर के नीचे बनी पानी की हौदी में गिराने लगा। मैंने उनसे कहा कि तुम ऐसा मत करो, मेरे मोहल्ले के दोस्त अगर देख लेंगे तो रंग लगा कर तुम्हारा बहुत बुरा हाल करेंगे। स्कूल के मेरे दोस्त जिनमें मेरी बात पर हँसने लगे और मेरी कमीज़ फाड़ कर सबने मुझे उठा कर यह कहते हुए पानी में फेंक दिया कि हर समय हमारे ऊपर रौब जमाता है, आज हम सबको मौका मिला है, आज तो हम तेरी कोई बात नहीं मानेंगे। जैसे ही मेरे स्कूल के दोस्तों ने मुझे पानी की हौदी में गिराया, मेरे मोहल्ले के सभी दोस्त और मेरे दोनों भाई मुझे बचाने के लिए आ गये और फिर सब मिल कर मेरे स्कूल के उन दोस्तों को एक-एक करके पानी की हौदी में गिराने लगे। जैसे पहले वे मुझ पर हँस रहे थे

https://t.me/Sahityajunction

अब मैं उन पर हँस रहा था और बता रहा था कि मैंने तुम लोगों से पहले ही कहा था कि मेरे मोहल्ले में मेरे साथ ऐसा न करो, वरना तुम्हारे साथ भी ऐसा ही होगा।

https://t.me/Sahityajunction

14. बोर्ड की वैतरणी

ऐसे ही मटरगश्ती करते हुए 2-3 साल गुजर गये और अब मैं दसवीं कक्षा में आ गया। दसवीं कक्षा में बोर्ड के इक्ज़ाम होते हैं और हर माता-पिता की तरह मेरे घरवालों की भी इच्छा थी कि बोर्ड इक्ज़ाम मेरे भी में अच्छे नम्बर आयें इसलिए मुझे बार-बार पढ़ाई करने के लिए बोलते थे। मेरे पापा ने मुझे लालच देने के लिए मुझे यह ऑफ़र दी कि अगर मैं दसवीं कक्षा के बोर्ड इक्ज़ाम में अच्छे माक्र्स ला कर पास होऊँगा तो वे मुझे स्कूटर या मोटर साइकिल दिलवा देंगे। क्योंकि मेरी उम्र भी अब ऐसे पड़ाव पर आ गयी थी कि मैं सब कुछ समझने और जानने लगा था, इसलिए जितनी मेरी आलतू-फ़ालतू आदतें थीं जैसे पतंग उड़ाना, गली में क्रिकेट खेलना या बिना काम के मोहल्ले में यहाँ-वहाँ घूमना— वे काम मैंने बन्द कर दी थीं।

मैं नियम से आ कर घर पर पढ़ाई करता और शाम को खेलने के लिए अपने स्कूल के प्ले ग्राउण्ड में जा कर कभी बॉस्केट बॉल, कभी बैडमिण्टन, कभी लॉन टेनिस, कभी टेबल टेनिस और क्रिकेट, फ़ूटबॉल, वॉलीबॉल खेला करता और सभी खेलों को एक-एक, दो-दो महीने खेलने के कारण ऑल राउण्डर खिलाड़ी तो बन गया, लेकिन किसी एक खेल में इस तरह से परफ़ेक्ट नहीं हुआ कि खेलों में आगे बढ़ा जा सके। फ़ूटबॉल की टीम का मैं कैप्टन बना और आख़िर तक जब तक स्कूल में रहा मैं कैप्टन ही रहा।

फ़ूटबॉल खेलने के कारण मेरी दौड़ भी बहुत अच्छी थी इसलिए बचपन की तरह ही हर स्पोर्टस-डे पर हर तरह की दौड़ में मैं फ़र्स्ट इनाम जीतता था और इस बार के स्पोर्ट डे पर भी मैंने कई इनाम जीते।

हमारा स्कूल सी.बी.एस.ई. बोर्ड का था और दसवीं के बोर्ड इक्ज़ाम के हर बच्चे के फ़ॉर्म स्कूल वाले ख़ुद ही भरते थे, लेकिन फ़ॉर्म आगे जमा करने से पहले फ़ॉर्म में भरी हुई डिटेल को हर बच्चे से क्लास में आ कर क्रास चेक करते थे। एक दिन एक टीचर जिन्हें हम साहनी सर कह कर पुकारते थे सभी बच्चों के फ़ॉर्म क्रॉस-चेक के लिए क्लास में ले कर आये और सभी बच्चों को एकएक करके फ़ॉर्म में भरी हुई उनकी डेट ऑफ़ बर्थ, नाम और अन्य डिटेल बच्चों को बता कर पूछने लगे कि ठीक है या नहीं?

जब मेरा नम्बर आया तो फ़ॉर्म में भरी सभी जानकारियाँ जो मुझसे सम्बन्ध रखती थी ठीक थीं, लेकिन मेरी डेट ऑफ़ बर्थ फ़ॉर्म में ग़लत लिखी थी। ग़लत डेट ऑफ़ बर्थ सुन कर मैंने साहनी सर से कहा कि सर मेरी डेट ऑफ़ बर्थ आपने फ़ॉर्म में ग़लती से 13 मई लिख दी है, जबकि मेरी डेट ऑफ़ बर्थ 17 मई है। मज़ाक में सर बोले कि सिर्फ 4 दिन का ही तो अन्तर है और अब फ़ॉर्म में किंटग करना ठीक नहीं है। मैंने कहा—सर इन 4 दिनों के कारण बहुत लोगों को परेशानी होगी, तो सर ने कहा—कि तुम्हारे डेट ऑफ़ बर्थ में 4 दिन के अन्तर से लोगों का क्या मतलब और उन्हें किस बात की परेशानी होगी। मैंने कहा—सर एक दिन मैं बड़ा हो कर जब बहुत बड़ा आदमी बन जाऊँगा तो लोग-बाग मेरी जयन्ती मनाया करेंगे और इस डेट ऑफ़ बर्थ में अन्तर होने के कारण लोगों को मेरा जन्मदिन 2-2 बार मनाना पड़ेगा, जिससे उन पर ज़्यादा ख़र्चे का बोझ पड़ेगा और मैं नहीं चाहता कि मेरी जयन्ती मनाने वालों को आज इस फ़ॉर्म में छोटी-सी किंटग न करने के कारण परेशानियाँ उठानी पड़े।

https://t.me/Sahityajunction

मेरी यह बात सुन कर सर और पूरी क्लास के बच्चे ज़ोर-ज़ोर से हँसने लगे और सर ने कहा कि तुम पीरियड ख़त्म होने के बाद मेरे साथ ऑफिस में चलना, मैं अपने स्कूल रिकॉर्ड में चेक करूँगा कि कैसे तुम्हारी डेट ऑफ़ बर्थ बदल गयी और हो सकेगा तो तुम्हारे कहे अनुसार बदल दूँगा। पीरियड ख़त्म होने के बाद मैं सर के साथ स्कूल के ऑफिस में गया जहाँ हर बच्चे का पूरा रिकॉर्ड था, सर ने मेरा पूरा रिकॉर्ड देखने के बाद मुझे बताया कि सिक्स्थ क्लास में तुम्हारे घरवालों ने ऐफीडेविट दे कर तुम्हारी डेट ऑफ़ बर्थ को बदलवाया है और अब यह दोबारा तुम्हारे कहे अनुसार तब हो सकती है, अगर तुम्हारे घरवाले 3-4 दिन के अन्दर फ़ॉर्म आगे जमा होने से पहले दोबारा ऐफीडेविट दे कर इसे बदलवायें।

मैंने घर आ कर पापाजी से इस बारे में बताया तो उन्होंने मुझसे कहा कि तुम्हें आर. आई. एम. सी. देहरादून के इण्टरेन्स इक्ज़ाम दिलवाने में तुम्हारी उम्र 5-6 दिन ज़्यादा हो रही थी, इसलिए तब ऐफीडेविट दे कर तुम्हारी उम्र कम करायी थी और अब उसे ही रहने दो, कोई फर्क नहीं पड़ता। मुझ से अपने जन्मदिन की दो दावतें तुम ले लेना। मैंने अगले दिन सर के पास जा कर कहा कि सर, आपने जो मेरे फ़ॉर्म में मेरी डेट ऑफ़ बर्थ लिखी है, वही रहने दें। इसके बाद मैंने अपनी दसवीं कक्षा का बोर्ड इक्ज़ाम दिया और ज़्यादा अच्छे नहीं 59 प्रतिशत माक्र्स ला कर दसवीं कक्षा पास की।

https://t.me/Sahityajunction

15. स्कूटर का इनाम

ये नम्बर मैंने अपनी मेहनत से प्राप्त किये थे, क्योंकि पिछले 2-3 साल से नक़ल मार कर पास होने के कारण मेरा बेस काफ़ी कमजोर हो गया था और जब दसवीं कक्षा में मुझे यह समझ में आया कि नक़ल मार कर पास होने से क्या फ़ायदा, जब किसी चीज़ के बारे में कोई जानकारी ही नहीं होगी। ऐसी बात दिमाग़ में आते ही मैंने यह फ़ैसला कर लिया था कि चाहे फ़ेल हूँ या पास, कभी नक़ल नहीं करूँगा और अपने से किये इस वादे को मैंने दसवीं कक्षा से शुरू कर के आगे जब तक पढ़ाई की, तब तक निभाया।

दसवीं कक्षा में मेरे 59 प्रतिशत आने से मेरे मम्मी-पापा ज़्यादा ख़ुश नहीं थे, लेकिन फिर भी मेरे पापा ने मुझे स्कूल आने-जाने के लिए एक नया बजाज चेतक स्कूटर दिलवा दिया। मैंने मोटर साइकिल दिलवाने के लिए कहा तो वे बोले कि तुम्हारे नम्बर तो स्कूटर वाले भी नहीं हैं, लेकिन फिर भी स्कूटर दिलवा रहा हूँ और वैसे भी मोटर साइकिल ले कर जाओगे तो सब लोग सोचेंगे कि आवारागर्दी करते हो। न मिलने से कुछ मिल जाये, यह सोच कर मैंने चुपचाप स्कूटर ही ले लिया।

हमारे स्कूल का नियम था कि इलेवेन्थ स्टैण्डर्ड में उन बच्चों को ही दाख़िला मिलता था जिनके 60 प्रतिशत से ज़्यादा नम्बर आते थे और उन्होंने शुरू में मुझे दाख़िला देने से मना कर दिया। मैंने अपने स्पोर्टस-टीचर से अपने दाख़िले के बारे में बात की तो वे मुझे अपने साथ ले कर प्रिंसिपल के पास गये और उन्हें बताया कि सर शेर सिंह हमारी स्कूल की फ़ूटबॉल टीम का कैप्टन है और इसके कारण हमारे स्कूल ने बाहर जा कर कई टूर्नामेण्ट जीते हैं। इसके अलावा यह बहुत अच्छा एथलीट भी है और इस बार के स्पोर्ट्स डे में इसने सबसे ज़्यादा इनाम जीते थे। इसके माक्र्स सिर्फ एक परसेण्ट कम हैं इसलिए मेरी आपसे रिक्वेस्ट है कि आप इसे दाख़िला दे दे।

ब्रदर मनी ने मुझे देख कर कहा कि मैं जानता हूँ यह स्पोर्टस में बहुत अच्छा है, लेकिन प्रॉब्लम यह है कि यह बहुत शरारती बच्चा है और पूरे स्कूल को सर पर उठा कर रखता है अगर यह शरारत न करने का वादा करे तो मैं इसे दाख़िला देने पर विचार कर सकता हूँ। मेरे स्पोर्ट्स-टीचर ने मेरी गारण्टी ली तो उन्होंने ऑफिस वाले को बुला कर मुझे दाख़िला देने के लिए लिखित ऑर्डर दे दिया कि मैं इसको स्पोर्ट्स कोटे में 5 परसेण्ट की छूट दे कर इसे दाख़िला दे रहा हूँ। मैंने फटाफट उस दिन ही सारी फ़ारमैलिटी पूरी की और तुरन्त दाख़िला ले लिया।

https://t.me/Sahityajunction

16. पहला चुनाव

इलेवेन्थ क्लास में आने के बाद जब मैं पहली बार स्कूल में गया तो उस समय स्कूल में हेड बॉय के चुनाव के लिए बहुत हलचल हो रही थी और क़रीब 1520 दिन बाद ही हेड बॉय के चुनाव स्कूल में होने थे। हमारे स्कूल में नियम था कि इलेवेन्थ-ट्वेल्व्थ कक्षा के बच्चे ही हेड बॉय और हाउस लीडर के चुनाव लड़ सकते थे। सिक्स्थ क्लास से ट्वेल्व्थ क्लास तक लगभग 800 बच्चे होते थे जो वोट दे कर एक हेड बॉय और 4 हाउस लीडर चुनते थे। जो भी बच्चा किसी पद के लिए कैण्डीडेट होता था वह हर क्लास में जा-जा कर भाषण दे कर प्रचार करता था और लालच देने के लिए टॉफ़ियाँ और अन्य खाने-पीने की चीजें बाँटता था।

स्कूल में कई सालों से चुनाव होते हुए मैं देख रहा था और 2-3 बरसों से प्रचार भी करता था। मैंने इस प्रचार से जो बात जानी थी, वह यह थी कि अगर सब बच्चे आपस में सलाह करके किसी एक को बिना चुनाव के हेड बॉय बनाने की कोशिश करते थे तो चिढ़ के मारे कोई-न-कोई उसके ि़खलाफ़ चुनाव ज़रूर लड़ जाता था, चाहे वह हार ही क्यों न जाये। मेरी इच्छा थी कि मैं बिना विरोध के अपना चुनाव जीतूँ और ऐसा करने के लिए मैंने प्लानिंग के तहत अपने दो दोस्तों से अलग-अलग कहा कि तुम लोग सब जगह यह फैला दो कि तुम मेरे ि़खलाफ़ हेड बॉय का चुनाव लड़ रहे हो, उन्होंने ऐसा करने का मुझसे कारण पूछा तो मैंने कहा कि तुम्हें चुनाव नहीं लड़ना है, सिर्फ प्रचार करना है कि तुम लड़ रहे हो। इसका कारण मैं तुम्हें बाद में बताऊँगा।

मेरी बात मान कर उन्होंने ऐसा ही किया और लोगों में यह भ्रम पैदा हो गया कि 3 लोग हेड बॉय के लिए चुनाव लड़ रहे हैं, चुनाव लड़ने के लिए सिर्फ एक दिन फ़ॉर्म भरने का समय होता था और कोई अपना नाम वापस लेना चाहे तो उसी दिन वापस ले सकता था। जिस दिन चुनाव लड़ने के लिए फ़ॉर्म जमा होना था, उस दिन मैंने उन दोनों लड़कों से कहा कि तुम फ़ॉर्म जमा मत कराओ, एक लड़का तो कहते ही मान गया, लेकिन दूसरा कहने लगा कि मेरी पूरे स्कूल में इन्सल्ट हो जायेगी अगर मैंने इतने प्रचार के बाद फ़ॉर्म जमा नहीं किया।

हमारे स्कूल के पास लड़कियों का एक स्कूल था, जिसका नाम सेंट एनेन्स था और यह भी हमारी तरह मिशनरी वालों का कॉनवेण्ट स्कूल था। हमारे स्कूल में सिर्फ लड़के ही पढ़ते थे और सेंट एनेन्स में सिर्फ लड़कियाँ। राजा की सबसे बड़ी परेशानी यह थी कि अपने स्कूल के साथ-साथ उसने लड़कियों के सेंट एनेन्स स्कूल में भी अपने चुनाव लड़ने का प्रचार कर दिया था। मैं राजा की बात सुन कर समझ गया कि लड़कियों के चक्कर में यह दोस्त को धोखा देने के लिए तैयार है। मैंने राजा से कहा, ठीक है तुम लड़ लेना और उसके पास से चला आया। मैंने अपने 3-4 दोस्तों को बुलाया और उन्हें सारी बातें बतायीं और कहा कि तुम अपनी मोटर साइकिल और मेरा स्कूटर ले कर राजा को बंक मार कर घुमाने के लिए अपने साथ सेंट एनेन्स स्कूल ले जाओ। लड़कियों को देखने के चक्कर में यह तुम्हारे साथ चला जायेगा। जब राजा तुम्हारे साथ जाये तो जिस स्कूटर और मोटर साइकिल पर वह बैठे, तुम उसकी हवा निकाल देना और स्कूल की छुट्टी से पहले उसको वापस मत आने देना।

https://t.me/Sahityajunction

राजा के फ़ॉर्म भरने से पहले ही वे उसे अपने साथ सेंट एनेन्स की लड़कियों को दिखाने के लिए ले गये और उसे घुमाते-घुमाते उसका सारा टाइम ख़राब कर दिया और वह काफ़ी कोशिश करने के बाद भी स्कूल टाइम पर वापस नहीं आ पाया। पीछे से मैं अपना फ़ॉर्म ठीक से समय पर जमा करा चुका था। अब 3 दिन बाद चुनाव होना था और जब सब टीचरों को यह मालूम पड़ा कि शेर सिंह हेड बॉय के लिए अकेला कैंडीडेट है तो सभी को बहुत आश्चर्य हुआ। मेरे एक बहुत ही प्रिय सर, जिनका नाम इकबाल सिंह था और जिनको बच्चों ने 'पेण्डू' नाम दिया हुआ था, मुझे मिले और बोले कि आज तक स्कूल के इतिहास में ऐसा पहले कभी नहीं हुआ कि कोई बच्चा निर्विरोध हेड बॉय बना हो। मैंने कहा कि सर, क्या मुझे अब भी हर क्लास में जा कर भाषण करना पड़ेगा तो उन्होंने कहा कि तुम अपने आप पर चादर डाल कर आराम से सो जाओ, तुम्हें कुछ नहीं करना, तुम जीत चुके हो। चुनाव के दिन असेम्बली में सिर्फ तुम थैंक्यू स्पीच दे देना।

दो दिन बाद जब चुनाव हुआ, उस दिन सिर्फ हाउस लीडर के चुनाव के लिए वोट पड़े और मुझे प्रिंसिपल ने असेम्बली में सभी बच्चों के सामने विजयी घोषित कर दिया और कहा कि मेरा नाम जो बैलट पेपर में है, उसके आगे कोई निशान नहीं लगाना है। इसके बाद, असेम्बली में मैंने भी थैंक्यू स्पीच दी और ख़ुशी-ख़ुशी हेड-बॉय बन गया। राजा कुछ दिन थोड़ा नाराज़ हुआ, लेकिन फिर हमने उसे जैसे-तैसे मना लिया। इस समय हम 4-5 दोस्त थे जो स्कूल में और स्कूल के बाद एक साथ घूमते-फिरते थे, इनके नाम थे—सुमित अग्रवाल, मानव चौहान, नितिन कृष्णबल और राजा अरोड़ा।

मेरे निर्विरोध चुनाव जीतने से स्कूल के कुछ बच्चे मुझसे मन-ही-मन चिढ़ने भी लग गये थे और उन्हीं में से किसी ने प्रिंसिपल को जा कर मेरे ख़िलाफ़ भड़का दिया। ब्रदर ने मुझे बुलाया और कहा कि मैंने जब तुम्हें कम नम्बर आने पर भी दाख़िला दिया था तो कहा था कि तुम सिर्फ शान्ति से अपनी पढ़ाई करोगे, लेकिन कुछ बच्चों ने तुम्हारी शिकायत की है कि तुम चालाकी से हेड बॉय बने हो। इस बार तो तुम हेड बॉय बन गये, आगे से तुम्हारे जैसों की चालाकी न चले, इसलिए मैं चुनाव का तरीका बदलवा दूँगा और मुझे यह कह कर भेज दिया कि मेरे पास आगे से तुम्हारी कोई शिकायत नहीं आनी चाहिए। यह बेवजह डाँट सुन कर मैं वापस आया तो बस यही सोचता रहा कि मैंने तो ऐसा कुछ नहीं किया कि ये मुझे डाँट-फटकार लगायें।

क़रीब 10-15 दिन बाद मेरी क्लास का एक लड़का आया और बोला कि ब्रदर से तुम्हारी झूठी शिकायत विवेक सिंह ने की थी। उस ने मुझे बताया कि विवेक ने ब्रदर से चुपचाप जा कर कहा था कि तुमने गुण्डागर्दी से चुनाव जीता है और सबको डरा कर किसी को भी चुनाव नहीं लड़ने दिया। उसकी बात सुन कर मैंने उससे कहा कि तुम मुझे अब यह सब बता रहे हो तो वह बोला कि विवेक से मेरी लड़ाई हो गयी है। मैं उस को ब्रदर के पास ले कर गया और सारी बात उनको बतायी तो उनकी नाराजग़ी थोड़ी कम हो गयी, लेकिन उन्हें पूरा विश्वास मुझ पर और मेरी बातों पर नहीं हुआ। हेड बॉय बनने के बाद हमारे शहर के जितने भी दूसरे स्कूल थे, उन स्कूलों में पढ़ने वाले लड़के और लड़कियाँ भी मुझे जानने और पहचानने लगीं और मेरे दोस्तों का दायरा और बढ़ गया।

https://t.me/Sahityajunction

17. सिमरन

मेरी क्लास में जितने भी लड़के थे लगभग सभी की सेंट एनेन्स स्कूल या दूसरे स्कूल में गर्ल फ्रेण्डें थीं, लेकिन मेरे शर्मीले व्यवहार के कारण मेरी कोई गर्ल फ्रेण्ड नहीं थी और न ही मैं किसी लड़की से बातें कर पाता था। एक नियम हमारे स्कूल में ऐसा था, कि जब भी स्कूल में कोई फ़ंक्शन वग़ैरा होता था या सेंट एनेन्स स्कूल में कोई फ़ंक्शन होता था, तो दोनों स्कूल सिर्फ एक-दूसरे के बच्चों को ही बुलाते थे। एक बार मेरे दोस्तों ने मुझसे कहा कि सेंट एनेन्स स्कूल में प्रदर्शनी लगी हुई है और इण्टरवल के बाद सभी बच्चे वहाँ जा कर प्रदर्शनी देख सकते हैं। मैंने कहा कि ठीक है, मैं भी तुम्हारे साथ आज वहाँ चलूँगा, जब मैं अपने दोस्तों के साथ सेंट एजेन्स स्कूल में धुसा तो इतनी सारी लड़कियाँ चारों तरफ़ देख कर बहुत शर्माने लगा। मैंने अपने दोस्तों से वापस चलने के लिए कहा तो वे ज़बरदस्ती मुझे पकड़ कर एक्सीबिशन की तरफ़ ले गये।

वैसे मेरी आदत बहुत ज़्यादा हँसने-हँसाने और सभी को मुर्गा बनाने की थी, लेकिन अभी मैं ख़ुद ही डरा-सा लग रहा था। जब हम एक्सीबिशन हॉल में घुसे तो हमारी एक टीचर जिन्हें हम मैम बुलाते थे मिल गयीं। उन्होंने हमें देखा तो मुझसे बोलीं कि आराम से एक्सीबिशन देखना। तुम हेड बॉय हो, तुम्हारा कुछ पता नहीं कब क्या करते हो। फिर मेरी डरी हुई हालत देख कर बोलीं कि स्कूल में शेर बन रहते हो, यहाँ लड़कियों के सामने तुम्हारी आवाज़ क्यों नहीं निकल रही है, और वे मुझे अपने साथ ले कर पूरा हॉल घुमाने लगीं। मेरे सारे दोस्त वहाँ से चलते बने, क्योंकि मैडम के साथ घूम कर कोई फ़ायदा नहीं था, और वे खुल कर लड़कियों को नहीं देख सकते थे। मैं बेवकूफों की तरह मैम के साथ ही एक स्टॉल से दूसरे स्टॉल पर घूमता रहा। एक स्टॉल पर एक बहुत सुन्दर लड़की अपने बनाये गये प्रोजेक्ट के बारे में बताने लगी। मैं उससे उसके प्रोजेक्ट के बारे में उल्टे-पुल्टे प्रश्न करने लगा तो मेरे साथ खड़ी हुई मैम मेरा मज़ाक़ उड़ाते हुए बोलीं कि इसलिए ही मैं तुम्हें अकेले नहीं घूमने दे रही थी, मुझे पता था तुम्हारी आवाज़ इन लड़कियों के सामने नहीं निकलने वाली। वहाँ खड़ी लड़कियाँ मुझ पर हँसने लगीं और मैं मैम को बेवकूफ बना कर वहाँ से चला गया और अपने दोस्तों से जा कर मिला और फिर इधर-उधर घूमने लगा।

वह सुन्दर लड़की मेरे एक दोस्त सुमित अग्रवाल को जानती थी और वह उसे भैया कह कर पुकारती थी, क्योंकि उनके घर आस-पास ही थे। जब मैं दोबारा उस सुन्दर लड़की वाले हॉल में अपने दोस्तों के साथ आया तो उसने हमें देखा तो वह सुमित को बुला कर उससे पूछने लगी कि ये पगला-सा कौन है तुम्हारे साथ? सुमित ने उस लड़की को बताया कि यह शेर सिंह है और हमारे स्कूल का हेड बॉय है। वह लड़की यह बात सुन कर बहुत ही आश्चर्य से बोली कि मेरा भाई जो तुम्हारे स्कूल में पढ़ता है हर समय घर पर इसकी तारीफ़ों के पुल बाँधता रहता है और बताता है कि तुम्हारा पूरा स्कूल इसकी बातें मानता है और यह बहुत ही तेज़ है, लेकिन मुझे तो यह बहुत ही बेवकूफ-सा लग रहा है। सुमित ने उससे कहा कि ऐसा बेवकूफ नहीं है, इतनी सारी लड़कियाँ देख कर शरमा रहा है, यह तो बाहर से ही वापस जा रहा था, हम इसे ज़बरदस्ती अन्दर ले कर आये। फिर सुमित ने मुझे अपने पास बुलाया और उस लड़की से मेरा यह कह कर

https://t.me/Sahityajunction

परिचय कराया कि इनका नाम शेर सिंह है और फिर उस लड़की का नाम बताया कि इनका नाम सिमरन है।

मैंने उस लड़की को सिर्फ हैलो कहा और सुमित को वापस चलने के लिए इशारा किया और फिर हम सभी दोस्त इधर-उधर घूम-घूम कर समय काटने लगे। अब मेरा भी डर थोड़ा दूर हो गया था और मैं भी थोड़ा खुल कर घूम रहा था। हमारे स्कूल के लगभग सभी बच्चे वहाँ घूम रहे थे और मुझे इज़्ज़त दे रहे थे। इस वजह से मैं काफ़ी लड़कियों के अटरैक्शन में था। उस दिन सेंट एनेन्स से हम लोग घूम-फिर कर वापस आ गये। मुझे क्योंकि मुर्गा बनाने की बहुत आदत थी तो मैंने और मेरे दो दोस्तों ने राजा को ही मुर्गा बनाने की एक तरकीब निकाली।

मैंने राजा से कहा कि यार, जिस दिन हम एक्सीबशन देखने सेंट एनेन्स स्कूल में गये थे, उस दिन तुम्हें मेरे पड़ोस में रहने वाली एक लड़की ने देखा और बताया कि उसकी सहेली तुमसे दोस्ती करना चाहती है। राजा हमारी बात सुन कर बहुत ख़ुश हुआ तो मैंने ट्रीट के लिए कहा मेरी ट्रीट वाली बात का समर्थन मानव, नितिन, और सुमित ने भी किया तो राजा ने हम सबको ट्रीट दे दी, और मैंने राजा से उस लड़की को मिलवाने की बात भी उसके दिमाग़ में डाल दी। थोड़े दिन बाद मैंने और मानव ने 5 रुपये वाला एक ग्रिींटग कार्ड ख़रीदा और राजा को ले जा कर दे दिया, वह बता कर की यह कार्ड तुम्हें उसी लड़की ने भेजा है और उस कार्ड में उस लड़की का नाम निकिता लिख दिया। 5 रुपये का यह कार्ड राजा को दे कर हमने उससे फिर एक ट्रीट ले ली।

उसके बाद 3-4 बार और हमने राजा से निकिता के नाम पर ट्रीट ली, तो राजा हम से ज़िद करने लगा कि अब जब तक तुम मुझे निकिता नहीं दिखाओगे तो मैं तुम्हें आगे कोई ट्रीट नहीं दूँगा। जब वह ज़्यादा ही जिद्द करने लगा तो हम उसे सेंट एनेन्स स्कूल की छुट्टी के समय स्कूल गेट के सामने ही ले कर खड़े हो गये और पहले ही प्लानिंग के तहत एक बहुत ही मोटी और काली-सी लड़की राजा को दिखा दी और ऐसे ही उसका नाम निकिता बता दिया और राजा से कहा कि तुम इससे जा कर ख़ुद ही बात कर लो। राजा ने उस मोटी काली लड़की को देखा तो नाराज़ होने लगा और कहने लगा कि तुमने मुझे मुर्गा बना कर मेरे से 5-6 बार ट्रीट ले ली। यह लड़की निकिता नहीं है, मैंने असली निकिता का पता कर लिया है और फिर राजा ने हमें एक ठीक-ठाक सुन्दर-सी लड़की को दिखाया और कहा कि ग्यारहवीं क्लास में निकिता नाम की सिर्फ यही एक लड़की है।

हमने राजा से कहा कि हो सकता है हमसे कुछ ग़लतियाँ हुई हो और मैं तुम्हें अपने पड़ोस की लड़की से बात करके बताऊँगा। 2-3 बार राजा से हमने उस नयी निकिता का नाम ले कर भी ट्रीट ले ली तो राजा बोला कि यार शेर सिंह आज ट्रीट तुझे देनी पड़ेगी, क्योंकि मैंने सच में ही निकिता के बारे में पता करवाया तो मुझे पता चला है कि वह तुम्हें पसन्द करती है, इसलिए आज तुम्हें ट्रीट देनी है। मैंने सोचा साला इतने दिन से मुर्गा बन कर ट्रीट दे रहा था, इसलिए मेरा बेवकूफ बनाना चाहता है और मैंने कहा कि भाई, मैं किस बात की ट्रीट दूँ, मुझे वह पसन्द ही नहीं है और न मुझे उससे दोस्ती करनी है। बाद में मैंने अपनी पड़ोस में रहने वाली एक लड़की से, जो उस असली लड़की निकिता की क्लास मेट थी, पता करवाया तो राजा की बात सच निकली की वह मुझसे फ्रेण्ड

https://t.me/Sahityajunction

शिप करना चाहती थी, लेकिन मैंने उसकी पड़ोसन को मना कर दिया, क्योंकि मेरे दिल में सिर्फ एक ही लड़की बस चुकी थी और वह थी उस दिन एक्सीबिशन में मिली सिमरन नाम की सुन्दर-सी लड़की, लेकिन शर्म के कारण मैंने किसी से भी इस बारे में चर्चा नहीं की थी।

हमारे स्कूल का कैम्पस रुड़की आई.आई.टी. से जो कि पूरे भारत का सबसे अच्छा इन्जीनियिंरग कॉलेज माना जाता है, बिलकुल लगा हुआ था और आई.आई.टी. रुड़की के लगभग सभी प्रोफ़ेसरों के बच्चे हमारे ही स्कूल में पढ़ते थे और आई.आई.टी. कैम्पस में ही रहते थे, इसलिए हमारे बहुत-से दोस्त वहाँ थे और शाम के समय हम रोज़ आई.आई.टी. कैम्पस में ही स्कूटर या मोटर साइकिल पर इधरउधर घूमते रहते थे। एक दिन मैं अकेला ही आई.आई.टी. कैम्पस में अपने स्कूटर पर घूम रहा था, तो मैंने देखा कि सिमरन अपनी दो सहेलियों के साथ साइकिल पर शहर की तरफ़ जा रही है। मैंने आज उसे अचानक ही इतने दिनों बाद देखा तो मन-ही-मन बहुत ख़ुश हुआ और फटाफट अपना स्कूटर थोड़ा आगे जा कर वापस मोड़ कर उनकी साइकिल के पीछे ले आया, थोड़ी देर मैंने हल्के-हल्के स्कूटर उनके पीछे ही रखा तो वह मेरी इस हरकत पर खिलखिला कर हँसने लगी।

आई.आई.टी. कैम्पस के अन्दर जो सड़कें हैं वे क़रीब-क़रीब ख़ाली ही रहती हैं। ख़ाली सड़क पर मुझे हल्के स्पीड में स्कूटर चलाता देख बार-बार तीनों लड़कियाँ पीछे मुड़ कर देखने लगीं तो मुझे शर्म आने लगी और मैं वहाँ से स्कूटर तेज़ी से आगे ले कर चला गया। मैं बाद में वापस आया, क्योंकि मैं समझ गया था कि सिमरन कहाँ से आ रही थी। वह इस समय ट्यूशन पढ़ कर आ रही थी और जिन सर से वह ट्यूशन पढ़ कर आ रही थी, वे मेरे क्लास मेट के पापा थे। मैं फटाफट अपने क्लास मेट के घर गया जिसका नाम अभिषेक जुआल था और उससे पूछा कि इलेवेन्थ क्लास की लड़कियों का बैच क्या इस समय तुम्हारे पापा पढ़ाते हैं, तो उसने मुझे बताया कि नहीं सुबह 6.30 बजे पढ़ाते हैं, लेकिन सिर्फ आज शाम को 5-6 बजे पढ़ाया, क्योंकि पापा को सुबह कहीं जाना था। अभिषेक मुझसे कारण पूछने लगा तो मैंने उसे टाल दिया। अब मुझे पता चल चुका था कि वह सुबह 6.30 बजे जुआल सर के यहाँ ट्यूशन पढ़ने जाती है।

अगले दिन से मैं फटाफट सुबह-सुबह उठ कर तैयार हो गया और मैंने अपनी मम्मी से बताया कि अब मैं रोज़ सुबह आई.आई.टी. कैम्पस के ग्राउण्ड में घूमने के लिए जाया करूँगा। सुबह 6 बजे से पहले ही मैं अपने स्कूटर पर उसके घर से ट्यूशन वाली सड़क पर घूमता रहा और फिर थोड़ी देर में सिमरन मुझे सामने से अपनी उन्हीं सहेलियों के साथ आती दिखी तो मैंने अपने स्कूटर की रफ़्तार काफ़ी कम कर ली और जब वे तीनों मेरे सामने से निकली तो आश्चर्य से हँसने लगी, शायद यह सोच कर कि मैं इतनी सुबह-सुबह वहाँ कहाँ से आ गया। इस समय तीनों अपनी स्कूल यूनिफ़ॉर्म में थी, क्योंकि 6.30 से 7.30 बजे तक क्लास करने के बाद वे ट्यूशन से सीधा अपने स्कूल चली जाती थीं। सुबह 6.30 बजे सिमरन को देख कर मैं फटाफट अपने घर जाता और नहा-धो करअपनी स्कूल यूनिफ़ार्म पहन कर फिर से 7.30 बजे के क़रीब वहीं से अपने स्कूल जाने के लिए गुज़रता था और लगभग हर रोज़ ही दुबारा सिमरन मुझे दिख जाती थी। इसी समय सारणी पर चलते हुए मुझे क़रीब 2-3 महीने हो गये और मैं और सिमरन सिर्फ हल्की निगाहों से एक-दूसरे को देखा करते थे, लेकिन कभी भी कोई बातचीत नहीं की थी।

https://t.me/Sahityajunction

जब कई दिनों तक ऐसे ही सिर्फ हल्की निगाह से देखना जारी रहा तो एक दिन सुमित मेरे पास आया और कहा कि आज मैं तेरे लिए किसी का एक मैसेज लाया हूँ। मैंने कहा किसका तो वह बोला सिमरन का। सिमरन का नाम सुन कर मेरे रोंगटे खड़े हो गये और मैं शर्माने लगा, लेकिन फिर अपने पर कंट्रोल करके सुमित से बोला कि क्या मैसेज है। सुमित ने कहा कि वो पूछ रही है कि तुम और कितने महीनों तक ऐसे ही सुबह उठ कर परेशान होते रहोगे और मेरी सहेलियों के आगे-पीछे चक्कर काटते रहोगे, तुम्हें सिमरन की दोनों सहेलियों में से जो भी पसन्द हो बता दो, वह उनसे ़तुम्हारी फ्रेण्डशिप करवा देगी। सुमित का यह मैसेज सुन कर मुझे ख़ूब आश्चर्य हुआ, लेकिन मैं समझ गया कि शायद सिमरन ने अपनी सहेलियों का नाम ले कर यह मैसेज देना चाहा है कि वह मुझे पसन्द करती है। मैंने अनजान बनते हुए सुमित से कहा कि मैं कुछ समझा नहीं और मुझे सिमरन की दोनों सहेलियों में से किसी से भी बात नहीं करनी है और सिमरन को अपना यह मैसेज देने के लिए सुमित को कह दिया। इसके बाद मैंने सुबह 6.30 बजे घूमने जाना छोड़ दिया, क्योंकि मुझे शर्म आने लगी थी और सिर्फ 7.30 बजे जब सुमित के साथ स्कूल जाता था तो ही सिमरन को हल्की निगाह से निहार लेता था और मन-ही-मन ख़ुश होता रहता था। जब कुछ दिन मैं सुबह 6.30 बजे उन्हें नहीं दिखा तो सिमरन ने फिर से सुमित के द्वारा मैसेज करवाया कि क्या मैं मेरी सहेलियों से नाराज़ हूँ और अगर नाराज़ नहीं हूँ तो आज शाम को 7 बजे उस से फ़ोन पर बात कर लूँ, उसे अपनी सहेलियों के सिलसिले में मुझसे बात करनी है।

जब मैंने सुमित से कहा कि मुझे सिमरन के घर का फ़ोन नम्बर नहीं पता तो वह बोला कि सिमरन आज 7 बजे मेरे घर पर तुझसे बात करने के लिए फ़ोन करेगी और तू आज 7 बजे से पहले मेरे घर पर आ जाना। मैं शाम को 6 बजे ही सुमित के घर पर पहुँच गया तो सुमित मुझसे मज़े लेते हुए बोला बड़ी जल्दी आ गया, बड़ी जल्दी है तुझे सिमरन से बात करने की। मैंने कहा कि मैं तो तुझ से बात करने के लिए जल्दी आ गया और उसे ऐसा दिखाने लगा जैसे मुझे कोई फ़र्क नहीं पड़ता कि मेरी सिमरन से बात हो या नहीं, किन्तु दिल-ही-दिल में मैं यह सोच कर ख़ुश था कि आज मेरी उससे बात होगी और यह सोचे जा रहा था कि क्या बात करूँगा। ठीक 7 बजे सिमरन का फ़ोन आया तो सुमित ने फ़ोन रिसीव करके उससे एक-दो मिनट बात की और फिर रिसीवर मुझे दे कर बोला कि बात कर ले। मैंने और सिमरन ने एक-दूसरे को फ़ोन पर हैलो कहा और फिर काफ़ी देर तक दोनों चुप रहे। काफ़ी देर चुप्पी साधने के बाद सिमरन ने कहा कि मेरी दोनों सहेलियों में से किसके लिए आप सुबह-सुबह इतने दिनों से चक्कर काट रहे हैं, आप मुझे बता दीजिये, मैं आपकी सुबह-सुबह उठ कर परेशान होने की समस्या दूर कर दूँगी। मैंने कहा कि मुझे तुम्हारी दोनों सहेलियों से कोई मतलब नहीं है और न ही मैं उनके लिए सुबह उठ कर आता हूँ। तो सिमरन बोली कि फिर किसके लिए सुबह-सुबह आते हैं? मैंने कहा कि आपको नहीं मालूम। तो वह बोली आपने बताया कहाँ, मुझे क्या मालूम, मैं तो इतने दिनों से यही सोच रही थी कि मेरी दोनों सहेलियों में से कौन-सी आपको इतनी पसन्द है कि सुबह-सुबह ही उन्हें देखने के लिए आ जाते हैं। मैंने हिम्मत करके कहा कि अगर मैं यह कहूँ कि मैं तुम्हें देखने आता हूँ तो तुम क्या कहोगी?

मेरी यह बात सुन कर वह काफ़ी देर तक चुप रही और फिर बोली कि अगर मेरे लिए आते थे तो अब आना बन्द क्यों कर दिया? मैंने कहा कि शायद तुम्हें मेरा ऐसे

https://t.me/Sahityajunction

आना अच्छा न लगता हो यह सोच कर बन्द कर दिया, अगर तुम कहोगी तो मैं आ जाया करूँगा। वह बोली मेरे कहने से क्या होगा आपको आना ही चाहिये, अब कम-से-कम मुझे यह तो पता चला कि आप मेरे लिए सुबह-सुबह उठ कर आते हैं। मेरे कोई जवाब न देने पर वह बोली कि अब मैं फ़ोन रख रही हूँ। आपसे बात करके मुझे अच्छा लगा और जैसा आपके बारे में मैंने अपने छोटे भाई से सुना था आप उससे भी कहीं ज़्यादा अच्छे निकले। मैंने उससे उसके छोटे भाई का नाम और क्लास के बारे में पूछा, क्योंकि वह मेरे ही स्कूल में पढ़ता था। इसके बाद आगे फिर कभी जल्दी ही बात करने का बोल कर सिमरन ने फ़ोन काट दिया। फ़ोन पर बात ख़त्म होने के बाद सुमित मेरे पास आया और कि क्या बातें हुईं की पूछने लगा। मैंने कहा अपनी सहेलियों के बारे में बातें कर रही थी और फिर दोबारा कभी फ़ोन करे तो तुम मेरी बात करवा देना।

अगले दिन से मैं फिर रोज़ सुबह 6.30 बजे घूमने के लिए जाने लगा और जब सिमरन से मेरी निगाहें मिलती तो वह बड़े ही प्यार से मुस्कुराती और फिर शर्मा जाती थी। ऐसे ही कुछ महीनों और चलता रहा और फिर हमारे स्कूल में एनुअल डे का प्रोग्राम आ गया। इस दौरान मैंने सिमरन के छोटे भाई से भी, जिसका नाम मानस था और जो मुझसे दो क्लास नीचे था, ख़ूब दोस्ती कर ली और बातों-ही-बातों में उससे उसके घर और सिमरन के बारे में पता कर लिया था। ऐनुअल डे का प्रोग्राम दो दिन होता था। पहले दिन सेंट एनेन्स स्कूल की लड़कियों और हमारे स्कूल के लड़कों के लिए होता था और दूसरे दिन हमारे स्कूल में पढ़ने वाले बच्चों के पेरेण्ट्स के लिए होता था। जिस दिन पेरेण्ट्स के लिए होता था, उस दिन कोई भी बच्चा प्रोग्राम देखने नहीं आ सकता था, लेकिन क्योंकि मैं हेड बॉय था और पूरा लॉ ऐण्ड ऑर्डर मेनटेन कराना मेरा और हाउस लीडर्स का काम था इसलिए हम लोगों को दोनों दिन अलाउड था। जिस दिन स्कूल के बच्चों के लिए प्रोग्राम था, उस दिन सिमरन प्रोग्राम देखने नहीं आयी और मैं प्रोग्राम ख़त्म होने तक उसे ही ढूँढता और उसका इन्तज़ार करता रहा।

अगले दिन जिस दिन पेरेण्ट्स के लिए प्रोग्राम था, उस दिन सिमरन अपनी मम्मी के साथ प्रोग्राम देखने आयी। उस समय मैं मेन गेट पर ही खड़ा था। मैंने सिमरन और उसकी मम्मी को देखा तो मेरा मन ख़ुश हो गया मैंने सिमरन की मम्मी को नमस्ते कहा और पूछा कि आण्टी जी, आप मानस की मम्मी हैं न ? वे बोलीं हाँ, बेटे, लेकिन तुम्हें कैसे पता। मैंने कहा कि मैंने मानस के साथ आपको मार्किट में देखा था और फिर दोनों को एक अच्छी-सी सीट पर ले जा कर बैठा दिया। प्रोग्राम शुरू होने के बाद पहले तो मैं काफ़ी देर तक किसी-न-किसी बहाने से उनकी सीट के आस-पास चक्कर काटता रहा, लेकिन फिर बाद में सबसे पीछे जा कर एक जगह खड़ा हो गया। थोड़ी देर बाद सिमरन अपनी सीट से उठी और मेरी तरफ़ पीछे आ गयी और मेरे पास आ कर मुझसे पहले हैलो बोली और कहा कि कैण्टीन कहाँ है, मुझे खाने के लिए कुछ कैण्टीन से लेना है। मैंने कहा कि मैं तुम्हारे लिए ख़ुद ला दूँ तो वह बोली नहीं, आप बस कैण्टीन कहाँ है, यह बता दीजिये। मैंने उसको इशारे से बताया कि उधर की तरफ़ है तो वह बोली कि आप मुझे साथ चल कर कैण्टीन दिखा दीजिए, मुझे ऐसे समझ में नहीं आ रहा है। मैंने कहा ठीक है और उसे अपने साथ कैण्टीन पर ले आया।

उसने कैण्टीन से अपने लिए 2-3 चीजें खाने के लिए ख़रीदीं और बोली कि आपके स्कूल में चिड़ियाघर भी तो है, वह किधर है, मैंने कहा कि इस कैण्टीन के पीछे, तो

https://t.me/Sahityajunction

सिमरन बोली कि अगर आपके पास समय हो तो मुझे चिड़ियाघर भी दिखा दीजिये। मैं उसे कैण्टीन के पीछे चिड़ियाघर में ले आया। कैण्टीन पर बहुत ज़्यादा लोगों की भीड़ थी, लेकिन चिड़ियाघर बिलकुल ख़ाली पड़ा था। वह और मैं चिड़ियाघर में इधर-उधर की बातें करते हुए थोड़ी देर घूमते रहे फिर सिमरन ने मुझे कहा कि आपने पूरे स्कूल के लड़कों पर तो इतना रोब जमा रखा है, लेकिन मुझसे आप डरते क्यों है? मैंने कहा कि अगर मैं कुछ बोलूँगा तो तुम डर जाओगी, उसने कहा आपको मैं बता दूँ कि आपकी किसी बात से मैं डरने वाली नहीं हूँ। मैंने कहा अच्छा और फिर सीधा उसके चेहरे की तरफ़ देखते हुए मैंने उसे झट से बिना डर के आई लव यू कह दिया। उसने मेरे मुँह से यह सुना तो बस मुझे देखती रही और कुछ नहीं बोली तो मैंने कहा कि क्या हुआ, डर गयी न ? वह बोली मैं डरी नहीं, बल्कि मैं यह सोच रही हूँ कि आप इतने दिनों से क्यों डर रहे थे, और फिर उसने अचानक ही मेरे गाल पर एक हलके से किस किया और वहाँ से बिना कुछ बोले भाग गयी। जब मैंने पीछे से उसे कहा कि डर कर कहाँ भाग रही हो तो वह बोली मम्मी इन्तज़ार कर रही होगी, आपको बाद में बताऊँगी कि कौन डरता है।

उस दिन मैं बहुत ख़ुश था, क्योंकि सिमरन मुझे बहुत अच्छी लगती थी और मैं उसे मन-ही-मन चाहने लगा था, और यह सोच कर ख़ुश था कि वह भी मुझे पसन्द करती है और चाहती है। मैंने उससे उसके घर का फ़ोन नम्बर भी ले लिया था और एक समय और कोड सेट कर लिया था, कि अगर दो बार एक-एक िंरग टोन, मैसेज कॉल आये तो समझ जाना कि मैंने फ़ोन किया है और फिर हमारी रोज़ फ़ोन पर बातें होने लगी और कभी-कभी तो हम दोनों पूरी रात चुपचाप फ़ोन पर बातें करते रहते थे। हम दोनों एक-दूसरे से मिलना चाहते थे, लेकिन हमारा शहर रुड़की इतना छोटा था कि हम मिल कर बातें नहीं कर पाते थे, क्योंकि शहर में लगभग सब-लोग मेरे और उसके घरवालों को जानते थे और कोई भी हमें एक साथ देख कर हमारी शिकायत घर पर कर सकता था। अपने तर्जुबे से मैं बोल सकता हूँ कि शादी के लिए हमारे जैसे छोटे शहरों की लड़कियाँ सबसे अच्छी रहती है, क्योंकि छोटे शहरों में लड़का और लड़की एक लिमिट तक दोस्ती कर सकते हैं, लेकिन गाँव और शहर में बहुत ज़्यादा मौके होने के कारण लड़के और लड़कियों का इश्क बहुत जल्दी फ़िजक़िल रिलेशन में बदल जाता है, क्योंकि गाँव में खेतों में उनके पास मिलने की जगह होती है और बड़े शहरों में तो कहीं भी जा कर मिल लो, कोई एक-दूसरे से वास्ता नहीं रखता है। इसलिए हमारे जैसे छोटे-शहरों में पढ़ाई-लिखाई भी ठीक-ठाक होती है और लड़के-लड़कियाँ भी लगभग ठीक ही होते हैं।

https://t.me/Sahityajunction

18. लड़ाई-झगड़े

सिमरन से प्यार-भरी बातें करके मेरा बहुत अच्छा समय बीत हो रहा था, लेकिन मेरे घरवालों को मुझ से एक समस्या थी और वह यह कि मेरे घर पर हर थोड़े दिन में किसी-न-किसी लड़के के घर वाले मेरी शिकायत ले कर आ जाते थे कि आपके लड़के ने हमारे लड़के की पिटाई कर दी है। असल में बचपन से ही मुझे बीमारी थी कि अगर कोई मेरे सामने किसी को बेवजह परेशान कर रहा है तो मैं अपनी टाँग बीच में ज़रूर फँसा देता था और परेशान करने वाले को उसी समय सबक़ सिखाता था। बचपन में तो बच्चों के घर वाले अपने बच्चों की पिटाई पर शायद ज़्यादा ध्यान नहीं देते थे और फिर उस समय पिटने वालों के इतनी चोटें भी नहीं लगती थीं, लेकिन अब क्योंकि मैं बड़ा हो गया था तो कभी-कभी सामने पिटने वालों को ज़्यादा चोटें भी लग जाती थीं।

मेरे घर पर जितने भी बच्चों के मम्मी-पापा मेरी शिकायतें ले कर आये, वह सब मेरी बात सुन कर अपने लड़के की ग़लती मान कर मेरे घर से वापस गये, क्योंकि मैं सिर्फ उन्हें पिटता था जो दूसरों को बेवजह परेशान करते थे या कोई ऐसा काम जैसे बेवजह किसी लड़की को परेशान करना आदि। जब मेरे हाथों से पीटे हुए बच्चों के घर वाले मेरी बातें सुन कर सन्तुष्ट हो कर चले जाते थे तो मेरे मम्मी- पापा मुझ पर नाराज़ होते थे और हमेशा बोलते कि तुमने क्या पूरी दुनिया का ठेका उठाया है; अगर कोई किसी को परेशान करता है तो उस परेशान होने वाले के घरवाले ख़ुद कार्रवाई करेंगे तू किसी के बीच में क्यों आता है? मैं इनकी बात का हमेशा यही जवाब देता कि आपने ही तो सिखाया है कि बहादुर आदमी की बस यही पहचान है कि वह अपने सामने किसी पर ज़ुल्म नहीं होने देता और जब आपने मेरा नाम ही शेर सिंह रखा है तो मुझे तो बहादुरी दिखानी ही पड़ेगी, वरना सब लोग मेरा मज़ाक उड़ायेंगे।

सिमरन भी मेरी इस आदत से परेशान थी कि मैं दूसरे के लफ़ड़ों में अपनी टाँग क्यों फँसाता हूँ। सिमरन को भी कभी-कभी कोई लड़का पीछे पड़ कर परेशान करता तो वह मुझसे कहती कि आपको कुछ बोलने की ज़रूरत नहीं है और मैं ख़ुद ही ऐसे लोगों से निपट लूँगी और वह सच में ही ऐसे लफ़ंगों का सही इलाज कर देती थी। इलेवेन्थ क्लास पास करके मैं बारहवीं क्लास में आया तो घर वाले इस बात पर मेरे पीछे पड़ गये कि मैं हर समय फ़ोन पर चिपका रहता हूँ और मुझे पढ़ाई थोड़ा ध्यान देना चाहिए, क्योंकि इस बार मेरे बोर्ड इग्ज़ाम होने है। मेरी मम्मी को मुझ पर शक था कि मैं किसी लड़की से फ़ोन पर बात करता हूँ और सिमरन की मम्मी को तो अच्छी तरह से पता चल गया था कि सिमरन मुझसे फ़ोन पर बात करती है, क्योंकि एक दिन जब मैंने सिमरन के घर पर फ़ोन किया तो फ़ोन उसकी मम्मी ने उठा लिया और बिलकुल सिमरन के स्टाइल से हैलो बोल कर मुझसे बातें करने लगीं, उस समय सिमरन अपनी मम्मी के पास ही खड़ी थी, थोड़ी देर में ही मेरी समझ में आ गया कि फ़ोन पर सिमरन नहीं है, तो मैंने एकदम से डर कर फ़ोन डिस्कनेक्ट कर दिया और सोचने लगा कि मेरी ग़लती के कारण कहीं सिमरन पर मुसीबत न हो जाये।

मैं ऐसा सोच ही रहा था कि एकदम से मेरे फ़ोन की बेल बजी, मैंने फ़ोन उठाया तो उधर से सिमरन की आवाज़ आयी और उसने कहा कि मेरी मम्मी से बात कर लीजिए।

https://t.me/Sahityajunction

मैंने उसकी मम्मी से बात की तो उन्होंने मुझसे बहुत अच्छी तरह से बात की और कहा कि बेटे, तुम लोग अच्छे दोस्तों की तरह बातें कर सकते हो, लेकिन कभी ऐसा काम नहीं करना जिससे हमारी और तुम्हारे परिवार की इज़्ज़त ख़राब हो, इसके बाद उन्होंने सिमरन को फ़ोन दिया और वहाँ से चली गयी। सिमरन ने मुझसे कहा कि हर समय आप 'आई लव यू, आई लव यू' करते रहते हो, लेकिन मेरी मम्मी और मेरी आवाज़ में फ़र्क नहीं पहचान सके, मैंने कहा कि मुझे शक तो हो रहा था, लेकिन तुम्हारी और तुम्हारी मम्मी की आवाज़ एक जैसी ही है। वह इस बात पर हमेशा मेरा मज़ाक उड़ाती रहती थी, और जब मैं उस को 'आई लव यू' बोलता तो वह कहती कि शर्म नहीं आती, मैं उसकी मम्मी बोल रही हूँ। तो मैं बोलता, मम्मी जी मैं तो आपके बच्चे जैसा हूँ और हर बच्चा अपनी मम्मी से प्यार करता है, इसलिए मैं आपको 'आई लव यू' बोलता हूँ।

https://t.me/Sahityajunction

19. दूसरा चुनाव

जैसे ही मैं ट्वेल्व्थ क्लास में आया तो फिर से हर तरफ़ स्कूल में इलेक्शन की चर्चा होने लगी और मैं फिर से हेड बॉय बनने की प्लानिंग बनाने लगा और तैयारी करने लगा। जब चुनाव में सिर्फ 10-12 दिन बचे तो ब्रदर प्रिंसिपल ने सुबह असेम्बली में सबको बताया कि इस बार हमने इलेक्शन का तरीक़ा बदल दिया है। इस बार चुनाव का यह तरीक़ा होगा कि हर क्लास से 4 बच्चे प्रतिनिधि चुने जायेंगे जिन्हें उनकी कक्षा के अन्दर ही वोट दे कर चुना जायेगा और ये सब प्रतिनिधि मिल कर अपने में से एक हेड बॉय और 4 हाउस लीडर चुनेंगे। ब्रदर ने इतने सालों से चले आ रहे चुनाव के तरीक़ों को सिर्फ इसलिए बदला था, क्योंकि वे पिछले साल की तरह यह नहीं चाहते थे कि मैं चुनाव निर्विरोध जीत जाऊँ और उन्हें ऐसा लगता था कि मैं अपनी कक्षा से ही अपने आपको 4 प्रतिनिधियों में जीत कर नहीं ला पाऊँगा। ब्रदर मुझे हेड बॉय के रूप में इसलिए पसन्द नहीं करते थे, क्योंकि मैं हर काम उनके कहे अनुसार नहीं करता था।

हेड बॉय और हाउस लीडर का रोज़ का काम स्कूल में यह होता था कि जो बच्चे पूरी स्कूल यूनिफ़ार्म में स्कूल नहीं आये या स्कूल लेट आये उन्हें पकड़ कर ब्रदर के सामने ले जा कर सजा दिलवाना। मैंने आज तक किसी लड़के को किसी भी कारण से ब्रदर के सामने पकड़ कर पेश नहीं किया था और जो भी बच्चा पूरी यूनीफ़ॉर्म में नहीं आता था या स्कूल में देरी से आता था, मैं ख़ुद ही समझा कर छोड़ देता था। और जिन्हें मेरे सामने हाउस लीडर पकड़ते थे, उन्हें भी छुड़वा देता था, जिसकी जानकारी ब्रदर को भी थी, लेकिन वे मुझे ख़ूब कोशिशें करने के बाद भी ऐसा करते हुए रँगे हाथों नहीं पकड़ पाये। बदर जब भी मेरे से यह कहते कि तुम आज तक एक भी लड़के को स्कूल में देर से आने या पूरी यूनिफ़ार्म स्कूल में न पहन कर आने के कारण मेरे सामने पकड़ कर नहीं लाये, तो मैं कहता कि सर, सब बच्चे समय पर आ रहे हैं और सभी पूरी यूनिफ़ार्म पहन कर आते हैं। ब्रदर मेरी बात पर ग़ुस्सा होते और बोलते कि तुम तो ख़ुद ही पूरी यूनिफ़ार्म में नहीं रहते हो और हमेशा मेरे ब्लेज़र की तरफ़ इशारा करके बोलते कि तुम्हारा हेड बॉय का मोनोग्राम तुम्हारे ब्लेज़र पर क्यों नहीं लगा रहता है? अगर मुझे पता होता कि तुम ऐसे बीहेव करोगे तो मैं तुम्हें कभी इलेवेंथ कक्षा में दाख़िला न देता और अपने माथे पर हाथ मार कर अपने को उस दिन के लिए कोसते, जिस दिन मुझे इलेवेंथ कक्षा में दाख़िला दिया था और मुझे हर बार सिर्फ चेतावनी ही दे कर छोड़ देते, क्योंकि कोई भी ग़लत काम करते हुए वे मुझे कभी नहीं पकड़ सके।

वैसे मैं अपने हिसाब से कोई ग़लत काम करता भी नहीं था। ब्रदर मुझसे ज़रूर मेरी इन आदतों के कारण नाराज रहते थे, लेकिन स्कूल के सभी बच्चे मुझसे बहुत ख़ुश रहते थे कि मैं उन्हें कभी सज़ा नहीं दिलवाता हूँ। उस दिन सुबह प्रार्थना के बाद असेम्बली में ब्रदर ने नये नियम के बारे में तो बता दिया था, लेकिन चुनाव कब होंगे, इसकी दिन-तारीख़ नहीं बतायी और कहा कि स्कूल प्रशासन अपने हिसाब से किसी भी समय चुनाव करा लेगा। चुनाव की तारीख़ क्लीयर न होने के कारण मैं अपनी तैयारी ठीक से नहीं कर पा रहा था और मैं समझ रहा था कि ब्रदर सिर्फ यह चाहते हैं कि शेर सिंह के अलावा चाहे कोई भी हेड बॉय बन जाये और इसीलिए वह यह सब कर रहे है। शनिवार

https://t.me/Sahityajunction

को हमारे हाफ़ डे होता था। सुबह पहले पीरियड में हमारी क्लास टीचर क्लास में आयी और अटेण्डेन्स लेने के बाद बोली कि आज आपकी कक्षा में आपके द्वारा वोट दे कर आप सबमें से प्रतिनिधि चुने जायेंगे और फिर फ़ोर्थ पीरियड के बाद वे सब प्रतिनिधि थर्ड फ़्लोर पर स्थित हॉल में जायेंगे और फिर हर कक्षा से आये हुये प्रतिनिधि में से वोटिंग के द्वारा हेड बॉय बनेगा। मैंने ठीक से मैडम की बात सुनी और जैसे ही मैडम 5 मिनट के लिए कक्षा में होने वाली वोटिंग के लिए वोटिंग स्लिप लेने गयी, मैं अपनी कक्षा में खड़े हो कर सभी बच्चों को सम्बोधित करते हुए बोला कि दोस्तो अगर आप लोग यह चाहते हैं कि मैं फिर से हेड बॉय बनूँ तो आप मेरे कहे अनुसार अपनी कक्षा से 4 प्रतिनिधि चुन लीजिये और सब बच्चों के हाँ कहने पर मैंने अपना और 3 बच्चों का नाम पूरी कक्षा के सामने रख दिया। थोड़ी देर में मैडम आयी तो उन्होंने कहा कि जो भी प्रतिनिधि के लिए कक्षा में चुनाव लड़ना चाहते हैं, वे यहाँ सामने आ जायें? मैं और वही 3 बच्चे ब्लैक बोर्ड के पास आ कर मैडम के पास खड़े हो गये।

मैडम ने जब देखा कि सिर्फ 4 बच्चे ही आये हैं और यहाँ चुनाव ही नहीं होगा तो वह हर तेज़ बच्चे को नाम से पुकार कर उसे प्रोत्साहित करने लगी और कहने लगी कि ‘‘यू कैन बी द नेक्स्ट हेड बॉय’’ लेकिन फिर भी कोई बच्चा सामने नहीं आया तो वह बोली कि शायद आप लोगों को मेरे पीछे से किसी ने डराया है और फिर मैडम ने ज़बरदस्ती एक लड़का जिसके पापा उस समय रुड़की में आर्मी के डिप्टी कमाण्डेण्ट थे को पाँचवे कैण्डिडेट के रूप में खड़ा करवा दिया और हर बच्चे को वोटिंग स्लिप दे कर चुनाव उसी समय करवा दिया। उसी समय वोट गिने गये तो वह डिप्टी कमाण्डेण्ट का लड़का हार गया और मुझे सबसे ज़्यादा वोट मिले और मेरे तीनों साथी भी जीत गये। आज मैडम भी ब्रदर की भाषा ही बोल रही थी और उन्होंने पूरी कोशिश की कि मैं किसी तरह कक्षा के 4 प्रतिनिधियों में न चुना जा सकूँ। लेकिन उनकी यह इच्छा पूरी न हो सकी।

जैसे ही पीरियड ख़त्म होने की बेल बजी मैं फटाफट अपने क्लास के दोस्तों को ले कर ट्वेल्व्थ स्टैण्डर्ड के ही दूसरे सेक्शन बी में पहुँचा और उनकी कक्षा में जो मेरे दोस्त थे, उनसे उनकी क्लास में चुने गये 4 प्रतिनिधियों के बारे में पूछा और फटा-फट उन चारों से अपने लिए समर्थन माँगा। वे चारों भी एकदम तैयार हो गये, क्योंकि वे भी मेरे दोस्त ही थे और मैंने पहले ही उन्हें अपनी कक्षा से प्रतिनिधि चुन कर आने के लिए कहा हुआ था। हेड बॉय का चुनाव नये नियम के तहत अब सिर्फ टेवेल्थ स्टैण्डउ का विद्यार्थी ही लड़ सकता था, और जब यह बात थर्ड फ़्लोर पर ऊपर हॉल में हम सारे बैठे प्रतिनिधियों को चुनाव के समय टीचरों ने बतायी तो मैं मन-ही-मन बहुत ख़ुश हो गया, क्योंकि जो भी 7 बच्चे टेवेल्थ स्टैण्डर्ड से मेरे अलावा यहाँ हॉल में प्रतिनिधि बने बैठे थे, वे सभी मेरे दोस्त और समर्थक थे। ब्रदर ने जब कहा कि सबसे पहले हेड बॉय का चुनाव होगा और ट्वेल्व्थ स्टैण्डर्ड का जो भी प्रतिनिधि चुनाव लड़ना चाहता है, वह अपनी जगह खड़ा हो जाये तो। मैं अपनी सीट के पास खड़ा हो गया।

ब्रदर और वहाँ खड़े सभी टीचर दूसरों के खड़े होने का इन्तज़ार करने लगे, लेकिन जब कोई खड़ा नहीं हुआ तो ब्रदर को ग़ुस्सा आ गया और वे ख़ुद और कुछ अन्य टीचर उन प्रतिनिधियों पर दबाव डालने लगे कि उनमें से कोई मेरे सामने चुनाव लड़े। जब उनको कामयाबी नहीं मिली तो ब्रदर ने ग़ुस्से से कहा कि हेड बॉय का चुनाव बाद में नये प्रतिनिधि चुन कर किया जायेगा और फिर दूसरी पोस्ट के लिए चुनाव करा के जल्दी-

https://t.me/Sahityajunction

जल्दी रिज़ल्ट सुनाने लगे। जब पूरा चुनाव ख़त्म हो गया तो जो हमारे सबसे सीनियर टीचर थे। उन्होंने ब्रदर को सलाह दी कि— सर, शेर सिंह को ही हेड बॉय डिक्लेयर कर दीजिए, क्योंकि जब इन प्रतिनिधियों में इसके ि़खलाफ़ कोई चुनाव लड़ने को राज़ी नहीं है तो फिर दूसरे बच्चे कहाँ तैयार होंगे, वैसे भी अपनी कक्षा से तो यह प्रतिनिधियों में चुना ही गया है। उन सीनियर सर की बात को दूसरे मेरे समर्थक टीचरों ने भी समर्थन किया तो ब्रदर को मजबूरी में मेरा नाम हेड बॉय के लिए डिक्लेयर करना पड़ा। हॉल के बाहर आ कर तीसरी मंज़िल से ही मैंने ग्राउण्ड फ़्लोर पर खड़े अपने सभी दोस्तों और समर्थकों का विक्टरी सिग्नल हाथ से ''वी'' बना कर बताया कि मैं जीत गया। जीतने की ख़ुशी में मेरे दोस्त ढोल मँगा कर नाचने लगे।

इस जीत ने मेरा क़द स्कूल में और शहर के दूसरे स्कूलों में भी बहुत बढ़ा दिया था, क्योंकि मैं दूसरी बार बिना किसी विरोधी के इसे शहर के सबसे अच्छे स्कूल का हेड बॉय बना था। दोबारा हेड बॉय बनने के बाद सेंट एनेन्स की कई लड़कियों के फ्रेण्ड शिप के ऑफ़र मेरे पास आने लगे, लेकिन किसी की तरफ़ मैंने कोई ध्यान नहीं दिया, क्योंकि वहाँ की सबसे सुन्दर लड़की सिमरन पहले ही से मेरी फ्रेण्ड थी, लेकिन यह बात मेरे क़रीबी दोस्तों तक को नहीं मालूम थी कि हम दोनों एक-दूसरे से इतना प्रेम करते हैं और रोज़ फ़ोन पर बातें करते हैं। मेरी क्लास टीचर मेरे चुनाव जीतने के कारण मन-ही-मन शायद मुझसे कुछ नाराज रहने लगी थी, और मेरी गलतियाँ ढूँढने की कोशिश करती, लेकिन मैं कोई ग़लती उनको पकड़ने नहीं देता था। जान-बूझ कर मुझे थोड़ा परेशान करने के लिए उन्होंने अटेण्डेन्स शॉर्ट कर दी। मैंने उनको कहा कि मैडम मैं तो रोज़ सही समय पर आ जाता हूँ, लेकिन नीचे दूसरे बच्चों को चेकिंग करने के कारण मैं कक्षा में उस समय नहीं आ पाता हूँ जब आप अटैण्डेन्स लेती हैं। मैडम ने कहा कि जब मैं अटेण्डेन्स लूँ तो तुम को क्लास में होना चाहिये। मैंने कहा कि ठीक है, लेकिन फिर ब्रदर नाराज़ होंगे कि मैं बिना दूसरों को चेक किये कैसे बीच में ही आ गया। मैडम ने कहा मुझे कुछ नहीं पता और एक दिन मुझे ब्रदर के सामने पेश करवा दिया कि मेरी कक्षा में अटेण्डेन्स शॉर्ट है। ब्रदर ने मुझसे कहा कि अगर तुम्हारी अटेण्डेन्स 80 परसेण्ट से कम हुई तो मैं तुम्हें बोर्ड इग्ज़ाम नहीं देने दूँगा और मेरी कोई बात बिना सुने ही मुझे वापस भेज दिया।

इस घटना के काफ़ी दिन बाद मैं एक दिन किसी काम से स्टॉफ़ रूम में गया तो वहाँ पर कोई टीचर नहीं था, हर टीचर के लिए स्टॉफ़ रूम में एक अलग अलमारी थी और उस अलमारी पर उस टीचर का नाम लिखा हुआ था। मैं ऐसे ही अपने क्लास टीचर की अलमारी के पास गया तो मैंने देखा वहाँ हमारी कक्षा का अटेण्डेन्स रजिस्टर रखा हुआ है। मैंने उसे खोल कर देखा तो मेरे और कुछ दूसरे बच्चों के नाम के आगे न तो प्रेजेण्ट लिखा है और न ही ऐबसेण्ट सिर्फ एक छोटी-सी बिन्दी लगी हुई थी। मैं अटेण्डेन्स रजिस्टर देख कर वापस आ गया और मन बना लिया की मैं ख़ुद ही अपनी प्रेजेण्ट लगा लूँगा। अगले दिन मैंने मैडम का पेन देखा जिससे वे उस अटेण्डेन्स रजिस्टर पर प्रेज़ेण्ट बच्चे के नाम के आगे ''पी'' लिख रही थी और जो ऐबसेण्ट था उसके नाम के आगे सिर्फ एक बिन्दी लगा रही थी। मैंने वैसा ही पेन, जैसा मैडम के पास था, ख़रीद लिया और हर महीने में एक बार कभी चुपचाप जा कर ख़ुद ही अपने और उन सब बच्चों के नाम के आगे ''पी'' लिख देता था और सिर्फ कुछ ही जगह छोड़ देता जैसे पाइण्ट लगा कर

https://t.me/Sahityajunction

मैडम ने छोड़ी हुई थी।

इस तरह से मैंने ख़ुद ही अपने अटेण्डेन्स की समस्या पूरी तरह दूर कर ली थी और कभी मैडम को समझ में नहीं आया कि मेरी अटेण्डेन्स पूरी कैसे हो जाती है, क्योंकि मैं सिर्फ उतनी ही जगह पर अपने नाम के ओ ''पी'' लिखता था जितनी ज़रूरत होती थी, वरना और सभी जगह टीचर द्वारा लगी बिन्दी ही लगे रहने देता था। जो मेरे दोस्त थे, उनसे उनकी प्रेजेण्ट लगाने के लिए दावत भी सबको दिलवाता था और कुछ के आगे यूँ ही भाई बन्दी में प्रेजेण्ट लिख देता था। और उन्हें कभी बताता भी नहीं था, क्योंकि वे अपना भला होने के बाद भी शिकायत करने की अपनी आदत से बाज़ आने वाले नहीं थे। ऐसे ही मस्त जीवन पास हो रहा था और अब वह समय भी आने वाला था जिसका सपना मैं बचपन से देखता था कि मैं एक दिन अपने स्कूल का झण्डा ले कर स्पोर्ट्स डे के दिन सबसे आगे चलूँगा और क्योंकि इस बार स्कूल में स्पोर्ट्स डे था और मैं स्कूल का हेड बॉय इसलिए इस बार यह मौका मुझे मिलना था। मैंने सिमरन को स्पोर्ट्स डे पर विशेष रूप से बुलाया था जिससे कि वह मुझे पूरे स्कूल को रीप्रिज़ेण्ट करते हुए देखे।

जिस दिन स्पोर्ट्स डे था, उस दिन मेरे स्कूटर की चाभी घर पर कहीं खो गयी जिसके कारण दूसरी चाभी ले कर आने में थोड़ी देर हो गयी और मैं बिलकुल उस समय पैवेलियन में पहुँचा जब मार्च पास्ट शुरू होने में बस कुछ सेकेण्ड ही बचे थे। मैंने अपना स्कूटर वही साइड में सड़क पर ही फेंक दिया, क्योंकि पार्किंग तक जाने का समय नहीं था और फटाफट स्कूल का झण्डा ले कर आर्मी बैण्ड के पीछे खड़ा हो गया। मेरे खड़ा होते ही एक दम से गेट खुल गया और बैण्ड अपनी धुन बजाते हुए पैवेलियन में घुस गया। बाद में मेरे टीचर ने मुझे बताया कि अगर तुम कुछ देर और न आते तो हमने तुम्हारी जगह किसी हाउस लीडर को ही भेज देना था। लेकिन ईश्वर की कृपा से पूरा प्रोग्राम एक दम ठीक-ठाक हो गया था और हेड बॉय होने के नाते जो ओथ सेरेमनी यानी शपथ समारोह होनी थी, वह भी ठीक से मैंने कर दी थी और प्रोग्राम ख़त्म होने के बाद बहुत समय के अन्तराल के बाद ब्रदर ने मेरे काम की तारीफ़ की थी और बहुत सारी दौड़ों में पहला इनाम जीतने पर शाबाशी दी, क्योंकि मेरे कारण ही आज 100 गुणे 4 इण्टर स्कूल रिले हमारे स्कूल ने सभी स्कूलों को हरा कर जीती थी।

बोर्ड इक्ज़ाम आने वाले थे और इससे पहले ट्वेल्व्थ स्टैण्डर्ड के बच्चों के लिए इलेवेन्थ स्टैण्डर्ड वाले फ़ेयरवेल पार्टी देते थे। इलेवेन्थ कक्षा वालों ने भी हमें फ़ेयरवेल पार्टी दी जिसमें सभी टीचर और ब्रदर भी थे। जब प्रोग्राम ख़त्म होने वाला था तो सभी बच्चे एक-एक करके ब्रदर के पास उनसे मिलने जाने लगे। मैं भी उनके पास गया और उनसे कहा कि ब्रदर मुझसे जो भी ग़लतियाँ हुई है आप मुझे उनके लिए माफ़ कर दीजियेगा। ब्रदर में मुझे अपने गले से लगाया और कहा कि मेरी बेस्ट विशेस हमेशा तुम्हारे साथ हैं और तुमसे मैं कभी नाराज़ नहीं हुआ, तुम जैसे अभी हो जीवन में वैसे ही सदा रहना, एक दिन बहुत बड़े आदमी बनोगे। यह ब्रदर से मेरी आख़री मुलाक़ात थी और यह मेरे लिए उनके मुँह से निकले आख़री शब्द।

https://t.me/Sahityajunction

20. डी.ए.वी. कॉलेज

कार्यक्रम ख़त्म हो गया तो हम सब लड़के आपस में गले मिल कर वापस अपने घर आ गये। सिमरन और अपने घरवालों के बार-बार कहने के कारण मैंने अपनी पढ़ाई इस बार ठीक से की और ट्वेल्व्थ बोर्ड इग्ज़ाम में लगभग 70 परसेण्ट नम्बर ला कर मैं पास हो गया। रिज़ल्ट आने के बाद मेरी क्लास के लगभग 100 बच्चों में से क़रीब 12 लड़के तो उसी साल एन. डी. ए. के लिए सेलेक्ट हो गये। 7-8 लड़के आई.आई.टी. एण्ट्रेन्स क्लियर कर के इन्जीनियिंरग की पढ़ाई के लिए चले गये, 10-15 लड़के ड्रावेट इन्जीनियिंरग कॉलेज में पढ़ने चले गये। 3-4 लड़के एम.बी.बी.एस. की पढ़ाई करने चले गये और बचे हुए बच्चे भी रुड़की से बाहर पढ़ाई को चले गये। मेरी इच्छा नौकरी में नहीं थी, इसलिए मैंने देहरादून में ग्रेजुएशन तक पढ़ाई करने के लिए डी.ए.वी. कॉलेज में दाख़िला ले लिया। देहरादून में मैंने दाख़िला इसलिए लिया, क्योंकि मेरे कहने पर सिमरन ने भी आगे की पढ़ाई के लिए देहरादून में ही दाख़िला ले लिया था। वह चण्डीगढ़ में दाख़िला लेना चाहती थी, लेकिन मेरे कहने पर उसने देहरादून के गर्ल्स कॉलेज में दाख़िला ले लिया था।

सिमरन का कॉलेज इतना सख़्त था कि वह न तो मेरे पास वहाँ से फ़ोन कर पाती थी और न ही मिल सकती थी। सिर्फ हफ़्ते में एक बार उन्हें अपने गार्जियन के साथ बाहर जाने की इजाज़त थी। उस समय मोबाइल फ़ोन नये-नये ही शुरू हुए थे और बहुत ही कम लोगों के पास मोबाइल फ़ोन होता था, क्योंकि उस समय मोबाइल फ़ोन बहुत ही महँगे थे हफ़्ते में एक बार जब सिमरन कॉलेज से बाहर आती थी, तो भी उसे खोजने में बड़ी प्रॉब्लम होती थी, क्योंकि मोबाइल न होने के कारण यह पता नहीं चलता था कि वह इस समय कहाँ मेरा इन्तज़ार कर रही है। फ़ोन पर बात न होने के कारण मेरा मन बहुत ही उदास रहता था, इसलिए जैसे-तैसे इधर-उधर से अपने दोस्तों से उधार ले कर मैंने 20 हज़ार रुपये का एक मोबाइल फ़ोन ख़रीदा और उसे सिमरन को दे दिया और कहा कि तुम इसे छुपा कर अपने कमरे में रख लेना और जब भी मौक़ा मिले मेरे घर पर मिस कॉल देना, फिर मैं तुम्हें रिकॉल करूँगा। मिस कॉल देने के लिए मैंने इसलिए कहा क्योंकि आउट गोइंग कॉल बहुत महँगी थी और फ़ोन रिसीव करने में पैसे कुछ कम लगते थे। हम दोनों के पास क्योंकि ज़्यादा पैसे नहीं रहते थे, इसलिए हम सिर्फ रोज़ 10-15 मिनट ही बात करते थे। वह जब भी मोबाइल फ़ोन से फ़ोन करती तो कभी बताती कि मैं इस समय बाथरूम में छिप कर आपको फ़ोन कर रही हूँ, तो कभी कहीं ओर छिप कर करती।

देहरादून बहुत बड़ा शहर है और हमें वहाँ कोई जानता भी नहीं था, इसलिए लगभग हर हफ़्ते हम दोनों मिल लिया करते थे। इन मुलाक़ातों में हमने एक-दूसरे को आपस में किस वग़ैरा तक किया था। सिमरन ने बातों-ही-बातों में मुझे कई बार सब कुछ करने के भी इण्डीकेशन दिये, लेकिन मैंने शुरू से ही यह अपने मन और दिमाग़ में डाला हुआ था कि शादी के बाद ही इसके साथ सब कुछ करूँगा और बाद में मैंने उसे साफ़-साफ़ बता भी दिया था कि शादी के बाद के लिए भी कुछ रखना है और ग्रेजुएशन पूरी करने के बाद हम दोनों आपस में शादी कर लेंगे। समय और जीवन बहुत ही अच्छा गुज़र रहा

https://t.me/Sahityajunction

था, लेकिन मेरी ऐसी अच्छी िकस्मत नहीं थी कि हमेशा ऐसा ही समय रहता। हमारा एक घर देहरादून में भी था, जहाँ मैं बचपन से आज तक हमेशा साल में एक-दो महीने अपने ताऊजी के पास आ कर रहता था। क़रीब शाम के 7 बजे हमारे देहरादून वाले घर पर रुड़की से मेरे छोटे भाई विजय का फ़ोन आया और वह बोला कि भैया, मैं अभी आपके पास देहरादून आ रहा हूँ।

मेरे भाई के साथ एक अंकल ने भी जो पुलिस में थे, उसी समय विजय से फ़ोन ले कर मुझ से बात की और मुझे बताया कि विजय और इसके दोस्तों का हमारे थाने के एक एस.आई. का लड़के और उसके दोस्तों से झगड़ा हो गया है और इस झगड़े में एस.आई. के लड़का चाकू लगने से घायल हो गया है। क्योंकि घायल लड़का पुलिस के एस.आई. का लड़का है, इसलिए पुलिस बहुत बुरी तरह से सबको खोज रही है और जब तक सब शान्त नहीं होता तब तक तुम विजय को अपने साथ देहरादून में ही रखना। मैंने कहा ठीक है, और फिर उसी दिन रात को विजय मेरे पास देहरादून आ गया और मैंने मम्मी और पापाजी को भी विजय के देहरादून मेरे पास आने के बारे में बता दिया।

मैंने अपने भाई विजय से लड़ाई का सारा किस्सा जानना चाहा तो उसने मुझे बताया, ‘‘मैं अपने घर के पास जो चौराहा है, वहाँ खड़ा था, इतने में ही पुलिस इन्स्पेक्टर का लड़का तेज़ी से बुलेट मोटर-साइकिल चला कर लाया और मेरे बग़ल से ऐसे मोटर साइकिल निकाली कि मैं सड़क के नीचे कच्ची सड़क पर गिर गया, जब मैंने उसे चिल्ला कर कहा कि अन्धों की तरह मोटर साइकिल क्यों चला रहा है तो वह अपनी मोटर-साइकिल वापस मोड़ कर मेरे पास ले आया और मुझे गाली देने लगा। जब मैंने गाली देने का विरोध किया तो उन लोगों ने मुझे पीटना शुरू कर दिया, जब वे मुझे पीट रहे थे तो चौराहे के दूसरी तरफ़ मोहल्ले के 6-7 लड़के खड़े हुए थे। मुझे पिटता देख वे सभी लड़के आये और उन दोनों मोटर साइकिल वालों से मुझे छुड़ाने लगे और उन दोनों लड़को को एक-दो थप्पड़ भी लगा दिये। दोनों ने जब अपने को फँसा हुआ देखा तो उनमें से एक ने अपनी जेब से चाकू निकाल लिया और चाकू खोल कर ज़ोर-ज़ोर से हवा में हिलाने लगा, जिससे मोहल्ले के 2-3 लोगों के हल्का-सा चाकू भी लग गया। जब मोहल्ले के 2-3 लड़कों को उन लड़कों ने चाकू मार दिया तो मोहल्ले के सारे लड़कों ने मिल कर उस चाकू लहराने वाले लड़के को पकड़ लिया और उनमें से एक ने उसका चाकू छीन कर उसी को मार दिया और दोनों की पिटाई कर दी। बाद में मुझे और मोहल्ले के सभी लड़कों को जब यह पता चला कि मोटर साइकिल वाले दोनों लड़कों में से एक लड़का हमारे ही थाने के एस.एच.ओ. का लड़का है तो सब घबरा गये, मैं अपने परिचित पुलिस वाले अंकलजी के पास गया तो उन्होंने मुझे कुछ दिनों के लिए आपके पास देहरादून जाने के लिए कहा।’’

अपने छोटे भाई विजय की सारी बात सुनने के बाद मैंने कहा कोई बात नहीं, इसमें तुम्हारी कोई ग़लती नहीं है, थोड़े दिन में सब ठीक हो जायेगा। 34 दिन बाद मैं अपने भाई विजय को देहरादून ही में छोड़ कर रुड़की आ गया और अपने परिचित पुलिस वाले अंकल से मिला तो उन्होंने मुझे बताया कि विजय और 4 लड़कों के िख़लाफ़ एस.एच.ओ. ने अपने थाने में दफा 307 के तहत एफ़. आई. आर. दर्ज कर ली है और क्योंकि मामला एस.एच.ओ. साहब का है, इसलिए मैं कुछ नहीं कर सकता हूँ। मुझे उन्होंने यह भी बताया कि तुम विजय का विशेष ध्यान रखना, क्योंकि एस.एच.ओ. का

https://t.me/Sahityajunction

लड़का पूरा क्रिमिनल है और जो लड़का झगड़े वाले दिन मोटर साइकिल पर एस.एच.ओ. के लड़के के साथ था वह ज़िले का माना हुआ बदमाश है और 3-4 मर्डर भी कर चुका है।

पुलिस वाले अंकल जी की बात सुन कर मैं बहुत परेशान हो गया, क्योंकि बिना वजह ही ऐसे ख़तरनाक लोगों से दुश्मनी हो गयी थी। शहर में लगभग सभी अच्छे लोगों से हमारी जान-पहचान थी और उसी जान-पहचान का फ़ायदा उठा कर मैंने अपने छोटे भाई को कोर्ट में चुपचाप पेश करवा दिया और बिना पुलिस की रिमाण्ड में दिये जज साहब ने ज़मानत भी दे दी, और मेरे भाई के साथ जो दूसरे लड़के उसके साथ इस केस में थे, उन्हें भी ज़मानत मिल गयी और पुलिस उन्हें भी रिमाण्ड पर नहीं ले सकी। बिना पुलिस रिमाण्ड पर दिये जब इतनी जल्दी सभी की ज़मानत हो गयी तो एस.एच.ओ. का लड़का और उसका दोस्त बहुत नाराज हो गये और मुझे चेतावनी दी के पुलिस से तो अपने भाई को बचा लिया, लेकिन हम से नहीं बचा पाओगे और तू हमें जानता नहीं है। विरोधी पार्टी के सभी लोग जानते थे कि मेरी भाग-दौड़ से ही सब लोग तुरन्त छूट गये हैं, इसलिए मुझ से भी चिढ़ रहे थे, लेकिन मैंने उनकी परवाह नहीं की और कोर्ट से अपना काम करवा कर वापस आ गया।

घर आने पर पापा-मम्मी को कह कर विजय को कुछ समय के लिए अपने मामाजी के गाँव में भिजवा दिया, जिससे उसे कोई हानि न पहुँचे, क्योंकि एस.एच.ओ. का लड़का और उसका दोस्त सच में ही क्रिमिनल लोग थे, यह मैंने और कहीं से भी पता कर लिया था। मेरे पापाजी को बहुत ज़्यादा शराब पीने की आदत थी, जिसके कारण उनकी तबियत अब ख़राब रहने लगी थी और अब वे हर समय लगभग घर पर ही रहते थे, और यही कारण था कि मुझे ही भाग-दौड़ करके अपने भाई को छुड़वाने पड़े लेकिन जो पैसे ख़र्च हुए थे, वह मेरे पापाजी ने ही मुझे दिये थे। मम्मी और मैं पापाजी को बहुत कहते थे कि आप इतनी शराब मत पिया कीजिये इससे आपकी सेहत और आपकी तबियत दिन-पर-दिन और ख़राब हो रही है, लेकिन वे हमारी बात नहीं मानते थे। पापाजी के इस शराब पीने के चक्कर में एक-दो साल पहले भी मुझे एक मुसीबत झेलनी पड़ गयी थी।

हुआ यह था कि रुड़की से क़रीब 10 किलोमीटर दूर एक वाइन शॉप थी जहाँ पर शराब सस्ती मिलती थी। मेरे पापा भी दूसरे लोगों की तरह उस वाइन शॉप से यह सोच कर एक साथ अपने पूरे हफ़्ते का कोटा ले आते थे कि यहाँ से रेट आधा ही बैठता था। पापाजी कभी-कभी मुझे भी कहते थे कि तू अपने स्कूटर पर जा कर उस सस्ती दर पर मिलने वाली उस वाइन शॉप से शराब की बोतलें ला कर दे दे। मैं अपने पापा से पैसे ले कर यह सोच कर बोतल लेने चला जाता था कि चलो, मेरा भी घूमना हो जायेगा और पापाजी मुझे पेट्रोल के ज़्यादा पैसे भी देंगे। एक दिन ऐसे ही मैं अपने पापाजी के लिए उस वाइन शॉप से शराब की बोतलें लेने अपने एक दोस्त को साथ ले कर गया। जब हम दोनों दोस्त शराब की 5 बोतलें स्कूटर की डिक्की में रख कर स्कूटर से वापस घर आ रहे थे तो हमारे स्कूटर की टक्कर एक हीरो होण्डा मोटर साइकिल से हो गयी और उस पर बैठा एक लड़का नीचे ज़मीन पर गिर गया।

हम दोनों दोस्तों ने अपना स्कूटर स्टैण्ड पर खड़ा किय और एक आदमी मोटर

https://t.me/Sahityajunction

साइकिल उठाने लगा और दूसरे आदमी ने उस मोटर साइकिल वाले को हाथ दे कर उठाया। मोटर साइकिल वाला लड़का जैसे ही उठा, हम दोनों से लड़ने लग गया, हमने उससे टक्कर के लिए माफी भी माँगी, लेकिन वह इतने ग़ुस्से में था कि उसने मेरे दोस्त को पीटना शुरू कर दिया। जब मैंने अपने दोस्त को पिटता देखा तो हम दोनों ने मिल कर उसे नीचे ज़मीन पर गिरा दिया और उसे पीटना शुरू कर दिया, क्योंकि हमें भी अब उसकी हरकतों पर ग़ुस्सा आ गया था। जब हमारी लड़ाई हो रही थी तो वहाँ पर पास में ही जो पुलिस चौकी थी, वहाँ से 3-4 पुलिस वाले आ गये और हमें छुड़वा कर अलग-अलग किया। लड़ाई छुड़वाने के बाद जो पुलिस वाले आये थे, उन्होंने मुझे और मेरे दोस्त को 3-4 थप्पड़ लगा दिये और कहने लगे कि सालो इतने छोटे-से हो और एक पुलिस वाले से लड़ाई करते हो। तब मुझे और मेरे दोस्त को पता चला कि जिससे हमारी लड़ाई हुई थी, वह पुलिस वाला है।

वे पुलिसवाले हमारे स्कूटर सहित हम दोनों दोस्तों को अपनी पुलिस चौकी में ले आये। पुलिस चौकी में लाने के बाद उस सिपाही ने, जिससे हमारी लड़ाई हुई थी, हमें पीटने की कोशिश की, लेकिन उसका अफ़सर जो चौकी पर मौजूद था, उसने उसे यह कह कर रोक दिया कि लड़के शक्ल-सूरत और बातचीत से अच्छे परिवार के लग रहे हैं और वैसे भी कोई इतनी बड़ी बात नहीं हुई है, सिर्फ तुम्हारी मोटर साइकिल की टक्कर ही तो हुई है। मेरे कहने पर उस एस.आई. ने मेरे घर पर फ़ोन करके मेरे पापा को सिपाही से लड़ाई के बारे में बताया और हमें ख़ुद आ कर ले जाने के लिए कहा। जैसे ही एस.आई. ने मेरे पापा से फ़ोन पर बात करके फ़ोन रखा तो चौकी पर मौजूद 4-5 सिपाही, हवलदार, एस.आई. के पास आये और बोले कि इनके स्कूटर में शराब की पाँच बोतलें भी मिली है। एस.आई. ने कहा कि 5 बोतल शराब की मिलना कोई ग़ैरकानूनी तो नहीं है, सरकारी ठेके से ही तो ख़रीद कर ला रहे हैं। एस.आई. को हमारी तरफ़दारी करते देख उन सबने कहा कि जनाब, इन्होंने हमारे साथी पर हाथ उठाया है और अगर आपने इनको ऐसे ही छोड़ दिया तो आपकी यह बात ठीक नहीं होगी। वह एस.आई. हम दोनों को वही अपने कमरे में बैठा कर, उन सबको बाहर ले जा कर बात करने लगा।

फ़ोन पर मेसेज मिलने के बाद मेरे पापाजी मुझे लेने के लिए क़रीब एक घण्टे में चौकी पर आये और अपने साथ ऐसे लोगों को भी लाये जिनकी पुलिस महकमे में काफ़ी जान-पहचान थी और पापाजी के साथ आये वे तीनों आदमी उस एस.आई. को भी जानते थे। जब उन्होंने एस.आई. से मुझे और मेरे दोस्तों को छोड़ने के लिए कहा तो एस.आई. ने उनसे कहा कि भाई साहब, मुझे पता नहीं था कि ये आप लोगों के जान-पहचान के लड़के हैं और अब तो इन दोनों लड़कों का एक्साइज़ ऐक्ट का पर्चा हमने बना दिया है और अब तो जज से इनकी ज़मानत करानी पड़ेगी। मेरे पापा और उनके साथ आये वे तीनों लोग उस एस.आई. पर ख़ूब नाराज हुए, लेकिन लिखित कार्रवाई होने के कारण वह कुछ नहीं कर पाया। तो भी उस एस.आई. ने पापा के साथ आये लोगों की यह बात मान ली कि वह अभी हम लोगों को कोर्ट ले कर चलता हूँ और ज़मानत करवा के छुड़वा दे। उसी समय उसने कोर्ट में ले जाते ही हम दोनों को छुड़वा दिया और हम दोनों वापस घर आ गये।

मैंने मम्मी को पहली बार पापाजी से लड़ाई करते देखा। मेरी मम्मी पापा के ऊपर

https://t.me/Sahityajunction

बहुत नाराज हुई और बार-बार पापाजी से यही कहती रही के अगर आप इसे अपनी शराब के चक्क्र में वाइन शॉप पर न भेजते तो यह इस सब झंझट में नहीं पड़ता और इस घटना के बाद मेरे पापाजी न तो ख़ुद कभी पैसे बचाने के चक्कर में उस वाइन शॉप पर बोतल लेने गये और न मुझे कभी कहा, बल्कि अब वे घर के पास ही जो वाइन शॉप थी, वहीं से जा कर ख़ुद ही शराब ले आते थे और घर पर आ कर पीते और पी कर चुपचाप सो जाते थे। मेरे पापा जी मेरे और पूरे परिवार के लिए बहुत ही अच्छे थे और आस-पड़ोस और जितने भी हमारे जानने वाले थे उनके लिए भी बहुत ही अच्छी आदत के थे और बहुत मिलनसार और सभी की सहायता करने वाले थे। बस शराब पीने की उनकी आदत से हमें यह परेशानी थी कि वे इससे अपना स्वास्थ्य ख़राब कर रहे थे और इसमें काफ़ी पैसे भी ख़र्च करते थे, लेकिन फिर भी हमारी परवरिश में उन्होंने कभी कोई कमी नहीं होने दी, और जिस चीज़ की भी हमें ज़रूरत हुई, उन्होंने हमें हमेशा दिलवायी।

एक्साइज़ ऐक्ट का जो केस मेरे और मेरे दोस्त के ऊपर पुलिस ने बेवजह लगा दिया था, उसकी सुनवाई जब जज साहब के पास शुरू हुई तो मैं और मेरा दोस्त अपने एक रिश्तेदार अंकल जी, जो उस कोर्ट के वकील थे को ले कर जज के सामने कोर्ट में पेश हुए। जज साहब ने हमारे वकील से कहा कि छोटा-सा केस है, मैं इन पर 100-100 रुपये का जुर्माना करके केस ख़त्म कर देता हूँ। मैंने जज साहब और वकील से कहा कि मेरे और मेरे दोस्त के ऊपर एक्साइज़ ऐक्ट का यह केस झूठा है और हमारी तो सिर्फ उस पुलिस वाले सिपाही से टक्कर लगने के कारण लड़ाई हुई थी, अगर आपको हमें लड़ाई की सज़ा देनी है तो उस सिपाही को भी दीजिए, क्योंकि उसने भी हमें मारा और वह वर्दी में नहीं था। हमें नहीं पता था कि वह पुलिस का सिपाही है।

जज ने कहा कि जो केस फ़ाइल में है, मैं उसके हिसाब से ही चलूँगा और अगर तुम 100 रुपये जुर्माने देने के लिए तैयार हो तो मैं केस ख़त्म कर दूँगा। मैंने कहा—सर, मैं उस चीज़ का जुर्माना नहीं दूँगा जो काम मैंने नहीं किया, आप केस चला लीजिये। सच बात सामने आ जायेगी। मेरे पास वहाँ पर लड़ाई के समय मौजूद बहुत सारे गवाह हैं जो बता देंगे कि पुलिस के सिपाही ने पहले हमें मारा था और हमसे लड़ाई की थी। मेरे दोस्त ने बाद में जुर्माना दे कर अपना केस ख़त्म करा लिया और मैं हर बार तारीख़ पर कोर्ट में अपने वकील के साथ जाता रहा। मेरे वकील रिश्तेदार ने भी मुझसे कई बार कहा कि कोर्ट में हर तारीख़ पर तुम्हारे एक हज़ार रुपये तक ख़र्च हो जाते हैं, इससे अच्छा तो 100-200 रुपये जुर्माना दे कर केस ख़त्म करा लो, लेकिन मैंने उनको भी वही जवाब दिया जो मैंने जज साहब को दिया था।

https://t.me/Sahityajunction

21. यू टर्न

मैं और मेरे घरवाले विजय को मामाजी के पास गाँव भेज कर निश्चिन्त हो गये कि चलो सब कुछ ठीक ठाक हो गया, लेकिन ऐसा नहीं था और जो अब आगे होने वाला था, उससे मेरा जीवन पूरा यू-टर्न लेने वाला था। हुआ यह कि मैं हर मंगलवार को हनुमान जी का व्रत रखता था और शाम को घर के पास ही जो मन्दिर था, उसमें पूजा करके फिर अपना व्रत खोलता था। जब मैं रुड़की में रहता था तो रोज़ शाम को अपने दोस्तों, नितिन, मानव और राजा के साथ मोटरसाइकिल पर घूमने के लिए जाता था और रात 8 बजे तक घूम-फिर कर हम वापस घर आ जाया करते थे।

हम चारों दोस्त जब भी साथ घूमने जाते और कुछ खाते-पीते तो उसका बिल देने का हमने यह नियम बनाया हुआ था कि एक दिन एक दोस्त बिल देता था और दूसरे सिर्फ खाते थे, और जितना चाहे खा सकते थे। जिस दिन जिसको बिल देने का नम्बर होता था, वह बेचारा कम खाता था और दूसरे बिल देने वाले की हालत ख़स्ता करने के लिए ख़ूब दबा कर खाते थे। एक दिन हम चारों एक आइसक्रीम पार्लर में बैठे आइसक्रीम खा रहे थे तो राजा मुझसे बोला कि यार मैं सोचता हूँ कि पिछले साल तुम मेरा मुर्गा बना कर कैसे दावत ले लेते थे और मैं भी उस समय कितना मूर्ख था कि समझ नहीं पाता था कि तुम मेरा मुर्गा बना रहे हो।

मैंने कहा दोस्त हर इन्सान हर समय मुर्गा बन रहा होता है और कुछ-न-कुछ बेवकूफों वाला काम कर रहा होता है, लेकिन एक साल बाद जब वह कुछ और समझदार हो जाता है तो उसे पता चलता है कि मैं पिछले साल या उस समय कितना बेवकूफ था कि सामने वाले ने मुझे मुर्गा बना दिया और मैं समझ ही नहीं पाया। यह सोच, प्यार और बिज़नेसऔर जीवन की सभी चीज़ों को ले कर हो सकती है।

रोज़ की तरह आज भी मैं अपने दोस्तों के साथ शाम को घूमने गया, लेकिन मंगलवार को हनुमान जी का व्रत होने के कारण क़रीब शाम 7 बजे ही घर वापस आ गया। जैसे ही मैं घर के मेन गेट से घर के अन्दर घुस रहा था, एकदम से मेरे दोस्त मानव और नितिन आ गये और दोबारा घूमने के लिए मुझे चलने को कहने लगे। मेरे यह बताने पर की मेरा व्रत है और मुझे मन्दिर जाना है तो वह बोले स्कूटर पर आई.आई.टी. रुड़की का चक्कर लगा कर 15 मिनट में वापस घर आ जायेंगे। मैं उनकी बात रखने के लिए अपने दोस्त नितिन के स्कूटर पर पीछे बैठ गया और मानव अपने हीरो पुक पर अकेला ही चल दिया। आई.आई.टी. रुड़की के कैम्पस की सड़कें क़रीब-क़रीब ख़ाली ही पड़ी रहती थीं।

जब हम वापस घर की तरफ़ आने लगे तो पीछे से एक लाल रंग की हीरो हॉण्डा मोटर साइकिल हमारे स्कूटर को ग़लत साइड से ओवर टेक करने लगी। जब वह मोटर साइकिल वाले मेरे बिलकुल बग़ल में आये तो मैंने देखा कि एस.एच.ओ. का वह लड़का मोटर साइकिल चला रहा है और उसका वही बदमाश दोस्त पीछे बैठा है, जिससे मेरे छोटे भाई विजय का झगड़ा हुआ था, और जिन्होंने मुझे परिणाम भुगतने की धमकी भी दी थी। जैसे ही वे मेरे बग़ल में आये और मेरी नज़र उनसे मिली तो पीछे वाले ने मेरे ऊपर रिवॉल्वर से गोली चला दी जो मेरे दिल के पास लग गयी, लेकिन तब मुझे

https://t.me/Sahityajunction

बस हल्का-सा दर्द हुआ और मेरे मुँह से सिर्फ हल्की-सी आवाज़ निकली और मैं स्कूटर के चलते-चलते ही उस पर से कूद कर पीछे की तरफ़ भागा जिससे कि वह मुझ पर दूसरी गोली न चला सके।

मैं उन मोटर साइकिल वालों की उलटी तरफ़ भागा तो वे भी अपनी मोटर साइकिल मेरे पीछे ही मोड़ कर वापस ले आये। जब मैंने देखा कि मोटर साइकिल मेरे एकदम पास आने वाली है तो मैं एकदम से पलटा और उन्हें धक्का दे कर वापस उसी दिशा में भागने लगा जिस पर मैं पहले था। क़रीब 100 मीटर पैदल भाग कर मैं सड़क के किनारे पर ही एक बन्द लोहे के दरवाज़े पर चढ़ने लगा जिससे कि दूसरी तरफ़ पहुँच जाऊँ, लेकिन इससे पहले कि मैं दरवाज़े को चढ़ कर पार करता वे दोनों मोटर साइकिल पर बैठ कर दोबारा आ गये और फिर थोड़ी दूर से ही एक और गोली मेरी ऊपर चलायी जो मुझे नहीं लगी, लेकिन ध्यान बँटने के कारण मैं गेट से नीचे ज़मीन पर गिर गया।

जैसे ही मैं ज़मीन पर नीचे गिरा, मोटर-साइकिल की हेड लाइट मेरे चेहरे पर पड़ी जो अब बिलकुल मेरे पास ही आ गयी थी। पीछे वाला लड़का मेरे ऊपर निशाना लगा रहा था कि मैं एकदम से उठा और मोटर साइकिल की दूसरी तरफ़ आ गया। क्योंकि वह पीछे वाला आगे वाले से बिलकुल चिपक कर बैठा था, इसलिए मेरे एकदम से दूसरी तरफ़ आने से वह निशाना नहीं लगा पाया और उसे अपना सीधा हाथ बायीं तरफ़ करने में थोड़ी मुश्किल हुई, इतने में ही मैंने एक पत्थर उठा कर उस पर फेंका और फिर से उनकी उल्टी तरफ़ भागने लगा, जब मैंने क़रीब 15 कदम की दूरी पर जा कर पीछे मुड़ कर देखा तो वह पीछे वाला मेरे ऊपर फिर निशाना लगा रहा था और एकदम से उसने एक और गोली मुझ पर चलायी, लेकिन मैं बिना कुछ सोचे-समझे तेज़ी से भागता ही रहा।

जब मैं क़रीब 100 मीटर तक भाग कर गया तो मैंने पीछे मुड़ कर देखा तो वह गोली मारने वाले चले गये थे। मैं वहीं रुका और फिर वापस मुड़ कर पहले वाली दिशा में ही भाग कर जाने लगा, क्योंकि शहर उसी दिशा से पास में था। जब में थोड़ी दूरी पर भागता हुआ आया तो वहाँ पर 3-4 स्कूटर मोटर साइकिल सड़क के साइड में खड़ी हुई थी और एक मोटर-साइकिल पर उसकी चाबी भी लगी हुई थी। मैं फटाफट उस मोटर साइकिल पर बैठ गया और उसे स्टार्ट करने की कोशिश यह सोच कर कर ही रहा थाकि इस मोटर साइकिल से मैं जल्दी से अस्पताल चला जाऊँगा इतने में ही उस मोटर साइकिल का मालिक सड़क के किनारे जो पेड़ लगे थे उनके पीछे से निकल कर आया और अपनी मोटर साइकिल पीछे से पकड़ ली और बोला—मेरी मोटर साइकिल मत ले जाओ।

मैंने कहा—भैया, आप लोगों ने अभी देखा मेरे गोलियाँ लग गयी हैं, आप मुझे अस्पताल अपनी मोटर साइकिल से जाने दीजिए, मेरे घर वाले आपको इसके साथ एक और नयी मोटर साइकिल दिलवा देंगे लेकिन वह मोटर साइकिल वाला मेरी बात नहीं माना तो मैं उस मोटर साइकिल से उतर गया, क्योंकि मैं उससे बहस करके टाइम ख़राब नहीं करना चाहता था, क्योंकि मेरे पेट से ख़ून निकल रहा था। मैं मोटर साइकिल से उतर कर फिर पैदल भागा तो थोड़ी-सी दूरी पर ही एक साइकिल रिक्शा खड़ी थी और मैंने सोचा पैदल भागने से तो मेरे शरीर पर जोर पड़ रहा होगा, जिससे ज़्यादा ख़ून

https://t.me/Sahityajunction

निकलेगा, इसलिए मैं रिक्शा को ख़ुद चला कर ले जाने के लिए उस पर बैठ गया।

लेकिन जैसे ही मैंने रिक्शा का पैडल मारा रिक्शे वाला उस मोटर साइकिल वाले की तरह ही पेड़ों के पीछे जहाँ वह लोग गोली चलने के डर से छिप गये थे निकला और अपनी रिक्शा पीछे से पकड़ कर बोला मेरी रिक्शा मत ले जाओ। मैंने कहा भैया मैं आपको 2-3 नयी रिक्शा दिलवा दूँगा; बस आप मुझे हॉस्पिटल तक जाने दीजिये, उस रिक्शे वाले ने भी आना-कानी की तो मैंने उसे कहा कि रिक्शा छोड़ दे वरना मैं तुझे मार दूँगा, तो उसने डर के मारे रिक्शा छोड़ दी। मैं रिक्शा तेज़ी से चला कर शहर की तरफ़ जाने लगा, लेकिन उस रिक्शा को मैं ज़्यादा दूर नहीं चला पाया, क्योंकि वह एक तरफ़ ही भागे-भागे जा रही थी और मुझसे उस रिक्शा का बैंलेस नहीं बना जिससे मैं सड़क के किनारे लगे एक पेड़ से टकरा गया और सड़क के साइड में नीचे जो चौड़ा-सा नाला था उसमसें जा कर गिर गया। जब मैं उस सूखे नाले में गिरा तो क़रीब एक मिनट तक उसमें सीधा ही लेटा रहा और मेरे आँख से आँसू निकल गये और मैंने हनुमान जी को याद करके सोचा कि अब मैं ज़िन्दा नहीं बचूँगा, क्योंकि ख़ून लगातार बह रहा था। फिर मैंने ऊपर वाले का नाम ले कर यह सोचा कि इस नाले में ऐसे ही गिर कर मरने से तो अच्छा यह है कि मेरे अन्दर जब तक ताक़त है पैदल ही शहर की तरफ़ जाऊँ जो वहाँ से सिर्फ एक किलोमीटर से भी कम था और भागने के कारण अगर शहर के पास जा कर मैं बेहोश भी हो गया तो कोई-न-कोई मुझे अस्पताल पहुँचा ही देगा। जब तक शरीर में जान है मैंने पैदल ही भागने का फ़ैसला किया और छलाँग लगा कर उस सूखे नाले से बाहर निकला और भागना शुरू कर दिया।

मैं थोड़ी दूर ही पैदल भाग कर आया तो मैंने देखा कि मेरे दोस्त नितिन का स्कूटर जिस पर गोली लगने के समय में मैं बैठा था, सड़क पर नीचे गिरा पड़ा है। मैंने फटाफट स्कूटर को खड़ा किया और स्टार्ट भी कर लिया और फिर स्कूटर चला कर शहर की तरफ़ आने लगा। स्कूटर के पास ही मेरे दूसरे दोस्त मानव की हीरो पुक भी गिरी पड़ी थी। स्कूटर चलाते समय मैंने अपना एक हाथ वहाँ लगा लिया जहाँ से ख़ून बह रहा था। जैसे ही मैं शहर में पहुँचा तो मैंने मन-ही-मन फैसला किया कि मुझे पहले पुलिस थाने में चले जाना चाहिये, क्योंकि वह वहीं सिविल लाइन बाज़ार में ही था, जबकि अस्पताल बहुत दूर था। मैंने सोचा पुलिस वाले मेरे घर पर भी बता देंगे और मुझे अस्पताल भी ले जायेंगे। यही सोच कर मैंने अपना स्कूटर सिविल लाइन कोतवाली के अन्दर घुसा दिया। कोतवाली के अन्दर मैंने अपना स्कूटर उनके ऑफिस के बाहर खड़ा किया और तुरन्त अन्दर गया तो वहाँ पर सिर्फ तीन लोग थे। जैसे ही उन्होंने मुझे ख़ून से लथपथ देखा, वे एकदम से खड़े हो गये और मुझसे पूछने लगे कि क्या हो गया है।

मैंने कहा भैया दो लड़कों ने, जो एक लाल रंग की हीरो हॉण्डा पर थे, मुझे गोलियाँ मार दी हैं और आप मुझे जल्दी से अस्पताल ले चलिए। उन तीनों में से एक तो फटाफट मेरी बातें सुन कर सारी बातें वायरलेस मेसेज पर बताने लगा, एक उस ऑफिस से बाहर चला गया और एक मेरे पास खड़ा हो कर मुझे सान्त्वना देने लगा। जब कुछ मिनट बीत गये तो मैंने उन दोनों से कहा कि आप मुझे अस्पताल क्यों नहीं ले जा रहे है, मेरा ख़ून निकल रहा है, तो वह जो मेरे पास खड़ा था बोला दीवान जी अपना स्कूटर लेने गये हैं, जैसी ही वो स्कूटर ले कर आयेंगे, हम तुम्हें अस्पताल ले कर चलेंगे। मैंने उनसे कहा कि मैं स्कूटर चला कर ख़ुद ही आया हूँ और मेरा स्कूटर आपके ऑफिस के बाहर खड़ा है,

https://t.me/Sahityajunction

उस पर बैठा कर आप मुझे अस्पताल ले चलिए। मेरी बात सुन कर वायरलेस करने वाले ने दूसरे से कहा कि तू इन्हें इनके स्कूटर पर ले कर जा। हम दोनों ऑफिस से बाहर आये तो उसने मेरा स्कूटर स्टार्ट किया और मैं उसके पीछे अपने ख़ून निकलने वाली जगह को इस तरह से दबा कर बैठ गया कि कि ख़ून ज़्यादा न बहे। वह मुझे स्कूटर पर बैठा कर कोतवाली के मेन गेट तक लाया और स्कूटर रोक कर खड़ा कर लिया, जब मैंने उससे देरी करने का कारण पूछा तो वह बोला अभी दीवानजी को अपना स्कूटर ले कर आने दो, मैं तो होम गार्ड का सिपाही हूँ और मेरे कहने से भी अस्पताल वाले तुम्हारा इलाज नहीं करेंगे। मुझे उसकी बातों पर ग़ुस्सा आ गया और मैंने उसे कहा कि आप स्कूटर से हटिये, मैं ख़ुद ही इसे चला कर जैसे यहाँ आया हूँ वैसे ही अस्पताल भी चला जाऊँगा।

वह स्कूटर से उतर कर साइड में खड़ा हो गया तो मैं खड़ा हो कर स्कूटर को किक मार कर स्टार्ट करने लगा, लेकिन वह स्टार्ट नहीं हुआ। जब स्कूटर स्टार्ट नहीं हुआ तो मैंने उस स्कूटर को वही फेंक दिया और जैसे ही कोतवाली के मेन गेट से बाहर सड़क पर आया तो मेरी नज़र सामने खड़ी एक कार जिस पर पीछे शीशे पर ‘‘चौहान’’ लिखा था पर पड़ी। इस मारुती कार को में पहचानता था, क्योंकि यह मेरे उसी दोस्त मानव के पापा की थी जो मेरे साथ गोली चलते समय भी था। गाड़ी देख कर मुझे ध्यान आया कि मानव के पापा की सुनार की दुकान तो कोतवाली के बग़ल में ही है और मैं फटाफट उनकी दुकान पर गया। जैसे ही मानव के पापा ने मुझे ख़ून से लथपथ देखा, वे फटाफट दुकान से बाहर आये और मुझे वहीं खड़े अपने स्कूटर पर अस्पताल ले जाने के लिए बैठा लिया। जैसे ही हम चलने को हुए, पीछे से एकदम से पुलिस की जीप सायरन बजाती हुई आ गयी। इस गाड़ी में ड्राइवर के साथ सिर्फ कोतवाली का एस.एच.ओ. था। वह एस.एच.ओ. मेरे दोस्त के पापा का अच्छा परिचित था। अंकल जी ने मुझे अपने स्कूटर से उतारा और मुझे पुलिस जीप में पीछे सीट पर आराम से लेटने के लिए कहा जिससे कि पुलिस वाले मुझे अस्पताल ले जा सकें और अंकल जी मेरे घर जा कर मेरे घरवालों को मेरे साथ हुई घटना के बारे में बता सकें।

जब जीप चलने लगी तो मैं पीछे सीट पर बैठ गया, क्योंकि लेटने से मुझे दर्द हो रहा था। एस.एच.ओ. साहब मुझसे चलती गाड़ी में ही गोली मारने वाले के बारे में पूछने लगा, तो मैंने यह सोच कर उनके बारे में कुछ नहीं बताया कि हो सकता है यह एस.एच.ओ. उन गोली मारने वालों का अच्छा परिचित हो, क्योंकि गोली मारने वालों में दूसरे थाने के एस.एच.ओ. का लड़का शामिल था। एस.एच.ओ. मेरे से ज़्यादा पूछ-ताछ न करें इसलिए मैं जोर-जोर से दर्द होने का बहाना करने लगा। जिससे वह गाड़ी और तेज़ चलवायें और मुझे अस्पताल पहुँचाये। अस्पताल पहुँचने पर उन्होंने मुझे स्ट्रेचर पर लेटाना चाहा, लेकिन मैं ख़ुद ही पैदल चल कर ही वहाँ चला गया जहाँ वे इलाज करते थे। एक कम्पाउण्डर जो वहाँ था, उसने मुझसे कहा कि अपनी कमीज़ और बनियान उतार दूँ और एक बड़ी-सी मेज पर लेटने के लिए कहा। मैंने कमीज़ उतार कर उस कम्पाउण्डर को दी तो वह बोला कि कमीज़ की जेब में रखा अपना सामान चेक कर लो। मैंने कहा भैया, यह कमीज़ समान समेत फेंक दो और जल्दी से मेरी गोली निकालो तो वह कम्पाउण्डर बोला अभी 5 मिनट के अन्दर डाक्टर साहब आ रहे हैं और वह आपका ऑपरेशन करेंगे, आप चिन्ता मत करो ओर आराम से लेट जाओ। मैंने कहा

https://t.me/Sahityajunction

लेटने से मुझे दर्द होता है और मैं बैठा हुआ ही ठीक हूँ।

इतने में ही अंकलजी मेरे घर वालों और कुछ अड़ोस-पड़ोस के परिचित लोगों को ले कर अस्पताल में आ गये। अस्पताल में आते ही मेरे पापा कहने लगे कि हम इसका इलाज प्राइवेट अस्पताल में अपने परिचित डाक्टर से करवायेंगे, हमें सरकारी अस्पताल पर भरोसा नहीं है। इतने में ही डाक्टर साहब भी आ गये। मेरे घर के सामने जो अंकल रहते थे, वे पेशे से वकील थे और इस सरकारी डाक्टर के परिचित थे, वकील अंकल जी ने पापा जी को समझाया कि भाईसाहब दूसरे किसी और अस्पताल में अगर हम इसे ले कर जायेंगे तो समय ख़राब होगा, और फिर यह भी पता नहीं है कि वह डाक्टर इस समय अपने अस्पताल में है भी या नहीं। मैं सरकारी अस्पताल के डाक्टर को अच्छी तरह जानता हूँ, ये बहुत अच्छे डाक्टर हैं। सबने समय ख़राब न करने का फैसला किया और फिर मेरा इलाज वहीं शुरू हो गया। जब मुझे आपरेशन थियेटर से गोली निकाल कर वापस स्ट्रेचर पर ला रहे थे तो मुझे हल्का-हल्का होश आ गया था डाक्टर ने मुझे कहा कि एक गोली तुम्हें लगी थी हमने निकाल दी है, मैंने उन्हें कहा कि एक नहीं 23 गोलियाँ लगी थीं। उन्होंने मेरा दोबारा से एक्स रे करवाया और फिर दोबारा से कहा कि मैंने पूरा चेक कर लिया है। एक गोली लगी थी और हाथ ज़मीन पर लगने से फट गया था उसे टाँके लगा कर सिल दिया है।

इसके बाद जब मुझे अगले दिन होश आया, तो मैं एक कमरे में था और मेरी मम्मी, ताई जी और कुछ लोग वहाँ बैठे थे, 4-5 दिन अस्पताल में रहने के बाद मैं घर आ गया और क़रीब 2 महीनों तक दवाइयाँ खा कर ठीक हो गया। जिन डाक्टर साहब ने मेरा आपरेशन किया था, उन्होंने मुझसे कहा कि बेटे, गोली लगने के बाद तो कई लोग बच जाते हैं, लेकिन गोली से शरीर का कोई-न-कोई अंग हमेशा के लिए ज़रूर ख़राब हो जाता है, लेकिन तुम इतने भाग्यशाली हो कि इतनी ख़तरनाक जगह पर गोली लगने के बाद भी तुम्हारे शरीर का कोई हिस्सा हमेशा के लिए ख़राब नहीं हुआ है, क्योंकि गोली तुम्हारे दिल के पास मौजूद पसलियों में फँस गयी थी, कुछ पसलियाँ गोली ने तोड़ दी थी, लेकिन वे ठीक हो जायेंगी और तुम्हें जीवन में इस गोली के कारण कभी कोई परेशानी नहीं होगी और उन डाक्टर की यह बात सच भी साबित हुई। पुलिस ने मेरे कहे अनुसार गोली मारने वालों के ि़खलाफ़ रिपोर्ट दर्ज कर ली थी और बाद में कुछ समय बाद पुलिस ने उन लड़कों को दूसरे केस में एनकाउण्टर में मार दिया, जिसने मुझे गोली मारी थी और वह एस.एच.ओ. रिटायर होने के बाद अपने परिवार समेत किसी दूसरे शहर में जा कर रहने लगे थे और जो दुश्मनी बिना वजह हो गयी थी, वह समाप्त हो गयी थी।

https://t.me/Sahityajunction

22. नया दौर

गोली लगने के कारण जब मेरा घर पर इलाज चल रहा था तो सिमरन भी मुझे देखने के लिए 3-4 बार घर पर आयी जिससे मेरी मम्मी को उसके बारे में पता चल गया था कि उससे मेरी दोस्ती है और प्रेम है। गोली लगने के बाद जब मैं बिलकुल ठीक हो गया तो एक दिन सिमरन ने मुझ से कहा कि मैं अपनी दोनों सहेलियों को जो मेरे साथ तब ट्यूशन जाती थी जब आप सुबह-सुबह आते थे, यह दिखाना चाहती हूँ कि आप मेरे लिए आते थे, क्योंकि उन्हें आज भी यह ग़लतफहमी है कि आप उनके लिए आते थे। मैंने कहा, ठीक है, तुम मुझे बता दो कि उन दोनों को कैसे यक़ीन होगा कि मैं तुम्हारे लिए आता था। सिमरन ने कहा कि आप उन दोनों के सामने मुझसे प्रपोज़ कीजिए, कल शाम को हम तीनों आई.आई.टी. के कैम्पस की तरफ़ पैदल ही घूमने जायेंगे। आप वहाँ आ कर उनके सामने मुझे प्रपोज़ कीजिएगा।

मैं अगले दिन अकेला ही स्कूटर पर आई.आई.टी. कैम्पस गया और उन तीनों से थोड़ा आगे जा कर अपना स्कूटर स्टैण्ड पर खड़ा किया और जब तीनों पास आ गयीं तो अपने हाथ में एक गुलाब का फूल ले कर ऐसे महसूस करवाया जैसे मैं उन दोनों को दूँगा, लेकिन फिर मैंने एकदम से सिमरन को वह फूल दे दिया और उसको उसकी दोनों सहेलियों के सामने ही 'आई लव यू' भी बोल दिया। सिमरन की दोनों सहेलियों ने मेरी तरफ़ देखा और कहा कि शुक्र है इतने सालों बाद आपने हमारी इस लड़ाई को ख़त्म कर दिया कि आप हम तीनों में से किसके चक्कर काटते थे। सिमरन जब देहरादून में रहती तो हम मोबाइल पर अब ख़ूब बातें कर लेते थे, क्योंकि मैंने भी अपने लिए एक मोबाइल ख़रीद लिया था और एक पहले ही सिमरन को उसके हॉस्टल में छिपा कर रखने के लिए दिया हुआ था।

गोली लगने का ज़ख़्म तो मेरा बिलकुल ठीक हो गया था, लेकिन जो दर्द और ज़ख़्म उस गोली ने मेरे दिल में दिया था, वह शायद कभी भरने वाला नहीं था, क्योंकि इस गोली ने मुझे मेरी मौत इतनी पास से दिखा दी थी कि मौत का डर मेरे जीवन में समाप्त हो चुका था, और मन में यह बस चुका था कि ईश्वर ने जितना जिसे जीवन दिया है, उसे उससे पहले कोई नहीं छीन सकता। मैं समझ गया था कि जीवन और मौत में सिर्फ इतना ही अन्तर है कि जो साँस जीने के लिए हम पेट के अन्दर लेते हैं, अगर वह साँस बाहर आयी तो इन्सान जीवित कहलायेगा और अगर अन्दर ली हुई वह साँस बाहर नहीं आयी तो मरा हुआ कहलायेगा। इस गोली ने मेरे दिमाग़ में यह बात डाल दी थी कि ईश्वर ने मुझे जो दूसरा जीवन दिया है, इसे मैं अपने देश, समाज और क़ौम के लिए न्योछावर कर दूँगा। मैं हमेशा सोचता रहता था कि मैं क्या करूँ जिससे देश और समाज का भला हो और एक दिन अचानक ही टी.वी. न्यूज़ पर मैंने देखा कि 4 आतंकवादियों को जेल से छुड़ाने के लिए आतंकवादियों ने जो भारतीय विमान हाईजैक किया था, उसे हमारे देश के विदेश मन्त्री श्री जसवन्त सिंह कन्धार अफ़ग़ानिस्तान जा कर उन 4 आतंकवादियों के बदले में विमान यात्रियों सहित वापस भारत ले आये हैं और सभी विमानयात्री सुरक्षित हैं।

इसके बाद श्री जसवन्त सिंह जी टी.वी. पर दिखाया और उनका इण्टरव्यू भी

https://t.me/Sahityajunction

दिखाया गया। उन्होंने अपने इण्टरव्यू में कन्धार, तालिबान और अफ़ग़ानिस्तान के बारे में बहुत-सी बातें बतायीं और यह भी बताया कि अफ़ग़ानिस्तान में एक जगह पर हमारे आख़िरी भारतीय सम्राट पृथ्वीराज चौहान की समाधि है जिन्हें मुहम्मद ग़ोरी 1193 के युद्ध में जीतने के बाद बन्दी बना कर अफ़ग़ानिस्तान ले गया था और वहाँ ले जा कर उनकी हत्या कर दी थी। उन्होंने यह भी बताया कि इस महान सम्राट की समाधि पर तालिबानी जूते-चप्पल लगवाते हैं, जो हमारे पूरे देश की इन्सल्ट है, क्योंकि पृथ्वीराज चौहान हमारे आदरणीय पूर्वज हैं और हमारे देश की शान हैं। उन्होंने यह भी कहा कि वे और उनकी सरकार प्रयास करेगी कि सम्राट पृथ्वीराज चौहान की समाधि को वापस ला कर भारत की धरती पर आदर के साथ स्थापित करे। जब मैंने यह न्यूज़ टी.वी. पर देखी तो मैंने अपने पापा से पृथ्वीराज चौहान के बारे में सब कुछ पूछा। क्योंकि जो हिस्ट्री मैंने अपनी किताब में पढ़ी थी, उससे मुझे सारी जानकारी नहीं मिली थी।

मेरे पापा जी ने उनके बारे में मुझे सब कुछ बताया तो मैंने उनसे कहा कि इनकी समाधि तो अफ़ग़ानिस्तान से ज़रूर वापस लानी चाहिये और अगर कोई नहीं लायेगा तो मैं अफ़ग़ानिस्तान जा कर समाधि वापस लाऊँगा। मेरे पापा ने कहा कि तुझे इस झंझट में पड़ने की क्या ज़रूरत है, तुझे इससे क्या फ़ायदा होगा, वैसे भी सरकार के अलावा कोई अफ़ग़ानिस्तान नहीं जा सकता है। मैंने कहा पापाजी यह झंझट नहीं है और जो शिक्षा आपने हमें दी है उसमें हर काम फ़ायदे या नुक़सान के लिए नहीं होता, इज़्ज़त के लिए भी होता है। मैंने उन्हें उदाहरण देते हुए बताया कि पापा जी, आप कुछ दिनों पहले मुझे अपने साथ नगर पालिका के ऑफिस में ले कर गये थे, जहाँ से आपने 100-125 रुपये लिये और मुझे बताया कि ये पैसे हमें भारत सरकार हमारी ज़मींदारी छीनने के कारण मुआवज़े के रूप में देती है। जब मैंने आपसे कहा कि पापाजी, आप इतने से पैसों के लिए यहाँ क्यों आते हैं, इससे ज़्यादा तो आपके यहाँ तक आने-जाने में ख़र्चा हो जाता है तो आपने मुझसे कहा कि बेटे बात पैसों की नहीं है, यह हमारी इज़्ज़त है और इस मुआवज़े से यह साबित होता है कि हम ख़ानदानी आदमी हैं; जीवन में किसी भी काम में फ़ायदा-नुक़सान नहीं, इज़्ज़त देखनी चाहिए।

मैंने कहा, पापाजी जैसे उन थोड़े-से मुआवज़े के पैसों में आपको अपनी इज़्ज़त दिखती है, वैसे ही अपने देश के आख़िरी सम्राट की समाधि वापस लाने में मुझे अपने देश और समाज की इज़्ज़त दिखती है, क्योंकि अगर कोई आपकी तस्वीर को भी ज़मीन पर फेंकता है तो इसमें आपकी और हमारी इन्सल्ट है, ऐसे ही अगर तालिबानी हमारे देश के आदरणीय पूर्वज की समाधि पर जूते-चप्पल मारते हैं तो इसमें हमारे पूरे देश की इन्सल्ट है, क्योंकि वह सम्राट पूरे देश को रिप्रिज़ेंट करते थे और क्योंकि हमने इस देश में जन्म लिया है, इसलिए हम सबका फ़र्ज है कि हर वह काम करें जिससे हमारे देश और समाज की इज़्ज़त बढ़े। मेरी और पापाजी की बातें सुन कर मम्मी भी आ गयी और बोली कि तू अफ़ग़ानिस्तान चले जाना और तेरे पापा तुझे वहाँ जाने के लिए पैसे न दें तो मुझ से ले लेना, लेकिन अब खाना खा ले।

मम्मी की इस बात के बाद यह डिस्कशन ख़त्म हो गया और मेरे पापा जी मेरी बातों पर हँसते हुए वहाँ से चले गये। श्री जसवन्त सिंह जी की यह समाधि वाली बात बताने के बाद कई दिनों तक टी.वी. न्यूज़ और अख़बारों में ख़बरें छपती रहीं कि देश के बहुत सारे संगठनों ने आख़िरी सम्राट की समाधि वापस भारत लाने के लिए पूरे देश में

https://t.me/Sahityajunction

आन्दोलन चला दिया। मैंने टी.वी. न्यूज़ और अख़बारों में इन आन्दोलनों के बारे में देखा और पढ़ा तो मुझे लगने लगा कि शायद अब ये लोग जल्द ही सम्राट पृथ्वीराज चौहान की समाधि वापस ले आयेंगे। फिर काफ़ी दिनों तक जब इस टॉपिक पर कोई न्यूज़ नहीं आयी तो मेरे दिमाग़ में कभी-कभी आता था कि सम्राट की समाधि का क्या हुआ होगा। देहरादून कॉलेज में मैं सिर्फ अपने इग्ज़ाम देने ही जाता था, और मेरे इस कॉलेज में अटेण्डेंस का कोई चक्कर नहीं था।

सिमरन देहरादून में अपने हॉस्टल में ही रहती थी और कभी-कभी ही रुड़की आती थी, लेकिन मैं देहरादून जा कर उससे मिलता रहता था। जब मैं उससे मिलता तो वह कहती कि आप कोई बिज़नेस वगैरा शुरू कर दीजिए जिससे कि जब हमारी शादी की बात हो तो मैं अपने घरवालों को बता सकूँ कि आप क्या करते हैं। उसकी बात मुझे ठीक लगी और मैंने पापाजी से कहा कि आप मुझे बिज़नेस करने के लिए पैसे दे दीजिए। उन्होंने कहा, ठीक है, तुम मुझे बताओ क्या काम करना चाहते हो, अगर काम ठीक होगा तो मैं पैसे दे दूँगा। मैंने कहा, पापाजी, आजकल अख़बारों में रोज़ विज्ञापन आ रहे हैं कि जो लोग शराब के ठेके लेना चाहें वे अप्लाई कर सकते हैं। शराब के ठेके का नाम सुन कर पापाजी बोले कि यह तो गुण्डे-बदमाशों का काम है और इसमें बहुत झंझट है।

मैंने कहा, पापाजी, अब यह गुण्डे-बदमाश का काम नहीं रहा, क्योंकि सरकार ने पहले वाले नियम बदल दिये और अब लॉटरी द्वारा सरकार हर आदमी को एक दुकान अलॉट करेगी और फिर वह आदमी अपनी अलॉट हुई दुकान को चलायेगा और मैंने अपने दोस्त के पापा से पता किया है, जिनके पास पहले पूरे ाज़िले के ठेके थे, वे बता रहे थे कि इस काम में बहुत फ़ायदा होता है। पापाजी मेरी बात मान गये और मुझे बिजनेस शुरू करने के लिए थोड़ी-सी ज़मीन बेच कर 15 लाख रुपये दे दिये। 15 लाख में से 10 लाख के क़रीब से तो मैंने एक शराब की दुकान ले ली और 5 लाख रुपये से अपने खेत पर एक छोटासा मकान बनवा कर उसमें 10 भैंसे और एक गाय रखवा दी और इन भैंसों की देख-भाल के लिए पति-पत्नी का एक परिवार रख दिया। दूध की डेरी मैंने इसलिए खुलवा दी, क्योंकि हमारे बहुत सारे खेत थे और गाय-भैंसों का चारा हमारे खेतों से ही जाता था। सभी भैंसों का दूध मैं बिकवा देता था और सिर्फ गाय का दूध हम अपने लिए रख लेते थे, इस डेरी के काम से मुझे क़रीब 20 हज़ार रुपये महीने का मुनाफ़ा होने लगा था।

https://t.me/Sahityajunction

23. उलट फेर

शराब की दुकान से भी क़रीब एक से सवा लाख तक हर महीने फ़ायदा होने लगा। दोनों कामों से मुझे लगभग डेढ़ लाख रुपये तक बचत हो जाती थी। चूँकि मेरे अन्दर नशा करने की या कोई और ग़लत आदत नहीं थी, इसलिए मेरा ख़र्चा भी बहुत ज़्यादा नहीं था। जब मेरे पास अच्छे-ख़ासे पैसे हर महीने फ़ायदे के रूप में आने लगे तो मैं यह सोच कर शहर और शहर के आस-पास होने वाले सामाजिक कार्यों में 20-25 हज़ार रुपये महीना ख़र्च करता कि मुझे अपने फ़ायदे से 20 फ़ीसदी हिस्सा तो लोगों की सेवा में ख़र्च करना ही है। जब मेरे पास और भी रुपये आने लगे तो मैंने अपने डेयरी के सामने एक अच्छा बड़ा मन्दिर अपनी ख़ाली पड़ी ज़मीन पर बनवा दिया और मन्दिर के लिए मूर्तियाँ ख़ुद जा कर जयपुर से ख़रीद लाया।

एक अनाथालय के बच्चों के लिए भी मैंने शुरू करने की कोशिश कर दी थी और उन अनाथ बच्चों के लिए कपड़े और पढ़ाई की भी बात दो लोगों से कर ली थी। अनाथ बच्चों के लिए हमेशा उनकी ज़रूरत के हिसाब से कपड़े देने का वादा हमारे घर के सामने कपड़े की दुकान ने कर लिया और एक-दो स्कूलों ने भी उन्हें बिना फ़ीस के पढ़ाई देने का वादा मुझसे कर लिया था। उन अनाथ बच्चों के लिए मेरी ज़िम्मेदारी सिर्फ यह थी कि मुझे उनके रहने और खाने का बन्दोबश्त करना था, जो मैंने लगभग कर लिया था।

कई सामाजिक और राजनैतिक लोगों के साथ भी मेरा अच्छा सम्पर्क बनने लगा था, और मेरी जान-पहचान का दायरा दिन-पर-दिन बढ़ता जा रहा था। कई लोग मेरी तरक़्क़ी से चिढ़ते भी थे, लेकिन मैंने कभी ऐसे लोगों की परवाह नहीं की और हमेशा मन में रखता था कि जीवन का कुछ पता नहीं, जितने अच्छे काम समाज और देश के लिए हम कर सकते हैं, कर देने चाहिए। सिमरन और मेरे परिवार के लोग भी बिज़नेसमें मेरी सफलता और सामाजिक कामों में मेरी दिलचस्पी को देख कर बहुत ख़ुश थे। लेकिन मेरे और मेरे परिवार के भाग्य में शायद यह सुख ज़्यादा नहीं था और भाग्य को कुछ और ही मंज़ूर था।

नये मन्दिर में जयपुर से लायी मूर्तियाँ रख कर प्राण प्रतिष्ठा करा के लोगों के दर्शन के लिए उस मन्दिर को शुरू करवाने का काम आने वाले एक बहुत बड़े झंझट के कारण सपना ही रह गया, क्योंकि मन्दिर में मूर्तियाँ रखने से पहले ही मुझे फूलन देवी की हत्या में तिहाड़ जाना पड़ा। 25 जुलाई, 2001 को सांसद फूलन देवी को तीन नक़ाबपोश लोगों ने उसके दिल्ली वाले घर पर गोली मार कर उसकी हत्या कर दी।

फूलन देवी की हत्या में जो गाड़ी इस्तेमाल हुई, उसकी बिना पर पुलिस ने मुझसे मेरे घर पर पूछ-ताछ के लिए छापा मारा, लेकिन उस दिन मैं उन्हें नहीं मिला। जब मेरे घरवालों ने मुझे फ़ोन पर पुलिस के बारे में बताया तो मैंने अपने परिचित पुलिस वाले से बात की। वे कहने लगे कि हम जानते हैं कि तुमने कुछ नहीं किया और दिल्ली वाले पूछ-ताछ करके छोड़ देंगे। मैंने देहरादून जा कर अपने परिचित पुलिस अफ़सर से मुलाक़ात की तो उसने मुझे उस समय के देहरादून के एस.एस.पी. के सामने पेश किया। एस.एस.पी. साहब जब मुझसे बात कर रहे थे तो दिल्ली के क्राइम ब्रांच के डी.सी.पी. साहब भी वहाँ आ गये। दोनों ने मुझसे डालनवाला थाने में काफ़ी देर बात की और मेरे

https://t.me/Sahityajunction

बारे में और मेरे जीवन की इच्छाओं के बारे में मुझसे जानकारी हासिल की जिसमें मैंने उन्हें अपनी यह इच्छा भी बतायी कि मैं अफ़ग़ानिस्तान जा कर आख़री हिन्दू सम्राट पृथ्वीराज चौहान की समाधि को वापस भारत लाना चाहता हूँ।

मेरी ऐसी इच्छा जान कर वे दोनों बड़े ख़ुश और प्रभावित भी हुए। उन्होंने मुझसे कहा कि फूलन देवी को गोली मारने वालों को जल्दी से पकड़ने का बहुत भारी दबाव हमारे ऊपर गृह मन्त्रालय से है और हमारा शक है कि गोली मारने वाले नक़ाबपोशों में तुम भी थे। मैंने कहा कि सर, अगर मैं कहूँ कि मैं नहीं था, तो वे बोले कि तुम्हारे कहने से अब कुछ नहीं होगा, क्योंकि हमें अपनी नौकरी तुमसे ज़्यादा प्यारी है, लेकिन फिर भी क्योंकि तुमने अच्छे सामाजिक काम पहले किये हैं और आगे भी देश भक्ति के काम तुम करना चाहते हो, इसलिए हम तुम्हारी प्रेस कान्फ्रेंस यहाँ डालनवाला थाने में करा देते हैं और एक बात तुम हमारी बतायी हुई टी.वी. न्यूज़ वालों के सामने बोल दो और एक तुम अपनी मर्ज़ी की बात बोल दो कि तुम अफ़ग़ानिस्तान जा कर सम्राट की समाधि भारत वापस लाना चाहते हो। मैंने कहा कि आपकी पसन्द की क्या बात बोलनी है, तो वे बोले तुम बोलना की फूलन को तुमने बेहमई काण्ड का बदला लेने के लिए मार दिया।

मैंने उनके कहे अनुसार वहीं डालनवाला थाने में उनके सामने ही प्रेस कान्फ्रेंस में अपनी और उनकी बातों को बोल दिया, क्योंकि इसके अलावा मेरे पास कोई चारा नहीं था। इसके बाद दिल्ली से आये डी.सी.पी. साहब मुझे अपनी पिजारो गाड़ी में बिठा कर रात को क़रीब 12 बजे दिल्ली पहुँच गये और अपने क्राइम ब्रांच के ऑफिस में ले गये, अगले दिन मुझे कोर्ट में पेश करके मुझे रिमाण्ड पर पूछ-ताछ के लिए ले लिया। रिमाण्ड पर पुलिस वालों ने मुझसे पूछा कि अब इस बात का फ़ैसला तो जज साहब करेंगे कि तुमने फूलन को मारा या नहीं, लेकिन तुम फूलन के बारे में क्या सोचते हो? हमें बताओ? मैंने कहा, सर, फूलन को जिसने भी मारा ठीक किया, क्योंकि उसने अपने जीवन में सौ से भी ज़्यादा लोगों की हत्या बिना किसी कारण के कर रखी थी। जिन लोगों का यह कहना है कि फूलन के ऊपर बहुत अत्याचार हुए थे और उसका बदला लेने के लिए वह डाकू बनी और लोगों की हत्याएँ की यह बात मानना और लोगों का ऐसा सोचना एकदम ग़लत है।

मैंने उनसे कहा कि सर, फूलन देवी ख़ुद अपनी इच्छा से डाकुओं के साथ रहने के लिए गयी थी और अगर उन डाकुओं ने फूलन के साथ सेक्स किया तो यह उन लोगों का माहौल था और डाकुओं का हर गिरोह अपने गैंग में 3-4 औरतों को इसलिए रखता ही था कि वह उनके साथ रँगरेलियाँ मना सके, क्योंकि डाकू हर समय बीहड़ों में ही रहते थे। ये औरतें गिरोह का खाना बनाने में भी मदद करती थी, इसलिए हर गिरोह अपनी आवश्यकता अनुसार अपने गैंग में औरत रखता था। जिस गिरोह में फूलन देवी थी, उस गैंग के मुखिया दो सगे भाई जिनका नाम श्रीराम और लालाराम थे। फूलन देवी का यह कहना है कि श्रीराम और लालाराम ने उसके साथ बलात्कार और अत्याचार किया। अगर फूलन देवी की यह बात मान ली जाये तो फूलन देवी को इन दोनों भाइयों को मार कर अपने ऊपर हुए अत्याचार का बदला लेना चाहिए था और अगर फूलन इन्हें मारती तो मैं फूलन का सबसे बड़ा समर्थक होता, क्योंकि तब यह सच में ही बहादुरी होती कि जिसने आपके ऊपर ज़ुल्म किया, आपने उसे सबक़ सिखाया, लेकिन फूलन

https://t.me/Sahityajunction

इन दोनों भाइयों को अपने पूरे जीवन में नहीं मार पायी।

फूलन देवी ने बेहमई गाँव में जिन 22 लोगों की हत्याएँ अपने गैंग के साथ मिल कर कीं उनकी सिर्फ यह ग़लती थी कि इस गाँव के एक आदमी ने अपने घर की शादी के समारोह में इन दोनों डकैत भाइयों को न्योता दे दिया था। और ये 22 लोग भी उस शादी समारोह में शामिल थे। इन 22 मरने वालों को तो यह भी नहीं पता होगा कि वे मर क्यों रहे हैं? अगर फूलन उस न्योता देने वाले आदमी को मारती तब भी फूलन की बात थोड़ी सही मानी जा सकती कि जो भी हमारे विरोधी का साथ देगा, उसे हम नुक़सान पहुँचायेंगे लेकिन इन ग़रीब 22 लोगों की तो कोई दूर-दूर तक की ग़लती नहीं थी। इन 22 मरने वाले लोगों के अलावा एक 5 साल की छोटी-सी बच्ची को फूलन ने उसकी माँ की गोदी से छीन कर नीचे ज़मीन पर पटक कर अपाहिज कर दिया था। बाद में वह बच्ची मर गयी। फूलन से पूछिए कि इस 5 साल की बच्ची ने उसके साथ कैसा अत्याचार किया था।

फूलन या लोगों का यह कहना है कि जब फूलन के साथ रेप हुआ तो इन गाँव वालों ने उसे क्यों नहीं बचाया, तो इस बात पर मेरा यह कहना है कि अगर वे इतने बहादुर होते कि किसी को डाकुओं से बचा सकें तो अपने को मरने से ही न बचा लेते। इसके अलावा फूलन ने पचीसियों डकैती मारी और हर डकैती के समय पैसों का लालच में 2-3 हत्याएँ हमेशा अपने गैंग का रौब जमाने के लिए कीं। फूलन के दुश्मन श्री राम और लालाराम राजपूत थे, इसलिए फूलन ने खुले आम कहा कि मैं पूरी धरती से सभी क्षत्रियों को मार कर ख़त्म कर दूँगी। फूलन देवी से कोई पूछे कि दो लोगों की ग़लती का ख़मियाज़ा वह पूरा समाज क्यूँ भुगतेगा, जिसने इस देश की सेवा में अपना सब कुछ लगाया हो। क्या हर जाति और धर्म में अच्छे और ख़राब आदमी नहीं होते हैं? किसी एक आदमी की ग़लती के कारण कोई पूरी जाति या धर्म ख़राब नहीं हो सकता।

बाद में जब फूलन ने आत्म-समर्पण किया तो उस समय श्री अर्जुन सिंह मध्य प्रदेश के मुख्य मन्त्री थे और इन्हीं के सामने फूलन ने आत्म-समर्पण किया। श्री अर्जुन सिंह ख़ुद राजपूत नेता थे। अगर फूलन को राजपूतों से इतनी घृणा थी तो श्री अर्जुन सिंह के सामने समर्पण क्यों किया? सिर्फ इसलिए कि अर्जुन सिंह ने फूलन की सभी नाजायज़ शर्तें मान ली थीं। और इन शर्तों के मुताबिक़ फूलन को समर्पण के एवज़ में ख़ूब सारी ज़मीन-जायदाद सरकार दे रही थी, जो कि फूलन के जीवन का मक़सद था कि कैसे ज़्यादा-से-ज़्यादा रुपया कमाया जा सकता था और इसी लालच के कारण वह डकैत बनी थी और जब उस धन के लालच की पूर्ति समर्पण से होती दिखी तो समर्पण कर दिया। अगर श्रीराम-लाला राम से वह इतनी नफ़रत करती थी कि उस नफ़रत में उसने सौ से भी ज़्यादा लोगों की हत्यायँ कर दीं तो सांसद बनने के बाद जब उसके पास पावर थी तो पुलिस की सहायता से उनको और उनके गैंग को ख़त्म क्यों नहीं करवाया? सिर्फ इसलिए की उसका दुश्मनी से कोई वास्ता ही नहीं था, क्योंकि उसका मक़सद सिर्फ पैसा था, जो उसने तब भी ख़ूब डकैतियाँ डाल कर कमाया, जब वह डकैत थी और अब भी कमा रही थी जब वह सांसद थी। कम-से-कम 20 करोड़ से भी ज़्यादा की प्रॉपर्टी फूलन ने सांसद बनने के बाद ग़लत तरीके से कमा ली और जिन पिछड़ी जातियों की सहायता करने का वादा करके वह चुनाव जीती थी, उन्हें वह भूल गयी और याद रहा तो सिर्फ पैसा। सिर्फ पैसा, जो उसके लिए सब कुछ था।

https://t.me/Sahityajunction

फूलन देवी के बारे में मेरे विचार जानने के बाद मेरे सामने बैठे पुलिस वालों ने भी मेरी बात पर अपनी सहमति दिखाई और उनमें से एक बोला कि क्या अजीब बात है कि 1982 में हमारे जैसे कितने ही पुलिस वालों ने फूलन को ज़िन्दा या मुर्दा पकड़ने के लिए रात-दिन एक किया हुआ होगा ताकि फूलन को ज़िन्दा या मुर्दा पकड़ने पर 50 हज़ार का जो इनाम सरकार ने रखा था, वह हासिल कर सकें, और आज जब किसी ने मार दिया है तो उसे इनाम देने की जगह पकड़ कर जेल भेजना पड़ रहा है।

इसी तरह की बातें पुलिस वाले मुझसे रिमाण्ड के दौरान करते रहते थे, लेकिन कुछ पुलिस अफ़सर वहाँ ऐसे भी थे, जो मुझसे बेवजह ही चिढ़ते भी थे। रिमाण्ड के दौरान एक दिन एक ऐसा ही पुलिस अफ़सर जो मुझसे थोड़ा चिढ़ता भी था आया, और मुझे एक अख़बार दिखाया, जिसमें मेरी फ़ोटो के साथ ख़बरें भी छपी हुई थीं। मैं अख़बार में छपी हुई ख़बर को देख कर आश्चर्यचकित और परेशान हो गया, क्योंकि पुलिस वालों ने मुझ पर 2-3 और भी दूसरे केस उत्तराखण्ड में झूठे ही लगवा दिये थे। आगे चल कर क़रीब 6 महीने या साल भर बाद ये सभी केस या तो पुलिस ने वापस ले लिये या कोर्ट ने ख़ारिज कर दिये।

जब मैंने अख़बार में छपी ख़बर के बारे में इस चिढ़ने वाले पुलिस वाले से पूछा तो वह कहने लगा कि फूलन देवी की हत्या में तेरा नाम आने से तू हीरो बन गया था, क्योंकि लोगों में मीडिया के द्वारा यह सन्देश गया था कि 100 से भी ज़्यादा निर्दोष लोगों की हत्या करने वालों के साथ तो एक दिन ऐसा होना ही था। उसने मुझे यह भी बताया कि अफ़ग़ानिस्तान जा कर आख़री हिन्दुस्तानी सम्राट की समाधि को वापस भारत लाने की मेरी बात से देश की पब्लिक मेरे समर्थन में आने लगी थी, इसलिए मेरी इमेज ख़राब करने के लिए मेरे ऊपर ये केस लगवाना ज़रूरी था। जब मैंने उससे कहा कि जो केस आपने लगवाये हैं वे सब तो मैंने किये ही नहीं तो वह अफ़सर बोला कि मैं कब कहता हूँ कि तूने ये सब किये, हम तो पब्लिक को बस यह दिखाना चाहते हैं कि तूने फूलन को मारा और पूरी जनता हमारी इस बात पर विश्वास करे, इसलिए तुझे पहले से ही क्रिमिनल दिखाना ज़रूरी है, क्योंकि जनता यह विश्वास नहीं कर पायेगी कि पहली ही बार कोई आ कर दिल्ली में एक सांसद को मार सकता है।

उसने मुझे यह भी बताया कि उत्तराखण्ड में लगे केसों की तू परवाह मत कर, वह बाद में ऐसे ही पुलिस वापस ले लेगी और उसकी यह बात बाद में सच साबित भी हुई। अगले दिन जब मेरे पास वह पुलिस अफ़सर आये जो मुझे पसन्द करते थे तो मैंने उनसे अख़बार में छपी उस ख़बर के बारे में पूछा जिसमें मेरे ऊपर उत्तराखण्ड में 2-3 और केस में लगाने की बात लिखी थी तो उन्होंने मुझे बताया कि भाई, बहुत बड़े लेविल से तुम्हारे ऊपर यह केस लगवायें गये हैं, क्योंकि बाहर तुम्हारे पक्ष में माहौल बनने लगा था और पुलिस अभी नहीं चाहती कि तुम आ जल्दी छूट जाओ, क्योंकि पूरी सरकार विपक्ष के दबाव में है और विपक्ष सिर्फ इसलिए ज़्यादा नहीं बोल पा रहा है कि तुमको हमने पकड़ा हुआ है। अगर तुम्हें भी पब्लिक के दबाव में छोड़ना पड़ा तो सरकार की बहुत किरकिरी होगी।

फिर एक अफ़सर ने मुझे इंग्लिश का हिन्दुस्तान टाइम्स अख़बार दिया, जिसमें यह ख़बर छपी हुई थी कि उत्तर प्रदेश के जालौन ज़िले में फूलन के मरने के बाद में लोगों ने

https://t.me/Sahityajunction

हवा में गोलियाँ चला कर ख़ुशियाँ मनायीं और बेहमई काण्ड के बाद क़रीब 20 साल बाद इलाक़े में दीवाली का त्योहार मनाया जायेगा। पूरे उत्तर प्रदेश में फूलन के मरने के उपलक्ष में जगह-जगह ख़ुशियाँ मनाने की ख़बरें भी छपी हुई थीं। मैंने कहा कि सर अख़बार में छपी इन बातों से मेरे ऊपर 34 बेवजह केस लगाने का क्या मतलब, तो उन्होंने कहा कि भाई, तू नहीं जानता इससे पुलिस का केस कमजोर होता है और पुलिस का काम अभी तुझे आर्थिक और सामाजिक रूप से कमज़ोर करने का है।

आर्थिक रूप से मुझे और मेरे परिवार को कमज़ोर करने के लिए पुलिस ने हमारे डेयरी की सारी भैसें ऐसे ही खोल दी और हमारा शराब का ठेका भी रद्द करवा दिया जिससे हमें ख़ूब नुक़सान हुआ। मेरे पापाजी ने 5 लाख रुपये की हम सब बच्चों के नाम बैंक में एफ़.डी. करवा रखी थी, वह एफ़.डी. भी पुलिस ने सील करवा दी, जिससे कि इन पैसों का इस्तेमाल मेरे घरवाले अच्छा वकील करने में न कर सकें।

रिमाण्ड के दौरान जब मेरा समय पूरा होने वाला था तो मुझसे चिढ़ने वाले पुलिस अफ़सर ने मुझसे कहा कि तेरे कपड़े 10-11 दिन में बहुत गन्दे हो गये हैं, अगर तू कहे तो मैं तेरे घर रुड़की फ़ोन कर देता हूँ, तेरे लिए घर से कोई कपड़े ले आयेगा, क्योंकि जेल में तुझे कपड़े नहीं मिलेंगे तो तुझे परेशानी होगी। मेरे हाँ कहने पर उसने मेरे सामने मेरे घर पर फ़ोन करके मेरे कपड़े दिल्ली क्राइम ब्रांच के ऑफिस में लाने के लिए कहा जिस पर उधर से मेरी मम्मी का जवाब आया कि उससे कहो कि उसके पापा की तबियत ख़राब है, इसलिए कोई नहीं आ पायेगा। वैसे कोशिश करेंगे। लेकिन अगले दिन जब इस पुलिस वाले की डयूटी मेरे साथ थी तो मेरा सबसे छोटा भाई विजय शाम को क़रीब 4 बजे मेरे कपड़े ले कर आया और मुझे मेरे कपड़े दे दिये।

अगले दिन मुझे पता चला कि पुलिस वालों ने मेरे सबसे छोटे भाई की भी गिरफ़्तारी दिखा दी है। मेरे भाई को उन्होंने सिर्फ यह सोच कर गिरफ़्तार कर लिया था कि जो इस माहौल में अपने भाई से क्राइम ब्रांच के ऑफिस में मिलने आ सकता है, वह कोर्ट-कचहरी में मेरी पैरोकारी करने में पीछे नहीं रहेगा और मुझे जल्दी ही इस चंगुल से भाग-दौड़ कर के छुड़वा सकता है। जबकि पुलिस अपना केस मज़बूत दिखाने के लिए मुझे लम्बे समय तक जेल में रखना चाहती थी।

https://t.me/Sahityajunction

24. तिहाड़ जेल

14 दिन पुलिस रिमाण्ड पर रहने के बाद पुलिस ने मुझे जज के ऑर्डर से तिहाड़ जेल में भेज दिया। तिहाड़ में उस समय 6 बड़ी-बड़ी जेलें थीं। और हर जेल का लॉ ऐण्ड ऑर्डर अलग-अलग था। हर जेल की पहचान नम्बर से थी, और जो लोग जेल में बन्द हो कर आते थे, अपने नाम के पहले अक्षर के हिसाब से उन्हें उनकी उस जेल नम्बर में भेज दिया जाता था, जो उस नाम राशि के लिए रिज़र्व होती थी। मेरा नाम शेर सिंह क्योंकि ''एस'' से शुरू होता था, इसलिए मुझे तिहाड़ जेल की जेल नं. 1 में, जो ''एस'' से शुरू हुए नामों के लिए आरक्षित था,r भेज दिया गया। जैसे ''एस'' शब्द से शुरू हुए नाम वालों को जेल नं. 1 में भेजा जाता था, उसी तरह से तिहाड़ जेल नं. 2, 3, 4,5 में भी अलग-अलग नाम राशि वाले लोगों को रखा जाता था। तिहाड़ जेल नं. 6 में सिर्फ महिलाओं को ही रखा जाता था।

जब मुझे पुलिसवालों ने जेल नं. 1 में भेजा तो उस समय शाम के क़रीब 6 बज चुके थे। जो लोग उस दिन जेल में आये थे उनका जेल की डयूटी में मेडिकल चेक अप हुआ और फिर हम सबको जेल के अन्दर वहाँ भेज दिया गया जहाँ यह तय होता है कि नये आये लोगों उनके केस के हिसाब से किस वॉर्ड में भेजना है। भारत की कोई भी जेल दो हिस्सों में बँट कर चलती है जिसमें एक हिस्सा जेल की डयूटी होती है जहाँ से तय होता है कि कौन बन्दी कब कोर्ट तारीख़ पर आयेगा, कौन कब जेल से रिहा होगा और अन्य कुछ काम यहीं से जेल के अफ़सर बैठ कर करते हैं।

जेल के अन्दर दूसरा हिस्सा जो जेल के अन्दर की पूरी गतिविधियों को कण्ट्रोल करता है, उसे ''चककर'' कहते हैं। जब मैं और मेरे साथ आये नये बन्दी चककर पर आये तो वहाँ पर बैठे जेल के एक अफ़सर ने मुझे अपने पास बुलाया और कहा कि भई शेर सिंह, तुमने फूलन का सही राग काटा, जैसे उसने बेसहारा ग़रीब लोगों को मारा था, उसे भी एक दिन गोली से मरना ही था, और फिर आगे की काग़ज़ी कार्रवाई के लिए मुझे अपने पास बैठा लिया। जब तक मैं वहाँ बैठा तो उस अफ़सर ने दूसरे नये आये लोगों में से एक-एक करके पूछना शुरू किया कि वे क्या क्राइम करके आये है।

उन नये आये लोगों में से जो भी बलात्कार के केस में या छोटी-मोटी चोरी चकारी में बन्द हो कर आये, उन सबको उस अफ़सर ने वही अपने सामने डण्डों से पिटवाया और कहा कि सालो अगर जेल में बन्द हो कर ही आना है तो शेर सिंह की तरह बहादुरी वाले काम करके आओ। जब उस अफ़सर ने एक-एक करके सभी से पूछ-ताछ कर ली तो वे मुझसे बोले कि जेल अधीक्षक जी ने तुम्हें जेल के ''हाई सिक्योरिटी वॉर्ड'' में रखने के लिए कहा है, क्योंकि तुम्हारा केस हाई प्रोफ़ाइल है, और फिर उसके बाद मुझे एक सिपाही के साथ, खाना खिलवा कर बन्द करवाने के लिए हाई सिक्योरिटी वॉर्ड में भेज दिया, और दूसरे सभी नये आये लोगों को आम वॉर्ड में भेज दिया।

हाई सिक्योरिटी वॉर्ड के मेन एण्टरेन्स पर टी. एस. पी. तमिलनाडु की स्पेशल पुलिस की विशेष सुरक्षा रहती थी। और हर किनारे पर 3-4 टावर भी उन्होंने बनाये हुए थे जहाँ पर ए.के. 47 के साथ टी. एस. पी. वाले डयूटी पर रहते थे। जब कोई बन्दी या जेल अफ़सर इस वॉर्ड में आता था तो मेन एण्टरनेन्स पर ही पहले टी. एस. पी. के सिपाही

https://t.me/Sahityajunction

मेटल डिटेक्टर और हाथों से उसकी पूरी तलाशी लेते थे। तब वह अन्दर वॉर्ड में जा पाता था। मैं और मेरे साथ आये उस सिपाही की भी टी. एस. पी. ने अच्छी तरह से तलाशी ली और फिर वह सिपाही मुझे पहले से ही वहाँ पर बैठे जेल के दूसरे कर्मचारियों को सुपुर्द करके और उस वॉर्ड में ''चककर'' से बनाया गया एण्ट्री का पर्चा दे कर वापस चला गया।

मेरी सिक्योरिटी को देखते हुए जेल वालों ने मेरे लिए एक पूरा ब्लॉक जिसमें 3 चक्कियाँ सेल थी, ख़ाली करवाया हुआ था, और इन 3 चक्कियों में से बीच वाली एक चक्की में उन्होंने मुझे रात को सोने के लिए दरी-चादर और कुछ ज़रूरी सामान दे कर बन्द कर दिया। इस हाई सिक्योरिटी वॉर्ड में हर बन्दी के लिए एक कमरा था, जिसे जेल की भाषा में ''चक्की'' बोलते हैं और इस ''चक्की'' के अन्दर ही एक किनारे पर टॉयलेट और बॉथरूम बना हुआ था। इस जेल की हाई सिक्योरिटी वॉर्ड में क़रीब 25 चक्कियाँ थी, जिन्हें हर तीन या चार चक्की के बाद बीच में एक दीवार खड़ी करके अलग-अलग ब्लॉक में बाँटा गया था। हर 3 या 4 चक्की के ब्लॉक में सामने की तरफ़ एक छोटा-सा बरामदा था जिसमें बन्दी लोग दिन के समय में घूम सकते थे और आपस में बातें कर सकते थे। यह बरामदा ऊपर से लोहे के सरियों से बन्द था, और इस तरह था जैसे िंपजरा होता है।

जब सुबह को मैं उठा तो वहाँ वॉर्ड में बन्द दूसरे बन्दी मुझसे मिलने आये और उनमें से एक बन्दी, जिसका नाम पंचम नेगी था मुझे कुछ काग़ज़ के कूपन दिये और बताया कि भाई साहब, मैं भी राजपूत हूँ और आपके उत्तराखण्ड का ही हूँ। आप नये आये हैं, इसलिए आप ये कूपन अपने पास रख लीजिए, जेल में इन कुपनों से ही सबी सामान ख़रीदा जाता है। मैंने पंचम को बहुत मना किया, लेकिन वह नहीं माना तो मैं ने वह कूपन अपने पास रख लिये और उससे पूछा कि यह कूपन कहाँ से मिलते हैं तो उसने मुझे बताया कि हर सप्ताह में 2 बार किसी भी बन्दी के घरवाले जेल में मुलाक़ात पर आ सकते हैं। मुलाक़ात जँगले पर मिलने आये लोग नक़द पैसे दे कर उतने रुपयों के ये कूपन लेंगे और फिर जेल में बन्द अपने मिलने वाले को दे देंगे, जिससे कि वह इन कुपनों से अपनी ज़रूरत का सामान और खाने-पीने का सामान ख़रीद सके।

मैंने उससे लिये कुपनों से अपने लिए कुछ सामान ख़रीद लिया जिसकी मुझे उस समय ज़रूरत थी और बचे हुए कूपन अपने पास तब तक रखने की सोची जब तक मेरी ख़ुद की मुलाक़ात नहीं आ जाती। हाई सिक्योरिटी वॉर्ड में बन्द लोगों की मुलाक़ात मंगलवार और शुक्रवार को होती थी। मुलाक़ात वाले दिन मेरी मुलाक़ात पर घर से तो कोई नहीं आया, लेकिन मेरे घर वालों ने एक वकील को मिलने के लिए भेज दिया। वकील मेरे लिए कपड़े और ज़रूरत का सारा सामान लाया था, वैसे जेल रूल के हिसाब से वकील कोई सामान नहीं दे सकता था, लेकिन फिर भी मुझे जेल अफ़सर ने सारा सामान दिलवा दिया और वकील ने मेरे पी. पी. एकाउण्ट में भी 10 हज़ार रुपये डाल दिये, जिससे कि मैं इन पैसों के बदले कूपन ले सकूँ। वकील से मैंने कुछ पैसे उस जेल अफ़सर को भी दिलवा दिये, जिसने सभी सामान लेने की आज्ञा मुझे दी थी।

जब मैं वकील से मिल कर वापस अपने वॉर्ड में आया तो मैंने पंचम को उससे लिये कूपन वापस कर दिये और सहायता करने के लिए धन्यवाद दिया। अगले हफ़्ते

https://t.me/Sahityajunction

मुलाक़ात वाले दिन मेरी मम्मी और 2 रिश्तेदार मुझसे मिलने के लिए आये। मेरी मम्मी मुझे देखते ही रोने लगी, मम्मी को रोता देख मेरा भी मन कच्चा होने लगा लेकिन मैंने अपने आँखों में आँसू नहीं आने दिया और सोचने लगा कि मम्मी का हौसला कैसे बढ़ाऊँ? इतने में ही मम्मी मुझसे बोली कि बेटे, तुझे उसे मारने की क्या ज़रूरत थी, जिन लोगों को फूलन ने मारा था, उनके परिवार वाले उससे अपना बदला ख़ुद लेते? मैंने कहा मम्मी जी मैंने उसे मारा या नहीं, इस बारे में तो मैं आपसे बाद में बात करूँगा, लेकिन मेरी आपसे प्रार्थना है कि आप यहाँ से पहले एक बार बेहमई गाँव जायें जहाँ फूलन ने 22 लोगों की हत्या की थी और जब आप वहाँ से वापस आयेंगी तब आपको हर बात का जवाब मिल जायेगा।

बेहमई जाने के लिए मैंने मम्मी जी को इसलिए कहा था, क्योंकि पुलिस वालों ने रिमाण्ड के दौरान मुझे बताया था कि बेहमई और उस पूरे ज़िले के लोगबाग फूलन के मरने पर ख़ुशियाँ मना रहे हैं और इस समय मैं मम्मी का हर हाल में हौसला बढ़ाना चाहता था, और मम्मी का हौसला तब ही बढ़ सकता था जब उन्हें उन लोगों से मिलवाया जाता जिनके ऊपर फूलन ने अत्याचार किये थे। मैंने मम्मीजी को और उनके साथ आये दोनों रिश्तेदारों को कोर्ट की वह तारीख़ बतायी जब मुझे कोर्ट में पेश होना था और कहा कि बेहमई से वापस आ कर कोर्ट की तारीख़ वाले दिन कोर्ट में मिलिएगा। मेरी ज़रूरत का सभी सामान मम्मी लायी थी जो मैंने उनसे ले लिया और कुछ पैसे भी मम्मी ने मुझे जेल के ख़र्चे के लिए दे दिये।

चौदहवें दिन मैं अपनी कोर्ट की तारीख़ पर जज के सामने पेश होने के लिए पटियाला हाउस कोर्ट गया। जब मैं पटियाला हाउस कोर्ट के लॉकअप में पहुँचा तो मैंने देखा वहाँ पहले से ही मेरा छोटा भाई विजय, मेरा दोस्त शेखर और 9 और लोग बन्द हैं, जिन्हें फूलनदेवी के मर्डर में सह आरोपी बनाया गया था। जिन लोगों को पुलिस ने फूलन देवी की हत्या में मेरा सहयोगी बना कर जेल भेजा हुआ था, उनें से 2-3 लोगों को तो मैंने जीवन में पहले कभी देखा भी नहीं था और जो दूसरे 2-3 लोग थे, उन्हें मैं जानता था कि ये लोग मेरे शहर रुड़की में रहते हैं, लेकिन उनसे मेरी कोई ख़ास बोल-चाल नहीं थी।

मैंने लॉक अप में मौजूद सभी लोगों से, जिन्हें पुलिस ने फूलन की हत्या में मेरा साथी बनाया हुआ था, बात की और जाना कि उन्हें कैसे और क्यों पुलिस ने पकड़ा और वे तिहाड़ की किस-किस जेल में हैं। मेरे भाई विजय ने मुझे बताया कि उसे जेल नं. 5 में रखा है, क्योंकि उसकी उम्र 21 साल से कम है। और 21 साल से कम उम्र वालों को तिहाड़ जेल नं. 5 में रखा जाता था। मेरे मित्र शेखर ने मुझे बताया कि वह जेल नं. 1 में है, क्योंकि उसका नाम ‘‘एस’’ से शुरू होता है और ‘‘एस’’ राशि की जेल 1 नम्बर ही है। मैंने शेखर से कहा कि में भी जेल नं. 1 में ही हूँ और जेल के उस वॉर्ड में हूँ, जहाँ पहली बार जेल में बन्द हो कर आने वाले लोगों को रखा जाता है। शेखर ने मुझसे कहा कि आप मुझे अपने साथ हाई सिक्योरिटी वॉर्ड में करा लो, जिससे कि आपस में बातचीत करके समय काट सकें। मैंने उससे कहा कि ठीक है जब वापस जेल जायेंगे तो मैं जेल-अफ़सरों से बात करूँगा, तुम्हारे साथ रहने से मेरा भी बातचीत करके टाइम पास हो जायेगा, क्योंकि मैं अभी पूरे ब्लॉक में अकेला हूँ और जेल वाले मेरी सुरक्षा को देखते हुए मेरे साथ किसी अपरिचित बन्दी को नहीं रख रहे हैं।

https://t.me/Sahityajunction

इसके बाद पुलिस वालों ने हम सबको कोर्ट में पेश किया ता मेरी मम्मी और वही दोनों रिश्तेदार हमसे मिलने आये हुए थे। इस बार जब मम्मी मुझसे मिली तो पहले की तरह उतनी परेशान नहीं थी। मम्मी जी मुझसे मिलते ही बोली कि फूलन को जिसने भी मारा ठीक किया। मम्मी जी ने मुझे बताया कि वो बेहमई गयी थी और उन्हें अपने बीच पा कर बेहमई और आस-पास के गाँवों के हज़ारों लोग वहाँ इकट्ठा हो गये और उन से कहा कि आपका लड़का तो हमारे लिए भगवान है और जैसे श्री राम ने ताड़का का वध किया था, वैसे ही आपके लड़के ने फूलन का वध किया है, क्योंकि फूलन ने इस पूरे इलाक़े को वैसे ही परेशान और दुखी किया हुआ था, जैसे ताड़का ने अपने इलाक़े को अपने समय में किया हुआ था। मैंने मम्मी जी से वकील के ख़र्चे के बारे में पूछा तो उन्होंने मुझे बताया कि बेहमई के पूरे इलाक़े वालों ने मुझसे कहा कि हम सब आपस में चन्दा इकट्ठा करके शेर सिंह के लिए वकील करेंगे और उसे छुड़वायेंगे। मैंने मम्मी से कहा कि ठीक है, लेकिन आप किसी से पैसे मत लेना और हम लोग ख़ुद ही अपने पैसों से वकील कर लेंगे। मम्मी जी ने मुझे बताया कि बेटे पुलिस ने हमारे सारे एकाउण्ट सील कर दिये हैं, इसलिए तुम्हारे पापा थोड़ी-सी ज़मीन बेच रहे हैं ताकि उन पैसों से तुम्हें और विजय को छुड़वाया जा सके।

इसके बाद मम्मी ने मुझसे और मेरे भाई विजय से बात करके यह कह कर चली गयी के अब हम अगली तारीख़ पर आयेंगे। हम सभी वापस अपनी-अपनी जेलों में वापस आ गये। मैं और शेखर तिहाड़ जेल नम्बर 1 में वापस आये तो मैं शेखर को अपने साथ हाई सिक्योरिटी वॉर्ड में रखवाने के लिए जेलर के पास गया और उनसे शेखर को अपने वॉर्ड में करने के लिए कहा जिससे हम आपस में बातचीत करके समय पास कर सकें। जेलर हमारी बात मान गया और शेखर को मेरे साथ करने के लिए जेल ‘‘चककर’’ पर इण्टर कॉम से फ़ोन करके कह दिया।

शेखर को मेरे वॉर्ड में करने के बाद जेलर ने मुझसे कहा कि शेर सिंह, मेरे पास एक आइडिया है और अगर तुम चाहो तो एक-दो करोड़ कमा सकते हो। मैंने जेलर से कहा कि बताइए सर, क्या आइडिया है जिससे मैं एक-दो करोड़ कमा सकता हूँ। वह बोला कि तुम अमर सिंह को (जो उस समय समाजवादी पार्टी के सांसद थे मेरे इस टेलीफ़ोन से फ़ोन करो और उससे कहो कि तुम मीडिया में सबको बताने वाले हो कि फूलन की हत्या तुमने अमरसिंह के कहने पर की है। मैंने कहा, सर, मेरे ऐसा कहने से क्या होगा, तो वह जेलर बोला कि तुम नहीं जानते रोज़ टी.वी. न्यूज़ पर फूलन के घर वाले सांसद अमरसिंह पर फूलन की हत्या का आरोप लगा रहे हैं और अगर तुम मीडिया में जा कर अमर सिंह का नाम लेने की बात अमर सिंह से कहोगे तो वह डर जायेगा, क्योंकि तुम्हारे ऐसा करने से उसकी राजनीति ख़त्म हो सकती है। मैंने कहा, सर, मुझे माफ कीजिएगा मैं ऐसा नहीं करूँगा और पैसों का मुझे कोई लालच नहीं है तो जेलर मुझसे बोला कि तुम ठीक से मेरी बात पर सोचना और फिर जवाब देना। फिर एकदम से बोला कि यार, मेरा भी तो कुछ अच्छा करना। मैंने कहा कि क्या अच्छा करूँ, तो जेलर बोला कि जेल भाषा में अच्छा करवाने का मतलब है कि मुझे कुछ ख़र्चा वग़ैरा दिलवा दे, वैसे भी फूलन को मारने के लिए तूने एक-दो करोड़ तो लिये ही होंगे। मैंने कहा कि सर, मैं पैसों के लालच में काम करने वाला आदमी नहीं हूँ। मैं देश भक्त आदमी हूँ और अपने देश और समाज के लिए अपने घर से पैसे ख़र्च करके काम करने वाला आदमी हूँ।

https://t.me/Sahityajunction

बाक़ी रही बात आपका अच्छा करने की तो मैं कोई मुर्गा नहीं हूँ, लेकिन मैं आपको अपनी इच्छा से बाद में कुछ-न-कुछ करूँगा, क्योंकि आप मेरे कहे अनुसार मेरा काम कर देते हो।

इसके बाद मैं उनके ऑफिस से अपने वॉर्ड में जाने के लिए बाहर आने लगा तो वह फिर अपने दिए हुए आइडिया के बारे में मुझे विचार करने के लिए बोलने लगा और कई दिनों तक बोलता रहा जब तक मैंने उसे थोड़ा सख़्ती से साफ़ मना नहीं कर दिया। जेलर के ऑफिस से जब मैं वापस अपने वॉर्ड में जा रहा था तो मुझे कुछ बन्दी बीच में मिले जिनमें जेसिका लाल हत्याकाण्ड में बन्द मनु शर्मा भी था। उन सबने मुझसे हैलो की और अपने-अपने बारे में बताया। मनु शर्मा ने मुझसे कहा कि मैं आपको अपने तजुर्बे से एक सलाह देता हूँ और यह सलाह हर उस आदमी के लिए है जो दिल्ली से बाहर किसी अन्य राज्य के लोग जेल में बन्द है। मैंने कहा बताइये—क्या सलाह है? तो वह बोला कि आप पुलिस को पैसे दे कर अपने ऊपर एक-दो छोटे-मोटे झूठे केस अपने शहर में लगवा लीजिए। मैंने कहा भैया यह क्या आइडिया हुआ। एक तो बेवजह केस लगवाऊँ और पैसे भी ख़र्च करूँ; इससे क्या फ़ायदा होगा। मनु बोला कि दिल्ली से बाहर के राज्य के लोगों के लिए तिहाड़ में बहुत परेशानी है, क्योंकि आपके घरवाले इतनी दूर से बार-बार मुलाक़ात पर नहीं आ सकते हैं, लेकिन अगर आपके ऊपर अपने शहर में कोई केस होगा तो आप दिल्ली से वहाँ की कोर्ट में जब भी पेशी पर जाओगे तो अपने घरवालों और अपने दूसरे सभी मिलने वालों से, जो दिल्ली नहीं आ सकते, आराम से और बहुत देर तक मिल सकोगे, मैंने कहा कि मनु भाई, आपकी बात में दम है और फिर उनको बताया कि पुलिस ने मेरी इमेज ख़राब करने के लिए शायद मेरे ऊपर उत्तराखण्ड में दो-तीन केस लगवाये हैं, ऐसा मुझे रिमाण्ड के समय पुलिस वालों ने बताया था। मनु मेरी बात सुन कर बोला कि अगर ऐसा है तो बिना मेहनत और ख़र्चे के ही आपका काम बन गया और आप देखना मेरा यह सुझाव आपको तब कितना अच्छा लगेगा जब आप अपने शहर की कोर्ट में जायेंगे।

बाद में सच में ही मनु की कही बात एकदम सच हुई जब मैं अपने शहर रुड़की की कोर्ट में पुलिस के द्वारा लगाये गये झूठे केसों में पेशी पर जाने लगा और अपने सभी परिचित और परिवार वालों से मिलने लगा, क्योंकि इस बाहर के झूठे केस के कारण ही मैं जेल से भी बाद में भाग पाया था। मैं मनु की बात समझ कर अपने मन में यह सोचने लगा कि जब पुलिस ने रिमाण्ड के दौरान मुझे बताया था कि उन्होंने मेरे ऊपर उत्तराखण्ड में दो-तीन केस मेरी इमेज ख़राब करने के लिए लगवाये हैं, तो मैं कितना परेशान हुआ था और भगवान से बारबार पूछ रहा था कि हे भगवान, आप मेरी मिट्टी इस तरह क्यों ख़राब करवा रहे हैं, लेकिन अब जब मुझे उन झूठे केसों से अपना फ़ायदा लग रहा था तो मैं सोच रहा था कि ईश्वर को मालूम है कि हमारे लिए कब क्या अच्छा होगा और जो चीज़ जीवन में कभी-कभी अच्छी नहीं लगती है उसी चीज़ के दम पर बाद में आदमी कामयाब होता है और जो आगे मेरे साथ भी हुआ था, क्योंकि हरिद्वार कोर्ट जाने के दौरान बाद में मैं जेल से भाग पाया। मनु और बन्दियों को मैंने जेल के बारे में जानकारियाँ देने के लिए धन्यवाद दिया और फिर बाद में मिलते रहने के लिए बोल कर अपने वॉर्ड में चला गया।

अब शेखर भी मेरे साथ मेरे हाई सिक्योरिटी वॉर्ड में मेरी बग़ल की चक्की में आ गया

https://t.me/Sahityajunction

था, जिससे हमारा समय आपस में बातें कर के ठीक कट रहा था। जब हमें जेल में तीन महीने होने वाले थे तो एक दिन पुलिस ने हमारे ि़खलाफ़ कोर्ट में चार्ज शीट पेश की और उसकी एक-एक कॉपी हम सभी आरोपियों को भी दे दी। चार्ज शीट में पुलिस ने अपनी पूरी फ़िल्मी कहानी लिखी हुई थी। और बताया हुआ था कि शेर सिंह ने फूलन को सामने से माथे पर गोली मारी, जिससे वह मर गयी। दूसरे जो मेरे सह-आरोपी पुलिस ने बनाये थे, उनके बारे में भी लिखा था कि कैसे और किसने मेरी सहायता फूलन की हत्या करने में की। पुलिस की चार्ज शीट पढ़ने के बाद उसे मैंने अपने वकील को दे दिया जिससे वह कोर्ट में हमारा पक्ष रख सके।

https://t.me/Sahityajunction

25. जेल की दुनिया

कोर्ट में केस चलते-चलते कई महीने बीत गये और तब मुझे एहसास हुआ कि पुलिस ने जब मुझे जेल भेजा था तो मुझसे झूठ बोला था कि मैं एक साल में छूट जाऊँगा और उन्होंने ऐसा इसलिए किया था कि मैं उनके ि़खलाफ़ कोर्ट में और मीडिया में ज़्यादा हल्ला न मचाऊँ, जेल में क़रीब एक साल बिताने के दौरान मुझे जेल की सारी गतिविधियाँ मालूम हो गयी थीं और यह भी पता चल गया था कि इस जगह से ज़्यादा भष्टाचार वाली जगह इस पूरी धरती पर और कोई नहीं हो सकती, क्योंकि बिना पैसों के यहाँ कुछ नहीं था और पैसा ख़र्च करने पर ऐसा कुछ नहीं था जो यहाँ न मिले। शुरू-शुरू में मैने घरवालों से ले कर काफ़ी पैसे ख़र्च किये, लेकिन अब मैंने ख़र्चा काफ़ी कम कर दिया था, क्योंकि मैं अपने काम सस्ते में ही निपटा देता था।

जेल की दुनिया बाहर की दुनिया से बिलकुल अलग थी और इस दुनिया के कई खट्टे-मीठे अनुभव मैं इस एक साल के दौरान कर चुका था। जिस हाई सिक्योरिटी वॉर्ड में मैं और शेखर थे, वहाँ पर बन्द सभी लोगों से हमारी ख़ूब दोस्ती हो गयी थी। जिनके साथ हम ज़्यादा उठते-बैठते थे, उनमें दाऊद इब्राहीम कम्पनी का तारिक बम्बइया और बबलू श्रीवास्तव गैंग का संजय और कुछ अन्य बन्दी थे। तारिक और संजय दोनों ही बड़े मस्त और कार्टून टाइप आदमी थे। मैं और शेखर दोनों से ख़ूब मज़े लेते थे, क्योंकि वे दोनों रोज़ इस बात पर बहस करते थे कि ‘‘डी’’ कम्पनी बड़ी है या बबलू श्रीवास्तव की। तारिक को अपने ‘‘डी’’ कम्पनी का होने पर इतना गर्व था कि उसने अपने जेल के हर सामान पर ‘‘डी’’ लिखा हुआ था, जिससे कि पता चल जाये कि यह ‘‘डी’’ कम्पनी तारिक का है, मैंने और शेखर ने संजय को चढ़ा दिया कि संजय भाई, आपके होते हुए यह क्या हो रहा है। ‘‘डी’’ कम्पनी हर सामान पर दिखती है, इसलिए आप भी अपनी हर चीज़ पर बबलू श्रीवास्तव के आगे का अक्षर ‘‘बी’’ लिख लीजिए। यह आइडिया हमने उसका मुर्गा बनाने के लिए दिया था और उसने हमारी बात मानते हुए अगले दिन पेण्ट से अपने सभी सामान पर ‘‘बी’’ लिख दिया।

मैंने और शेखर ने दोनों से ‘‘डी’’ और ‘‘बी’’ लिखवा दिया तो मैंने वॉर्ड के सभी लोगों को बुलाया और कहा कि भाई, सारे सामानों पर तो इन लोगों ने अपने गैंग का ठप्पा लगा लिया है अब ये लोग अपने पिछवाड़े पर भी अपने गैंग का लोग लगाने के लिए हमसे कह रहे है, क्योंकि दाऊद और बबलू श्रीवास्तव को कैसे पता चलेगा कि कौन आदमी कौन-से गैंग का है। सभी लोग हँसने लगे तो वे दोनों समझ गये कि हम सबने उनका मुर्गा बनाया है। संजय से मैं हमेशा बोलता था कि तुम्हें बबलू श्रीवास्तव ने ज़रूर बच्चों को डराने के लिए अपने गैंग में रखा होगा, और तुम्हारी फ़ोटो दिखा कर ही लोगों से उगाही करता होगा। संजय बहुत ही काला और शक्ल से ही डरावना लगता था। मैं संजय को जब भी बोलता कि शोले के गब्बर का यह डॉयलाग आपके सामने फ़ेल है कि जब बच्चा रोता है तो उसकी माँ बोलती है कि चुप हो जा वरना गब्बर आ जायेगा, क्योंकि अब तो सबकी माताएँ यह बोलती हैं कि चुप हो जा, वरना संजय की फ़ोटो तुम्हें दिखा दूँगी। जब भी मैं संजय को ऐसे बोलता तो तारिक सबसे ज़्यादा ख़ुश होता, क्योंकि वे हमेशा एक-दूसरी कम्पनी को नीचा दिखाने की कोशिश करते रहते थे।

https://t.me/Sahityajunction

एक दिन मैं और शेखर इन दोनों के साथ बैठे थे तो संजय दो लड़कों को हमारी तरफ़ आते देख कर कहा कि तारिक भाई, तुम्हारी गाड़ी और गोदरेज आ रही है। मैंने संजय से कहा कि उस लड़के को गाड़ी क्यों बोल रहे हो तो संजय हँसने लगा और कहा कि यह तो वॉर्ड की सबसे बड़ी गोदरेज और गाड़ियाँ है और जब वे दोनों लड़के हमारे एकदम सामने आ गये तारिक ने कहा कि कोर्ट से ख़ाली आये हो या गोदाम भरा हुआ है, तो वे दोनों बोले भाई, हमारे गोदाम कभी ख़ाली रहे हैं? मेरी कुछ समझ में नहीं आया तो तारिक ने मुझे बताया कि भाई जेल की भाषा में गोदरेज उसको बोलते हैं जो अपने उस जगह पर कोई चीज़ बाहर से छिपा कर ले आता है, जहाँ से आदमी सुबह टॉयलेट में फ्रेश होता है। मैंने कहा, मतलब—तो उस लड़के ने, जिसे वे गोदरेज कह रहे थे, अपनी पैंट वहीं खोली और अपने पीछे अण्डरवीयर में हाथ दे कर 2 पैकेट तम्बाकू के अपने पिछवाड़े से निकाल कर तारिक को दिखाने लगा। तारिक ने उस गोदरेज से कहा कि अबे इतना-सा माल लाया है तो वह बोला भाई पुलिस वालों ने ज़्यादा माल नहीं दिया, इसलिए नहीं ला सका।

मैंने कहा, तारिक भाई, यह तो गोदरेज और वह दूसरा जिसको संजय गाड़ी बोल रहा था, वह क्या आइटम है, तो तारिक ने बताया कि आप ख़ुद ही देख लो और फिर उस लड़के को पास में बुलाया और उससे पूछा कि तेरी गाड़ी में कितना माल है, तो उसने कहा कि भाई पाँच पैकेट माल लाया हूँ। और फिर वह लड़का वहीं थोड़ा साइड में गया और अपनी जींस को पकड़ कर उल्टी करने लगा। उसके उल्टी करने से उसकी पैंट से बहुत-से प्लास्टिक के पोलीथीन में पैक की हुई चरस और तम्बाकू निकल कर नीचे ज़मीन पर गिर गया। उस लड़के ने सभी प्लास्टिक के सील पैकेट उठाये और उन्हें पानी से धो कर तारिक को दिखाया। तारिक ने मुझ से कहा कि जेल में यह माल क़रीब 20 हज़ार रुपये का बिकेगा, तो मैंने कहा कि अगर किसी को पता चलेगा कि यह चीज़ इतनी गन्दी जगहों पर छुपा कर लाये हैं तो कोई भी इसे नहीं खायेगा। इस पर तारिक बोला कि कौन पागल बतायेगा कि यह कैसे आया है और यह माल भी उस माल के साथ मिक्स कर के बिकेगा जो जेल के कर्मचारी पैसे ले कर बाहर से हमें ला कर देते हैं। यह तो मुझे पहले ही पता था, लेकिन जेल में बन्द मुल्ज़िम इस तरह से—चीज़ों को पेट में निगल कर और पिछवाड़े में छिपा कर लाते हैं, यह मुझे आज ही पता चला था।

मुझे मन-ही-मन इस तरह से चीज़ों को लाते देख कर बहुत हँसी भी आयी और ऐसे लोगों पर तरस भी आया जो नशे के लिए कुछ भी करने के लिए तैयार थे। मुझे किसी भी तरह का नशा करने की आदत नहीं थी इस आदत के लिए मैंने भगवान को मन-ही-मन धन्यवाद कहा और सोचने लगा कि अगर मैं भी इनकी तरह नशेड़ी होता तो मुझे भी ऐसी गन्दी जगहों पर छिपा कर लाई चीजें खानीपीनी पड़तीं। 2001 में संसद भवन पर हमला करवाने वाले लोग तिहाड़ में आये तो उनमें से एस. आर. गिलानी और शौकत को हमारे साथ ही रखा। शौकत को मेरे और शेखर के साथ एक ही चक्की में रहने को कहा। शौकत को हमारे साथ चक्की में डालने से पहले मेरे पास जेल के दो-तीन अफ़सर आये जो हमारे काफ़ी ख़ास थे और बोले कि यार शेर सिंह, तुम लोग तो देश भक्त आदमी हो और हमारी तुमसे एक प्रार्थना है कि तुम अपने साथ संसद भवन पर हमला करने वाले एक बन्दी को रख लो और कुछ दिन उसकी सही से रोज़ पिटाई करो, क्योंकि हम तो सरकारी नौकरी करते हैं, इसलिए हम तो उन्हें कुछ कह नहीं सकते, लेकिन तुम अगर

https://t.me/Sahityajunction

उसे पीटोगे और अगर वह तुम्हारी शिकायत कहीं भी करेगा तो हम कह देंगे कि मुल्ज़िमों में आपस में झगड़ा हो गया।

मैंने और शेखर ने शौकत को अपने साथ चक्की में डलवा लिया। शौकत के आते ही शेखर ने उसके 2-4 थप्पड़ लगा दिये, तो मैंने शेखर से कहा कि इसको मत मार, क्योंकि यह तो पहले ही मरा हुआ लग रहा है। शौकत मेरी बात सुन कर ख़ूब तेज़-तेज़ रोने लगा और बताने लगा कि उसे ख़ूब पीटा गया है जिससे उसकी पसलियाँ टूट गयी हैं और अपनी चोटें दिखाने लगा। शौकत के सच में ही बहुत चोटें लगी हुई थीं और मुझे लगा कि उसको और पीटना इस समय ठीक नहीं था, इसलिए मैंने उससे कहा कि देख भई, तूने हमारे देश की संसद पर हमला करवाया है, इसलिए हम से किसी सहानुभूति की तू कोई उम्मीद मत रखना, लेकिन हम तुझे और नहीं मारेंगे, क्योंकि तू पहले ही टूटा-फूटा हुआ है। हमने शौकत को नहीं मारा, लेकिन उसे परेशान करने के लिए टॉयलेट में सोने के लिए कहा और वह टॉयलेट में ही सो गया, सुबह को जब मैं और शेखर अपने लिए कैंटीन से नाश्ता मँगा कर खाने लगे तो शौकत हमें दूर से ऐसे देखने लगा जैसे पता नहीं कितने जन्मों से उसने कुछ न खाया हो। शौकत को ऐसे हमारी तरफ़ निहारते हुए देख कर मैंने उसे पास बुलाया और शेखर से कहा कि इसे 2-4 अण्डे खाने को दे दे।

शेखर मेरी बात सुन कर थोड़े आश्चर्य से मुझे देख कर बोला कि इस साले की तो हड्डी-पसली तोड़ देनी चाहिए और आप इसे अण्डे खिलाने के लिए बोल रहे हैं तो मैंने कहा कि भाई इसकी हड्डी-पसली भी तोड़ेंगे। लेकिन पहले इसे इस लायक़ तो बना कि यह सीधा खड़ा हो सके। वैसे भी इस समय यह भूखा है और सबसे पहले इसे कुछ खिलाना हमारी इन्सानियत का फ़र्ज है। पहले अपनी इन्सानियत का फ़र्ज इसे अण्डा खिला कर निभायेंगे फिर अपनी देश भक्ति इसे पीट कर साबित करेंगे। शेखर ने उसे अण्डे खाने को दिये और शौकत जब आख़री अण्डा खा रहा था, तो एकदम से अचानक ही वही जेल अफ़सर आ गये जिन्होंने हमें शौकत की पिटाई के लिए बोला था। जेल अफ़सर शौकत को अण्डा खाते देख कर बोले कि तेरी तो पूरी ख़ातिरदारी हो रही है। कोई बात नहीं, तेरा इलाज किसी दूसरे डॉक्टर से करवायेंगे। वह अफ़सर मुझे अकेले को बाहर ले गये और नाराजगी दिखाने लगे कि यार, तुम अजीब हो, इसे पीटने की जगह खिलापिला रहे हो। मैंने कहा कि सर, दुश्मन भूखा हो तो उसे भी खाना खिलाना चाहिये। यह भूखा था और हमारी तरफ़ भूखी निगाहों से देख रहा था, इसलिए इसे खाने को मैंने देने के लिए कहा, लेकिन ऐसा नहीं है कि हमें इससे कोई लगाव है, हम खिला-पिला कर इसकी ठुकाई करेंगे।

मेरी बात से अफ़सर सन्तुष्ट नहीं हुए और उन्हें ऐसा लगा कि हम शौकत को परेशान नहीं करेंगे, इसलिए उसे उन्होंने हमारे बग़ल के ब्लॉक में एक सड़क छाप के साथ डाल दिया, जिसने शौकत की पिटाई तो डर के मारे नहीं की, लेकिन उसे बातों से ख़ूब परेशान करता रहता था। शौकत को हमारी चक्की से हटाने के कुछ महीने बाद संसद हमले के ही दूसरे आरोपी एस. आर. गिलानी को मेरे और शेखर के साथ एक ही चक्की में डाल दिया।

गिलानी हम दोनों के साथ क़रीब 7-8 महीने रहा, इस दौरान एक दिन वॉर्ड के एक ब्लेडबाज़ ने यानी उस व्यक्ति ने जो जेल के अन्दर किसी के भी चेहरे पर सरजरी ब्लेड

https://t.me/Sahityajunction

मार कर चोट पहुँचाये, गिलानी के ऊपर सरजरी ब्लेड से हमला कर दिया। जिस समय गिलानी के ऊपर उस ब्लेडबाज़ ने हमला किया, उस समय वह एक पाकिस्तानी आतंकवादी जिसका नाम तारिक था और एक अफ़ग़ानी आतंकवादी ताज़ा ख़ान के साथ वॉर्ड में टहल रहा था और मैं और शेखर दोनों उनके पास में ही घूम रहे थे।

जैसे ही ब्लेडबाज़ ने गिलानी के ऊपर हमला किया तो गिलानी के साथ टहल रहे दोनों आतंकवादी डर कर वहाँ दीवार की एक तरफ़ खड़े हो गये और गिलानी को अकेला उस ब्लेडबाज़ से लड़ने के लिए छोड़ दिया। जब मैंने और शेखर ने यह देखा तो हमने मिल कर उस ब्लेडबाज़ लड़के को पकड़ लिया, और उस के हाथ से ब्लेड छीन लिया, लेकिन तब तक वह ब्लेडबाज़ गिलानी के 23 घूँसे मार चुका था।

गिलानी को मैं अपने साथ चक्की में ले गया और बाहर से उस चक्की की कुण्डी लगा दी और शेखर ने उस ब्लेड बाज़ को वहीं पकड़ कर रखे रखा, और फिर मैंने जेल अफ़सरों को बुला कर उस ब्लेडबाज़ को उनके सुपुर्द कर दिया। रात को गिलानी जी ने मुझे और शेखर को धन्यवाद दिया तो मैं बोला गिलानी जी, धन्यवाद की तो कोई बात नहीं है और यह तो इन्सानियत के नाते हमारा फ़र्ज था, लेकिन आज आपने तो यह देख लिया होगा कि उस पाकिस्तानी और अफ़ग़ानी ने कैसे डर के आपका साथ छोड़ दिया था। वैसे तो ये लोग बोलते हैं कि ये जेहाद के लिए भारत आते हैं और कश्मीरियों की रक्षा के लिए आते हैं, लेकिन जब आप पर इतनी छोटी-सी मुसीबत आयी तो ये लोग आपसे ऐसे अलग हुए, जैसे कभी आपको जानते ही नहीं थे। इनकी इस हरकत से पता चलता है कि इन विदेशी आतंकवादियों को जेहाद या कश्मीर से कुछ लेना-देना नहीं है, इन्हें तो बस पैसा चाहिए और ये बेचारे ग़रीब लोग हैं और पैसों के लालच में आ कर ये भारत में उल्टी-पुल्टी गतिविधियाँ करते हैं। गिलानी जी ने मेरी बात का कोई जवाब नहीं दिया और यह बात यहीं ख़त्म हो गयी।

जब जेल में मुझे काफ़ी समय हो गया और मैं समझ या कि जेल में काफ़ी साल रहना पड़ सकता है, तो मैं यह सोच-सोच कर परेशान रहने लगा कि जो मेरे सपने थे कि मैं अपने देश और समाज के लिए कुछ अच्छे यादगार काम करूँगा, वे शायद अब पूरे नहीं होंगे। इसके अलावा जेल में रहने के दौरान मैं यह भी तय नहीं कर पा रहा था कि मुझे ऐसे क्या काम करने चाहिएँ? जिनसे मेरे देश और समाज का नाम ऊँचा हो, क्योंकि मुझे जेल में हर तरफ़ से गुण्डागर्दी और बदमाशी करने की सलाह ही मिलती थी, और सभी लोग जो मेरे वॉर्ड में थे, मुझे सलाह देते रहते थे कि शेर सिंह भाई, आपका इतना नाम है और अगर आप किसी को भी पैसों के लिए धमकी देंगे तो आप करोड़ों कमा सकते हो, अगर आप ख़ुद नहीं करना चाहते तो हम आपके नाम से फ़ोन करवा कर बाहर लोगों से पैसे इकट्ठा करवा लेते हैं।

मैंने ऐसे लोगों से हमेशा यही कहा कि भाई, मुझे हराम के पैसे नहीं चाहिएँ, अपना जीवन अच्छी तरह से जीने के लिए मेरे पास पारिवारिक धन बहुत है, वैसे भी तो मैं किसी भी तरह का ऐसा क्राइम जिसमें किसी को पैसों के लिए हानि पहुँचायी जाये अच्छा नहीं मानता हूँ और इसीलिए कभी किसी की बात न मानते हुए मैंने कोई ऐसा काम नहीं किया जिससे मेरे कारण समाज को कोई परेशानी होती। जेल में टाइम पास करते हुए मुझे अब सिर्फ तभी ख़ुशी होती थी, जब मैं दिल्ली से बाहर अपने शहर रुड़की

https://t.me/Sahityajunction

की कोर्ट में पेश होने जाता था और हमेशा सोचता था कि अच्छा हुआ जो पुलिस ने मेरे ऊपर यह झूठा केस लगा दिया, क्योंकि इसी केस के कारण हर महीने मैं अपने शहर और घर वालों को देख और मिल लेता था। जब शुरू-शुरू में मैं रुड़की कोर्ट में पेश होने जाता था, तो हज़ारों लोग मुझे देखने और मिलने आते थे, लेकिन फिर धीरे-धीरे आने वाले लोग कम हो गये और अब सिर्फ घर के लोग और कुछ दोस्त आते थे, लेकिन फिर भी मैं ख़ुश था, क्योंकि ये लोग बार-बार दिल्ली मिलने नहीं आ सकते थे।

https://t.me/Sahityajunction

26. समाधि और संकल्प

एक दिन रोज़ की तरह जब मैं अख़बार पढ़ रहा था तो मेरी नज़र एक ख़बर पर पड़ी। उस ख़बर को पढ़ते ही मेरी कई दिनों से दिल में बसी उदासी में कुछ उम्मीद की किरण आयी और जो मैं कई दिनों से सोच रहा था कि ऐसा क्या करना चाहिए जिससे मैं अपने देश और समाज का नाम ऊँचा करूँ, उसका एक रास्ता दिखा। अख़बार में छपी ख़बर यह थी कि एन. सी. आर. के एक शहर में बहुत बड़ी मिंटग हुई थी जिसमें हज़ारों लोग आये थे और इस मिंटग में श्री चन्द्रशेखर जी पूर्व प्रधानमन्त्री, श्री अमरसिंह सांसद, श्री डी. पी. यादव सांसद और बहुत-से दूसरे बड़े नेता थे जिन्होंने अपील की हुई थी कि सभी लोग आख़िरी हिन्दुस्तानी सम्राट पृथ्वीराज चौहान की समाधि को अफ़ग़ानिस्तान से वापस भारत लाने में हमारी सहायता करें, जिससे हम भारत सरकार के ऊपर दबाव बना सकें कि वह अफ़ग़ानिस्तान से सम्राट की समाधि वापस लाये।

यह ख़बर पढ़ कर मैं सोचने लगा कि यह तो मेरी भी इच्छा है कि उनकी समाधि वापस भारत आये और मुझे लगा कि अब तो यह मिंटग करने वाले सभी लोग मिल कर समाधि वापस ले ही आयेंगे। इसके कुछ दिनों बाद आचार्य गिरिराज किशोर, अध्यक्ष विश्व हिन्दू परिषद की ख़बर भी मैंने अख़बारों में पढ़ी कि अगर अफ़ग़ानिस्तान हमारे आख़िरी हिन्दुस्तानी सम्राट की समाधि वापस नहीं देगा तो हम अजमेर में एक बहुत बड़ी रैली करेंगे और ख़्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती की दरगाह पर ज़ियारत नहीं करने देंगे। अजमेर में वी. एच. पी. इसलिए प्रदर्शन करना चाहती थी, क्योंकि पृथ्वीराज चौहान ने अजमेर और दिल्ली को ही अपनी राजधानी बनाया हुआ था। कुछ दिनों बाद मैंने अख़बार में एक लेख पढ़ा जिसमें लिखा था कि भारत ने जब अपनी नयी मिसाइल का नाम पृथ्वीराज चौहान के नाम से पृथ्वी मिसाइल रखा तो पाकिस्तान ने भारत को चिढ़ाने के लिए अपनी मिसाइल का नाम ग़ोरी रख दिया। और कहा कि जैसे ग़ोरी ने पृथ्वीराज को कई सौ साल पहले युद्ध में हरा कर विजय पायी थी उसी तरह ग़ोरी मिसाइल, पृथ्वी मिसाइल को मार गिरायेगी। यह लेख पढ़ कर मुझे समझ में आया कि सम्राट पृथ्वीराज की अहमियत मेरे अपने देश और पाकिस्तान के लिए कितनी है और मैं सोचने लगा कि कई सौ साल पहले तो ग़ोरी ने पृथ्वी को धोखे से हरा दिया था, पृथ्वीराज को पकड़ कर अन्धा कर के अफ़ग़ानिस्तान ले गया, लेकिन अब ऐसा नहीं होगा और मैं अफ़ग़ानिस्तान जा कर अपने आदरणीय पूर्वज की समाधि उन तालिबानियों से वापस भारत लाऊँगा।

जब कई दिनों तक अख़बार में पृथ्वीराज चौहान से सम्बन्धित ख़बरें नहीं आयीं तो मैं सोचने लगा कि ये नेता लोग तो बस अपनी नेतागिरी के लिए इस समाधि वाले मुद्दे को उठाते हैं और सिर्फ भाषण दे कर भूल जाते हैं कि हमने क्या वादा किया था। मैं सोचने लगा कि मैं इस जेल से भाग कर अफ़ग़ानिस्तान जाऊँगा और वहाँ से समाधि वापस भारत लाऊँगा। ऐसा निश्चय करने के बाद मैंने उन अफ़ग़ानी आतंकवादियों से उनके देश के बारे में ज़्यादा-से-ज़्यादा जानकारी हासिल करनी शुरू कर दी, जिससे कि मुझे वहाँ जा कर इन जानकारियों का फ़ायदा मिले। पाकिस्तानी और बांग्लादेशी आतंकवादियों से भी मैं बातों-ही-बातों में उनके देश और ख़ुफ़िया एजेन्सियों के काम

https://t.me/Sahityajunction

करने के तरीक़ों की जानकारी लेता रहता था। ये सभी लोग मेरे साथ तिहाड़ जेल की हाई सिक्योरिटी वॉर्ड में ही रहते थे, इसलिए ये लोग मेरे काम आ सकने वाली बातें मुझे बता देते थे, लेकिन मैंने इन्हें कभी नहीं बताया कि मैं क्यों इनसे इतनी जानकारियाँ ले रहा हूँ।

https://t.me/Sahityajunction

27. उड़ने की योजना

अफ़ग़ानिस्तान, पाकिस्तान और बांग्लादेश के बारे में तो मुझे काफ़ी जानकारियाँ हो गयी थीं, लेकिन इन जानकारियों का तब तक कोई फ़ायदा नहीं था, जब तक मैं तिहाड़ जेल से आज़ाद न होता और फिर मैं तिहाड़ जेल से भागने की प्लानिंग बनाने लगा। तिहाड़ से भागने की प्लानिंग मैंने अपने साथ बन्द संजय और तारिक बम्बइया के साथ मिल कर बनायी, क्योंकि ये दोनों भी दिल्ली से बाहर कोर्ट में पेशी पर जाते थे और ये भी जेल से भागना चाहते थे। मैंने इन्हें अपनी जेल से भागने की सारी प्लानिंग बतायी तो इन्होंने मुझसे कहा कि तुम्हारी प्लानिंग तो बहुत अच्छी है। मैंने शेखर, अपने साथियों और संजय और तारिक से कहा कि मैं जब इस बार कोर्ट की तारीख़ पर रुड़की जाऊँगा तो पुलिस कस्टडी से भाग जाऊँगा और सब लोग मेरी भागने की प्लानिंग से सन्तुष्ट थे, लेकिन जब मैं कोर्ट की तारीख़ पर रुड़की गया, तो सब कुछ मुझे बदला हुआ मिला, क्योंकि पहले मैं ट्रेन से रुड़की जाता था, इस बार मुझे पुलिस अपनी वैन में ले जा रही थी। हर बार मेरे साथ एक एस.आई. और 7-8 सिपाही हवलदार जाते थे, लेकिन इस बार एक इन्स्पेक्टर और 12-13 सिपाही जा रहे थे।

पुलिस वैन और इतने सारे पुलिस वाले जब मेरे साथ गये तो मेरी फ़रार होने की प्लानिंग ख़त्म हो गयी, क्योंकि वह प्लानिंग ट्रेन में सफ़र करने के दौरान ही सम्भव थी। जब मैं कोर्ट में पेश हो कर वापस तिहाड़ आया और इस बार कस्टडी से नहीं भाग सका तो संजय और तारिक मेरा मज़ाक़ उड़ाने लगे और कहने लगे कि अब तो कोर्ट में रुड़की जाते समय यह बोल रहे थे कि आज आख़री बार देख लो, अब मैं वापस नहीं आऊँगा लेकिन तुम तो लौट आये हो। उनकी बातें सुन कर मुझे लगा कि हो-न-हो इन दोनों ने ही कुछ गड़बड़ की है जिससे मुझे पुलिस ने ट्रेन से ले जाना बन्द करके पुलिस वैन से ले जाना शुरू किया है। थोड़े दिन बाद मैंने अपने एक परिचित पुलिस वाले से पूछा कि मुझे ट्रेन से ले जाना क्यों बन्द कर दिया है। उसने मुझे बताया कि मेरे ि◌ख़लाफ़ किसी ने पुलिस कमिश्नर को एक लेटर भेजा था, जिसमें लिखा हुआ था कि मैं तारीख़ पर रुड़की जाते समय पुलिस कस्टडी से भाग जाऊँगा। इसलिए मुझे ट्रेन से ले जाना बन्द कर दिया है और मेरे साथ एक हैवी गार्ड भेजने का आदेश हुआ है। बाद में मुझे यह भी पता चल गया कि तारिक ने मेरे ि◌ख़लाफ़ ख़त लिख कर मेरे भागने की जानकारी लीक की थी।

इस पुरानी प्लानिंग से मैं नहीं भाग पाया, तो कुछ दिन मैं थोड़ा परेशान रहा और थोड़ा हौसला भी पस्त होने लगा, क्योंकि मुझ पर पुलिस ने काफ़ी सख़्ताई कर रखी थी। पहला भागने का प्लान तारिक बुम्बइया के धोखे की वजह से फ़ेल हो जाने के कारण मेरे समझ में नहीं आ रहा था कि अब मुझे फ़रार होने के लिए क्या करना चाहिये, क्योंकि अब जितनी भी प्लानिंग मेरे दिमाग़ में आ रही थी, उसमें सफलता के लिए मुझे 4-5 समझदार लोगों की सहायता की ज़रूरत थी, जो मेरे कहे अनुसार मेरे लिए काम कर सकें। जेल में जो मेरे परिचित लोग थे, उन्हें मैं अपनी नयी प्लानिंग का हिस्सा नहीं बनाना चाहता था, क्योंकि एक बात जो मैं इतने महीनों में जेल में समझा था, वह यह थी कि जेल में लगभग सब लोग दूसरे की ख़ुशी और कामयाबी से परेशान होते हैं और इसलिए मैं अपनी प्लानिंग में जेल के किसी भी आदमी को शामिल नहीं करना चाहता

https://t.me/Sahityajunction

था। मैं जानता था कि फिर तारिक बम्बइया की तरह कोई-न-कोई मेरी बात जेल अफ़सरों तक पहुँचा देगा। इस बार तो मैं इतना चौकस था कि मेरे दिमाग़ में फ़रारी की जो नयी प्लानिंग थी उसे मैंने अपने छोटे भाई विजय और अपने साथी शेखर को छोड़ कर किसी और को भी नहीं बताया।

नयी जेल फ़रारी की प्लानिंग मेरे दिमाग़ में थी, लेकिन उस पर मैंने कोई काम शुरू नहीं किया था, क्योंकि मुझे इसके लिए 4-5 भरोसे वाले लोगों की ज़रूरत थी और मेरे दिमाग़ में नहीं आ रहा था कि किस पर विश्वास करूँ। एक दिन मैं दिल्ली की पटियाला हाउस कोर्ट में पेश होने के लिए जा रहा था तो हमेशा की तरह मैंने दिल्ली पुलिस वालों से बातों-ही-बातों में यह आइडिया लिया कि अगर मैं अफ़ग़ानिस्तान से समाधि वापस ले आऊँ तो लोगों का और उनका क्या रिसपॉन्स होगा। पेशी पर जाते समय जब मैंने साथ बैठे पुलिस वालों से कहा कि भैया, अगर मैं अफ़ग़ानिस्तान जा कर वहाँ से पृथ्वीराज चौहान की समाधि वापस भारत ले आऊँ तो आप लोग इस काम को किस निगाह से देखेंगे।

मेरी यह बात सुन कर सभी पुलिस वालो मुझ पर हँसने लगे और मुझसे कहा कि शेर सिंह, तूने अफ़ग़ानिस्तान को अपने मामा का घर समझा है कि जब मर्ज़ी वहाँ चला जाये। अफ़ग़ानिस्तान तो ऐसी जगह है जहाँ अच्छे-से-अच्छा आदमी नहीं जा सकता। इसके अलावा इस जन्म में तो तू अब वहाँ नहीं जा सकता, क्योंकि तू कम-से-कम 15-20 साल तो तिहाड़ से निकलने वाला नहीं है और जब तू 15-20 साल में जेल से छूटेगा तो तेरी हड्डियाँ बैठ चुकी होंगी और जो यह तेरा हौसला है, ख़त्म हो चुका होगा और फिर से मुझ पर हँसने लगे। फिर हँसते-हँसते ही बोले कि भई, अगर 15-20 साल से पहले तुझे जवान हड्डियों के साथ अफ़ग़ानिस्तान जाना है तो तुझे जेल से भाग कर ही जाना पड़ेगा, लेकिन परेशानी यह है कि तुझ पर कड़ा पहरा है हम 15 पुलिस वालों के होते हुए तो तू इस जन्म में नहीं भाग पायेगा। अगर अफ़ग़ानिस्तान जाने की ज़्यादा जल्दी हो तो दूसरा जन्म ले ले, क्योंकि उससे तो जल्दी चला जायेगा। हो सकता है कि तेरा जन्म ही अफ़ग़ानिस्तान में हो जाये।

ये पुलिस वाले मेरा मज़ाक़ बना रहे थे तो मुझे ग़ुस्सा तो बहुत आ रहा था, लेकिन फिर भी मैंने उन्हें ऐसे दिखाया कि मैं उनसे सिर्फ अपने अफ़ग़ानिस्तान जाने की बात मज़ाक़ में कर रहा था, क्योंकि अगर उन्हें ऐसा लगता कि मैं काफ़ी सीरियस हूँ तो वे मेरी रिपोर्ट लिख सकते थे कि मैं दोबारा भागने की प्लानिंग बनाने लगा हूँ और इस बार मैं ऐसी कोई भी ग़लती नहीं करना चाहता था। मेरी मम्मी जी ने मुझे हमेशा एक बात बतायी थी कि कभी भी काम होने से पहले उस काम का ंिढढोरा मत पीटो, क्योंकि जब वह काम हो जायेगा तो लोगों को ख़ुद ही पता चल जायेगा। काम का ंिढढोरा पहले पीटने से नज़र लग जाती है और काम न होने पर ऐसा इन्सान सभी की हँसी का पात्र बनता है, इसलिए इस बार मैं मम्मी की बात याद करके कि काम से पहले किसी को कुछ नहीं बता रहा था और सोच रहा था कि सारा देश ख़ुद ही टी.वी. न्यूज़ और अख़बार की हेड लाइन्स में देख लेगा कि शेर सिंह ने एशिया की सबसे सुरक्षित मानी जाने वाली जेल की सुरक्षा को कैसे मक्खन की तरह काट दिया।

पुलिस वालों ने मेरा जो मज़ाक़ आज उड़ाया था, उसे सोच कर मैं अपनी नई

https://t.me/Sahityajunction

प्लानिंग को जल्दी-से-जल्दी कामयाब करना चाहता था, इसलिए मैंने अपने दूसरे छोटे भाई विक्रम से इस बारे में बात की कि और उससे कहा कि यह मेरे और पूरे देश की इज़्ज़त का सवाल है। मैंने अपने भाई से बताया कि मैं अफ़ग़ानिस्तान जा कर आख़िरी हिन्दुस्तानी सम्राट की समाधि वापस भारत लाना चाहता हूँ और अफ़ग़ानिस्तान जाने के लिए मुझे जेल से भागना पड़ेगा, जिसमें मुझे तेरी मदद की आवश्यकता है। मेरा यह भाई विक्रम काफ़ी सीधा था, इसलिए मैंने इससे यह भी कहा कि तू चाहे तो मना कर सकता है, क्योंकि मैं जानता हूँ कि तू इस तरह के किसी चक्कर में नहीं पड़ता है। विक्रम ने मुझसे कहा कि भैया, आपकी यह बात ठीक है कि मैं किसी भी तरह का क्राइम नहीं करना चाहता और आपको जेल से भगाना या भागने में मदद करना क्राइम ही है, लेकिन आपने जो मक़सद अपने भागने का बताया आपके उस मक़सद को पूरा करने के लिए आप जैसा कहेंगे मैं वैसा ही करूँगा, क्योंकि आपके अफ़ग़ानिस्तान से समाधि वापस भारत लाने से हमारे देश की और हमारे पूरे परिवार की ख़ूब इज़्ज़त बढ़ेगी। आप मुझे बता दीजिए कि मुझे क्या करना है जिससे आप जेल से बाहर जा कर अफ़ग़ानिस्तान जा सकें।

मैंने विक्रम को अपने भागने की पूरी प्लानिंग बतायी, जो मैंने इससे पहले किसी को नहीं बतायी थी, और इस प्लानिंग को पूरा करने के लिए मैंने उससे 2-3 विश्वास वाले बहादुर लोगों का जल्दी से इन्तज़ाम करके मुझसे मिलवाने के लिए कहा जिससे मैं उन्हें उनका काम समझा सकूँ। विक्रम ने मुझ से कहा कि भैया, इस काम में जो ख़र्चा होगा, वह कहाँ से आयेगा? घर से पैसे लेने के लिए तो मम्मी को बताना पड़ेगा कि किस काम के लिए पैसे चाहिएँ। मैंने उससे कहा कि मम्मी से तुझे वकील को देने के लिए पैसे दिलवा दूँगा, लेकिन तू वकील को पैसे मत देना और मेरे बताये अनुसार मुझे भगाने में वे पैसे ख़र्च करना और किसी भी हालत में मेरे भागने की प्लानिंग की बात मम्मी या पापाजी को मत बताना।

जब मैं रुड़की कोर्ट में पेश होने रुड़की गया तो मैंने मम्मी से 75 हज़ार रुपये विक्रम को देने के लिए कहा जिससे विक्रम उन पैसों को मेरे वकील को दे सके। 75 हज़ार की बात सुन कर मेरी मम्मी जी बोली कि वकील को पैसे तो क्षत्रिय महासभा वाले दे रहे हैं, क्योंकि उन्होंने ही तुम्हारे पूरे केस का ख़र्चा उठाने के लिए कहा हुआ है, फिर हमें 75 हज़ार देने की क्या ज़रूरत है। मैंने कहा मम्मी जी, आप नहीं समझतीं, वकील को ये पैसे केस लड़ने के लिए नहीं देने हैं; वे तो क्षत्रिय महासभा दे रही है, यह मुझे मालूम है। ये 75 हज़ार तो वकील को उसके केस में कुछ सिंटग के लिए देने हैं, जिससे हमारी ज़मानत हो सके। मैंने पैसों के लिए मम्मी से कभी झूठ नहीं बोला था, लेकिन अभी मजबूरी थी, क्योंकि जेल से भागने की बात बताने पर मेरी मम्मी इस बात पर कभी राज़ी न होती कि मैं जेल से भागूँ और यही कहती कि हमें अपने देश के क़ानून पर विश्वास है और तुम सभी को जज साहब जल्दी ही छोड़ देंगे।

मम्मी को मेरी बात समझ में आ गयी और उन्होंने विक्रम को 75 हज़ार रुपये दे दिये। रुड़की की तारीख़ पर ही विक्रम ने मुझे 2 लड़कों से मिलवाया, जिसमें एक का नाम सुनील और दूसरे का नाम सन्दीप था। दोनों को मैं पहले से जानता था और मुझे पता था कि ये लोग इतने बहादुर नहीं हैं, जितने मुझे इस काम के लिए चाहिएँ, लेकिन मुझे यह भी पता था कि ये दोनों भरोसे वाले लोग हैं और मैं इन्हें ट्रिंनग दे कर इन्हें उतना

https://t.me/Sahityajunction

बहादुर बना सकता हूँ जितना मुझे अपने काम की सफलता के लिए चाहिये। मैंने दोनों से बात की तो वे बोले कि भैया आप जैसा कहेंगे, हम वैसे ही और वही काम कर देंगे, अगर आप किसी को मारने के लिए कहेंगे तो हम किसी को भी मार देंगे, बस आप काम बताइये।

अपनी जेल एस्केप की थोड़ी-सी जानकारी मैंने सुनील और सन्दीप को रुड़की कोर्ट में दी और उन्हें दिल्ली तिहाड़ जेल में अपनी मुलाक़ात पर बुला लिया। मैंने सोचा अगर दिल्ली तक मिलने आयेंगे तो इसका मतलब होगा कि ये लोग काम करने के इच्छुक हैं। दोनों ही अगले हफ़्ते मेरी मुलाक़ात करने के लिए दिल्ली आ गये। मैंने दोनों से अपनी प्लानिंग बतायी कि तुम दोनों को दिल्ली पुलिस की वर्दी पहन कर जिस दिन और जिस समय मैं कहूँ, जेल में अन्दर आना है और मुझे हथकड़ी लगा कर अपने साथ यह कह कर ले जाना है कि तुम मुझे कोर्ट में पेशी पर रुड़की ले जा रहे हो।

मेरी बात सुन कर दोनों घबरा से गये क्योंकि उन्हें शायद यह काम किसी को गोली मारने से भी ज़्यादा बड़ा लग रहा था। मैंने दोनों का उतरा चेहरा देखा तो मैंने कहा कि क्या हुआ, यह काम तो बहुत आसान है, तो वे बोले कि भैया यह काम सुनने में आसान है, लेकिन करने में मुश्किल, क्योंकि आपके कहे अनुसार जब हम जेल की ड्यूटी में पुलिस की वर्दी पहन कर आयेंगे तो हमें कोई भी पहचान सकता है, क्योंकि हमें जेल की ड्यूटी के बारे में कुछ भी नहीं पता है कि हमें ड्यूटी में किससे बात करनी है और कौन-कौन से काग़ज़ात जेल अफ़सरों को दिखाने हैं और उनसे लेने हैं। मैंने उन्हें काफ़ी देर समझाया, लेकिन उनका डर दूर नहीं हुआ तो मेरे दिमाग़ में एक आइडिया आया, जो इस समस्या के लिए मैंने पहले ही सोच रखा था। मैं दावे के साथ आज कहता हूँ कि तिहाड़ जेल एस्केप सिर्फ मेरे इस आइडिया के कारण ही सफल हो पायी, क्योंकि यही आइडिया था जिसने इन दोनों में हौसला पैदा किया, और मैं जानता हूँ, कि यही आइडिया किसी से भी यह काम करवा सकता था।

मैंने दोनों से कहा कि अच्छा तुम पुलिस वाला बनना छोड़ो उसके लिए मैं दूसरे लड़के तैयार करूँगा और मुझे जेल से भागना है, यह बात भी तुम अपने दिमाग़ से निकाल दो। तुम यह बात किसी से मत करना। मैंने उनसे आगे कहा कि तुम दोनों मुझ से मिलने दिल्ली तक आये हो, इसका मतलब है कि तुम लोग कुछ-न-कुछ तो मेरे लिए करना चाहते हो, इसलिए तुम्हें एक काम बताता हूँ, जो ज़्यादा मुश्किल भी नहीं है और मुझे फूलन देवी वाले मेरे केस में भी सहायता देगा।

दोनों ने कहा कि आप बताइए हमें क्या करना है तो मैंने कहा कि फूलन देवी केस से सम्बन्धित कुछ बहुत ज़रूरी जानकारियाँ मुझे अपने भाई विक्रम को भेजनी पड़ती हैं और वह भी मुझे कुछ जानकारियाँ केस की भेजता है, लेकिन विक्रम हर समय मुझसे मिलने दिल्ली नहीं आ पाता, इसलिए केस से सम्बन्धित ये जानकारियाँ तुम दोनों मुझे रुड़की से अलग-अलग एक-एक बार आ कर दे दिया करो। रुड़की से जब भी तुम दिल्ली मेरे पास आओगे, विक्रम तुम्हें आने-जाने का ख़र्चा दे दिया करेगा और ऊपर से भी तुम उससे अपने ख़र्चे के लिए पैसे ले लेना, क्योंकि वह तुम्हारा भाई ही है।

दोनों ने तुरन्त हाँ कर दी और बोले कि भैया, यह काम हम कर देंगे और विक्रम भाई जब भी हमें आपके पास दिल्ली कोई मैसेज दे कर भेजेंगे, हम में से कोई भी एक आपके

https://t.me/Sahityajunction

पास आ जायेगा। मैंने कहा कि ठीक है, तुम अब रुड़की जाओ, जब विक्रम कहे तो मुझसे आ कर मिलना। दोनों रुड़की चले गये। अगले हफ़्ते विक्रम मुझसे मिला तो मैंने उससे कहा कि दोनों विश्वास वाले हैं, लेकिन मन में अभी डर है, फिर भी मैं इनका डर निकाल कर इनसे अपना काम करवा लूँगा। मैंने विक्रम से कहा कि वह रुड़की जा कर किसी भी नाम के अलग-अलग दो आइडेण्टिटी कार्ड, जो साबित करें कि ये दोनों रुड़की के वकील हैं, बनवा दे और उन पर सन्दीप और सुनील की फ़ोटो लगवा दे।

विक्रम ने कहा कि दोनों का वकील का आई-कार्ड तो बन जायेगा, लेकिन उससे क्या होगा। मैंने कहा, यही आई कार्ड इन्हें दे कर इन्हें मेरी लीगल मुलाक़ात पर जेल में भेजना है, मतलब यह कि इन्हें नक़ली वकील बन कर मुझ से एक-एक करके जेल की ड्यूटी में मुलाक़ात करनी है। विक्रम ने कहा कि अगर दोनों फ़र्ज़ी वकील बन कर आपसे मुलाक़ात करने से भी डरें तो क्या करूँ। मैंने कहा कि वे फ़र्ज़ी वकील बन कर मुझसे मिलने में भी डरेंगे, इसलिए तुम दिल्ली का एक असली वाला बहुत सस्ता-सा वकील करो और उसे मेरी लीगल मुलाक़ात पर जेल में मिलने भेजो। जब यह असली वकील मुझसे मिलने जेल में आये तो तुम्हें इस असली वकील के साथ पहले सुनील को वकील बना कर मेरे पास भेजना है। सुनील को तुम बता देना कि तुम्हें कुछ नहीं करना है, बस एक दिल्ली के वकील के साथ अन्दर जेल में भैया से मिल कर आना है। मैंने सुनील को वकीलों की ड्रेस–सफ़ेद कमीज़ और काली पैंट—भी ख़रीद कर देने के लिए बोल दिया।

थोड़े ही दिन में एक असली वकील के साथ सुनील उसका जूनियर वकील बन कर मुझ से आ कर जेल की डचटी में मिला। मैंने दोनों से इधर-उधर की फ़ालतू की बातें की और सुनील से पूछा कि अब तो तुमने देख लिया है कि वकील साहब कैसे लीगल मुलाक़ात करते हैं, तो सुनील ने कहा कि हाँ, भैया, यह तो बहुत आसान है, सिर्फ एक ऐप्लीकेशन देनी है और अपना आई कार्ड दिखाना है, और फिर आपसे मुलाक़ात हो जायेगी। मैंने कहा ठीक है तो फिर तुम अगली बार से अकेले ही ख़ुद मेरी लीगल मुलाक़ात कर लेना और मैंने असली वकील साहब की तरफ़ इशारा करते हुए कहा कि इन्हें अब परेशान मत करना और अकेले ही आना, लेकिन जब भी तुम्हें ज़रूरत पड़े तो इन्हें अपने साथ ला सकते हो। सुनील ने कहा, ठीक है भैया।

फिर मैंने सुनील और असली वकील को पूरी ड्यूटी एक तरफ़ पर खड़े हो कर दिखाई और समझाया कि ड्यूटी में कहाँ से कौन-सा काम होता है? और फिर दोनों को वापस भेज दिया। थोड़े दिन बाद मैंने सुनील को फिर से वकील की वर्दी और मिलने के लिए बुलाया। इस बार सुनील अकेला ही वकील बन कर मुझसे ड्यूटी में मिला और हम दोनों ने आपस में काफ़ी देर तक बात की। आज मैंने सुनील को खुल कर जेल की ड्यूटी का काम समझाया और यह भी बताया कि जो कोर्ट की तारीख़ पर जाते हैं, उन्हें पुलिस वाले कैसे और किस सीट पर बैठे जेल अफ़सर से अपनी कौन-कौन-सी कार्रवाई करके ले जाते हैं। ऐसे ही सुनील मेरे कहने से 4-5 बार वकील बन कर मुझसे तिहाड़ जेल नं. 1 की ड्यूटी में मिला।

जब मैंने देखा कि जेल की ड्यूटी में फ़र्ज़ी तरह से आने में सुनील को, जो पहले डर लगता था, वह अब बिलकुल ख़त्म हो गया है, तो मैंने सुनील को कहा कि अब तुझे

https://t.me/Sahityajunction

सन्दीप को भी अपने साथ अपना जूनियर वकील बना कर मेरे से जेल की ड्यूटी में ला कर मिलवाना है। विक्रम से सन्दीप के लिए भी एक आई-कार्ड वकील होने का ले लेना और उसी आई-कार्ड पर सन्दीप को मुझसे ला कर मिलवाना। जैसा मैंने समझाया सुनील ने वैसे ही किया और सन्दीप को मुझसे जेल की ड्यूटी में वकील बना कर मिलवा दिया। सुनील मुझसे सन्दीप को मिलवाने के लिए जेल में लाने वाला था, तो मैंने सुनील से पहले ही बता दिया था कि सन्दीप को जब भी मुझसे मिलाने लाये तो उसकी दाढ़ी 8-10 दिन की बढ़ी हुई होनी चाहिये और ऐसा ही सुनील ने किया था।

सुनील ने मुझसे जब सन्दीप को जेल की ड्यूटी में वकील बना कर 23 बार मिलवा दिया और दोनों को ही जब मैंने जेल की ड्यूटी की पूरी कार्रवाई दिखा दी और वे समझ गये तो मैंने उन्हें रुड़की कोर्ट में मिलने के लिए बुलवाया। 10-12 दिन बाद में मुझे रुड़की कोर्ट में पेशी पर जाना था और मैंने इस बार सोच लिया था कि सन्दीप और सुनील से अब फिर बात करूँगा कि क्या वे पुलिस वाले बन कर भी वैसे ही आ सकते हैं जैसे वकील बन कर मुझसे जेल में मिलते हैं और मुझे पूरा विश्वास था कि अब उनका डर ख़त्म हो चुका था और वे मेरा काम कर देंगे।

रुड़की कोर्ट में जाने से पहले एक दिन तक अफ़ग़ानी आतंकवादी जिसका नाम ताज़ा ख़ान था और जो मेरे साथ हाई सिक्योरिटी वॉर्ड में था उससे पृथ्वीराज चौहान की समाधि के बारे में पूछा, तो वह और उसके साथ टहल रहे पाकिस्तानी आतंकवादी मुझ पर हँसने लगे और कहने लगे कि राणा भाई, आप हर थोड़े दिन में समाधि और अफ़ग़ानिस्तान के बारे में पूछते रहते हो, लेकिन हम आपको बता दे कि पूरे हिन्दुस्तान में ऐसा कोई माई का लाल पैदा नहीं हुआ है कि अफ़ग़ानिस्तान जा कर तालिबानियों से पृथ्वीराज चौहान की समाधि वापस ला सके। वैसे भी जब 800 साल में भारत में ऐसा कोई पैदा नहीं हुआ, जो अफ़ग़ानिस्तान से यह समाधि ला सके तो अब कहाँ से कोई लायेगा, और हम आपको गारण्टी देते हैं कि भारत सरकार में भी इतनी हिम्मत नहीं है जो वहाँ से समाधि या कोई भी चीज़ वापस भारत ला सके। वे आगे बोले कि राणा भाई, यह तो हम पठान ही हैं जो अपने वतन से इतनी दूर आ कर कुछ भी कर देते हैं, हिन्दुस्तानियों में इतनी हिम्मत नहीं है कि वहाँ जा सकें।

मैंने कहा कि यह बात तो तुम्हारी ठीक है कि 800 सालों में भी कोई समाधि को वापस नहीं लाया। अगर भारत-सरकार मुझे जेल से छोड़ दे तो मैं वहाँ जा कर उसे वापस ले आऊँगा। मेरी इस बात पर वे लोग पहले से भी ज़्यादा हँसने लगे और कहने लगे कि भारत सरकार तो पता नहीं आपको कब छोड़ेगी आप जेल से भाग जाइये और अफ़ग़ानिस्तान चले जाइये। मैंने कहा कि भाई तिहाड़ जेल से भागना तो बहुत मुश्किल काम है और यह तो एशिया की सबसे सॉलिड जेल मानी जाती है तभी तो तुम जैसे शरीफ़ भाइयों को यहाँ ला कर रखा हुआ है। मेरी बात सुन कर वे बोले कि राजा भाई जब आप तिहाड़ से नहीं भाग सकते तो अफ़ग़ानिस्तान से समाधि लाने का सपना भी मत देखिये, क्योंकि तालिबानियों के गढ़ से कुछ भी लाना तिहाड़ से भागने के मुक़ाबले हज़ारों गुना मुश्किल काम है। मैंने कहा ठीक भाई, समय आप लोगों को बतायेगा कि भारत में कितने बहादुर लोग हैं और आप देखना कि आप लोग सुनेंगे कि उस समाधि को भारत ले आया गया है।

https://t.me/Sahityajunction

इन आतंकवादियों ने और कुछ समय पहले दिल्ली कोर्ट में पेशी पर जाते समय पुलिस वालों ने जो मेरा मज़ाक़ बनाया था, उस ने मेरे अन्दर और भी ज़्यादा जज़्बा भर दिया कि मैं यह समाधि वापसी वाला काम जल्दी से जेल से भाग कर पूरा करूँ। जब मैं कोर्ट की तारीख़ पर रुड़की गया तो मैंने वहाँ जा कर सुनील और सन्दीप से पूछा कि तुम दोनों मुझ से इतनी बार फ़र्ज़ी वकील बन कर जेल की डयूटी में मिले, क्या तुम्हें जेल के किसी कर्मचारी ने कुछ कहा? तो वे बोले नहीं। मैंने कहा कि अगर तुम इसी तरह से वकील की जगह पुलिस की वर्दी पहन कर डयूटी में आओगे तो भी तुमसे कोई कुछ नहीं पूछेगा। मेरी बात सुन कर इस बार वे दोनों पहले की तरह नहीं डरे। दोनों मुझ से बोले कि भैया, अगर हम तैयार भी हों तो हम वर्दी और दूसरे सामान जैसे हथकड़ी, पिस्टल, पुलिस का आई कार्ड वग़ैरा कहाँ से लायेंगे। मैंने कहा उसकी चिन्ता तुम मत करो, जिस चीज़ की भी ज़रूरत पड़ेगी मैं इन्तज़ाम करवा दूँगा, तुम बस हाँ करो। वे दोनों बोले, ठीक है भैया, आप जैसा कहेंगे हम कर देंगे।

मैंने फिर विक्रम को अपने पास बुलाया और उससे कहा कि इन दोनों के लिए ख़ाकी कपड़ा ले कर पुलिस की वर्दी किसी ऐसे दर्ज़ी से सिलवा दे जो पुलिस की यूनीफ़ॉर्म सिलना जानता हो, इसके अलावा मैंने उसे अलीगढ़ से एक पुरानी हथकड़ी भी ख़रीद कर लाने के लिए कहा और यह भी बताया कि अलीगढ़ में कहाँ से हथकड़ी मिल जायेगी। हथकड़ी की दुकान के बारे में मैंने एक पुलिस वाले से बातों-बातों में ही पूछ लिया था। पुलिस की वर्दी पर लगने वाले मोनोग्राम और बेल्ट, टोपी भी मैंने विक्रम के द्वारा ख़रीदवा कर रखवा ली। जब पूरी पुलिस की वर्दी विक्रम ने दोनों के लिए तैयार करवा दी तो मैं ने तीनों को दिल्ली अपने पास बुलवाया और यह भी सन्देश उन्हें दिया कि पुलिस की वर्दी भी अपने बैग में रख कर साथ लायें। तीनों मुझ से दिल्ली में कोर्ट में मिले। जेल में बुला कर उनसे मुलाक़ात करनी मैंने अब बन्द कर दी थी क्योंकि जेल में ज़्यादा मुलाक़ात करने से दोनों को जेल कर्मचारी पहचान सकते थे कि ये लोग तो पहले वकील बन कर मुलाक़ात करते थे और अब पुलिस की वर्दी में कैसे आ गये।

दिल्ली कोर्ट में मैंने इन्हें समझाया कि तुम दोनों पुलिस की वर्दी पहन कर एक-दो दिन कुछ घण्टे दिल्ली में ऐसे ही इधर-उधर घूमो। मैंने उन दोनों को यह नहीं बताया कि पहले शाम के समय अँधेरा होने पर पुलिस की वर्दी पहन कर घूमना और फिर जब तुम्हारा डर निकल जाये तो दिन में ऐसे ही वर्दी पहन कर इधर-उधर घूमना।

पुलिस की वर्दी पहन कर घूमने के लिए मैंने इन्हें इसलिए कहा था, क्योंकि मैं इनका डर दूर-दूर तक ख़त्म करवाना चाहता था, क्योंकि मुझे पता था कि नया आदमी अगर पुलिस की वर्दी पहनेगा और वह भी जब वह पुलिस वाला न हो तो वह शुरू-शुरू में थोड़ा अटपटा महसूस करेगा और उनकी वही झिझक मैं दूर करना चाहता था। मैंने उन्हें यह भी समझाया था कि जब पुलिस की वर्दी पहन कर तुम इधर-उधर घूमो तो पहले शुरू में वर्दी पर पुलिस के मोनोग्राम मत लगाना, सिर्फ ख़ाकी पैण्ट-शर्ट पहन कर घूमना, जिससे कि अगर कोई पुलिस वाला या अन्य आदमी वर्दी के बारे में पूछ-ताछ भी करे तो उसे तुम बता सको कि तुम लोग किसी प्राइवेट सिक्योरिटी कम्पनी में काम करते हो और उस प्राइवेट सिक्योरिटी एजेन्सी की वर्दी ख़ाकी पैण्ट-शर्ट है।

जब तुम्हें ख़ाकी पैण्ट-शर्ट पहनने की आदत हो जाये तो तब तुम इस पर मोनोग्राम

https://t.me/Sahityajunction

और बेल्ट भी लगा कर घूमना। उन्होंने मेरे कहे अनुसार ऐसा ही किया और जब वे कुछ दिनों बाद मुझे मिले तो वह पुलिस की पूरी वर्दी पहन कर कहीं भी आने-जाने में परफ़ेक्ट हो चुके थे। जब मैंने देख लिया कि अब ये दोनों मुझे जेल से भगाने का पुलिस वाला बन कर सकते हैं तो मैंने दोनों से पूछा कि क्या अब तुम मेरे कहे अनुसार मुझे जेल से पुलिसमैन बन कर भगवा सकते हो तो दोनों बोले, भैया, हम दोनों तो पुलिस की वर्दी पहन कर आप जहाँ कहें वहाँ आ सकते हैं, क्योंकि हमारा डर निकल गया है, लेकिन परेशानी यह है कि हम तो सिर्फ दो लोग है और आपके साथ तो 14 पुलिस वाले तारीख़ पर आते हैं, अगर जेल में हमसे कोई पूछेगा कि और पुलिस वाले कहाँ हैं? तो हम क्या जवाब देंगे?

मैंने उन्हें समझाया कि तुम दो ही बहुत हो, तुम दोनों को भी एक साथ जेल के अन्दर नहीं आना है, सिर्फ सन्दीप अन्दर जेल की ड्यूटी में आयेगा और सुनील पुलिस की वर्दी पहन कर जेल के गेट के बाहर खड़ा रहेगा। मैंने उन्हें पूरी तरह से समझाया कि कैसे किसी मुलज़िम को पुलिस वाले जेल वालों से ले जा कर कोर्ट में पेश करते हैं। मैंने उन्हें यह भी बताया कि भले ही मेरे साथ 14 पुलिस वाले कोर्ट पेशी पर आते हैं, लेकिन जब ये 14 पुलिस वाले मुझे जेल से कोर्ट में पेश करने के लिए लेते हैं, तो सिर्फ इनमें से एक पुलिस वाला ही कमाण्ड ले कर जेल की ड्यूटी के अन्दर आता है और जेल रजिस्टर में अपनी एण्ट्री करवा कर सीधा ड्यूटी अफ़सर से जा कर बोलता है कि शेर सिंह को रुड़की कोर्ट में पेश करने के लिए ले जाना है। कमाण्ड उस काग़ज़ को बोलते हैं जिसमें उन सभी पुलिस वालों के नाम और रैंक लिखे रहते हैं जिनकी मेरे साथ कोर्ट-पेशी के लिए ड्यूटी लगी रहती है।

इसके बाद ड्यूटी अफ़सर उस सिपाही को ड्यूटी में ही मौजूद जेल के अन्दर ट्रायल ऑफिस में भेज देता है, जहाँ से उस पुलिस वाले को उस बन्दी की फ़ाइल और वॉरण्ट मिलेगा जिसे वह पुलिस वाला लेने आया है। वही ऑर्डर ट्रायल ऑफिस में ही उस पुलिस वाले को तब फ़ॉर्म भरना पड़ेगा, जिसमें यह लिखा होता है कि मैं इस मुलाज़िम को जेल वालों की कस्टडी से अपनी कस्टडी में कोर्ट पेशी कराने के लिए ले रहा हूँ। मेरी बात सुन कर वे दोनों थोड़ा कन्फ़्यूज़ हो गये। यह देख कर मैंने कहा कि देख भई सुनील, तुझे तो सिर्फ पुलिस की वर्दी पहन कर जेल की ड्यूटी के गेट के बाहर खड़ा होना है। तू मुझे बता कि इसमें क्या समस्या है? तो वह बोला कि भैया, मैं खड़ा हो जाऊँगा, बस आप मुझे एक पिस्टल जैसा पुलिस वालों के पास होता है वह दिलवा देना, मैंने कहा ठीक है, दिलवा दूँगा।

इसके बाद मैंने सन्दीप से पूछा कि तुझे वर्दी पहन कर अन्दर जेल की ड्यूटी में आना है और जैसे-जैसे और जिस-जिस तरह मैंने काम कराने के लिए अभी समझाया है, उनसे अपना काम करवाना है, तो सन्दीप बोला भैया, मुझे कुछ डर लग रहा है। मैंने कहा कि चल, तू मुझे यह बता कि तू पुलिस के सिपाही की वर्दी पहन कर जेल की ड्यूटी में आ जायेगा, अगर तू अन्दर ड्यूटी में आ जायेगा, तो मैं तुझे वहीं ड्यूटी में खड़ा हुआ मिलूँगा और वहीं तेरे साथ मिल कर ड्यूटी में अपने को कोर्ट तारीख़ पर ले जाने की सारी फ़ार्मेल्टी पूरी करवा दूँगा।

सन्दीप ने मेरी बात सुनने के बाद कहा कि ठीक है भैया, मैं पुलिस के सिपाही की

https://t.me/Sahityajunction

वर्दी पहन कर जेल की ड्यूटी में आ जाऊँगा, लेकिन उसके बाद की ज़िम्मेदारी आपकी होगी और सारी काग़ज़ी कार्रवाई आप ही पूरी करवाना। मैंने कहा, ठीक है, बस तू वर्दी पहन कर अन्दर ड्यूटी में आ जाना और बस एक बार यह कहना कि शेर सिंह को कोर्ट ले जाने के लिए दे दो उसके बाद मैं सारा काम सँभाल लूँगा। सन्दीप ने मुझसे पूछा कि भैया अगर किसी ने मुझसे ड्यूटी में पूछा कि तेरी पिस्टल कहाँ है, तो मैं क्या जवाब दूँगा?

मैंने उसे बताया कि जेल की ड्यूटी में किसी भी तरह का हथियार ले जाना सख़्त मना है। और कोई भी पुलिस वाला जेल की ड्यूटी में कोई भी हथियार ले कर नहीं आता, इसलिए तेरे हथियार के बारे में कोई नहीं पूछेगा। हाँ तेरे से सिर्फ यह पूछ सकते हैं कि तेरे साथ के दूसरे पुलिस वाले कहाँ है? तो तब तुझे बताना है कि सब लोग ड्यूटी के बाहर खड़े हैं और इसलिए मैं सुनील को जेल की ड्यूटी के बाहर खड़ा कर रहा हूँ जिससे कि अगर कोई तेरे साथ आये और पुलिस वालों के बारे में पूछे तो सुनील को बाहर खड़े हुए दिखा देना और कह देना कि शायद और लोग पास में ही चाय पीने गये हैं और इन्स्पेक्टर साहब थोड़ी देरी के बाद बाहर ही मिलेंगे।

जब विक्रम और वे दोनों मेरी पूरी बात समझ गये तो मैंने विक्रम से कहा कि तुझे ड्राइवर के साथ गाड़ी का इन्तज़ाम करना है जिससे हम जेल से बाहर निकल कर उसमें बैठ कर जा सकें।

विक्रम ने कहा कि गाड़ी का बन्दोबस्त मैंने पहले ही करवा रखा है, क्योंकि आपने मुझे पहले ही इसके लिए कहा था? मैंने आगे विक्रम से कहा कि जिस दिन ये दोनों मुझे जेल से भगाने का काम करेंगे, उस दिन तुझे रुड़की घर पर ही रहना है, क्योंकि मैं चाहता हूँ कि तेरा नाम इसमें नहीं आना चाहिये और तू पीछे रह कर ही सारा काम करवाना जिससे कि काम पूरा होने के बाद जब पुलिस वाले तेरे बारे में पता करें तो तू उन्हें रुड़की में ही घर पर मौजूद मिलना चाहिए। विक्रम ने कहा ठीक है भैया, मैं घर पर ही रहूँगा और वहीं से इन्हें समझा कर आपके पास दिल्ली भेज दूँगा।

मैंने कहा ठीक है, लेकिन सुनील को काम से पहले मुझ से आ कर जेल में एक दिन पहले वकील बन कर मिलना पड़ेगा। जिससे कि मैं अगले दिन पूरी अपनी तैयारी रखूँ और मुझे यह भी पता चल जाये कि सब कुछ ठीक-ठाक है और कल काम होगा। विक्रम ने कहा, ठीक है, सुनील को वकील बना कर आपके पास मुख्य काम से एक दिन पहले भेज दे दूँगा।

मैंने विक्रम को यह भी कहा कि दोनों को 25-25 हज़ार रुपये दे देना, क्योंकि जेल से बाहर निकलते ही मुझे पैसों की ज़रूरत पड़ेगी, तो मैं इनसे ये पैसे ले लूँगा और फिर बाद में तू मुझे और ज़्यादा पैसे जहाँ मैं कहूँ, वहाँ भिजवा देना। विक्रम ने कहा ठीक है, मैं इन्हें पैसे दे दूँगा। मैंने इन्हें इस समय ज़्यादा पैसे इसलिए नहीं दिलवाये थे, क्योंकि अगर काम की सफलता से पहले ये लोग पकड़े जाते तो बेवजह पैसे भी ख़राब जाते, इसलिए मैंने सोचा कि जब काम पूरा हो जायेगा तो अपने लिए और पैसे मँगवा लूँगा और इन्हें भी बाद में इनाम के रूप में कुछ पैसे दिलवा दूँगा।

इस मिंटग के बाद लगभग 15 दिन बाद मेरी रुड़की कोर्ट में पेशी की तारीख़ थी,

https://t.me/Sahityajunction

और उसी दिन के लिए यह सब तैयारी की द्रयी थी और उसी दिन इन लोगों ने मुझे मेरे कहे अनुसार जेल से भगाना था। जिस दिन इन्हें मुझे तिहाड़ जेल से भगाना था। वह शुभ दिन था मंगलवार, 17 फ़रवरी, 2004 और इसी दिन का मैं बेसब्री से इन्तज़ार कर रहा था।

इस बार मैंने जेल के अन्दर अपने साथ बन्द भाई विजय और शेखर के अलावा किसी को भी अपनी प्लानिंग के बारे में नहीं बताया था और इसीलिए किसी ने भी मेरी कोई शिकायत किसी से नहीं की थी और सभी काम ठीक से हो रहे थे। 17 फ़रवरी, 2004 से पहले 13 फरवरी को जब मैं दिल्ली कोर्ट में पेश होने गया तो कोर्ट लॉक-अप में मैंने अपने छोटे भाई विजय को पूरी प्लानिंग बता दी और यह भी बता दिया कि इस 17 तारीख़ को मैं जेल एस्केप करूँगा। मेरे जेल एस्केप के बाद जेल में और बाहर जो परिस्थितियाँ हो सकती थीं वे भी मैंने उसे समझा दी थीं। अपने दूसरे साथियों को मैंने 17 तारीख़ को भागने का अपना इरादा बता दिया, लेकिन भागने की प्लानिंग खुल कर नहीं बतायी।

मेरे 17 तारीख़ को भागने की बात सुन कर राजवीर ने कहा कि भाई साहब, मैं आपके भागने के बाद तब तक हर मंगलवार को हनुमान जी का व्रत रखूँगा जब तक आप अफ़ग़ानिस्तान से हमारे आख़री हिन्दुस्तानी सम्राट पृथ्वीराज चौहान की समाधि वापस भारत नहीं ले आयेंगे। और ऊपर वाले से आपकी विजय के लिए प्रार्थना करूँगा। मैंने कहा, राजवीर भाई, आपका बहुत धन्यवाद जो आपने अपने विचार मेरे लिए बताये और आप चिन्ता न करें, मैं जल्दी ही अफ़ग़ानिस्तान जा कर समाधि वापस ले कर आऊँगा। इसके बाद हम सभी कोर्ट में पेश होने गये तो दिल्ली का जज हमें अगली तारीख़ 17 फ़रवरी ही देने लगा।

मैंने कहा सर, 17 फ़रवरी मत दीजिए मेरे वकील साहब नहीं आ पायेंगे तो वह बोला कि मैं 17 फ़रवरी ही दूँगा। अगर दिल्ली की कोर्ट में भी मुझे 17 फ़रवरी की तारीख़ ही मिल जाती तो मेरा सारा जेल स्कैप का प्लान फ़ेल हो जाता, क्योंकि तब जेल वाले मुझे रुड़की कोर्ट तारीख़ पर पेश होने के लिए नहीं भेजते। इसलिए मेरे साथ मेरे साथियों ने जज साहब को कहा कि 17 फ़रवरी के बाद की कोई भी तारीख़ दे दीजिए, मैंने दोबारा अपने वकील से भी कहलवाया तो जज साहब ने 17 फ़रवरी न दे कर आगे की तारीख़ दे दी। इसके बाद हम सभी वापस आ गये।

https://t.me/Sahityajunction

28. फ़रारी

बेसब्री से इन्तज़ार करते-करते 16 फ़रवरी का दिन भी आ गया और शाम को मेरे वॉर्ड का हेड वॉर्डर मेरे पास आया और बोला कि आपका वकील मिलने आया है, आप तैयार हो जाइये। डयूटी चलना है लीगल मुलाक़ात के लिए। मैंने कहा ठीक है और फिर मैं जल्दी से तैयार हो कर डयूटी में उस हेड वॉर्डर के साथ चला गया। जब डयूटी में मैं उस ऑफिस में पहुँचा जिस ऑफिस में वकीलों से मुलाक़ात करवायी जाती थी, तो मैंने देखा कई अन्य वकीलों के बीच में अपना सुनील भी वकील बन कर मुझसे मिलने के लिए बैठा है। मैंने सुनील से बात की और अगले दिन 17 फ़रवरी को सुबह हर हाल में 6.30 बजे तक जेल में आने के लिए बताया। मैंने कहा सुनील, जेल वाले सुबह 6 बजे से मुलज़िमों को तारीख़ पर भेजना शुरू कर देते हैं और मुझे लेने के लिए असली पुलिस वाले हमेशा 6.45 से 7 बजे के बीच में आते हैं, इसलिए 6.30 से पहले-पहले ही तुम दोनों आ जाना और सन्दीप को डयूटी में भेज कर तुम गेट पर पिस्टल ले कर खड़े हो जाना। पिस्टल मैंने एक जगह से इन्तज़ाम करके होल्स्टर के साथ सुनील को दिलवा दी थी।

दूसरी और भी बातें समझा कर मैंने वकील बने सुनील को वापस भेज दिया। जब डयूटी से मैं अपने वॉर्ड में वापस आने लगा तो मैंने देख कि मेरा एक ख़ास जेल अफ़सर कुछ लोगों की पिटाई कर रहा है। मैं उस जेल अफ़सर के पास गया और जिनकी पिटाई हो रही थी, उन्हें उस अफ़सर से छुड़वा दिया और उनसे पूछा कि सर, आप हमेशा पिटाई ही करते रहते हैं तो वह बोला शेर सिंह, बात यह है कि अगर आप किसी हिन्दी बोलने वाले के सामने चाइनीज़ में बात करेंगे, तो उस हिन्दी बोलने-समझने वाले को चाइनीज़ भाषा का एक शब्द भी समझ में नहीं आयेगा, इस तरह से ये लोग भी प्यार की भाषा नहीं समझते हैं इन्हें सिर्फ डण्डे की भाषा समझ में आती है, इसलिए इन जैसे लोगों से मैं इसी भाषा में बात करता हूँ।

इस अफ़सर के साथ इस समय एक साधु जो जेल में किसी केस में बन्द था, वह भी खड़ा था। मैंने साधु को नमस्कार किया तो वह मुझसे बोले कि तुम जेल में ज़्यादा समय तक नहीं रहोगे। साधु की यह बात सुन कर वह जेल अफ़सर साधु से बोला कि साधु महाराज आप जिनके लिए बोल रहे है, उन्हें जानते भी हैं किस केस में हैं और फिर साधु को मेरा परिचय दिया तो साधु ने कहा कि मैंने जो कह दिया, वही होगा। मैं मन-ही-मन में सोचने लगा कि शायद इस साधु की बात कल ही सच हो जायेगी और मैं सफलतापूर्वक जेल से भाग जाऊँगा। जब मैं अपने वॉर्ड में वापस आया तो शेखर मेरा बड़ी बेचैनी से इन्तज़ार कर रहा था। वह मेरे पास आया और बोला कि सब ठीक है, मैंने कहा हाँ सब ठीक है और कल ऊपर वाले की कृपा से मैं चला जाऊँगा। मैंने शेखर को भी अपने भाग जाने के बाद की हालत के बारे में बताया और उसे कैसे सँभालना है, यह भी समझाया। थोड़े दिन पहले मैंने एक रंगीन टी.वी. अपने देखने के लिए जेल के बाहर से ख़रीदवा कर मँगवाया था। मैंने शेखर से कहा कि यह टी.वी. और कुछ सामान मेरे जाते ही उन लोगों को दे देना, जो हमारे ख़ास थे, क्योंकि मेरे भागने के बाद मेरी सारी चीजें जेल वाले अपने क़ब्ज़े में ले लेंगे।

https://t.me/Sahityajunction

यह मुझे पहले ही मालूम था, इसलिए चीजें जेल वाले अपने किसी परिचित के काम आ जायें इसलिए शेखर से मैंने यह भी बताया कि जैसे ही जेल का अलार्म बजे, तुम समझ जाना कि मैं कामयाब हो कर भाग गया हूँ और फिर उसके तुरन्त बाद ही यह सामान इधर-उधर दे देना। इसके बाद मैंने और शेखर ने अपने बचपन से ले कर अब तक की कई बातें याद कीं और मैंने शेखर से अपनी कामयाबी के लिए ऊपर वाले से प्रार्थना करने के लिए कहा। मैंने शेखर से कहा कि तू बिलकुल अपनी चिन्ता मत करना मैं बाहर जा कर पहले समाधि वाला काम पूरा करूँगा और फिर तुम सबके लिए कुछ करूँगा। संजय ने मुझे और शेखर को काफ़ी देर आपस में अकेले बातें करते देखा तो बोला कि क्या बात है, आज आप दोनों अकेले में कोई ख़ास बातें कर रहे हो क्या? मैंने कहा संजय भाई, मैं शेखर से बोल रहा था कि मेरा चार साल का भान्जा, जिसका नाम मानस है, घर पर बहुत शरारत करता है, उसकी शरारतें कैसे कम होंगी तो शेखर कह रहा है कि मैं आपकी फ़ोटो मानस को दिखा दूँ और बोल दूँ, कि अगर शरारत करेगा तो इन फ़ोटो वाले अंकल के पास भेज देंगे। संजय मेरी बात सुन कर बोला आप लोग हमेशा मेरा ही मज़ाक़ उड़ाते रहते हो।

इसके बाद जेल के अन्दर चक्कियों में बन्द करने का समय हो गया तो हम लोग अपनी चक्कियों सेल में बन्द हो गये। अगले दिन 17 फ़रवरी थी जिसका मुझे बहुत दिनों से इन्तज़ार था। मैं सुबह 5 बजे सो कर उठा और फ्रेश हो कर अपनी पूजा पाठ की और कपड़े पहन कर और नाश्ता करके ठीक सुबह 6 बजे तक तैयार हो गया, इतने में शेखर भी आ गया और मुझसे पूछा कि आप तैयार हो गये, तो मैंने कहा हाँ तैयार हो गया बस थोड़ी देर में तारीख़ पर जाने के लिए ड्यूटी में जाऊँगा। फिर शेखर को मैंने अपने गले से लगाया और कुछ और बातें समझायीं जो उसे मेरे भागने के बाद करनी थीं। सुबह 6.15 बजे मैं ड्यूटी के दरवाज़े पर अपना बैग ले कर पहुँचा और ड्यूटी का दरवाज़ा खटखटाया तो उधर से हेड वॉर्डर जिसको मैंने पहली ही बार देखा था आया और ड्यूटी का छोटा दरवाज़ा खोल कर मुझसे पूछा कि क्या बात है। मैंने कहा कि मेरी आउट स्टेशन रुड़की की तारीख़ है, मुझे ड्यूटी के अन्दर ले लीजिये। वह बोला तुम्हारा नाम क्या है? तो मैंने कहा शेर सिंह राणा।

नाम सुनते ही वह समझ गया कि मैं कौन हूँ, क्योंकि वह नया इस जेल में ट्रान्सफ़र हो कर आया था, इसलिए मुझे पहचानता नहीं था। इस हेड वॉर्डर का नाम रमेश था। हेड वॉर्डर ने मुझसे कहा कि आपका गेट पास अभी नहीं आया है, मैंने कहा गेट पास कहाँ से आना है, तो हेडवॉर्डर बोला कि चक्कर से आयेगा। मैंने कहा ठीक है मैं 'चक्कर' पर जा कर गेट पास भिजवाता हूँ, क्योंकि गेट पास के बिना हेड वॉर्डर मुझे ड्यूटी में नहीं आने दे रहा था और इस गेट पास के बिना जेल का हेड वॉर्डर मुझे पुलिस वालों के सुपुर्द भी नहीं करने वाला था। गेट पास ड्यूटी में भिजवाने के लिए मैं चक्कर की तरफ़ तेज़ी से चलते हुए जाने लगा और सोचने लगा कि कहीं अगर मेरे ड्यूटी में पहुँचने से पहले सन्दीप पुलिस की वर्दी में आ गया और मुझे ड्यूटी में न पा कर डर गया तो बहुत मुसीबत हो जायेगी। यह बात दिमाग़ में आयी तो मैं परेशान होने लगा। बहरहाल, इतने में ही मैं चक्कर पर पहुँचा और वहाँ पर मौजूद चक्कर-मुंशी त्यागी से बोला भाई साहब मुझे रुड़की तारीख़ पर जाना है, मेरा गेट पास आपने अभी तक ड्यूटी नहीं भिजवाया। मेरी बात सुन कर चक्कर मुंशी त्यागी बोला कि राणा भाई साहब आपका गेट पास अभी

https://t.me/Sahityajunction

आपके आने से दो मिनट पहले ही ड्यूटी के लिए यहाँ से भेजा है, अगर आप इस बीच गार्डेन वाले रास्ते से ड्यूटी जायेंगे तो हो सकता है आपको वह लड़का बीच में ही मिल जाये, जिसके हाथ मैंने वह गेट पास भेजा है।

मैंने कहा ठीक है मैं ड्यूटी में दोबारा पता करता हूँ मैं दोबारा भागता हुआसा बीच वाले गार्डेन के रास्ते से, जो थोड़ा शार्ट कट था, ड्यूटी के गेट पर पहुँचा और फिर दरवाज़ा खटखटाया, तो वही हेड वॉर्डर आया। मैंने कहा कि मेरा गेट पास चक्कर से ड्यूटी भेज दिया है, आप चेक करवाइये। इस हेड वॉर्डर ने वही खड़े-खड़े ड्यूटी के अन्दर मौजूद सिपाही से गेट पास के बारे में पूछा तो वह बोला—हाँ, गेट पास आ गया है, यह मेरे पास है। मैंने कहा हेड साहब अब मुझे ड्यूटी के अन्दर ले लीजिए, तो वह बोला जब आपकी पुलिस गार्ड आ जायेगी तब मैं आपको ड्यूटी के अन्दर ले लूँगा और एकदम से दरवाज़ा बन्द करके दूसरे काम करने दूसरी तरफ़ चला गया।

मैं ड्यूटी के गेट पर जो जेल की तरफ़ था, खड़ा था और क्योंकि इस समय घड़ी में टाइम 6.30 बजे के आस-पास हो चुके थे। मेरे मन में एक बेचैनीसी हो रही थी, क्योंकि सन्दीप और सुनील ड्यूटी के बाहर वाले गेट से किसी भी समय ड्यूटी में आ सकते थे, इसलिए मेरा जल्दी से ड्यूटी में घुसना बहुत ज़रूरी था, क्योंकि ड्यूटी की सारी काग़ज़ी कार्रवाई मुझे ही सन्दीप के साथ रह कर करवानी थी। ड्यूटी की इस सारी काग़ज़ी कार्रवाई को सीखने में मैंने जेल कर्मचारियों के ऊपर बहुत पैसे ख़र्च किये थे और अलग-अलग जेल कर्मचारी से अलग-अलग समय पर बिना उन्हें शक हुए यह सभी अन्दर की जानकारियाँ मैंने जानी थीं, जिसके बिना जेल एस्केप मुमकिन नहीं थी।

थोड़ी देर में मैंने दोबारा ड्यूटी का गेट खटखटाया तो उसी हेड वॉर्डर ने दरवाज़ा खोला तो मैंने कहा हेड साहब, मुझे अन्दर ड्यूटी में ले लीजिए, बाहर बहुत ठण्ड है, तो हेड वॉर्डर बोला कि आपको इतनी जल्दी आने की क्या ज़रूरत थी, तो मैंने कहा हेड साहब आपका अच्छा करवा दूँगा। जेल में अच्छा करवाने का मतलब होता है कि आपको रिश्वत के रूप में कुछ पैसे दिलवा दूँगा। अच्छा करवाने का नाम सुन कर उसने मुझे कहा कि ठीक है, आओ। मैं ड्यूटी के अन्दर आ कर ड्यूटी ऑफिसर के पास आ कर खड़ा हो गया और ड्यूटी के उस गेट की तरफ़ देखने लगा जो गेट बाहर की तरफ़ था और जहाँ से सन्दीप को पुलिस की वर्दी पहन कर आना था।

ड्यूटी में मौजूद घड़ी की तरफ़ मैंने देखा तो घड़ी में 6.35 बज चुके थे। घड़ी की सुई जैसे-जैसे आगे बढ़ रही थी, मेरी बेचैनी भी बढ़ रही थी, क्योंकि असली पुलिस वाले भी क़रीब 7 बजे के आस-पास आ जाते थे, और हमें उनसे पहले ही अपनी सारी कार्रवाई पूरी करनी थी। सन्दीप के अन्दर आने के बाद भी क़रीब 10 मिनट ड्यूटी में काग़ज़ी कार्रवाई में लगते थे, इसलिए मैं हिसाब लगा रहा था कि अगर अभी सन्दीप आ जाये तो कितनी देर में ड्यूटी से बाहर चला जाऊँगा।

ड्यूटी के गेट पर खट-खट हुई तो मुझे लगा इस बार सन्दीप ही आया होगा। जब हेड वॉर्डर ने गेट खोला तो उधर सन्दीप ही था। जैसे ही मैंने सन्दीप को देखा तो मैं तुरन्त उसके पास गया, जिससे कि उसका हौसला बरक़रार रहे और अगर जेल कर्मचारी उससे कुछ पूछें तो मैं उसका जवाब देने में उसकी सहायता कर सकूँ। मैं सन्दीप के पास गया और उससे बोला भाई साहब नमस्ते, क्या आज मेरे साथ आप ही

https://t.me/Sahityajunction

रुड़की जायेंगे तो सन्दीप बोला हाँ, मैं ही जाऊँगा, तो मैंने कहा ठीक है तो आप उधर ऑफिस में चलिए।

मैं सन्दीप को साथ ले कर ऑफिस में आया तो वहाँ सिर्फ 2 सिपाही और एक कैदी मौजूद था जो उस समय बाहर तारीख़ पर जाने वालों की काग़ज़ी कार्रवाई कर रहे थे। दोनों ही मुझे जानते थे और उन्हें मेरी फ़ाइल लाने-ले जाने का ख़र्चा मिलना था। सन्दीप को बता-बता कर मैंने फ़ॉर्म भरवाया और सन्दीप से भरा हुआ फ़ॉर्म ऑफिस में मौजूद जूल कर्मचारी को दिलवा दिया। फ़ॉर्म ठीक भरा है यह जाँच करके जेल कर्मचारी ने मेरी फ़ाइल अलमारी में से निकाल कर सन्दीप को दे दी, इस फ़ाइल में मेरा वारण्ट और सभी काग़ज़ मौजूद थे। फ़ाइल देने के बाद उस जेल के सिपाही ने सन्दीप से मेरी ''कमाण्ड''—वह काग़ज़ जिसमें उन सभी पुलिस कर्मचारियों का नाम पद और उनका बेल्ट नम्बर लिखा रहता है जिनकी ड्यूटी उस इनमेट के साथ होती है जिसे वे लेने आये होते है—माँगी तो सन्दीप ने कमाण्ड उसे दिखा दी, क्योंकि मैंने उसे नकली कमाण्ड पहले ही बनवा कर दी हुई थी। और इस कमाण्ड में सन्दीप का नाम कुछ और लिखा था, जो उसने जेल कर्मचारी को बताना था।

मैंने सन्दीप को यह भी जानकारी दी हुई थी कि अगर कोई भी तुम्हारे से तुम्हारा नम्बर पूछे तो कोई भी 4 डिजिट का नम्बर पहले ही याद करके रखना और वह बता देना, मैंने सन्दीप और सुनील को पहले ही बताया हुआ था कि जो दिल्ली-पुलिस के लोग बन्दियों को जेल से गार्ड में पेश करने ले जाते हैं उनका नम्बर हमेशा—4 डिजिट का होता है। जब वह जेल कर्मचारी सन्दीप से और जानकारी लेने लगा तो मैंने बीच में बात काट दी और उस सिपाही से कहा कि भाई, समय क्यों ख़राब कर रहा है, जाने दे। जेल का सिपाही बोला भाई साहब, अपने शहर में जाने की जल्दी है, ठीक है जाइये। इसके बाद ऑफिस से जैसे ही हम बाहर आये, मैंने सन्दीप से कहा कि जल्दी से मेरे हाथों में हथकड़ी लगा। सन्दीप जो हथकड़ी अपने साथ लाया था, वह उसने मुझे लगायी और तुरन्त गेट के पास आ गया।

ड्यूटी में जो भी बाहर से आता है उसकी ड्यूटी में रखे एक रजिस्टर में इन-आउट की इण्ट्री होती है। सन्दीप से मैंने फटाफट उस रजिस्टर में उसकी आउट की इण्ट्री करवायी। और फटाफट दरबान से ड्यूटी का गेट खुलवाने के लिए सन्दीप से कहा। सन्दीप के कहने पर दरबान ने ड्यूटी का गेट खोल कर अपने इन-आउट करने वाले सिपाही से पूछा कि इन्हें बाहर कर दूँ, इनकी पूरी जाँच हो गयी, तो वह बोला, हाँ कर दो, जाँच पूरी हो गयी है। इसके बाद दरबान ने सन्दीप से पूछा कि उस्ताद तेरे दूसरे साथी कहाँ हैं, तो सन्दीप ने बाहर खड़े सुनील को दिखा कर कहा एक तो यही है और बाकी उधर साइड में गाड़ी के अन्दर हैं। दरबान ने कहा ठीक है और फिर हम दोनों को बाहर निकाल कर ड्यूटी का दरवाज़ा पीछे से बन्द कर दिया।

जैसे ही मैं सन्दीप के साथ बाहर आया, सुनील हमारे साथ आ गया। मैंने दोनों से कहा कि जल्दी गाड़ी के पास चलो, क्योंकि किसी भी पल असली पुलिस वाले आ सकते हैं, क्योंकि अब तक क़रीब 6.50 बज चुके थे। हम तीनों विक्रम की भेजी हुई एक छोटी गाड़ी में बैठे जो बाहर से पुलिस वालों की गाड़ी की तरह ही थी। हमारे गाड़ी में बैठते ही गाड़ी गोली की रफ़्तार से चलने लगी। मैंने सन्दीप से फटाफट मेरे हाथ की

https://t.me/Sahityajunction

हथकड़ी खोलने और सुनील और सन्दीप से पुलिस की वर्दी उतार कर सिम्पल पैण्ट शर्ट पहनने के लिए कहा, क्योंकि दिल्ली की सीमा से बाहर निकलने के लिए हमें क़रीब एक घण्टा लगना था और मुझे हर हाल में पता था कि 15-20 मिनट में पूरी दिल्ली में रेड एलर्ट हो जायेगा।

जब इन दोनों ने पुलिस की वर्दी उतार कर अपने निजी कपड़े पहन लिये तो मैंने गाड़ी रोकने के लिए कहा। जब गाड़ी रुकी तो मैंने सुनील से कहा कि तू मेरे साथ चल और सन्दीप से कहा कि तू मेरी यह कोर्ट केस की फाइल और हथकड़ी इसी गाड़ी में अपने साथ ले जा और सभी चीजें आग से जला कर गंगाजी में फेंक कर नष्ट कर देना। सन्दीप से मैंने यह भी कहा कि वैसे तो हमें किसी ने भी इस गाड़ी में बैठते नहीं देखा है, लेकिन फिर भी हो सकता है किसी ने देखा हो और हमारा ध्यान नहीं गया, इसलिए मेरा इसमें जाना ठीक नहीं है। तुम दोनों इसमें जाओ और सुनील से मैंने वह पिस्टल जो उसे इस काम के लिए दिलवाया था, अपने साथ ही ले चलने के लिए कहा। जब सन्दीप और ड्राइवर गाड़ी ले कर चले गये तो मैं और सुनील एक टी.एस.आर. ऑटो में बैठे और उसे यू.पी. बॉर्डर तक चलने के लिए कहा। टी.एस.आर. में बैठ कर हम तेज़ी से यू.पी. बॉर्डर की तरफ़ जाने लगे तो एकदम से उस टी.एस.आर. वाले ने अपना टी.एस.आर. एक मन्दिर के बाहर रोक दिया जहाँ पर बहुत सारे बन्दर बैठे थे।

वह टी.एस.आर. वाला बोला भाई साहब, आज हनुमान जी का मंगलवार का दिन है और आप मेरी आज पहली सवारी हो। इसलिए मैं ज़रा बन्दरों को केले खिला दूँ। पहले तो मेरा मन हुअ कि ड्राइवर से कहूँ कि भाई, तू जल्दी से चल हमें देर हो रही है, लेकिन क्योंकि मैं ख़ुद हनुमान जी का भक्त हूँ, इसलिए मैंने कहा ठीक है, जल्दी से बन्दरों को केले खिला कर वापस आओ। मैं टी.एस.आर. के अन्दर ही बैठा रहा और सुनील से भी बन्दरों को केले खिलाने के लिए कहा। दोनों केले खिला कर वापस आये और टी.एस.आर. वाले ने हमें सफलतापूर्वक यू.पी. बॉर्डर उतार दिया।

यू.पी. बॉर्डर से मैंने अपने घर पर फ़ोन किया और अपने भाई विक्रम से बात की और उसे बताया कि काम सफलता से हो गया है और मैं अभी जेल के बाहर से ही बोल रहा हूँ, तो वह बोला कि मुझे पता चल गया है, क्योंकि सभी न्यूज़ टी.वी. पर ख़बर आनी शुरू हो गयी है कि आप तिहाड़ जैसी अति सुरक्षित जेल से भाग गये है। मैंने सुनील के हाथों अपने लिए पैसे भेजने के लिए कहा तो विक्रम बोला भैया, इसके लिए आप मम्मी या पापाजी से कहिये। मुझे वे आपके कहे बिना नहीं देंगे। मैंने अपनी मम्मी और पापाजी से बात की और बताया कि मैं जेल से भाग गया हूँ। मेरी बात सुन कर मम्मी और पापा परेशान और नाराज़ हो गये, लेकिन मैंने कहा कि अब तो मैं भाग चुका हूँ और अब मैं अफ़ग़ानिस्तान जा कर वहाँ से आख़िरी हिन्दुस्तानी सम्राट की समाधि वापस भारत लाऊँगा। और फिर पुलिस के सामने आत्म-समर्पण कर दूँगा। मैंने मम्मी और पापाजी को वादा भी किया कि मैं कोई भी ग़लत काम नहीं करूँगा, जिससे परिवार की बदनामी हो। थोड़ी देर में मैंने उन्हें पैसे देने के लिए राज़ी कर लिया और विक्रम को बता दिया कि पैसे कैसे भेजने हैं। इसके बाद मैंने फ़ोन रख कर सुनील से कहा कि तू यहाँ से एक टैक्सी किराये पर ले कर रुड़की जा और एक दुकान से, जो सुनील को पता थी, 2 लाख रुपये ले कर मुझे मुरादाबाद में देने को कहा। जब सुनील वहाँ से चला गया तो मैं भी मुरादाबाद जाने के लिए एक बस में अपना बैग ले कर बैठ गया।

https://t.me/Sahityajunction

भाग : तीन

अन्तराल

https://t.me/Sahityajunction

29. अन्तराल

कुमार भाई ने बचपन से ले कर जेल से भागने तक की मेरी सारी कहानी सुन कर कहा कि भाई, आपके जीवन की कहानी तो पूरी फ़िल्मी है और आप इतना अच्छा पढ़ने-लिखने के बाद कहाँ इस लाइन में फँस गये, लेकिन चलिए जो ऊपर वाले ने जीवन में लिखा है, होगा तो वही। कुमार भाई ने मुझसे कहा कि भाई साहब, सारी बातें आपकी ठीक हैं लेकिन आपने सिमरन जी के बारे में पूरी बात नहीं बतायी कि आपके जेल में आने के बाद उनका क्या हुआ।

मैंने कहा भैया, सिमरन की मैंने शादी करवा दी थी। जब मैं तारीख़ पर दिल्ली से रुड़की जाता था, तो वह कई बार मुझसे मिलने के लिए मेरी मम्मी के साथ आती थी, लेकिन जब मुझे ऐसा लगा कि मुझे कई साल जेल में लगेंगे तो मैंने अपनी मम्मी से कहा कि सिमरन को आगे मुझ से मत मिलवाने लाना और सिमरन से प्रार्थना की और जब उसने मेरी प्रार्थना नहीं मानी तो उसे नाराज़ करके मैं ने भेज दिया, जिससे वह किसी और अच्छे लड़के से शादी कर ले और अपनी ज़िन्दगी ख़ुशी से जिये। वैसे भी प्यार यही है कि हम उसकी ख़ुशी देखें, जिससे हम प्यार करते हैं।

मेरे दिल में उसकी यादें आज भी हैं लेकिन मैंने कभी उससे सम्पर्क करने की कोशिश नहीं की। क्योंकि मैं नहीं चाहता कि उसको मेरे कारण कोई भी प्रॉब्लम हो। हाँ, एक बार उसके बारे में मैंने अपने परिचित से यह ज़रूर पता करवाया था कि वह ख़ुश तो है और उसे किसी चीज़ की जीवन में समस्या तो नहीं है, तो मेरे परिचित ने बताया था कि बहुत अच्छे लोग हैं जिनके घर में उसकी शादी हुई है। मैं इस बात से ख़ुश हूँ कि सिमरन ख़ुश है, वैसे भी मैंने अब अपना जीवन देश के लिए सर्मिपत कर दिया है, और इसलिए ही तो तालिबनियों के गढ़ में अपने देश के प्रिय पूर्वज सम्राट पृथ्वीराज चौहान की समाधि को वापस अफ़ग़ानिस्तान से भारत लाने के लिए जा रहा हूँ और आप जानते हैं कि मैं वहाँ से ज़िन्दा वापस आऊँगा इसकी कोई गारण्टी नहीं है।

कुमार भाई ने मेरी बात सुन कर मुझसे कहा कि भाई जिस सम्राट की समाधि को वापस लाने के लिए आप अपना जीवन ख़तरे में डाल रहे हैं, उस महान सम्राट के बारे में भी तो कुछ बताइये, मैंने तो बचपन में ही अपने दादादादी से उनके बारे में कहानियाँ सुनी थीं। मैंने कहा भैया, मुझसे ही सुनते रहेंगे या मुझे भी कुछ सुनायेंगे तो कुमार भाई बोले, ठीक है, मैं आपको होटल में ले जा कर इण्डियन आइटम सौंग और डांस दिखलाऊँगा। और आप मुझे वहाँ पर पृथ्वीराज चौहान के बारे में कुछ बताइयेगा कि कैसे इनकी समाधि भारत से अफ़ग़ानिस्तान पहुँच गयी। मैंने कहा, ठीक है, जब होटल के लिए जायेंगे तो गाड़ी में आपको बताऊँगा कि कैसे पृथ्वीराज चौहान की समाधि अफ़ग़ानिस्तान पहुँच गयी।

जब कुमार भाई मुझे खाना खिलाने और डांस दिखाने होटल ले जाने लगे, तो मैंने उन्हें गाड़ी में जाते समय सम्राट पृथ्वीराज चौहान के बारे में बताया। मैंने कहा, भाई साहब, पृथ्वीराज चौहान का जन्म 1149 में हुआ था, उनके पिता अजमेर के राजा थे और उनकी माता जी दिल्ली के राजा की पुत्री थीं। पृथ्वीराज चौहान बहुत ही छोटी उम्र में अजमेर के राजा बन गये और कुछ समय के बाद दिल्ली की राजगद्दी भी उन्हें मिल गयी,

https://t.me/Sahityajunction

क्योंकि उनके नाना का जो उस समय दिल्ली पर राज करते थे, कोई लड़का नहीं था और इसलिए एक क़ाबिल और बहादुर नाती होने के कारण उनके नाना ने दिल्ली की ज़िम्मेदारी भी उन्हें दे दी।

अपने नाना से दिल्ली की राजगद्दी मिलने के कारण पृथ्वीराज चौहान और भी ताक़तवर हो गये जिसके कारण उनके कुछ सम्बन्धी पृथ्वीराज चौहान से चिढ़ने लगे, क्योंकि उनकी निगाह भी दिल्ली की उस राजगद्दी पर थी जो उनके नाना से उन्हें मिल गयी थी। दिल्ली की राजगद्दी मिलने के कारण जिस रिश्तेदार को सबसे ज़्यादा चिढ़ हुई उसका नाम था जयचन्द। जयचन्द भी दिल्ली के पास यू.पी. की किसी रियासत का राजा था और उसकी निगाह भी दिल्ली की राजगद्दी पर थी, क्योंकि वह भी इस परिवार का नज़दीकी रिश्तेदार था।

जयचन्द की एक पुत्री थी जिसका नाम संयोगिता था। राजकुमारी संयोगिता पृथ्वीराज चौहान को दिल- ही-दिल में चाहती थी और उनसे विवाह करना चाहती थी। जब राजकुमारी संयोगिता को पता चला कि उनके पिता उनका स्वयंवर जल्दी ही करने वाले हैं और उस स्वयंवर में देश के सभी कँुवारे राजाओं और राजकुमारों को बुलाया जायेगा, तो वह यह सोच कर घबराने लगी कि कहीं ऐसा न हो कि उनके पिता पृथ्वीराज चौहान को इस स्वयंवर में न्योता न दें, क्योंकि राजकुमारी जानती थी कि उनके पिता जयचन्द पृथ्वीराज चौहान से मन-ही-मन चिढ़ते हैं।

जब राजकुमारी संयोगिता का स्वयंवर पास आ गया तो उन्हें पता चला कि वह जिस बात से घबरा रही थी, वही हुई और पृथ्वीराज चौहान को इस स्वयंवर में निमन्त्रण नहीं दिया गया। राजकुमारी को यह भी पता चला कि पृथ्वीराज को बेइज़्ज़त करने के लिए उसके पिता जयचन्द ने पृथ्वीराज चौहान का एक मिट्टी का पुतला बनवाया है, जिसे स्वयंवर वाले दिन राजमहल में दरबान की जगह पर रखा जायेगा। ये सभी जानकारियाँ पा कर राजकुमारी संयोगिता बहुत परेशान हो गयी, क्योंकि वह बचपन से ही पृथ्वीराज चौहान को चाहती थी और उन्हें अपना पति मानती थी। संयोगिता ने बहुत विचार किया कि उसे अपने पिता की तरफ़ रहना चाहिये या पृथ्वीराज चौहान की तरफ़ और काफ़ी सोच-विचार करने के बाद आख़िरी जीत प्यार और न्याय की हुई, क्योंकि जयचन्द बेवजह ही पृथ्वीराज से चिढ़ते थे।

संयोगिता ने जब फ़ैसला ले लिया कि उसे पृथ्वीराज चौहान से ही विवाह करना है, तो उसने अपने एक वफ़ादार सैनिक के द्वारा पृथ्वीराज को एक ख़त पहुँचवाया, जिसमें उसने लिखा कि वह उन्हें बचपन से अपना पति मानती है और उनसे प्रेम करती है। राजकुमारी ने अपने स्वयंवर के बारे में भी बताया और यह भी ख़त में लिखा कि कैसे उसके पिता जयचन्द उनकी मिट्टी की मूर्ति बनवा कर राजमहल में दरबान की जगह रख कर उनको बेइज़्ज़त करना चाहते हैं। पत्र में राजकुमारी ने पृथ्वीराज चौहान से प्रार्थना की कि आप अपनी पत्नी को यहाँ से ले जाइये और अगर आप स्वयंवर पूरा होने से पहले मुझे नहीं ले गये तो मैं अपने प्राण त्याग दूँगी, क्योंकि आपके सिवा मैं किसी से भी विवाह नहीं करूँगी।

राजकुमारी का पत्र पा कर पृथ्वीराज चौहान ने निर्णय लिया कि वह संयोगिता से ही विवाह करेंगे और उन्होंने अपना यह निर्णय राजकुमारी के पत्रवाहक को भी बता दिया

https://t.me/Sahityajunction

कि तुम जा कर राजकुमारी को बता देना कि स्वयंवर वाले दिन पृथ्वीराज चौहान उनको लेने आयेगा। पृथ्वीराज चौहान शारीरिक रूप से इतने बलशाली थे कि वह अपनी दोनों बग़ल में एक-एक आदमी को दबा कर अपने पूरे महल में कसरत के रूप में दौड़ते थे। देखने में भी इतने सुन्दर थ कि उनकी टक्कर को कोई राजा उस समय नहीं था।

स्वयंवर वाले दिन पृथ्वीराज अपने कुछ वफ़ादार और बहादुर सैनिकों को साथ ले कर संयोगिता को लेने गये, लेकिन उससे पहले ही संयोगिता को उनके पिता जयचन्द ने राजमहल में बैठे अनेक राजा-महाराजाओं में से किसी एक को वरमाला डालने के लिए कहा। पिता की बात मान कर संयोगिता वरमाला ले कर सभी राजकुमारों के बीच से होती हुई सीधी महल के दरवाज़े पर पहुँच गयी जहाँ उसके पिता ने पृथ्वीराज चौहान का मिट्टी का पुतला खड़ा किया हुआ था। राजकुमारी ने वरमाला पृथ्वीराज चौहान के मिट्टी के पुतले के गले में डाल दी। पृथ्वीराज चौहान के मिट्टी के पुतले के गले में राजकुमारी के वरमाला डाले जाने से सारे राजमहल में अफ़रा-तफ़री मच गयी और सभी नाराज़ होने लगे, लेकिन इससे पहले कि कोई कुछ करता पृथ्वीराज चौहान संयोगिता को अपने साथ लाये घोड़े पर बैठा कर ले गये।

जयचन्द के सैनिकों ने उनका पीछा भी किया, लेकिन वे लोग पृथ्वीराज चौहान और उनके सैनिकों का मुक़ाबला नहीं कर सके। अपने राज्य में ला कर पृथ्वीराज ने संयोगिता से विधिपूर्वक विवाह किया और सुख से रहने लगे, लेकिन इस बात से पृथ्वीराज चौहान के लिए जयचन्द की चिढ़ और भी अधिक हो गयी और वह उस मौ़के की तलाश करने लगा, जिससे पृथ्वीराज चौहान को ख़त्म किया जा सकता हो। जिस समय ये सभी घटनाएँ हो रही थीं, उस समय पृथ्वीराज चौहान के पड़ोसी राज्य ग़ज़नी से मुहम्मद शहाबुदीन ग़ोरी पृथ्वीराज चौहान पर बार-बार आक्रमण कर रहा था। जब 17 बार पृथ्वीराज ने मुहम्मद ग़ोरी को हरा दिया और जब मुहम्मद ग़ोरी को समझ में आ गया कि पृथ्वीराज से वह सीधी लड़ाई लड़ कर नहीं जीत सकता तो इस बार उसने धोखे और चालाकी से काम लिया।

मुहम्मद ग़ोरी ने अपने खास दूतों से राजा जयचन्द के पास पैग़ाम पहुँच वाया कि आपका और मेरा एक ही शत्रु है और वह है पृथ्वीराज चौहान और अगर आप मेरी सहायता करें तो पृथ्वीराज को हरा कर हम दोनों उससे आपका बदला ले सकते हैं। मुहम्मद ग़ोरी ने जयचन्द को यह भी पैग़ाम भिजवाया कि पृथ्वीराज को युद्ध में हराने के बाद जो उसका दिल्ली और अजमेर का राज्य मिलेगा उसे भी जयचन्द अपने पास रख सकता है। मुहम्मद ग़ोरी के पैग़ाम से जयचन्द को लालच आ गया और वह अपनी निजी शत्रुता पूरी करने के लिए मुहम्मद ग़ोरी का साथ देने के लिए तैयार हो गया। इस बार जब मुहम्मद ग़ोरी ने पृथ्वीराज चौहान पर आक्रमण किया तो उसने एक और चाल यह चली कि अपनी सेना के आगे-आगे गायों को ले आया, क्योंकि उसे यह पता चला था कि हिन्दू लोग गाय की पूजा करते हैं और किसी भी हालत में वे गाय के ऊपर शस्त्र नहीं चलायेंगे। गायों को अपने सैनिकों के आगे-आगे रखने के बावजूद भी मुहम्मद ग़ोरी जब पृथ्वीराज से हारने लगा तो जयचन्द ने पृथ्वीराज चौहान के ऊपर दिल्ली की तरफ़ से अपनी सेना ले कर आक्रमण कर दिया।

अब पृथ्वीराज की सेना को दो तरफ़ से लड़ाई लड़नी पड़ रही थी। पृथ्वीराज और

https://t.me/Sahityajunction

उनके सैनिकों ने पूरी ताक़त से दोनों मोर्चों को काफ़ी समय तक सँभाल रखा, लेकिन दोनों तरफ़ से हुए आक्रमण को वे जीत नहीं सके और मुहम्मद ग़ोरी ने पृथ्वीराज को बन्दी बना लिया। मुहम्मद ग़ोरी युद्ध जीतने के बाद पृथ्वीराज चौहान को ज़ंजीरों से जकड़ कर, उनकी दोनों आँखें फोड़ कर, अपने साथ लूटा हुआ माल साथ ले कर वापस ग़ज़नी चला गया। मुहम्मद ग़ोरी वापस ग़ज़नी जाने से पहले अपने सेनापति जिसको वह एक बाज़ार से ख़रीद कर लाया था और अपना सेनापति बनाया था जिसका नाम क़ुतुबदीन ऐबक था, को दिल्ली और अजमेर पर राज करने के लिए यहीं छोड़ गया। दिल्ली में जो क़ुतुबमीनार है, वह क़ुतुबदीन ऐबक ने ही अपनी युद्ध की जीत के चिन्ह के रूप में बनवायी थी।

जयचन्द ने जब क़ुतुबदीन ऐबक से मुहम्मद ग़ोरी के साथ हुए समझौते की बात की कि पृथ्वीराज को हराने के बाद दिल्ली और अजमेर का राज्य मुझे मिलेगा तो क़ुतुबदीन ऐबक ने कहा कि जब तुम अपने रिश्तेदार और अपने देश के नहीं हुए तो हमारे कहाँ से होगे। इसके बाद क़ुतुबदीन ऐबक ने जयचन्द के ऊपर भी आक्रमण करके उसे युद्ध में हरा दिया और जयचन्द की हत्या कर दी। उधर ग़ज़नी में मुहम्मद ग़ोरी ने पृथ्वीराज चौहान को अन्धा करके जेल में तड़पते हुए मरने के लिए छोड़ दिया था।

पृथ्वीराज के एक पक्के मित्र और उनके दरबार में कवि चन्दबरदाई को जब अपने मित्र और महाराजा की ऐसी ख़ौफ़नाक स्थिति का पता चला तो उससे रहा नहीं गया और वह अपने दिमाग़ में एक तरकीब ले कर मुहम्मद ग़ोरी के दरबार में ग़ज़नी पहुँचा। कवि चन्दबरदाई ने सुलतान मुहम्मद ग़ोरी को बताया कि जिस राजा पृथ्वीराज चौहान को आप भारत से बन्दी बना कर लाये हैं, वह शब्द बेधी बाण चलाना जानता है। सुलतान ने कवि चन्दबरदाई से शब्द बेधी बाण के बारे में पूछा तो कवि चन्दबरदाई ने बताया कि पृथ्वीराज सिर्फ आवाज़ सुन कर अपने लक्ष्य को भेद सकता है।

मुहम्मद ग़ोरी को कवि चन्दबरदाई की बातों पर विश्वास नहीं हुआ और उसने कहा कि सिर्फ आवाज़ सुन कर अपने लक्ष्य को कोई नहीं भेद सकता। चन्दबरदाई ने सुलतान से कहा कि आप एक जलसा करवाइये और उस जलसे में पृथ्वीराज चौहान का भी एक कार्यक्रम रखवा दीजिए जिसमें वह अपना करतब दिखाये। सुल्तान ने कहा कि ठीक है, हम तुम्हारी बातों को चेक करने के लिए जलसा रखवा देंगे, लेकिन पृथ्वीराज अपना हुनर दिखाने के लिए तैयार नहीं हुआ तो कैसे होगा।

मुहम्मद ग़ोरी की बात सुनने के बाद कवि चन्दबरदाई बोला कि आप मुझे आज्ञा दे दीलिए कि मैं पृथ्वीराज चौहान से जेल में मिल सकूँ। मैं उनसे जलसे में अपना शब्द बेधी बाण चलाने का हुनर आपको दिखाने के लिए प्रयास करूँगा। मुहम्मद ग़ोरी ने कवि चन्दबरदाई को पृथ्वीराज चौहान से जेल में मिल कर उन्हें जलसे के लिए तैयार करने के लिए भेज दिया। कवि चन्दबरदाई जब पृथ्वीराज चौहान से मिले तो वो आपस में मिल कर दोनों मित्र बहुत ख़ुश हुए और चन्दबरदाई ने अपनी पूरी प्लानिंग पृथ्वीराज चौहान को बताई कि कैसे वे दोनों मिल कर मुहम्मद ग़ोरी को उसके किये की सज़ा दे सकते हैं और जलसे के बहाने उसे मार सकते हैं।

पृथ्वीराज अपने मित्र की प्लानिंग सुन कर बहुत प्रसन्न हुए और बेसब्री से जलसे के दिन का इन्तज़ार करने लगे। जलसे वाला दिन जब आया तो पृथ्वीराज चौहान को

https://t.me/Sahityajunction

मुहम्मद ग़ोरी के सैनिक अपने साथ ले कर जलसे वाली उस जगह पर पहुँचे जहाँ पृथ्वीराज चौहान को अपना शब्द बेधी बाण चलाने का करतब दिखाना था। कवि चन्दबरदाई ने पृथ्वीराज चौहान को पहले ही बता दिया था कि मैं आपको दोहे के रूप में जो टारगेट बताऊँगा, वह टारगेट ख़ुद सुल्तान मुहम्मद ग़ोरी होगा और जैसे ही वह आपको तीर चलाने की आज्ञा दे आप मुहम्मद ग़ोरी को ही बाण से मार दीजियेगा। तीर-कमान ले कर जब पृथ्वीराज चौहान अपना शब्द बेधी बाण चलाने का करतब दिखाने के लिए खड़े थे, तो मुहम्मद ग़ोरी का पूरा राजदरबार और ख़ुद मुहम्मद ग़ोरी यह देखने के लिए बैचेन थे कि कोई कैसे दोनों आँखों से अन्धा होने के बाद भी अपने लक्ष्य को भेद सकता है।

पास खड़े चन्दबरदाई ने पृथ्वीराज चौहान के कानों की तरफ़ मुँह करके जब यह दोहा बोला कि ‘‘चार बाँस चौबीस गज़, अंगुल अष्ट प्रमान, ता ऊपर सुल्तान है मत चूको चौहान’’ तो पृथ्वीराज चौहान ने अपने धनुष का मुख मुहम्मद ग़ोरी की तरफ़ कर दिया जो ऊँचाई पर बने एक मचान पर बैठा हुआ देख रहा था। इससे पहले कि कोई कुछ समझता पृथ्वीराज चौहान द्वारा छोड़ा गया बाण सीधा मुहम्मद ग़ोरी के सीने में जा कर लगा जिससे उसकी उसी समय वहीं मृत्यु हो गयी। अपने सुल्तान की इस तरह से हत्या होने पर वहाँ पर मौजूद सैनिकों ने पृथ्वीराज चौहान और कवि चन्दबरदाई को भी मार कर मुहम्मद ग़ोरी के पैरों की तरफ़ गाड़ दिया। पैरों की तरफ़ इसलिए इनकी क़ब्र बनाई गयी जिससे कि जो भी मुहम्मद ग़ोरी की क़ब्र पर ज़ियारत करने जाये वह सब इन दोनों वीरों की क़ब्र पर से चढ़ कर अपने पाँव रखते हुए जाये। आज भी जो अफ़ग़ानिस्तान में आतंकवादी तालिबानी हैं वे मुहम्मद ग़ोरी की ज़ियारत के समय इन दोनों वीरों—पृथ्वीराज चौहान और चन्दबरदाई—की समाधियों पर अपने पैर रखते हुए ही जाते हैं।

मैंने अपनी बात पूरी करते हुए कुमार भाई से कहा कि इन दोनों वीरों की समाधियों को वापस भारत लाने के लिए मैं अफ़ग़ानिस्तान जा रहा हूँ। मेरी बात सुन कर कुमार भाई मुझसे बोले कि भाई साहब मैंने आपकी पूरी बातों सुनी और दिल से यह मानता हूँ कि पृथ्वीराज चौहान और चन्दबरदाई दोनों ही बहादुर थे और हमारे भारत की शान थे, क्योंकि अगर इन्हें धोखे से युद्ध में न हराया जाता तो देश की तकदीर कुछ और ही होती और सब कुछ ख़त्म होने के बाद भी जैसे इन्होंने बदला ले कर उस सुल्तान को मारा जिसने भारत पर बहुत अत्याचार किया था, बहुत ही क़ाबिले तारीफ़ है, लेकिन फिर भी मेरे दिमाग़ में 2-3 प्रश्न हैं और मैं चाहता हूँ कि आप अफ़ग़ानिस्तान न जायें।

मैंने कहा भाई अफ़ग़ानिस्तान तो मैं ज़रूर जाऊँगा, लेकिन आप अपने प्रश्न मुझसे कीजिए मैं आपके मन को शान्त करूँगा। कुमार भाई ने मुझसे कहा कि पहला प्रश्न तो यह है कि यह घटना सन 1192-1193 की है, क्या इन दोनों वीरों की अस्थियाँ इतने सौ सालों बाद अब आपको मिलेंगी। अगर मिल भी गयीं तो क्या तालिबानी आपको वे अस्थियाँ खोदने देंगे, जो काम उन्होंने क़रीब 800 सालों में किसी को नहीं करने दिया। कुमार भाई ने मुझे आगे सलाह देते हुए कहा कि वैसे भी जैसे आपने मुझे अपने परिवार और पढ़ाई-लिखाई के बारे में बताया, आपको इस झंझट में पड़ने की क्या ज़रूरत है, मेरी नज़र में तो आपको अपनी जान को बेवजह ख़तरे में नहीं डालना चाहिये और जो मौक़ा ऊपर वाले ने आपको तिहाड़ जैसी जेल से भगवा कर दिया है उसका सही उपयोग यह यह करना चाहिये कि आपको अण्डरवर्ल्ड में अपने नाम को कैश करना

https://t.me/Sahityajunction

चाहिये और आप यक़ीन मानिये आप अण्डरवर्ल्ड में बेताज बादशाह बनने की क़ाबिलियत रखते हैं। मुझे पूरा यक़ीन है कि अगर आप इसका आधा भी ख़तरा उठाने के लिए तैयार हैं, जितना आप अफ़ग़ानिस्तान में उठाने वाले हैं, तो मेरा यक़ीन मानिये एक-दो साल में ही आपके पास अरबों रुपया होगा और ज़िन्दगी के सभी ऐशो-आराम आपके कदमों में होंगे, जबकि दूसरी तरफ़ या तो मौत होगी या दोबारा तिहाड़ जेल होगी।

मैंने कहा कि कुमार भाई, आपकी यह बात कि क्या 800 सालों बाद पृथ्वीराज की समाधि वहाँ मिलेगी या नहीं तो हो सकता है, इतने सालों बाद वहाँ उनकी अस्थियाँ न मिलें, लेकिन फिर भी क्योंकि तालिबानी उस जगह को, जहाँ पर यह समाधि है, पृथ्वीराज की समाधि मान कर ही बेइज़्ज़त करते हैं। इसलिए मैं उस जगह को एक बार हर हाल में खोद कर देखना चाहता हूँ। मेरा तो यहाँ तक मानना है कि अगर यह भी मान लिया जाये कि वहाँ पर कभी पृथ्वीराज की समाधि थी ही नहीं, तब भी हर बहादुर भारतीय का यह कर्तव्य है कि उस जगह को खोद कर नष्ट किया जाये, जिस जगह को तालिबानी काfिफर की समाधि बोल कर जूते-चप्पल मारते हैं। कुमार भाई ने कहा कि अगर वहाँ समाधि है ही नहीं तो फिर उनके जूते-चप्पल मारने से क्या बेइज़्ज़ती।

मैंने कहा भैया मैं आपको इसका एक उदाहरण देता हूँ, आपने कई बार देखा होगा कि पब्लिक किसी बड़े नेता का काग़ज़ का एक पुतला बना कर उस पुतले पर जूते-चप्पल मार कर और उसे जला कर उस बड़े नेता को बेइज़्ज़त और अपमानित करते हैं, और पुलिस, और प्रशासन जनता को ऐसा करने से रोकती है। भइया, अब आप यह बताइए कि क्या वह बड़ा नेता सच में चप्पल-जूते खा रहा होता है? लेकिन फिर भी पुलिस जनता को ऐसा करने से रोकती है, क्योंकि पुतला जलाना भी उस नेता और उस नेता को मानने वाले सभी लोगों का भी अपमान है, जबकि वह नेता उस समय वहाँ पर मौजूद भी नहीं होता। अगर मान लीजिए आपके पिता जी की काग़ज़ की तस्वीर को कोई ज़मीन पर रख कर उस तस्वीर पर पैर रखे तो क्या आप इस हरकत को अपनी और अपने पिता की बेइज़्ज़ती नहीं मानेंगे?

अब आपकी दूसरी बात यह रही कि क्या तालिबानी उस जगह को खोदने और नष्ट करने देंगे या नहीं, तो आपकी इस बात का जवाब यह है कि प्यार और आराम से तो वे मुझे समाधि को खोदने नहीं देंगे, लेकिन मेरे दिमाग़ में कुछ योजनाएँ हैं जिनसे मुझे पूरा विश्वास है कि मुझे सफलता मिलेगी। वैसे भी जब जीवन देश को सर्मिपत कर दिया हो तो मौत से क्या डरना। आपकी तीसरी बात कि मुझे इस झंझट में न पड़ कर अण्डरवर्ल्ड में स्थापित हो कर ख़ूब पैसे कमा कर मज़े लेने चाहिएँ तो मेरा आपको यह कहना है कि अण्डरवर्ल्ड की दुनिया में किसी का नाम नहीं होता, बल्कि वह समाज में बदनाम होता है। अण्डर वर्ल्ड में जितना बड़ा नाम, समाज में उतना ही बदनाम। इसलिए जिसे आप नाम कमाना कहते हैं, उसे मैं बदनामी मानता हूँ, रही बात झंझट की तो वह समाधि वाले काम को मैं झंझट नहीं मानता, क्योंकि अगर मेरे जैसे लोग न होते तो शायद भारत देश कभी ग़ुलामी से आज़ाद न होता, क्योंकि जिन लोगों ने इसे आज़ाद कराया, वे भी मेरी तरह झंझट वाले काम करना ही पसन्द करते थे। लाखों लोग देश के लिए शहीद हुए और आज भी देश की रक्षा के लिए हो रहे हैं।

https://t.me/Sahityajunction

मेरे जवाब सुन कर कुमार भाई मुझसे बोले कि आपके दृढ़ निश्चय को देख कर मुझे पूरा विश्वास है कि आप ज़रूर कामयाब होंगे, और आपकी कामयाबी की मैं दुआ करूँगा, और जब आप अफ़ग़ानिस्तान से वापस दुबई उस महान सम्राट की समाधि ले कर आयेंगे तो मैं आपका यहीं दुबई में स्वागत करूँगा।

इसके बाद मैंने और कुमार भाई ने दुबई के एक फ़ाइव स्टार होटल में रात का खाना खाया और एक इण्डियन डांस ड्रामा देखा जो उस समय उस होटल में हो रहा था। इसके बाद हमने वापस फ़्लैट पर आ कर आराम किया और अगले दिन सुबह क़रीब 7 बजे कुमार भाई मुझे दुबई एयरपोर्ट पर छोड़ कर वापस चले गये। एयरपोर्ट से मैंने अपने लिए कुछ ज़रूरत का सामान ख़रीदा और क़रीब 10 बजे के आस-पास अफ़ग़ानिस्तान जाने वाले हवाई जहाज़ में बैठ गया।

https://t.me/Sahityajunction

भाग : चार

अ़फ़ग़ानिस्तान

https://t.me/Sahityajunction

30. काबुल

दिन में क़रीब 2 बजे के आस-पास हवाई जहाज़ काबुल के हवाई अड्डे पर उतरा। एयरपोर्ट पर सभी काग़ज़ी फारमेल्टी पूरी करा कर मैं एयरपोर्ट के बाहरी कैबिन में आ गया। सबसे पहले मैं एयर लाइन्स के ऑफिस में गया जो वही एयर पोर्ट की बिल्डिंग में मौजूद था। वहाँ पर मौजूद लड़कियों ने मुझे बताया कि जब भी आपको दुबई वापस जाना हो तो आप हमारे इस ऑफिस में आ कर 2-3 दिन पहले ही बता दीजिएगा, जिससे कि आपके लिए प्लेन में सीट रिज़र्व रखी जा सके, और आपका टिकट 3 महीने के लिए ही मान्य है। मैंने कहा ठीक है और उनसे काबुल के होटलों के बारे में पूछा तो उन्होंने मुझे अपने बग़ल के ऑफिस में ट्रेवेल एजेण्ट के पास जाने के लिए कहा।

एयर लाइन्स के ऑफिस से बाहर निकल कर मैंने सोचा कि ट्रेवेल एजेण्ट के पास क्या जाना, भारत की तरह यहाँ भी एयर पोर्ट के बाहर से टैक्सी ले कर ख़ुद ही होटल ढूँढ लूँगा, क्योंकि ट्रेवेल एजेण्ट बेवजह ही अपनी फ़ीस लेगा। यह सोच कर मैं एयर पोर्ट की बिल्डिंग के मेन गेट पर आया तो मैंने बाहर देखा कि वहाँ पर कोई भी टैक्सी मौजूद नहीं है, बल्कि वहाँ पर आर्मी के 5-6 टैंक खड़े है, जिन पर बहुत सारे अंग्रेज़ सैनिक अपनी-अपनी बन्दूकें ले कर एकदम एलर्ट पोज़िशन ले कर खड़े हैं।

ऐसा माहौल मैंने पहली बार देखा था। थोड़ी देर तक मैं इन टैंकों को और सैनिकों को देखता रहा और जब मुझे कोई भी टैक्सी नज़र नहीं आयी तो मैंने मन में विचार किया कि मुझे ट्रैवेंल एजेण्ट से बात करके ही टैक्सी मँगवानी चाहिये, क्योंकि किसी अपरिचित टैक्सी में बैठना ठीक नहीं होगा। यही सोच कर मैं ट्रेवेल एजेण्ट के ऑफिस में आया और वहाँ पर बैठे 2-3 लड़कों से टैक्सी के और होटल के विषय में बात की। उन दोनों-तीनों लड़कों को मेरी भाषा हिन्दी और इंगलिश समझ में नहीं आयी तो ये बग़ल के एक ऑफिस से एक लड़के को बुला कर ले आये, जो कई साल पाकिस्तान में रहने के कारण हिन्दी भाषा समझता था।

इस लड़के ने मेरी पूरी बात समझ कर उन्हें समझाया कि मुझे टैक्सी और होटल चाहिए। उनकी बात सुन कर इस लड़के ने मुझसे कहा कि टैक्सी और होटल आपको मिल जायेगा, लेकिन आप भारत से यहाँ किसलिए आये हैं? मैंने उन्हें बताया कि मैं एक ड्रॉक्यूमेण्ट्री फ़िल्म बना रहा हूँ, जिसके लिए मुझे कन्धार जाना है, अगर हो सके तो आप मेरा कल का कन्धार जाने का हवाई जहाज़ का टिकट भी बुक करा दीजिये।

उन्होंने मुझसे कहा कि आम आदमी के लिए काबुल से कन्धार कोई भी फ़्लाइट यहाँ से नहीं जाती है, सिर्फ काबुल एयर पोर्ट से नाटो आर्मी वालों के जहाज़ या फिर किसी बड़े आदमी का पर्सनल हवाई जहाज़ ही यहाँ से कन्धार जाता है। मैंने उनसे कहा कि मुझे तो कन्धार ही जाना है, तो वह बोले कि आपको टैक्सी से जाना होगा। मैंने कहा कन्धार टैक्सी से जाने के लिए कितना ख़र्चा आयेगा तो उन्होंने मेरे सामने एक जगह किसी को फ़ोन करके बात की और मुझे यह बताया कि क़रीब 30 हज़ार अफ़ग़ानी कन्धार से आने-जाने का लगेगा। मैंने पूछा कि 30 हज़ार अफ़ग़ानी कितना होता है तो उन्होंने कैलकुलेटर से हिसाब करके बताया कि क़रीब 700 अमरीकी डॉलर के आस-पास लगेंगे। 700 अमरीकन डॉलर का मैंने मन ही मन भारतीय करंसी में हिसाब

https://t.me/Sahityajunction

लगाया तो वह भी क़रीब 30 हज़ार रुपये ही बैठ रहे थे।

मैंने उनसे कहा कि 30 हज़ार अफ़ग़ानी तो बहुत ज़्यादा है, तो वह बोले कि यह पैसे काबुल से कन्धार की दूरी के कारण नहीं ले रहे हैं, बल्कि इसलिए लिये जा रहे हैं क्योंकि कोई भी काबुल की टैक्सी वाला कन्धार जैसी ख़तरनाक जगह पर जाने के लिए तैयार नहीं होगा। हमारी भी आपको सलाह है कि आप कन्धार न जा कर यहीं काबुल में ही अपनी डॉक्यूमेण्ट्री फ़िल्म बना लीजिये, क्योंकि कन्धार में अभी भी तालिबानी काफ़ी मज़बूत पोज़िशन में हैं और आप तो विदेशी हैं और हमारी भाषा भी नहीं समझते हैं। हम अफ़ग़ानी हो कर भी कन्धार जाने में डरते हैं।

उनकी बात सुन कर मैंने मन-ही-मन सोचा कि कन्धार तो मुझे जाना ही पड़ेगा, क्योंकि भारतीय अख़बारों और टी.वी. न्यूज़ के अनुसार जो मुझे जानकारी थी, वह यह थी कि पृथ्वीराज चौहान की समाधि कन्धार एयर पोर्ट के आस-पास कहीं है। मैंने कहा भाई साहब जो मैं डॉक्यूमेण्ट्री फ़िल्म बना रहा हूँ, वह सिर्फ कन्धार में ही बन सकती है और मुझे वहाँ जाना ही है। और मैं कल सुबह ही जाना चाहता हूँ। बस, आप थोड़े टैक्सी के पैसे कम कर दीजिए। मेरी बात सुन कर वह बोले कि ठीक है आपको समझाना हमारा काम था, लेकिन वहाँ पर तालिबानी लोग विदेशियों का अपहरण कर लेते हैं और फिर उनके देश से उल्टीसीधी डिमाण्ड रखते हैं, और डिमाण्ड पूरी न होने पर बन्दी बनाये गये व्यक्ति की हत्या भी कर देते हैं। मैंने कहा कि आप निश्चिन्त रहिये बस मुझे कल आप कन्धार में पहुँचवा दीजिये। इतने में ही उसने होटल जाने के लिए एक टैक्सी मँगा ली थी। ऑफिस में बैठे हुए उन लड़कों में से एक लड़का जो मेरी भाषा समझता था और एक वह लड़का जो उनका बॉस था मेरे साथ टैक्सी में बैठ कर, जो उन्होंने ख़ुद ही मँगवाई थी, होटल ढूँढने के लिए एयर पोर्ट से काबुल शहर की तरफ़ चल दिये।

जब हम एयर पोर्ट से टैक्सी में बैठ कर बाहर आये तो मैंने देखा कि चारों तरफ़ सड़क के किनारे और पहाड़ों पर, जो गाड़ी में सफ़र करते समय दिख रहे थे, बर्फ-ही-बर्फ गिरी हुई थी, और मौसम में बहुत ठण्ड थी। इतनी बर्फ मैंने पहली बार देखी थी, इसलिए यह सुन्दर नज़ारा मुझे बहुत ही अच्छा लग रहा था, लेकिन मन में एक बेचैनी-सी भी थी कि ऐसे ख़तरनाक माहौल में जहाँ आम सड़कों पर भी चारों तरफ़ आर्मी के टैंक-ही-टैंक दिख रहे हों, क्या मैं अपने मक़सद में कामयाब हो पाऊँगा।

ट्रेवेल एजेण्ट के ये लड़के मुझे ले कर काबुल के सबसे पॉश इलाक़े में, जिसका नाम शरेनव था, लाये और यहाँ पर मौजूद 3-4 होटल मुझे दिखाये। इन 3-4 होटलों में से एक होटल ऐसा था जिसमें रेस्टोरेण्ट भी था और इस रेस्टोरेण्ट का मालिक और सभी कर्मचारी भारतीय थे। इस रेस्टोरेण्ट का नाम जैसलमेर हाउस था और इसमें भारतीय खाना मिलता था। मैं इसी होटल में यह सोच कर रुक गया कि मैं इस होटल के रेस्टोरेण्ट में भारतीय खाना भी खा लूँगा और इनसे अपनी भारतीय भाषा में बात करके अफ़ग़ानिस्तान और विशेष तौर पर कन्धार के बारे में भी ज़्यादा-से-ज़्यादा जानकारी हासिल कर लूँगा।

शाम के तक़रीबन 6 बज चुके थे और बर्फ़ीली हवाएँ चलने से सर्दी भी बढ़ती जा रही थी और सड़कें भी एकदम सुनसान होती जा रही थीं, इसलिये भी मैंने इसी होटल में रुकना ठीक समझा, क्योंकि रात होती जा रही थी और अब ज़्यादा इधर-उधर होटल

https://t.me/Sahityajunction

ढूँढना ठीक नहीं था, लिहाज़ा दूसरे होटलों से काफ़ी महँगा होने के बाद भी मैं यही रुक गया। इस होटल के सबसे सस्ते कमरे का एक रात का किराया 75 अमरीकी डॉलर था, लेकिन उस भारतीय रेस्टोरेण्ट वाले ने मेरे भारतीय होने के कारण एक रात का किराया 50 अमरिकन डॉलर करवा दिया था।

मुझे होटल में छोड़ कर वे दोनों ट्रेवेल एजेण्ट मुझसे टैक्सी और अपना किराया ले कर यह कह कर वापस चले गये कि वे लोग कल सुबह आयेंगे और फिर एक-दो दिन में मुझे कन्धार भिजवा देंगे। उन ट्रेवेल एजेण्टों के जाने के बाद मैंने अपना सामान अपने कमरे में रखा और हाथ-मुँह धो कर खाना खाने के लिए होटल की चारदीवारी में ही मौजूद उस भारतीय रेस्टोरेण्ट जैसलमेर हाउस में आ गया। इस समय यह बिलकुल ख़ाली था, इसलिए मैं अपने खाने का ऑर्डर दे कर रेस्टोरेण्ट के काउण्टर पर मौजूद आदमी के पास गया, जिसकी उम्र क़रीब 40 साल के आस-पास थी और उससे बातें करने लगा।

मैंने उस आदमी से पूछा कि आप भारत के किस इलाक़े के रहने वाले हो, तो वह बोला कि मैं मुम्बई का हूँ और इस रेस्टोरेण्ट का मैनेजर हूँ और इसका मालिक मुम्बई का ही है और उसके मुम्बई में भी कई होटल हैं। उसने मुझे यह भी बताया कि वह क़रीब 2 साल से यहीं काबुल में ही रह रहा है। मैंने उससे कहा कि भैया, यह रेस्टोरेण्ट तो बिलकुल ख़ाली है और यहाँ कौन भारतीय खाना खाने आयेगा, तो उसने कहा कि हमने भारतीयों के खाने के लिए इसे नहीं खोला है, इसे इतनी दूर हमने अंग्रेज़ों के लिए खोला है, क्योंकि अंग्रेज़ों को भारतीय खाना, विशेष तौर पर राजस्थानी खाना, काफ़ी पसन्द है, और इसीलिए हमने रेस्टोरेण्ट का नाम जैसलमेर हाउस रखा है, क्योंकि काफ़ी संख्या में अंग्रेज़ घूमने के लिए राजस्थान जाते हैं और अंग्रेज़ जैसलमेर नाम से परिचित हैं।

उसने यह भी बताया कि यहाँ रेस्टोरेण्ट में रोज़ रात को अंग्रेज़ पिर्टयाँ करते हैं और आज रात को भी यहाँ पार्टी है। मैंने कहा कि भैया, मुझे आपकी थोड़ी मदद चाहिए और क्योंकि आप भारतीय हैं इसलिए मैं आपके अलावा किसी के ऊपर ज़्यादा विश्वास नहीं कर सकता हूँ। उसने कहा कि आप बताइये कि मैं आपकी क्या सहायता कर सकता हूँ, तो मैंने उससे कहा कि मैं एक डॉक्यूमेण्ट्री फ़िल्म बना रहा हूँ, और इसके लिए मुझे कन्धार जाना है। मैंने उस ट्रेवेल एजेण्ट से भी बात की थी, जो मुझे आपके पास यहाँ छोड़ कर गया है, लेकिन मुझे उसके ऊपर ज़्यादा विश्वास नहीं है।

जब मैंने उस ट्रेवेल एजेण्ट से हुई बातें उसे बतायीं तो वह बोला कि ट्रेवेल एजेण्ट की यह बात तो ठीक है कि काबुल से कन्धार आम जनता के लिए हवाई जहाज़ नहीं जाते हैं, और उसका यह कहना भी ठीक है कि कन्धार बहुत ही ख़तरनाक जगह है, लेकिन फिर भी अगर आपका जाना वहाँ ज़रूरी है तो मैं अपने एक मित्र से फ़ोन पर बात करके आपको बता सकता हूँ कि आप कन्धार कैसे जा सकते है? क्योंकि कन्धार के बारे में मुझे भी कोई जानकारी नहीं है।

मेरे सामने ही उसने अपने मोबाइल फ़ोन से अपने एक दोस्त को फ़ोन किया और उससे कन्धार के आने-जाने के बारे में पूछा। फ़ोन पर बात ख़त्म करके वह मुझसे बोला कि आप काफ़ी भाग्यशाली हैं, क्योंकि अपने जिस दोस्त से मैंने अभी बात की है, वह

https://t.me/Sahityajunction

इस समय अपने कम्पनी के किसी काम के सिलसिले में कन्धार में ही है और क़रीब 4-5 दिन और वहीं रहेगा। उसने मुझे यह भी बताया कि आपको टैक्सी करके कन्धार जाने की ज़रूरत नहीं है, और यहाँ काबुल में जो बस स्टैण्ड है, वहाँ से आपको बहुत अच्छी बस र्सिवस मिल जायेगी, लेकिन आपको बहुत सुबह-सुबह ही जाना होगा, क्योंकि काबुल से कन्धार के लिए बसें सिर्फ सुबह 6 बजे तक ही मिलती हैं। काबुल से कन्धार क़रीब 600 किलो मीटर दूरी पर है और रात के समय पूरे अफ़ग़ानिस्तान में कोई भी गाड़ी चलना अलाउड नहीं है, इसलिए सुबह-सुबह ही इतनी दूर के लिए गाड़ियाँ जाती है जिसमें कि रात होने से पहले ही अपनी मंज़िल पर पहुँच जाये।

मैंने कहा भैया ठीक है मैं कल सुबह-सुबह ही जल्दी से चला जाऊँगा और आप अपने किसी कर्मचारी को मेरे साथ भेज दीजिये जिससे कि मैं अपना टिकट बुक करवा सकूँ। उसने कहा ठीक है आप पहले खाना खा लीजिए और फिर मैं आपके साथ अपना एक वेटर भेज दूँगा। जो आपको बस का टिकट कन्धार जाने के लिए दिलवा देगा। खाना खाने के बाद एक टैक्सी ले कर मैं और वेटर काबुल के बस स्टैण्ड पर गये और वहाँ पर बने बहुत सारे काउण्टरों में से एक बस र्सिवस के काउण्टर पर कन्धार जाने के लिए पूरी जानकारी हासिल की और उनसे उनकी बस र्सिवस का अगले दिन का एक टिकट अपने लिए कन्धार का ले लिया।

उस काउण्टर वाले ने मुझे पास में ही खड़ी वह बस भी दिखाई जिसमें अगले दिन बैठ कर मुझे कन्धार जाना था। बस देख कर मैं हैरान हो गया, क्योंकि यह वोल्वो बस थी और भारत में भी मैंने इतनी सुन्दर और साफ़-सुथरी बस नहीं देखी थी। वोल्वो बस का टिकट ले कर जब हम दोनों टैक्सी से वापस आने लगे तो मैंने वेटर से कहा कि काबुल की सुनसान सड़कों को देख कर ऐसा लग रहा है कि सुबह 6 बजे मुझे कोई टैक्सी यहाँ बस स्टैण्ड तक आने के लिए नहीं मिलेगी और मैंने वेटर से इसी टैक्सी वाले को प्रार्थना करने के लिए कहा कि अगर सुबह 5.30 बजे यही टैक्सी वाला मुझे बस स्टैण्ड छोड़ दे तो मैं इसे डबल-ट्रिपल पैसे दे दूँगा।

वेटर ने मेरे कहे अनुसार टैक्सी वाले से बात की तो वह बोला डबल-ट्रिपल पैसे देने की कोई ज़रूरत नहीं है, आप भारतीय हो और मैं हिन्दुस्तानी लोगों से बहुत प्रेम करता हूँ, मैं आपको बिना किराये के ही सुबह बस स्टैण्ड छोड़ दूँगा। वेटर ने मुझे टैक्सी ड्राइवर की बात बताई तो मैंने उसे धन्यवाद दिया, और अगले दिन सुबह 5.30 बजे का टाइम उससे तय कर लिया।

होटल वापस आ कर मैं जैसलमेर रेस्टोरेण्ट के उस मैनेजर से मिला और उसको बहुत-बहुत धन्यवाद दिया कि उसने जो काम 30 हज़ार अफ़ग़ानी में हो रहा था वह सिर्फ 300 अफ़ग़ानी में करा दिया था, क्योंकि काबुल से कन्धार का बस का किराया सिर्फ 300 अफ़ग़ानी था। अफ़ग़ानी उस देश की अपनी करेन्सी को बोलते हैं जैसे हम भारतीय करेन्सी को रुपया बोलते हैं। मैंने मैनेजर को टैक्सी ड्राइवर के बारे में भी बताया और मन की शंका भी बतायी कि टैक्सी ड्राइवर मुझे क्यों बिना किसी लालच के इतनी सुबह बस स्टैण्ड ले जाने के लिए तैयार हो गया।

मैनेजर ने मेरे शक का दूर करते हुए बताया कि अफ़ग़ानिस्तान में काबुल के लोग हिन्दुस्तानियों से बहुत लगाव रखते हैं और आपको डरने की कोई ज़रूरत नहीं है, वह

https://t.me/Sahityajunction

टैक्सी ड्राइवर आपको धोखा नहीं देगा और सही समय पर सुरक्षित बस स्टैण्ड पहुँचा देगा। लेकिन मुझे यह चेतावनी दी कि काबुल के अलावा पूरे अफ़ग़ानिस्तान किसी भी शहर में किसी भी अजनबी पर विश्वास मत कीजियेगा, क्योंकि कोई भी तालिबानी आतंकवादी हो सकता है और विशेष तौर पर कन्धार और ग़ज़नी के लिए चेतावनी दी, क्योंकि ये दोनों इलाके तालिबानी आतंकवादियों के गढ़ माने जाते हैं। थोड़ी देर बार रेस्टोरेण्ट में पार्टी शुरू हो गयी तो मैं मैनेजर को धन्यवाद दे कर अपने कमरे में चला गया, लेकिन कमरे में जाने से पहले कन्धार में जो मैनेजर का दोस्त था उसका मोबाइल नम्बर और मैनेजर का मोबाइल नम्बर अपने पास लिख लिया। मैनेजर के जिस दोस्त के पास मुझे कन्धार में जाना था, उसका पूरा नाम अमान उल्ला था, लेकिन वह उसे सिर्फ अमान कह कर बुलाता था।

अगले दिन मैं सुबह 4 बजे उठा और फटाफट गर्मपानी से नहा-धोकर और पूजा-पाठ करके ठीक 5.30 बजे होटल के गेट पर गया तो वही टैक्सी ड्राइवर मेरा इन्तज़ार कर रहा था, जिससे हमने कल बात की थी, मैं ड्राइवर की बग़ल वाली सीट पर बैठ गया और बस स्टैण्ड चलने के लिए कहा। इतनी सुबह एक भी गाड़ी या कोई भी आदमी मुझे नज़र नहीं आ रहा था, और मुझे लगता है कि इसके शायद दो कारण थे। एक तो यहाँ बर्फ गिरने के कारण बहुत ज़्यादा सर्दी थी और दूसरा शायद यहाँ का आतंकवादी माहौल इन सुनसान सड़कों का कारण था। बस स्टैण्ड पहुँच कर उस टैक्सी ड्राइवर ने मुझे बाहर उतार दिया और मुझसे पूछा कि क्या वह मुझे मेरी बस में बैठा कर आये, तो मैंने उसे मना कर दिया, और कहा कि मैं ख़ुद बैठ जाऊँगा।

जब मैंने उसे टैक्सी का किराया डबल दिया तो उसने डबल पैसे लेने से मना कर दिया और जितना किराया बनता था, वह भी मेरे काफ़ी प्रार्थना करने पर लिया, क्योंकि ऐसा करके मेरे भारतीय होने के कारण वह जो उसके दिल में जो प्यार और सम्मान था, वह मुझे दिखाना चाहता था। मैं टैक्सी से अपना सामान ले कर अन्दर बस स्टैण्ड में गया तो देखा वहाँ पर बहुत सारी गाड़ियाँ अलग-अलग जगह जाने के लिए खड़ी हैं और सभी गाड़ियाँ एक जैसी हैं और बहुत सारे अफ़ग़ानी लोग अपना-अपना सामान ले कर इधर-उधर अपनी-अपनी बसों में बैठने के लिए भाग रहे हैं, मैं अपनी बस को, जिसका मैंने टिकट ख़रीदा हुआ था, ढूँढने लगा तो वह मुझे नहीं दिखी।

ढूँढते-ढूँढते जब मुझे क़रीब 10-15 मिनट हो गये तो मैं यह सोच कर थोड़ा घबराया कि कहीं मेरी बस चली न जाये, क्योंकि मेरी बस का काबुल से कन्धार जाने का जो टाइम था उसमे अब केवल 5-7 मिनट ही बाक़ी थे। बस स्टैण्ड पर काफ़ी लोग मौजूद थे, लेकिन इतनी सुबह होने के कारण इस समय अँधेरा था और अपनी सुरक्षा को देखते हुए मैं किसी से भी बात नहीं करना चाहता था, क्योंकि वह मेरे मुँह से बोलते ही जान जाते कि मैं अफ़ग़ानी आदमी नहीं हूँ, बल्कि भारतीय हूँ और कोई भी मुझे नुक़सान पहुँचा सकता था। टिकट पर बस का लिखा नम्बर भी मुझे समझ नहीं आ रहा था और मैं उस आदमी को खोजने की कोशिश कर रहा था, जिसने मुझे बस का टिकट दिया था और कहा था कि वह बस के पास मौजूद रहेगा।

जब बस के जाने का समय बिलकुल हो गया और कई बसें मेरे सामने ही वहाँ से धड़ा-धड़ चली गयी तो मैंने दिमाग़ में सोचा कि क्यों न किसी भी बस के ड्राइवर को

https://t.me/Sahityajunction

अपना टिकट दिखाऊँ। जो बस मुझे दिमाग़ से लग रही थी कि मेरी हो सकती है, मैं उसके ड्राइवर के पास गया और अपना टिकट उसे दिखाया। टिकट देख कर वह अपनी भाषा में बोला कि यही है, अपनी सीट पर बैठ जाओ, मैं उसकी बात को तो नहीं समझा, क्योंकि मैं अफ़ग़ानिस्तान में बोली जाने वाली मुख्य भाषाएँ फ़ारसी और पश्तो नहीं समझता था, लेकिन उसके बोलने के स्टाइल से और हाव-भाव से समझ गया कि मेरी यही बस है।

मैंने बस ड्राइवर को सिर्फ इतना कहा टिकट काउण्टर मैन तो वह समझ गया कि मैं अफ़ग़ानी नहीं हूँ और उसने इशारे से बस के अन्दर से एक आदमी को मेरे पास भेजा। वह वही आदमी था जिससे मैंने टिकट ख़रीदा था और जो हिन्दी भाषा समझता था। वह आदमी मेरे पास आया और बोला कि आपकी वजह से ही बस रोकी हुई थी और अगर आप 5 मिनट और न आते तो आपकी यह गाड़ी आज छूट जाती। मैंने कहा कि मैं तो बहुत पहले से यहाँ आया हुआ हूँ, लेकिन आप मुझे बाहर नहीं दिखे, तो वह बोला मैं सभी को उनकी सीटों पर बैठा रहा था, लेकिन इससे पहले मैं आपका बस के बाहर खड़ा हो कर इन्तज़ार कर रहा था।

मैंने कहा, चलिए कोई बात नहीं और मैं चुपचाप अपने सामान के साथ अपनी सीट पर बैठ गया। जब बस काबुल बस स्टैण्ड से बाहर निकली तो अँधेरा था, इसलिए बाहर का नज़ारा नहीं दिख रहा था, लेकिन थोड़ी दूर चलने पर ही सुबह की रोशनी चारों तरफ़ फैल गयी और जब मैंने बस से बाहर देखा तो पत्थर के पहाड़-ही-पहाड़ दिखाई देने लगे जिन पर ख़ूब सारी बर्फ गिरी हुई थी, और निकलते हुए सूरज की रोशनी जब इन ब़र्फीले पहाड़ों पर गिरी तो वे हीरे की तरह चमकने लगे और चारों तरफ़ अपनी ख़ूबसूरती बिखेरने लगे।

मेरे दिमाग़ में यह बात थी कि पता नहीं काबुल से कन्धार जाने के लिए कैसी टूटी-फूटी सड़कें होंगी, लेकिन मेरे मन का यह भ्रम भी दूर हो गया, क्योंकि जिस सड़क पर हमारी बस चल रही थी, वह एकदम नयी और बहुत बढ़िया थी और हमारी गाड़ी क़रीब 100 कि. मी. घण्टे की रफ़्तार से भी तेज़ चल रही थी, लेकिन बस में बैठे हुए ऐसा लग रहा था, जैसे बस चल ही न रही हो और इसका कारण था इतनी अच्छी सड़कें। सड़क पर हर थोड़ी-थोड़ी दूरी पर मुझे 5-6 आर्मी टैंक सामने से आते हुए ज़रूर दिखे, और जैसे हमारे भारत में पुलिस की जिप्सियाँ सड़कों पर खड़ी रहती हैं, उसी तरह से यहाँ पर थोड़ी-थोड़ी दूरी पर आर्मी के कई-कई टैंक मुस्तैद खड़े रहते हैं।

क़रीब सुबह 10 बजे के आस-पास ड्राइवर ने बस को एक जगह रोका और सबको बताया कि यहाँ पर नाश्ता वग़ैरा कर लीजिए फिर आगे जायेंगे मैं भी उस सड़क के किनारे बने रेस्टोरेण्ट में गया तो मैंने देखा कि वहाँ पर कोई भी कुर्सी या टेबल नहीं है और नीचे ज़मीन पर किनारे-किनारे कालीन बिछे हुए है और सभी लोग अपने-अपने जूते-चप्पल निकाल कर कालीन पर बैठे हैं और सभी लोगों के सामने दस्तरख़ान बिछा है और सभी कुछ-न-कुछ खा रहे हैं।

मैं होटल के उस आदमी के पास गया जो सबको एक जगह पर खड़ा हो कर खाने का ऑर्डर ले रहा था मैंने उससे पूछा कि आप उर्दू समझते हैं तो वह बोला हाँ, तो मैंने उससे कहा कि खाने में वेजीटेरियन है तो वह बोला नहीं, यहाँ पर हर चीज़ में मीट पक्का

https://t.me/Sahityajunction

मिक्स मिलेगा। यह बात बोल कर उसने मुझसे पूछा कि आप लाला हैं, तो मैंने कहा कि लाला क्या होता है? वह बोला कि हिन्दुस्तानियों को यहाँ लाला बोलते हैं। मैंने कहा हाँ, मैं हिन्दुस्तानी हूँ और लाला हूँ।

इसके बाद मैं होटल से बाहर आ गया, क्योंकि वहाँ पर मेरे खाने की कोई भी वेजीटेरियन चीज़ नहीं थी। मैंने बाहर निकल कर एक छोटी-सी दुकान से अपने लिए 3-4 जूस के पैकेट और कुछ ड्राई फ़्रूट वग़ैरा ख़रीदे और वही खा-पी कर बस में बैठ गया, थोड़ी देर में ही बस का आदमी आया और मुझसे पूछा कि आपने खाना बड़ी जल्दी खा लिया। तो मैंने कहा कि मैंने जूस पी लिया है, खाना नहीं खाया है। इसके बाद हमारी बस सीधा दिन में 2 बजे के क़रीब कन्धार बस स्टैण्ड पर पहुँच गयी। जहाँ से खाना खाने के बाद बस चली थी, वहाँ से कन्धार के बीच के सफ़र में ग़ज़नी और अन्य शहर भी पड़े थे, लेकिन बस कहीं भी नहीं रुकी थी और सीधी कन्धार आयी थी।

https://t.me/Sahityajunction

31. अमान उल्ला

कन्धार बस स्टैण्ड पर उतर कर मैं अपना सामान ले कर सीधा सामने मौजूद एक होटल में पहुँचा। उसी होटल में अमान उल्ला, जिसके पास मुझे जाना था, रुका हुआ था। यह एक काफ़ी बड़ा होटल था और इस होटल में कई कमरे थे। होटल के नीचे सड़क पर इन्हीं होटल वालों का एक रेस्टोरेण्ट भी था। मैंने होटल के मैनेजर से अमान उल्ला के बारे में पता किया तो उसे मेरी भाषा समझ में नहीं आयी, इसलिए वह मुझे ले कर नीचे रेस्टोरेण्ट में आया और वहाँ मौजूद मैनेजर से, जिसका नाम अफ़ज़ल था, मेरी बात करायी। अफ़ज़ल अफ़ग़ानी था लेकिन बचपन से पाकिस्तान में रहने के कारण पूरी तरह से हिन्दी समझता था। उसने मुझसे सलाम कहा और पूछा कि आप कहाँ से आये हैं और किससे मिलना है? मैंने कहा कि मैं हिन्दुस्तानी हूँ और मुझे अमान उल्ला से, जो आपके होटल में रुका है, मिलना है। मेरी बात अफ़ज़ल ने होटल वाले मैनेजर को अपनी भाषा में बतायी और उसका जवाब सुन कर मुझसे कहा कि अमान उल्ला आपके लिए कह कर गया है, लेकिन वो शाम को 5 बजे तक आयेगा, इसलिए अगर आप चाहें तो मेरे पास यहीं रेस्टोरेण्ट में बैठ सकते हैं। मैंने कहा कि ठीक है और फिर अफ़ज़ल से कहा कि दूसरे मैनेजर से बता दीजिए कि जब भी अमान उल्ला आये उसे यही भेज दे। अफ़ज़ल ने होटल के मैनेजर को समझाया और फिर मैनेजर वहाँ से चला गया।

यह रेस्टोरेण्ट इस समय ख़ाली था क्योंकि इस समय दिन के 3 बज रहे थे, इसलिए अफ़ज़ल मुझसे बातें करने लगा और मेरे और अपने बारे में जानने और बताने लगा। अफ़ज़ल ने मुझसे खाने के लिए पूछा तो मैंने उससे कहा कि मैं तो मीट और अण्डा नहीं खाता हूँ और अब तक मैंने जितने भी होटल और रेस्टोरेण्ट देखे, सभी में मीट और अण्डा मिला है। अफ़ज़ल ने कहा कि आप चिन्ता न करें शाम को जब हमारे यहाँ खाना बनेगा तो मैं आपके लिए थोड़ी-सी सब्ज़ी बिना मीट वाली अलग निकलवा दूँगा।

अफ़ज़ल ने मेरे कन्धार आने का कारण पूछा तो मैंने कहा कि मैं एक डॉक्यूमेण्ट्री फ़िल्म बना रहा हूँ और एक किताब लिख रहा हूँ। तो वह बोला कि क्या आप पत्रकार हैं। तो मैंने उससे कहा कि मैं किसी के यहाँ नौकरी नहीं करता हूँ और डॉक्यूमेण्ट्री फ़िल्म बनने के बाद मैं किसी को भी उसे बेच सकता हूँ। उसने कहा कि किस चीज़ पर आप डॉक्यूमेण्ट्री फ़िल्म और किताबें लिख रहे है, तो मैंने उससे कहा कि एक भारतीय हिन्दू सुल्तान कई सौ साल पहले भारत में था जिसे अफ़ग़ानी सुल्तान बन्दी बना कर यहाँ लाया था और उन्हीं दोनों सुल्तानों के बारे में मैं किताब और डॉक्यूमेण्ट्री फ़िल्म तैयार कर रहा हूँ।

उसने सुल्तानों का नाम पूछा तो मैंने मुहम्मद ग़ोरी और पृथ्वीराज चौहान का नाम उसे बताया और उससे पूछा कि इनकी यहाँ पर मज़ारें कहाँ हैं? तो वह बोला, यहाँ कन्धार में कई मज़ारें हैं। मुझे मालूम नहीं कि इन दोनों की मज़ारें कहाँ हैं, लेकिन कल मैं आपको पता करके बताऊँगा। हमारी बातें चल ही रही थी कि वहाँ 30 साल की उम्र का एक नौजवान आया और अफ़ज़ल से बोला कि मेरा दोस्त जो काबुल से आया है, वह कहाँ है, तो अफ़ज़ल ने मेरी तरफ़ इशारा करके अमान उल्ला से कहा कि तुम्हारा दोस्त यह है। क्या तुम दोनों एक-दूसरे को नहीं पहचानते, तो अमान उल्ला ने कहा कि नहीं हम

https://t.me/Sahityajunction

पहली बार आज ही मिले हैं, लेकिन कल मैंने इनसे फ़ोन पर बात की थी। इसके बाद अमान उल्ला मेरा सामान ले कर अपने होटल के कमरे में आया।

उसके कमरे में एक सिंगल बेड था, इसलिए इसी होटल में हमने दूसरा वह कमरा ले लिया, जिसमें 2 सिंगल बेड थे। हम दोनों हाथ-मुँह धो कर फ्रेश हुए और फिर अपने लिए नीचे से अफ़ज़ल के रेस्टोरेण्ट से दो आदमियों का खाना मँगवाया। अफ़ज़ल ने मेरे लिए सिर्फ सब्ज़ी और उसके लिए दुम्बे का मीट और रोटियाँ भेज दी थीं। वह मुझ से बोला कि संजय भाई, क्या आप यह घास-फूस खा रहे हैं, ज़रा एक बार इस दुम्बे का स्वाद चख कर देखिये। मैंने कहा कि भैया, मैं मीट अण्डा नहीं खाता।

खाना खाने के बाद हम दोनों अपने-अपने बेडों पर लेट कर आपस में बातें करने लगे। मैंने अमान उल्ला से कहा कि आप इतनी अच्छी हिन्दी बोलते हैं, यह कहाँ से सीखी? वह बोला, मैं बचपन से ही पाकिस्तान में रहता था, क्योंकि अफ़ग़ानिस्तान का माहौल लगातार लड़ाइयाँ होने के कारण ख़राब था। हमारा परिवार मेरे बचपन से ही पाकिस्तान में था। पाकिस्तान में मैं बहुत हिन्दी फ़िल्में देखता था, इसलिए मुझे हिन्दुस्तान के बारे में भी बहुत जानकारी है। अपनी पूरी बात करके उसने एकदम से मुझसे पूछा कि आप किस देश के लिए जासूसी करते हैं? भारत या अमरिका के लिए। मैंने कहा, कैसी बात करते हो भैया, क्या मैं शकल से आपको जासूस लगता हूँ और आपने ऐसा कैसे सोच लिया?

अमान उल्ला बोला कि संजय भाई, जब मैं काबुल से कन्धार अपने कम्पनी के काम से आ रहा था तो मेरी अम्मी ने दस बार मेरे माथे को चूमा और मुझे कई तरह की हिदायतें कन्धार में रह कर अमल करने के लिए दीं, क्योंकि वह ऐसा सोचती थी कि कन्धार गये हुए आदमी की कोई गारण्टी नहीं है कि वह ज़िन्दा वापस आयेगा के नहीं। और मेरा मानना है कि हिन्दुस्तान में ऐसा कोई आम आदमी पैदा नहीं हुआ जो शाम को पहली बार भारत से काबुल आये और अगली सुबह कन्धार जैसी ख़तरनाक जगह पर आ जाये।

मैंने अमान उल्ला की बात सुन कर सोचा कि अगर मैंने अभी इसी समय इसके दिमाग़ से यह बात दूर नहीं की कि किसी के लिए जासूसी नहीं करता हूँ तो यह मेरी सहायता नहीं करेगा। इसलिए उसे मैंने कई तर्कों के साथ समझाया कि मैं एक साधारण आदमी हूँ, किसी के लिए जासूसी नहीं करता हूँ, कई तर्क-वितर्क करने के बाद जो बात उसे समझ में आयी, वह यह थी कि अगर मैं किसी देश के लिए जासूसी करने आता तो मैं उस जैसे किसी अपरिचित के पास क्यों आता। वह देश मुझे कोई हेल्पर प्रोवाइड करवा देता। वैसे भी कोई देश अगर यहाँ जासूसी के लिए भेजेगा तो किसी ऐसे आदमी को भेजेगा जो यहाँ की फ़ारसी और पश्तो भाषा बोलना और समझना जानता हो, जिससे कि वह आसानी से इनके बीच मिल सके। वैसे भी आपने मेरा पासपोर्ट देखा है, उसमें मेरा नाम संजय गुप्ता है। अगर भारत देश मुझे जासूसी के लिए भेजता तो मेरा पासपोर्ट हिन्दू नाम से न बना कर, मुस्लिम नाम से बना कर भेजता, क्योंकि पासपोर्ट तो भारत सरकार को बनाना है और वह किसी का भी किसी भी नाम से पासपोर्ट बना दे तो भारत सरकार के अलावा उसे कोई चेक करने वाला नहीं है।

जब वह मेरी बातों से पूरी तरह सन्तुष्ट हो गया तो उसने मुझसे कहा कि ठीक है दो

https://t.me/Sahityajunction

दिन बाद शुक्रवार को जब मेरे काम की छुट्टी होगी तो मैं उस दिन आपको साथ ले कर कन्धार घुमा दूँगा। मैंने कहा कि ये दो दिन मैं क्या करूँगा? इससे अच्छा तो आप एक टैक्सी की मुझे व्यवस्था करवा दीजिए और उस टैक्सी वाले को पूरी तरह से समझा दीजिए कि वह मुझे पूरा कन्धार घुमा दे। उसने कहा, ठीक है, लेकिन आपकी ऐसी बातों से ही मुझे लगता है कि आप जासूस हैं या बिलकुल पागल हैं और यहाँ मरने के लिए आये हैं। मैंने कहा क्यों? तो वह बोला कि आप दो दिन भी इन्तज़ार नहीं कर सकते। तो मैंने कहा कि भाई, मैं बहुत डरपोक हूँ और इसीलिए जल्दी से काम पूरा करके वापस भारत जाना चाहता हूँ।

ऐसे ही इधर-उधर की बातें करके हम दोनों सो गये। जब हम सुबह को उठे तो अमान उल्ला ने मुझसे कहा कि फटाफट जल्दी से नहा-धो कर तैयार हो जाइए, मैं आपको कोई टैक्सी दिलवा दूँगा और फिर मैं अपने काम पर जाऊँगा। मैं बाथरूम में नहाने के लिए जाने लगा तो वह बोला कि बाथरूम में ठण्डा पानी है, इसलिए नीचे चल कर दोनों हमाम में नहायेंगे। मैंने हमाम के बारे में तिहाड़ जेल में बन्द अफ़ग़ानी आतंकवादियों से भी सुना था, इसलिए मेरे मन में हमाम को देखने की उत्सुकता थी कि वह कैसा होता है?

हम अपने कमरे से होटल में बने हमाम में नहाने के लिए नीचे आये तो मैंने देखा कि बहुत सारे बाथरूम थे जिनमें गर्म पानी की नयी टंकिया लगी हुई थीं। इन्हीं को हमाम बोलते थे। सब देखने के बाद मुझे ऐसा लगा कि हमाम में कुछ ऐसा ख़ास नहीं है और जैसे अफ़ग़ानी आतंकवादी तिहाड़ में हमाम में नहाने की इच्छा करते रहते थे, उससे मुझे यही महसूस हुआ कि उन अफ़ग़ानी आतंकवादियों ने अभी जीवन में अच्छी चीजें नहीं देखी होंगी, इसलिए हमाम उन्हें बहुत बड़ी चीज़ लगती थी।

हमाम में नहाने के बाद हम होटल के नीचे के रेस्टोरेण्ट में मैनेजर अफ़ज़ल भाई के पास गये जिससे मैं एक दिन पहले भी मिल चुका था वहाँ पर नाश्ता करने के बाद उनसे अपने किसी परिचित की टैक्सी दिलवाने के लिए कहा। उन्होंने सड़क से एक टैक्सी वाले को बुलाया और उसे पश्तो भाषा में समझा दिया कि मुझे कन्धार की सभी मज़ारें घुमानी है। रोज़ाना के लिए एक हज़ार अफ़ग़ानी में टैक्सी तय हो गयी। अमान उल्ला उसके बाद अपने काम पर चला गया और मैं टैक्सी में बैठ कर ड्राइवर के साथ कन्धार घूमने निकल गया।

इस ड्राइवर को मेरी भाषा मामूली-सी ही समझ में आती थी। सबसे पहले यह मुझे कन्धार शहर के अन्दर ही एक बहुत बड़े मक़बरे में ले गया। यह मक़बरा अहमद शाह अब्दाली का था और इसमें एक मस्जिद भी थी। इस मस्जिद के अन्दर इस्लाम धर्म के पैग़म्बर हज़रत मोहम्मद का एक जैकट भी मौजूद था, जिसके कारण यह जगह मुसलमानों में बहुत अहमियत रखती थी और इसीलिए यहाँ बहुत भीड़ भी रहती थी। मैंने अपने हैण्डी कैम कैमरे से इस जगह की वीडियो रिकॉर्डिंग की और कुछ फ़ोटो भी ख़ींचे।

कुछ समय यहाँ बिताने के बाद ड्राइवर मुझे कन्धार शहर से थोड़ी बाहर की तरफ़ एक मज़ार पर ले जाने लगा, इस मज़ार पर जाते समय ड्राइवर ने मुझे एक जगह दिखाते हुए बताया कि जो सामने मकान बने हुए हैं, वे तालिबान के मुखिया मुल्ला उमर और

https://t.me/Sahityajunction

उसके कमाण्डरों के हैं और नाटो सेना आने से पहले मुल्ला उमर और उसके कमाण्डर यहीं रह कर पूरे अफ़ग़ानिस्तान पर हुकूमत करते थे। ओसामा बिन लादेन भी जब अफ़ग़ानिस्तान आता था, तो वह भी मुल्ला उमर के साथ इन्हीं मकानों में रहता था, और बाद में बिन लादेन ने मुल्ला उमर की एक लड़की से निकाह भी कर लिया था।

मैंने ड्राइवर से गाड़ी रोकने के लिए कहा और उससे पूछा कि क्या आपने इन सबको देखा है, तो वह बोला कि जब यहाँ तालिबान की हुकूमत थी, तो ओसामा बिन लादेन और मुल्ला उमर कन्धार की सड़कों पर घूमा करते थे और मैंने उन्हें कई बार देखा। गाड़ी रुका कर जब मैं उन मकानों की तस्वीरे लेने और रिकार्डिग करने लगा तो एकदम से 3-4 अफ़ग़ानी पुलिस वाले भाग कर हमारी तरफ़ आने लगे, लेकिन उनके आने से पहले ही मैं फटाफट टैक्सी में बैठ गया और ड्राइवर से जल्दी से चलने के लिए कहा। मैंने ड्राइवर से पूछा कि ये लोग हमारी तरफ़ भाग कर क्यों आ रहे थे? वह बोला कि आप जिन मकानों की तस्वीरें ले रहे थे, आजकल उनमें नाटो की सेना के बड़े-बड़े कमाण्डर रहते हैं, और उनकी तस्वीरें लेना और वहाँ पर गाड़ी रोकना मना है।

वह ड्राइवर और मैं काफ़ी देर तक पीछे देखते रहे कि कहीं कोई हमारा पीछा तो नहीं कर रहा और थोड़ी देर में ही हम उस मज़ार पर पहुँच गये जहाँ के लिए हम चले थे।

इस मज़ार पर पहले वाले मक़बरे से भी ज़्यादा भीड़ थी। उन लोगों का यह मानना था कि जो भी यहाँ सजदा करता है, उसकी इच्छा पूरी होती है, इस जगह की भी मैंने फ़ोटोग्राफ़ी और रिकॉर्डिग की और कुछ समय बिताने के बाद मैं ड्राइवर के साथ वापस होटल के लिए आने लगा, क्योंकि शाम होने वाली थी और अमान उल्ला ने मुझसे कहा था कि शाम 5 बजे से पहले-पहले मैं होटल वापस आ जाऊँ। होटल वापस आते समय दोबारा से मुल्ला उमर के घर बीच रास्ते में पड़े जिनकी मैंने पहले ही रिकॉर्डिग कर ली थी, तो इस बार ड्राइवर ने मुझे चलती गाड़ी से ही बताया कि इन घरों से लगे हुए जो ये ऊँचे-ऊँचे पहाड़ हैं, इन पहाड़ों के अन्दर लम्बी-लम्बी सुरंगें हैं जो कि कई-कई किलोमीटर की दूरी तय करके दूसरे पहाड़ों से निकलती हैं और ये सुरंगें पहाड़ों में इसलिए बनाई हुई थीं कि अगर कोई इनके मकानों पर हमला कर दे तो ये उन पहाड़ों में बनी सुरंगों में घुस कर अपनी जान बचा सकें और दूर कहीं सुरक्षित बाहर निकल सकें।

मैंने इन सुरंगों की भी कुछ-कुछ रिकॉर्डिग की जितनी मैं चलती गाड़ी से कर सकता था, क्योंकि ड्राइवर ने मुझे बताया था कि नाटो सेना के लोग कभीकभी लोगों को इन मकानों की तस्वीरें लेने के कारण गोली भी मार चुके हैं। होटल पहुँचने के बाद मैंने ड्राइवर को एक हज़ार अफ़ग़ानी दिये और अगले दिन सुबह 9 बजे आने के लिए कहा। मैंने ड्राइवर से यह भी कहा कि कल आप मुझे कन्धार एयरपोर्ट के पास बनी हुई मज़ारें और मक़बरे घुमाने के लिए ले जाना। मैंने ड्राइवर को यह भी बताया कि मैंने सुना है कि कन्धार एयरपोर्ट के पास एक ऐसी मज़ार भी है जो किसी हिन्दुस्तानी सुल्तान की है और लोग-बाग उस पर जूते-चप्पल मारते हैं।

मेरी यह बात सुन कर ड्राइवर ने कहा कि मैंने ऐसी किसी जगह के बारे में नहीं सुना, लेकिन मेरा बड़ा भाई कन्धार एयरपोर्ट के पास ही रहता है, मैं उससे इस बारे में जानकारी लूँगा और फिर वह मुझे अगले दिन आने के लिए बोल कर चला गया। ड्राइवर के जाने के बाद मैं अफ़ज़ल भाई के पास रेस्टोरेण्ट में बैठ गया तो वे मुझसे पूछने लगे

https://t.me/Sahityajunction

कि मैं आज कहाँ-कहाँ घूमा हूँ। मैंने उनको सभी जगहों के बारे में बता दिया जो मैं घूम कर आया था। मैंने अफ़ज़ल भाई से भी पृथ्वीराज की समाधि के बारे में पूछा, तो वे बोले कि उन्हें इसके बारे में जानकारी नहीं है और ऐसी किसी मज़ार और मक़बरे के बारे में उन्होंने नहीं सुना, जिस पर चप्पालजूते मारते हो, लेकिन फिर भी वे मेरे लिए पता करेंगे।

थोड़ी देर बाद अमान उल्ला भी आ गया और फिर हम खाना खा कर अपने होटल के कमरे में जा कर बातचीत करके सो गये। अगले दिन मैं 9 बजे तक तैयार हो गया और टैक्सी वाले के साथ कन्धार एयरपोर्ट की तरफ़ जाने लगा। एयरपोर्ट की तरफ़ जाते समय ड्राइवर ने मुझे बताया कि उसने अपने बड़े भाई से एक ऐसी मज़ार के बारे में पता किया है जिस पर लोग जूता मारते हैं। मैंने कहा सबसे पहले उसी मज़ार पर चलिए।

गाड़ी थोड़ी देर हाई-वे पर चलाने के बाद ड्राइवर ने एक कच्ची सड़क पर मोड़ ली और मुझसे कहा कि सामने गाँव में मेरा बड़ा भाई रहता है, उसे साथ में ले कर चलते हैं, क्योंकि उसे ही मालूम है। मैंने कहा, ठीक है। गाँव में पहुँच कर गाड़ी उसने एक घर के सामने रोकी और मुझसे अन्दर चलने के लिए कहा, लेकिन मैं अन्दर नहीं गया और ड्राइवर से कहा कि आप अपने भाई को यहीं गाड़ी में ही ले आइये, मैं यहीं गाड़ी में बैठा हूँ। थोड़ी देर बाद ड्राइवर अपने साथ एक बहुत ही लम्बे-तगड़े आदमी को लाया, जिसके साथ 3-4 छोटे बच्चे भी थे।

उस लम्बे-तगड़े आदमी ने मुझसे आदरपूर्वक कहा कि आप हमारे घर में चलिए, पर मैंने कहा कि आप मुझे पहले वह मज़ार दिखा दीजिए जिस पर लोग जूते-चप्पल मारते हैं, उसने कहा ठीक है और फिर वह भी हमारी टैक्सी में बैठ गया। ड्राइवर दोबारा से टैक्सी हाई-वे पर ले आया और थोड़ी दूरी तय करने के बाद उसने एक तरफ़ इशारा करते हुए मुझे बताया कि यह कन्धार एयरपोर्ट है। कन्धार एयरपोर्ट सड़क पर ही था और इसके कई किलोमीटर दूर तक और कुछ भी नहीं था और चारों तरफ़ ख़ाली-ही-ख़ाली था। एयरपोर्ट से थोड़ी दूर जाने के बाद ड्राइवर ने गाड़ी बाँयीं तरफ़ कच्ची सड़क पर उतार दी। जब मैंने ड्राइवर से पूछा कि इधर कच्ची सड़क पर कहाँ जा रहे हो, तो वह बोला कि जो क़ब्र आपको देखनी है, वह इसी कच्चे रास्ते पर है।

पहले मेरे मन में विचार आया कि मैं ड्राइवर से वापस चलने के लिए कहूँ और बाद में अमान उल्ला को साथ ले कर आऊँ, क्योंकि मैं मन-ही-मन सोच रहा था कि अगर इन दोनों ने मुझे बन्दी बना लिया या किसी भी तरह की हानि पहुँचा दी तो मैं कुछ भी नहीं कर पाऊँगा, क्योंकि शारीरिक रूप से वे दोनों काफ़ी लम्बे-तगड़े थे, और उनके पास गाड़ी में कोई हथियार भी हो सकता था, लेकिन फिर मैंने ऊपर वाले का ध्यान करके मन में विचार किया कि जो भी होगा देखा जायेगा।

हाई-वे से क़रीब आधा घण्टे कच्ची सड़क पर चलने के बाद उसने एक छोटी-सी क़ब्र मज़ार के पास गाड़ी रोकी और गाड़ी से उतर कर बताया कि यह वो मज़ार है जिस पर लोग जूते-चप्पल मारते हैं, इस समय इस क़ब्र के आसपास हमारे सिवा कोई भी नहीं था। मैंने ड्राइवर से कहा कि इस क़ब्र के बारे में तो कुछ यहाँ लिखा नहीं है, और आप मुझे अपने भाई से पता करके बताइये, कि इस क़ब्र पर जूते-चप्पल क्यों मारते हैं? उसने अपने भाई से पता करके मुझे बताया कि आस-पास के लोगों की ऐसी मान्यता है, कि

https://t.me/Sahityajunction

जो भी इस क़ब्र पर जूते-चप्पल मार कर उस जूते-चप्पल को अपने सर पर भी मारता है, उसकी सभी बीमारियाँ दूर हो जाती हैं।

मैंने ड्राइवर से कहा कि इसका मतलब तो यह हुआ कि यह क़ब्र आपके लिए बहुत ही फ़ायदेमन्द है, तो वह बोला—हाँ। मैंने कहा, मुझे ऐसी क़ब्र की तलाश है, जो हिन्दुस्तानी सुल्तान की हो, मतलब वह क़ाफिर सुल्तान हो। और लोग-बाग उसकी क़ब्र पर जूते-चप्पल उसे बेइज़्ज़त करने के लिए मारते हों, न कि अपने इलाज के लिए। वह बोला कि जूते-चप्पल वाली क़ब्र तो एयरपोर्ट के पास बस एक यही है जिसकी हमें जानकारी है। मैंने कहा कि इस जगह को देख कर ऐसा लग भी नहीं रहा है कि यहाँ कोई क़ब्र है, फिर भी मैंने अपने कैमरे से उस जगह की भी रिकॉर्डिंग कर ली, और फिर उसे वापस चलने को कहा।

आधा घण्टा गाड़ी में चलने के बाद हम दोबारा वापस उसी हाई-वे की सड़क पर आये जो कन्धार एयरपोर्ट से होते हुए कन्धार शहर को जाती थी। इस हाई-वे पर सुरक्षित आने के बाद मेरे मन में बहुत ख़ुशी हुई, क्योंकि उस कच्ची सड़क पर मेरे मन में उल्टे-पुल्टे विचार आ रहे थे। वापस आते समय मैंने कन्धार एयरपोर्ट की कैमरे से वीडियो रिकॉर्डिंग की और उस ड्राइवर के भाई को वापस उसके गाँव में छोड़ कर कन्धार अपने होटल में गया।

जब मैं सुरक्षित होटल में आ गया तो मैंने मन-ही-मन सोचा कि लोगों की बातों ने कन्धार के हर आदमी के लिए मेरे मन में वैसी शंका पैदा कर दी है और यह ड्राइवर कितना शरीफ आदमी है। मैंने ड्राइवर को अपने साथ ही ले जा कर अफ़ज़ल के रेस्टोरेण्ट में खाना खाया और ड्राइवर से कन्धार की और मज़ारों के बारे में पूछा, लेकिन वह मेरे काम की कोई भी बात नहीं बता सका। मैंने ड्राइवर को उसके पैसे दे कर दिन में ही वापस भेज दिया। अब मेरे दिमाग़ में यह सोच कर काफ़ी टेंशन होने लगी थी कि क्या कन्धार में पृथ्वीराज चौहान की समाधि है या नहीं? या फिर यहाँ के लोग जान-बूझ कर मुझे वह जगह नहीं दिखा रहे हैं?

यही बातें सोचते-सोचते मैं काफ़ी देर अफ़ज़ल भाई से बातें करता रहा और उनसे कन्धार और पाकिस्तान के बारे में जानकारियाँ हासिल करता रहा अफ़ज़ल भाई से मेरी अब अच्छी दोस्ती हो गयी थी। शाम को अमान उल्ला वापस होटल में आया तो उसे मैंने पूरे दिन के बारे में बताया कि मैं कहाँ-कहाँ घूमने गया था? मेरी यह बातें सुन कर कि मैं कन्धार शहर से 30-40 किलोमीटर दूर किसी गाँव में गया था, वह बहुत नाराज़ हुआ और काबुल मोबाइल से फ़ोन मिला कर मेरे उस भारतीय परिचित से बात करने लगा जिसने मुझे अमान उल्ला के पास भेजा था। अमान उल्ला ने उससे कहा कि भाई, यह कोई पागल आदमी है और कन्धार की ऐसी-ऐसी जगहों पर जा रहा है जो तालिबानियों का गढ़ हैं और इसे कुछ हो गया तो मेरी कोई ज़िम्मेदारी नहीं है।

उसने मोबाइल से मेरी भी बात करायी तो वह काबुल के होटल वाला जो मुम्बई का भारतीय था, मुझसे बोला कि संजय भाई, यह भारत नहीं है और अगर आप ऐसे ही रिस्क लेंगे तो कभी यह भी पता नहीं चलेगा कि आप अफ़ग़ानिस्तान आये थे। मैंने कहा कि आप चिन्ता न करें। मैं आगे से ध्यान रखूँगा। उसके बाद अगले दिन शुक्रवार होने के कारण अमान उल्ला की छुट्टी थी इसलिए आज हम दोनों ही एक टैक्सी ले कर कन्धार

https://t.me/Sahityajunction

की अलग-अलग जगहों पर घूमने के लिए निकल गये। सबसे पहले हम एक मज़ार पर गये और वहाँ की वीडियों रिकॉर्डिग की।

अमान उल्ला ने मेरे सामने ही कई लोगों से मेरी बतायी हुई ऐसी क़ब्र के बारे में जानकारी हासिल करनी चाही जो किसी काfिफर की हो और उस क़ब्र पर लोग-बाग जूते-चप्पल मारते हों लेकिन हमें ऐसी किसी क़ब्र के बारे में कोई जानकारी नहीं मिली। पूरा दिन कन्धार में घूम कर हम शाम को होटल में लौट आये। होटल में आने के बाद अमान उल्ला ने मुझसे कहा कि कन्धार में मेरा काम पूरा हो चुका है, इसलिए मैं कल वापस अपने घर काबुल जाऊँगा और आप भी मेरे साथ वापस काबुल चलना, क्योंकि यह जगह ठीक नहीं और वैसे भी जैसी क़ब्र आप ढूँढ रहे हो, वह यहाँ कन्धार में नहीं है, यह आपने देख लिया और बिना कारण यहाँ ख़तरे में रहना ठीक नहीं है। हम सोने के लिए बेड पर लेट गये और मैं काफ़ी देर रात तक परेशान हालत में यही सोचता रहा कि मुझे यहीं रुकना चाहिए था वापस काबुल जाना चाहिए और बाद में अकेले आना चाहिए। अन्त में वापस काबुल जाने का विचार बना कर मैं सो गया और अगले दिन अमन उल्ला और मैं काबुल की बस में बैठ कर दिन में ही काबुल पहुँच गये।

https://t.me/Sahityajunction

32. ग़ज़नी में परिचय

काबुल पहुँच कर मैंने अमान उल्ला से कहा कि मैं पुराने होटल में नहीं रुकना चाहता हूँ और आप मुझे काबुल शहर के बीच बाज़ार के किसी होटल में रुकवा दीजिये। मैं पुराने होटल में इसलिए नहीं रुका था, क्योंकि मैं नहीं चाहता था कि वह मुम्बई का होटल मैनेजर मुझसे मेरे बारे में ज़्यादा जानकारी ले, इसके अलावा शहर के बीच बाज़ार में रुक कर मैं शहर के बारे में ज़्यादा जान सकता था।

अमान उल्ला ने मुझे बाज़ार के एक अच्छे होटल में 30 अमरीकी डॉलर रोज़ का एक कमरा किराये पर दिलवा दिया। अमान उल्ला से मैंने 10 हज़ार अफ़ग़ानी में उसका एक मोबाइल फ़ोन, सिम कार्ड के साथ तब तक के लिए ले लिया जब तक मुझे अफ़ग़ानिस्तान में रुकना था। इसके बाद अमान उल्ला मुझसे यह कह कर कि कोई ज़रूरत हो तो मुझे बता देना, वापस अपने घर चला गया।

शाम 5-6 बजे के आस-पास मैं होटल के बाहर बाज़ार में खाना खाने गया तो मैंने देखा हर होटल में खाने के लिए सिर्फ नॉनवेज है, इसलिए मैं बिना खाना खाये ही अपने लिए बहुत सारे फ़्रूट वग़ैरा ले कर वापस होटल में आ गया और उन्हें खा कर सो गया। अगले दिन सुबह उठ कर मैं पैदल ही काबुल के बाज़ार में घूमने के लिए निकल गया। काबुल में एक बाज़ार था जहाँ पर पुरानी ऐण्टीक चीजें मिलती थीं। इस बाज़ार की एक दुकान पर मैंने बहुत सारी ऐण्टीक चीजें देखीं जिनके बारे में दुकानदार ने मुझे बताया कि कौन-सी चीज़ कौन-से काल की है?

उस दुकानदार को इतिहास के बारे में अच्छी जानकारी थी, इसलिए मैंने उससे मोहम्मद ग़ोरी से सम्बन्धित चीजें यह सोच कर माँगीं कि शायद उससे उस क़ब्र के बारे में भी कुछ पता चल जाये। उसने मुझसे कहा कि मुहम्मद ग़ोरी के समय की कोई भी चीज़ इस समय मेरे पास नहीं है, लेकिन अगर आप 4-5 दिन का समय दें तो मैं अपने भाई की दुकान से, जो ग़ज़नी शहर में है, मँगवा दूँगा। मैंने कहा ग़ज़नी से मँगवाने की ज़रूरत नहीं है और अगर आप अपने भाई से बोल दें तो मैं ग़ज़नी जा कर ख़ुद ही उनकी दुकान से खरीदारी कर लूँगा और वे आपके कहने पर मुझे ग़ज़नी शहर भी घुमा देंगे।

इस बात के लिए वह एकदम तैयार हो गया और उसने मुझे अपने भाई का मोबाइल नम्बर दे दिया और मेरे सामने ही फ़ोन पर बात करके उसे सब समझा दिया। इसके बाद मैं वापस अपने होटल में आ गया और वहाँ पर मौजूद रिसेप्शनिस्ट से मालूम किया कि ग़ज़नी कैसे जाना ठीक रहेगा। उसने मुझे बताया कि यहाँ पर एक टैक्सी स्टैण्ड है, जहाँ से ग़ज़नी जाने के लिए टैक्सी मिलती है। उसकी बतायी गयी जगह पर उसी समय मैं यह सोच कर निकल पड़ा कि कल जाने के लिए आज ही पूरी मालूमात कर लेता हूँ।

उस टैक्सी स्टैण्ड पर जा कर मैंने देखा कि वहाँ पर बहुत सारी टॉयोटा कम्पनी की गाड़ियाँ खड़ी थीं, जिस गाड़ी का नम्बर आ रहा था, वह 4-4 आदमी बैठा कर वहाँ से निकल रहा था। मैंने एक टैक्सी वाले से बात की तो वह बोला पूरी गाड़ी यहाँ से पन्द्रह सौ अफ़ग़ानी में जायेगी और अगर आप तीन सवारी दूसरी बैठने देंगे तो आपके अकेले के चार सौ अफ़ग़ानी लगेंगे। मैंने उससे कहा कि क्या टिकट आज ही लेना पड़ेगा तो वह

https://t.me/Sahityajunction

बोला कि टिकट की कोई ज़रूरत नहीं जो भी गाड़ी का नम्बर होगा, उसमें आप कल आ कर बैठ जाना।

सारी जानकारियाँ मैं हासिल करके वापस होटल आने लगा तो बीच में काबुल का चिड़िया घर पड़ा, जिसे देखने के लिए मैं टिकट ले कर अन्दर चला गया। इस चिड़िया घर के अन्दर कोई ख़ास जानवर नहीं थे और इसे नाटो की सेना ने कुछ महीने पहले ही दोबारा शुरू करवाया था, क्योंकि लड़ाइयों के कारण यह पहले बन्द था। इस चिड़िया घर के अन्दर जिस जानवर को देख कर मुझे बहुत आश्चर्य हुआ वह था सूअर, क्योंकि मुसलमान सूअर से नफ़रत करते हैं और इस सूअर का इस मुस्लिम देश के चिड़िया घर में मौजूद रहने का मतलब था कि यह देश पूरी तरह आज़ाद नहीं है।

चिड़िया घर देख कर मैं वापस अपने होटल में आने लगा तो मैंने होटल के बाहर ही मौजूद एक जूस वाले की दुकान से 4-5 गिलास जूस के पिये और वहाँ मौजूद 5-6 छोटे ग़रीब बच्चों को भी एक-एक गिलास जूस का पिलवाया और जब तक मैं काबुल में रहा, ऐसा मैं रोज़ ही करता था। बाद में तो ऐसा हो गया था कि बहुत सारे बच्चे मेरा उस जूस की दुकान पर इन्तज़ार करते रहते थे।

https://t.me/Sahityajunction

33. ग़ज़नवी के शहर में

अगले दिन मैं सुबह ही टैक्सी से ग़ज़नी पहुँच गया। काबुल से ग़ज़नी उसी हाई-वे सड़क पर था, जिस सड़क पर कन्धार था। काबुल से ग़ज़नी की दूरी क़रीब 300 किमी. थी, लेकिन सड़क इतनी अच्छी हालत में थी कि टैक्सी ने सिर्फ 3 घण्टे में ही ग़ज़नी पहुँचा दिया। यहाँ की सड़कें ऐसी थीं कि जहाँ तक आपकी नज़र जायेगी, वहाँ तक सीधी सड़क ही नज़र आयेगी। सड़क के दोनों तरफ़ बहुत दूर तक बर्फ-ही-बर्फ दिखाई देगी और बहुत ही कम छोटे-मोटे गाँव पड़ेंगे, जिसके कारण यहाँ पर सड़कों पर पूरी रफ़्तार से गाड़ियाँ भगायी जा सकती थीं।

ग़ज़नी पहुँच कर मैंने अपने मोबाइल फ़ोन से उस नम्बर पर फ़ोन किया जा मुझे काबुल वाली एण्टीक शॉप के दुकानदार ने दिया था। सामने से मुझसे जिस व्यक्ति ने मोबाइल पर बात की, उसने मुझे एक होटल का नाम बताया और उस होटल में पहुँच कर अपना नाम बता कर मुझे इन्तज़ार करने के लिए कहा। मैंने एक दूसरी टैक्सी ली और उस बताये गये होटल पर आ गया और वहाँ मौजूद व्यक्ति से उस मोबाइल वाले व्यक्ति का नाम बताया। मैं होटल पहुँच कर बैठा ही था कि एकदम से एक लम्बा-तगड़ा आदमी जिसकी उम्र क़रीब 40 साल थी मेरे पास आया और अपना नाम और परिचय दिया।

नाम अब याद नहीं है, इसलिए यहाँ उसे मैं ग़य्यूर कह रहा हूँ। ग़य्यूर भाई ने मुझे बताया कि वह ग़ज़नी पुलिस में नौकरी करता है और पास के गाँव में ही उसका मकान है। जिस होटल में हम बैठे हैं वह भी उसका अपना ही है और पास में ही ऐण्टीक चीज़ों की दुकान भी है। इसके बाद ग़य्यूर मुझे चाय पिलाने की ज़िद करने लगा, लेकिन मैंने मना कर दिया, क्योंकि मैंने कभी जीवन में चाय नहीं पी। इसके बाद वह मुझे अपनी एण्टीक चीज़ों की दुकान पर ले गया और बहुत सारी चीजें दिखायीं, जिसमें से मैंने कुछ सिक्के यह सोच कर ख़रीद लिये कि इसको ऐसा नहीं लगना चाहिये कि मैं सिर्फ मुहम्मद ग़ोरी की क़ब्र को देखने के लिए आया हूँ।

ख़रीदारी करने के बाद वह मुझे अपनी गाड़ी से सड़क पर ही मौजूद एक बहुत बड़ी मज़ार पर ले गया और मुझे बताया कि आप जिस मज़ार को ढूँढ रहे हैं, वह यही मज़ार है, क्योंकि इन्होंने ही हिन्दुस्तान जा कर कई बार फ़तह किया था। मज़ार के बाहर बहुत बड़ा पार्क भी था और इस पार्क पर एक बोर्ड लगा था जिस पर सब कुछ लिखा हुआ था कि यह मज़ार किसकी है और इसने अपने जीवन में क्या-क्या किया था मैंने बोर्ड पढ़ा तो जाना कि यह मज़ार सुल्तान महमूद ग़ज़नवी की है, जिसने भारत आ कर कई बार सोमनाथ मन्दिर को लूटा था।

मैंने मज़ार की पूरी वीडियो रिकॉर्डिंग की और ग़य्यूर भाई से पूछा कि क्या इस जगह पर किसी हिन्दुस्तानी क़ाफिर सुल्तान की भी क़ब्र है जिस पर लोग जूते-चप्पल मारते हैं तो वह बोला कि नहीं, ऐसी क़ब्र इस जगह पर नहीं है। लेकिन ग़ज़नी शहर में किसी दूसरी जगह पर हो सकती है।

मैंने हर ऐंगल से महमूद ग़ज़नवी की मज़ार को देखा, लेकिन कहीं पर भी मुझे

https://t.me/Sahityajunction

पृथ्वीराज चौहान की समाधि नहीं दिखी। ग़ज़नवी की मज़ार देखने के बाद मैं उसी दिन काबुल वापस आ गया, क्योंकि शाम होने से पहले ही मैं अपने होटल में वापस आना चाहता था। काबुल वापस आने से पहले ग़य्यूर भाई ने मुझे अपने गाँव चलने के लिए कहा, लेकिन मैंने मना कर दिया और फिर जल्दी दोबारा आने के लिए कह कर मैं वापस काबुल आ गया।

https://t.me/Sahityajunction

34. तलाश जारी : कन्धार

काबुल में एक-दो दिन ऐसे बिताने के बाद मेरे दिमाग़ में आया कि मुझे वापस कन्धार जाना चाहिये, क्योंकि मेरी जानकारी के अनुसार जो मुझे भारतीय अख़बारों और टी.वी. न्यूज़ से मिली थी, वह यही थी कि पृथ्वीराज चौहान की समाधि कन्धार एयरपोर्ट के पास कहीं है। ऐसा विचार आते ही मैं अगले दिन सुबह ही कन्धार जाने के लिए बस में बैठ गया और दिन में 2 बजे के क़रीब अकेला ही कन्धार पहुँच गया। मैं सीधा उसी होटल में गया जिसमें मैं पहले अमान उल्ला के साथ रुका था और उसके मैनेजर जो पहले ही मेरा दोस्त बन चुका था, एक कमरा देने के लिए कहा।

अफ़ज़ल भाई ने मुझे अपने होटल में एक कमरा दिलवा दिया। कई दिनों से काबुल में मैंने खाना नहीं खाया था, क्योंकि वहाँ सभी में मीट मिक्स था, इसलिए मैंने अफ़ज़ल भाई से अपने लिए कोई भी सब्ज़ी बनवाने के लिए कहा, जिससे मैं खाना खा सकूँ। अफ़ज़ल भाई से मैंने फिर हिन्दुस्तानी सुल्तान पृथ्वीराज चौहान के बारे में पूछा तो वह बोले कि मैंने आपके लिए पहले ही पता किया था, लेकिन ऐसे किसी क़ाफिर की क़ब्र यहाँ नहीं है, लेकिन उन्होंने मुझे यह आइडिया दिया कि मुझे कन्धार में जो कुछ हिन्दू लोग रहते हैं उनसे जा कर पता करना चाहिये, क्योंकि हिन्दुस्तानी सुल्तान के बारे में उन्हें ज़्यादा जानकारी होगी।

अफ़ज़ल भाई की यह बात सुन कर मैंने उनसे कहा कि क्या कन्धार में हिन्दू भी रहते हैं? तो वे बोले कि कुछ साल पहले तो यहाँ हज़ारों की तादाद में हिन्दू परिवार थे, लेकिन तालिबान की हुकूमत के समय अधिकतर चले गये, लेकिन आज भी कुछ परिवार यहाँ रहते हैं। मैंने किसी से मिलवाने की गुज़ारिश की तो उसने मुझे होटल के पास ही का एक पता बताया और कहा कि कि यह डॉक्टर है, आप पैदल ही सीधे इस सड़क से चले जाइये और आगे जा कर किसी से भी डॉक्टर के बारे में पूछ लेना।

मैंने अपना कैमरा उठाया और उन डॉक्टर साहब की क्लीनिक को खोजताखोजता चला गया। डॉक्टर साहब की उम्र क़रीब 60-65 साल की थी और बहुत छोटी-सी दुकान में ये अपना क्लीनिक खोल कर बैठे थे, इस क्लीनिक के साथ में ही उनका घर था। मैंने उन्हें अपना परिचय दिया और बताया कि मैं भारतीय हूँ, लेकिन उन्हें विश्वास नहीं हुआ तो मैंने इन्हें अपना भारतीय पासपोर्ट दिखाया और तब उन्हें विश्वास हुआ और वे मुझ से ठीक से बात करने के लिए तैयार हुए।

डॉक्टर साहब मुझे पीछे अपने घर पर ले गये और अपने बारे में बताया कि उनका पूरा परिवार यूरोप चला गया है, लेकिन वे ज़्यादा उम्र होने के कारण नहीं गये। उन्होंने मुझे कन्धार में मौजूद 4-5 मन्दिरों के बारे में भी बताया, जिनकी ठीक से देख-भाल न होने के कारण हालत ख़स्ता थी, और इन मन्दिरों की ख़स्ता हालत मैंने बाद में ख़ुद भी देख ली थी।

मैंने डॉक्टर साहब को बताया कि जब कुछ साल पहले तालिबान एक भारतीय हवाई जहाज़ सभी सवारियों के साथ कन्धार एयरपोर्ट पर पकड़ लाये थे, तो उसे छुड़ाने हमारे विदेशी मन्त्री यहाँ कन्धार आये थे, उनके साथ कुछ भारतीय पत्रकार भी थे, इन

https://t.me/Sahityajunction

पत्रकारों ने भारत वापस आ कर टी.वी. न्यूज़ में बताया था कि कन्धार में आ़ख़री हिन्दुस्तानी राजा पृथ्वीराज चौहान की समाधि को जूते-चप्पल मारे जाते हैं, जिससे कि भारत का अपमान होता है, मेरी बात सुन कर डॉक्टर साहब बोले कि मैं कन्धार में बचपन से रहता हूँ और यहाँ पर पृथ्वीराज चौहान की समाधि के बारे में मैंने कभी नहीं सुना है।

उन्होंने मुझे बताया कि पृथ्वीराज चौहान की जंग मुहम्मद ग़ोरी से हुई थी और वह उनको बन्दी बना कर भारत से लाया था, इसलिए पृथ्वीराज चौहान की क़ब्र ग़ज़नी या हेरात शहर में होनी चाहिये, क्योंकि मुहम्मद ग़ोरी और उसके परिवार का राज इन दोनों शहरों से चलता था। मेरे यह पूछने पर कि क्या आपने कभी नहीं सुना कि यहाँ किसी हिन्दुस्तानी राजा को जूते-चप्पल मारते हैं, तो वह बोले कि मैंने सुना है कि ग़ज़नी के पास किसी हिन्दुस्तानी राजा की क़ब्र है, जिस पर वहाँ के लोग जूते-चप्पल मारते हैं, लेकिन वह राजा कौन है, मुझे यह पक्का नहीं पता, क्योंकि मैं वहाँ कभी नहीं गया हूँ।

डॉक्टर साहब ने मुझे यह भी बताया कि ग़ज़नी में हिन्दुओं के दो मन्दिर भी हैं, जिनमें पुजारी अपने परिवार के साथ रहते हैं और वे मुझे कुछ जानकारी दे सकते हैं। काबुल में भी मन्दिर और गुरुद्वारे हैं, यह जानकारी भी मुझे उन्होंने दी और यह भी बताया कि पहले कन्धार में हिन्दुओं के हज़ारों परिवार रहते थे और लगभग सभी अनार और बादाम के बाग़ हिन्दुओं के ही थे, लेकिन तालिबानियों के डर से सभी लोग अपना सब कुछ छोड़ कर चले गये। और भी बहुत सारी जानकारियाँ डॉक्टर साहब ने मुझे दीं जो मेरे काम की थीं। मैं डाक्टर साहब को बहुत-बहुत धन्यवाद कह कर वापस होटल में आया और विचार करने लगा कि अब मुझे पहले हेरात जाना चाहिये या ग़ज़नी, क्योंकि दोनों ही कन्धार से अलग-अलग दिशाओं में थे।

https://t.me/Sahityajunction

35. तलाश जारी : फिर ग़ज़नी

मेरा अफ़ग़ानिस्तान में रहने का समय पूरा होने वाला था, इसलिए मैंने पहले काबुल वापस आ कर अपना वीज़ा बढ़वाने की सोची। वीज़ा बढ़वाने का ऑफिस भारतीय ऐम्बेसी के बिलकुल बग़ल में ही था। मैं इस ऑफिस में गया और सारी काग़ज़ी कार्रवाई पूरी करके अगले दिन अपने पासपोर्ट पर एक महीने का और वीज़ा प्राप्त कर लिया। इस ऑफिस में मेरी जान-पहचान एक पाकिस्तान पत्रकार से भी हो गयी जो एक पाकिस्तानी न्यूज़ चैनल के लिए काबुल में रह कर काम करता था।

पाकिस्तानी न्यूज़ चैनल के इस पत्रकार ने मुझे अपना मोबाइल नम्बर भी दे दिया और कहा कि अगर कोई अच्छी न्यूज़ मुझे मिले तो मैं उसे स्टोर कर लूँ। जब मेरा वीज़ा एक महीने का और बढ़ गया तो मैं अगले दिन फिर ग़ज़नी गया और ग़य्यूर भाई से मिला और उन्हें बताया कि मैंने किसी से पता किया है कि ग़ज़नी के पास किसी जगह पर एक हिन्दुस्तानी सुल्तान की क़ब्र है जिस पर लोग जूते-चप्पल मार कर अपनी ज़ियारत करते हैं तो ग़य्यूर ने मुझसे कहा कि मुझे इस बारे में नहीं मालूम, क्योंकि ग़ज़नी के आस-पास सुन्नी मुसलमानों के गाँव हैं और हम लोग शिया मुसलमान हैं और महमूद ग़ज़नवी के खानदान के हैं, इसलिए हमारी उन लोगों से लड़ाई रहती है, जिसके कारण हम लोग कभी भी आस-पास के गाँवों में नहीं जाते हैं, लेकिन उसने मुझे आश्वासन दिया कि अगर मुहम्मद ग़ोरी की मज़ार अरैर किसी हिन्दुस्तानी सुल्तान की क़ब्र उन सुन्नी मुसलमानों के इलाक़े में हुई तो वह मुझे अपने वालिद के छोटे भाई से पता करके बतायेगा जब भी वे ग़ज़नी आयेंगे।

मैंने जब उसके वालिद के छोटे भाई के बारे में पूछा कि कहाँ गये हैं और आप फ़ोन पर उनसे पता करके बता दीजिए तो वह बोला कि वालिद के छोटे भाई काबुल में प्रोफ़ेसर हैं और उन्हें पूरे अफ़ग़ानिस्तान के इतिहास के बारे में पता है। जब भी वे आयेंगे मैं उनसे पूछ कर आपको फ़ोन पर बताऊँगा और अगर आप ग़ज़नी में रुकना चाहें तो हमारे होटल में रुक सकते है। इसी दिन ग़य्यूर भाई ने मुझे ग़ज़नी की कुछ और ऐतिहासिक जगहें भी यह सोच कर दिखायीं कि हो सकता है कि इन्हीं में से ही कोई वह जगह हो जिसकी मुझे तलाश थी।

इन ऐतिहासिक जगहों में मुख्य रूप से क़ब्रें थीं। यह ऐसी जगह थी कि ऊपर ज़मीन पर एक हॉल बना हुआ था और इस हॉल के नीचे बहुत तहखाने के रूप में बनी जगह पर सारे लोगों के कंकाल पड़े हुए थे, इस तहख़ाने का रास्ता बहुत ही छोटी-सी खिड़की के अन्दर से जाता था। जब मैंने तहख़ाने में जाने के लिए ग़य्यूर भाई से कहा तो वे बोले कि वे अन्दर नहीं जायेंगे, उन्हें अन्दर डर लगता है। 2-3 छोटे-छोटे बच्चे, जो वहीं खेल रहे थे, मेरे साथ अन्दर तहख़ाने में चले गये, जैसे ही मैं अन्दर घुसा और अन्दर घुस कर सीधा खड़ा हुआ, मेरा सर छत से टकराया, क्योंकि उसकी छत बहुत ही नीची थी, छोटे बच्चों को कोई दिक़्क़त नहीं थी और वे सीधे ही आराम से खड़े थे। यहाँ पर बिलकुल अँधेरा था और जब मैंने अपना कैमरा ऑन किया तो उसमें से निकली छोटी-सी लाइट में मुझे वहाँ चलने-फिरने की जगह दिखने लगी। मैंने देखा वहाँ ज़मीन पर बहुत सारे आदमियों के कंकाल-ही-कंकाल पड़े हुए हैं। मैंने उस जगह और उन कंकालों की

https://t.me/Sahityajunction

वीडियो रिकॉर्डिंग की और फिर बाद में बाहर निकल आया, क्योंकि उस तहख़ाने में हवा न होने के कारण मेरी साँस घुट रही थी।

इसके बाद मुझे ग़य्यूर भाई ने 3-4 मीनारें दिखायीं जो बिलकुल भारतीय कुतुब मीनार की तरह ही बनी हुई थीं, इन मीनारों के बारे में उन्होंने मुझे बताया कि जब भी सुल्तान जीतते थे, उस जीत की ख़ुशी में एक नयी मीनार बनाते थे, लेकिन जब अंग्रेज़ों ने डेढ़ सौ साल पहले हमला किया था तब इन मीनारों का कुछ हिस्सा तोड़ दिया था। उसने बताया कि इसी काल में अंग्रेज़ ईसाई महमूद ग़ज़नवी के मज़ार का सोने का बहुत बड़ा दरवाज़ा और वहाँ लगा हुआ एक सोने का बहुत बड़ा घण्टा भी, जिसे ग़ज़नवी भारत के सोमनाथ से जीत कर लाया था, अपने साथ ब्रिटेन ले गये थे।

मैंने कहा ग़य्यूर भाई यह तो प्रकृति का नियम है। जब महमूद ग़ज़नवी ताक़तवर था, तब वह अपनी ताक़त से क़ीमती चीजें भारत से ले आया था, और वही सब चीजें जैसे आयी थीं वैसे ही अंग्रेज़ अपनी ताक़त पर ले गये। मैंने उन्हें बताया कि अंग्रेज़ भारत से भी कोहिनूर हीरा और अन्य क़ीमती चीजें अपने साथ ब्रिटेन ले गये थे। कुछ और जगहों पर घूम कर ग़य्यूर भाई मुझे अपने होटल पर ले आये जिससे कि मैं रात को वहीं रुक सकूँ।

इनका यह होटल अफ़ग़ानी स्टाइल का था, अफ़ग़ानी स्टाइल के होटल में किसी भी कमरे में कोई बेड बग़ैरा नहीं होता है, ज़मीन पर कालीन बिछा हुआ होता है और उसी पर सोना पड़ता है, कमरे के बीच में एक चिमनी-सी लगी रहती है, जिसमें आग जला कर कमरे को गर्म रखा जाता है, मुझे भी उन्होंने एक कमरा दिलवा दिया और उस कमरे में अपना सामान रख कर मैं नीचे बने एक हॉल में आ गया जहाँ पर वे लोग सोते थे, जो कमरे का किराया नहीं दे सकते थे, इस हॉल में खाने का भी इन्तज़ाम था और एक टी.वी. भी डी. वी. डी. प्लेयर के साथ रखा हुआ था।

जब मैं आया तो टी.वी. पर ईरानी गाने चल रहे थे, मैंने थोड़ी देर ईरानी और अफ़ग़ानी गाने सुने और फिर ग़य्यूर भाई ने हिन्दी गानों की एक वीडियो ऐलबम डी. वी. डी. में लगा दी। ग़य्यूर भाई हँस कर मुझसे बोले कि संजय भाई, आप सोच रहे होंगे कि सभी अफ़ग़ानी गानों में लड़कियाँ जब भी नाचना शुरू करती हैं तो अपने पीछे से ही क्यों नाचती हैं? और ख़ुद ही प्रश्न का जवाब देते हुए बोले कि असल में अफ़ग़ानी लोगों को लड़कियाँ सामने के मुक़ाबले पीछे से ही अच्छी लगती हैं। हिन्दी वीडियो ऐलबम को देख कर वह मुझसे बोले कि आपने तो सारे हीरो-हीरोइनों को देखा हुआ होगा और मैंने सुना है कि कुछ हीरोइनें लाखपचास हज़ार में किसी के साथ भी सोने के लिए तैयार हो जाती हैं। मैंने कहा कि ऐसी बात नहीं है और अगर कोई हीरोइन ऐसा करती भी होगी तो भी इतने कम पैसों के लिए नहीं करेगी। मैंने उन्हें यह भी बताया कि हिन्दुस्तान बहुत बड़ा है और जहाँ मैं रहता हूँ वहाँ से मुम्बई काफ़ी दूर है, इसलिए मैंने किसी हीरोहीरोइन को नहीं देखा है।

https://t.me/Sahityajunction

36. तलाश जारी : हेरात

ऐसे ही वे मुझसे बहुत-सी बातें भारतीय फ़िल्म इण्ड्रस्टी और कुछ पर्यटक स्थलों के बारे में बड़ी दिलचस्पी ले कर पूछते रहे और फिर रात होने पर मैं अपने कमरे में जा कर सो गया। अगले दिन मैं सुबह ही ग़ज़नी से कन्धार जाने वाली बस में बैठ कर कन्धार पहुँच गया और अफ़ज़ल के होटल में जा कर रुक गया। अब मुझे हेरात शहर जाना था, जो कि अफ़ग़ानिस्तान और ईरान बॉर्डर पर था और कन्धार से क़रीब 600 कि. मी. दूर था। अफ़ज़ल भाई से मैंने हेरात जाने के बारे में जानकारी माँगी तो उन्होंने मुझे बताया कि होटल के पीछे से ही टैक्सियाँ और मीडियम गाड़ियाँ जाती है। टैक्सी वाला पन्द्रह सौ अफ़ग़ानी और मीडियम गाड़ी वाला जिसमें क़रीब 10 लोग बैठ सकते हैं, एक आदमी का एक हज़ार अफ़ग़ानी लेता है, उन्होंने मुझे सलाह दी कि अगर हेरात जाना है तो आप मीडियम गाड़ी में जाइये, क्योंकि उसमें ज़्यादा लोग रहते हैं और उसमें सेफ़्टी ज़्यादा है।

मैंने कहा किस बात की सेफ़्टी तो वह बोले कि कन्धार से हेरात वाला रास्ता बहुत ही ख़तरनाक है, क्योंकि तालिबानी इस रूट से कई बार कई लोगों का अपहरण कर चुके हैं और बाद में उनकी हत्या कर चुके हैं, यह रास्ता पूरी तरह बना हुआ नहीं है और इसे भारत सरकार ही बना रही है, और तालिबानी कई बार भारतीय इन्जीनियरों का अपहरण करके उन्हें मार चुके हैं। उन्होंने मुझे वहाँ न जाने की सलाह भी दी, लेकिन जब मैंने ज़िद की तो बोले कि ठीक है, मैं आपको अपने परिचित ड्राइवर के साथ भेज दूँगा। लेकिन रास्ते में आप किसी को यह आभास मत होने देना कि आप हिन्दुस्तानी हो, और चुपचाप ही अपना सफ़र तय कर लेना। अफ़ज़ल भाई ने मुझे एक होटल का नाम भी बताया जो हेरात में उनके परिचित का था और वहाँ पर मैं रुक भी सकता था।

अगले दिन सुबह 5 बजे ही मैं उस मीडियम गाड़ी में हेरात जाने के लिए बैठ गया, जो अफ़ज़ल भाई के परिचित की थी और जिससे शाम को ही मेरी बात करा दी गयी थी। यह मीडियम गाड़ी क़रीब एक घण्टा चलने के बाद सड़क पर ख़राब हो गयी और सभी लोग गाड़ी से बाहर निकल कर नमाज़ पढ़ने लगे, एकदो लोगों ने मुझसे भी नमाज़ पढ़ने के लिए कहा तो मैं एक साइड में चला गया, क्योंकि मुझे नमाज पढ़नी नहीं आती थी। नमाज़ पढ़ कर लोगों ने जब देखा कि गाड़ी हेरात नहीं जा पायेगी तो अपना-अपना सामान गाड़ी से बाहर निकाल लिया। कुछ लोग वापस कन्धार जाने लगे तो कुछ लोग हेरात की तरफ़ जाने की कोशिश करने लगे।

अफ़ज़ल भाई के परिचित ड्राइवर ने मुझे परेशानी की हालत में देख कर कहा कि आप वापस कन्धार चले जाइये। मैं आपको किसी परिचित की गाड़ी में कन्धार जाने के लिए बैठा देता हूँ। यह ड्राइवर मामूली-मामूली हिन्दी समझता था और मैंने उससे कहा कि मैं कन्धार नहीं, हेरात ही जाऊँगा और अपना बैग उठा कर चुपचाप उन लोगों के पीछे-पीछे चलने लगा जो मुझे लग रहे थे कि हेरात जायेंगे। उनमें से एक आदमी ने हेरात की तरफ़ से आ रही एक टॉयोटा कोरोला टैक्सी को हाथ दे कर रोका और उससे हेरात जाने के लिए अपनी भाषा में बात की, जब वह टैक्सी वाला हेरात जाने के लिए तैयार हो गया तो मैंने अपने मुँह से सिर्फ एक शब्द कहा कि हेरात और यह कह कर तुरन्त गाड़ी में बैठ गया और फिर कुछ नहीं बोला जिससे कि उनकी समझ में न आये कि मैं

https://t.me/Sahityajunction

अफ़ग़ानी नहीं हूँ।

4-5 घण्टे लगातार चलने के बाद ड्राइवर ने गाड़ी एक जगह खाने के लिए और नमाज़ के लिए रोकी और मुझे भी खाना खाने और नमाज़ के लिए कहा, काफ़ी देर मैं चुप रहा, लेकिन मुझे मजबूरी में बोलना पड़ा, जिससे कि उन्हें पता चल गया कि मैं अफ़ग़ानी नहीं हूँ। मैंने खाना नहीं खाया, और कुछ फल और ड्राई फ़्रूट खा लिये, क्योंकि वहाँ पर खाने में सिर्फ नॉन-वेज था जो मैं नहीं खाता था। जब गाड़ी दोबारा से हेरात जाने के लिए वहाँ से चली तो उनमें से एक आदमी, जो पाकिस्तान में कुछ समय रहा था, उर्दू में मुझसे बोला कि भई, तुम तो कमाल के आदमी हो, इतनी देर से गाड़ी में साथ बैठे थे, और हमें पता ही नहीं चलने दिया कि तुम अफ़ग़ानी नहीं हो।

उन्होंने मुझसे मेरा नाम और यह पूछा कि कहाँ के रहने वाले हो तो मैंने उनसे कहा कि मेरा नाम शादाब ख़ान है और मैं पाकिस्तान के लाहौर शहर का रहने वाला हूँ। मैंने अपना हिन्दुस्तानी परिचय इसलिए नहीं दिया था, क्योंकि अफ़ज़ल भाई ने मुझे इस रास्ते के बारे में बताया हुआ था कि यहाँ से आये दिन विदेशियों का अपहरण करके उनकी हत्याएँ होती रहती हैं। वे लोग मुझसे काफ़ी देर तक बातें करते रहे और यह बताया कि यह 600 कि. मी. की सड़क भारतसरकार बना रही है, लेकिन तालिबान और पाकिस्तान नहीं चाहते कि यह सड़क बने, क्योंकि इस सड़क के बनने से अफ़ग़ानिस्तान में ज़रूरत का आने वाला सामान ईरान से आराम से आ जाया करेगा और जो माल अभी पाकिस्तान से आता है, उसकी बिक्री कम हो जायेगी।

ऐसे ही बातें करते-करते शाम को 5 बजे हम हेरात पहुँच गये। जो पाकिस्तान में रहा हुआ आदमी उर्दू बोलता था उसने मेरे साथ जा कर मुझे वह होटल दिखा दिया जिसके बारे में अफ़ज़ल भाई ने मुझे बताया था। जब वह आदमी मुझे होटल दिखा कर चला गया तो मैंने उस होटल में अपना पासपोर्ट दिखा कर कमरा ले लिया। मुझे बहुत तेज़ भूख लग रही थी, इसलिए मैं अपना सामान कमरे में रख कर फटाफट कुछ खाने के लिए गया, लेकिन किसी भी होटल में मेरे खाने की चीज़ नहीं मिल सकी, क्योंकि वहाँ पर सभी चीज़ों में मीट मिक्स था, इसलिए मैंने वहाँ से सिर्फ अफ़ग़ानी रोटी जो भारतीय तन्दूरी रोटी की तरह थी ख़रीदी और एक दुकान से क्रीम का डिब्बा ख़रीद कर रोटी उससे ही खा ली।

अगले दिन मैं सुबह होटल में उठा और नहा-धो कर तैयार हो कर के रिसेप्शन पर गया जहाँ होटल का मालिक ख़ुद बैठता था। मैंने उनसे किसी ऐसे हिन्दुस्तानी सुल्तान की क़ब्र के बारे में पूछा जिसकी ज़ियारत लोग-बाग जूते-चप्पल मार कर करते हों, तो उसने मुझसे कहा कि ऐसी किसी क़ब्र के बारे में उसने नहीं सुना, लेकिन उसके बड़े भाई शाम को होटल में आयेंगे तो वह उनसे पूछ कर बतायेगा। मैंने हेरात में उन जगहों के बारे में पूछा, जहाँ घूमने जाया जा सकता था तो उन्होंने मुझे 3-4 जगहों के बारे में बताया जिसमें एक बहुत बड़ी मस्जिद और क़िला उस होटल के पास में ही, पीछे की साइड में था। मैं अपना कैमरा ले कर पैदल ही उस मस्जिद और क़िले की तरफ़ निकल पड़ा। यह बहुत बड़ी मस्जिद थी और बहुत ही ख़ूबसूरत थी। काफ़ी देर इस मस्जिद में घूमने के बाद मेरी नज़र एक साइन बोर्ड पर पड़ी, जिस पर फ़ारसी और अंग्रेज़ी में लिखा हुआ था कि यह इनफॉर्मेशन और कल्चरल डिपार्टमेण्ट का ऑफिस है।

https://t.me/Sahityajunction

मैं यह सोच कर इस ऑफिस में घुस गया कि हो सकता है यहाँ से मुझे कोई जानकारी मिल जाये, क्योंकि अभी तक अफ़ग़ानिस्तान में घूमने के बाद मैंने जो महसूस किया था, वह यह था कि यहाँ पर सभी लोग अनपढ़ थे और उन्हें अपने या किसी दूसरे देश के इतिहास के बारे में ज़्यादा जानकारी नहीं थी। लड़ाइयों के कारण अपने ही देश में लोगों का ज़्यादा घुमना फिरना भी नहीं था, इसलिए एक शहर के आदमी को दूसरे शहर के बारे में भी ज़्यादा जानकारी नहीं थी। जब मैं इस ऑफिस में गया तो वहाँ पर 3 लोग कुर्सियों पर बैठे हुए थे और इनमें से एक आदमी इंग्लिश बोलना जानता था, जबकि हिन्दी-उर्दू कोई नहीं जानता था।

इंग्लिश बोलने वाले ने मेरा परिचय मुझसे लिया तो मैंने उन्हें बताया कि मैं भारतीय हूँ और एक किताब और डॉक्यूमेण्ट्री फ़िल्म मुहम्मद ग़ोरी पर बना रहा हूँ, और आप मुझे इस बारे में क्या जानकारी दे सकते हैं। वे बोले कि हमारा यह ऑफिस सरकारी है और जबसे यहाँ तालिबान ख़त्म हुए हैं तब से नाटो सेना ने अफ़ग़ानिस्तान के हर बड़े शहर में एक इनफ़ॉर्मेशन और कल्चरल डिपार्टमेण्ट खुलवाया है, जिससे कि यहाँ की ऐतिहासिक चीज़ों के बारे में लोगों को जानकारी दे सके और उन चीज़ों की ठीक से देख-भाल और रख-रखाव की जा सके। मैंने उनसे कहा कि यह तो बहुत अच्छी बात है, और अगर आप मेरी मदद किताब लिखने में करें तो मैं आपका नाम आपकी फ़ोटो सहित उस किताब में छापूँगा। मेरी बात से वह काफ़ी ख़ुश हुआ और बोला कि आप किस मुहम्मद ग़ोरी की बात कर रहे है, मैंने कहा मैं उस मुहम्मद ग़ोरी की बात कर रहा हूँ जो सन 1192 में हिन्दुस्तान में जा कर वहाँ के महाराज पृथ्वीराज चौहान से जंग लड़ा था और जंग जीतने के बाद पृथ्वीराज को बन्दी बना कर अफ़ग़ानिस्तान ले आया था। मेरी बातों को सुन कर वह बोला कि उसका पूरा नाम मुहम्मद शहाबुद्दीन ग़ोरी था और वही बारहवीं सदी में हिन्दुस्तान से वहाँ के महाराज को बन्दी बना कर लाया था।

मैंने उनसे कहा कि उनकी मज़ार कहाँ है तो वे बोले कि उनकी मज़ार हेरात में नहीं है, क्योंकि शहाबुद्दीन ग़ोरी ग़ज़नी शहर से अपना राज चलाता था इसलिए ग़ज़नी या उसके आस-पास उनकी मज़ार होनी चाहिए और वहीं पर ही उस हिन्दू राजा की मज़ार भी हो सकती है। उन्होंने मुझे यह भी बताया कि मोहम्मद शहाबुद्दीन के सगे बड़े भाई, जिनका नाम मोहम्मद ग़यासुदीन ग़ोरी था, हेरात में सुल्तान थे और उनकी क़ब्र इसी मस्जिद में हमारे ऑफिस के सामने की तरफ़ ही है। इनकी बातें सुन कर मैं दिल-ही-दिल बहुत ख़ुश हुआ, क्योंकि कई दिनों से परेशान होने के बाद मुझे आज थोड़ी सटीक जानकारी मिली थी। इन्होंने मुझे यह भी बताया कि इन दोनों भाइयों के पिता का नाम बहाउद्दीन सोम था और उन्हें पहाड़ों का बादशाह कह कर पुकारा जाता था और उनकी मज़ार कन्धार से 3040 कि. मी. दूर अन्दर एक पहाड़ी के ऊपर है।

मैंने उनसे कहा कि मुझे ग़यासुदीन ग़ोरी की मज़ार दिखा दीजिए, जो इस मस्जिद में है तो वे बोले कि उस मज़ार पर ताला लगा हुआ है और उसकी चाबी हमारे पास नहीं है, लेकिन हर शुक्रवार को उस मज़ार की ताला खोल कर सफ़ाई होती है और तब आप आ कर देख सकते हैं। मैंने कहा लेकिन आज तो सण्डे है और इसमें तो अभी काफ़ी दिन हैं, आप मुझे चाबी ला कर पहले दिखा दीजिए तो वह बोला कि ठीक है, आप कल आना हम कोशिश करेंगे। मैंने उनसे पूछा कि क्या आपका ग़ज़नी, कन्धार और काबुल में भी ऑफिस है, तो वे बोले कि हाँ है और उन्होंने इन शहरों में बने ऑफ़िसों के पते मुझे

https://t.me/Sahityajunction

काग़ज़ पर लिखवा दिये और यह भी कहा कि मुहम्मद शहाबुद्दीन ग़ोरी की जो मज़ार ग़ज़नी के पास है, उसके बारे में भी हम आपको जानकारी ले कर बताने की कोशिश करेंगे, जब आप दोबारा हमारे पास आयेंगे।

मैंने उनको धन्यवाद कहा और उनके कई फ़ोटो अपने कैमरे से ले लिये, जिससे कि उन्हें लगे कि मैं उनकी फ़ोटो अपनी किताब में छापूँगा। मैं उनके ऑफिस से बाहर आ कर शहर में इधर-उधर पैदल ही घूमने लगा।

हेरात शहर बहुत ही सुन्दर और अफ़ग़ानिस्तान के दूसरे शहरों से काफ़ी डेवलप्ड था और इसका मुख्य कारण यह था कि यह ईरान से नज़दीक था और ईरान मुस्लिम देशों में डेवलप्ड कण्ट्री मानी जाती है। शिया मुसलमानों की आबादी हेरात शहर में ज़्यादा थी और यहाँ पर लड़कियाँ भी अच्छी तादाद में शहर के बाज़ारों में घूम रही थीं। यहाँ पर भारत सरकार की तरफ़ से दी हुई टाटा कम्पनी की बसें ही सिटी बस के रूप में चल रही थीं और भारतीय लोगों के लिए यहाँ के लोगों के मन में काबुल ही की तरह अच्छे विचार थे, जो उनकी बातचीत से ही मालूम पड़ता था।

घूमते-घूमते ही मेरी नज़र एक इण्टरनेट कैफे पर पड़ी। मैं उस इण्टरनेट कैफ़े पर गया और वहाँ पर गूगल सर्च पर जा कर मुहम्मद ग़ोरी का नाम टाइप किया यह सोच कर कि जो जानकारी मुझे अभी इनफ़ॉर्मेशन और कल्चरल डिपार्टमेण्ट वाले ने दी है, उसे इण्टरनेट पर चेक कर लेता हूँ। इण्टरनेट पर सभी जानकारियाँ आ गयीं, जिससे मुझे यह भी पता चल गया कि मुहम्मद ग़ोरी जिसकी मज़ार मैं ढूँढ रहा था, उसका पूरा नाम मुहम्मद शहाबुदीन ग़ोरी है। इण्टरनेट पर एक न्यूज़ और भी थी जो विश्व हिन्दू परिषद के आचार्य श्री गिरिराज किशोर की तरफ़ से थी, जिसमें लिखा था कि शहाबुद्दीन ग़ोरी आख़री हिन्दुस्तानी सम्राट पृथ्वीराज चौहान को बन्दी बना कर और अन्धा करके ग़ज़नी ले गया था और वहाँ ले जा कर किसी जेल में डाल दिया था। इण्टरनेट से मुझे और भी इनसे सम्बन्धित जानकारियाँ मिलीं और जब मैं इण्टरनेट कैफ़े से अपना काम पूरा करके बाहर आया तो मैंने सोचा कि मैं कितना मूर्ख हूँ और इतने दिनों से मैंने इण्टरनेट क्यों इस्तेमाल नहीं किया था। लेकिन फिर सोचा कि देर आये दुरुस्त आये। यहाँ पर सड़क के किनारे मैंने कुछ लोगों को उबले हुए काबुली चने भी बेचते हुए देखा तो मैंने वे ख़रीद कर कई प्लेट खा लिये और जब तक हेरात में रहा, फल-ड्राई फ़्रूट के अलावा यही खा कर अपना काम चला रहा था।

दो दिन लगातार मैं उस इनफॉर्मेशन और कल्चरल डिपार्टमेण्ट के ऑफिस में गया, लेकिन पता नहीं क्यों वे मुझे पहले वाला रिसपॉन्स नहीं दे रहे थे और मुझे टाल रहे थे और मुहम्मद शहाबुदीन ग़ोरी, जिसकी मज़ार वे पहले ग़ज़नी में बता रहे थे, उसके बारे में तो बिलकुल ही जानकारी न होने की बात अब कह रहे थे। जब मैंने इनसे रिक्वेस्ट की कि आप सिर्फ मुझे सामने जो ग़यासुद्दीन ग़ोरी की मज़ार है, उसे ही दिखा दीजिए तो वे बोले कि ठीक है कल सुबह 10 बजे आ जाना, हम उस चाबी वाले को बुला लेंगे। अगले दिन मंगलवार का दिन था और उस दिन मैं बिना पूजा-पाठ करे बाहर नहीं निकलता था, इसलिए मैंने होटल वाले से रात में ही कहा कि कल सुबह मुझे 8 बजे गर्म पानी दे दीजियेगा जिससे कि मैं नहा कर 10 बजे तक बाहर जा सकूँ। होटल वाले ने मुझसे कहा कि बाथरूम में जो टंकी और शावर लगे हैं उनमें 11 बजे से पहले किसी भी

https://t.me/Sahityajunction

हालत में हम गर्म पानी नहीं दे सकते हैं, मैंने कहा—ठीक है, क्योंकि उसने जो कारण बताया था, वह जायज़ था।

अगले दिन मैं सुबह 8 बजे उठा और बाथरूम में यह सोच कर नहाने चला गया कि आज ठण्डे पानी से ही नहाना पड़ेगा, क्योंकि 10 बजे मुझे उनके ऑफिस में पहुँचना था। जब मैं बाथरूम में नहाने के लिए गया तो वहाँ देखा, नलों में पानी नहीं आ रहा था और वहाँ पर कोई बाल्टी या टब वग़ैरा भी नहीं था सिर्फ शावर में हल्के-हल्के पानी आ रहा था। जब मैंने शॉवर ऑन किया तो ठण्डा-ठण्डा पानी उसमें से बूँद-बूँद करके गिरने लगा। उस पानी के नीचे ही मैं नहाने से पहले अपने अण्डर-गार्मेण्टस धोने लगा और श्री हनुमान जी का नाम लेने लगा कि अगर इस ठण्डे पानी में मैं नहाया तो मेरा काम तमाम आज पक्का है, क्योंकि रात को ही बहुत ज़ोरों से बर्फबारी हुई थी।

जब तक मैंने अपने अण्डर-गार्मेण्टस धोये तब तक पानी ठण्डा आता रहा, लेकिन कुछ ऐसा करिश्मा हुआ कि थोड़ी देर में ही उसी शॉवर में से गर्म पानी आने लगा, जिससे मैं फटाफट ऊपर वाले का धन्यवाद दे कर नहा लिया। जब मैं पूजा-पाठ करके होटल से बाहर जाने लगा तो होटल के मालिक ने मुझे बड़े आश्चर्य से देखा और बोला कि क्या आप ठण्डे पानी से ही नहा लिये तो मैंने कहा कि मैं नहा तो लिया, लेकिन पानी शॉवर में ठण्डा नहीं, गर्म आया था। वह बोला कि ऐसा नहीं हो सकता, क्योंकि पानी तभी गर्म आयेगा जब हम खाना बनाना शुरू करेंगे। और वह मेरी बात पर विश्वास न करते हुए मुझे उसी बाथरूम में लाया जिसमें मैं नहाया था और मुझे शॉवर का पानी दिखाया जो अब ठण्डा आ रहा था। शॉवर में ठण्डा पानी देख कर मुझे आश्चर्य हुआ, लेकिन बहस में न पड़ कर मैं होटल से सीधा इनफॉर्मेशन और कल्चर डिपार्टमेण्ट के ऑफिस वालों के पास गया, जिससे कि आज मैं मुहम्मद ग़यासुदीन ग़ोरी की मज़ार को देख सकूँ, लेकिन आज भी उन्होंने मज़ार की चाबी न मिलने का कारण बता कर मुझे वह मज़ार अन्दर से नहीं दिखाई।

मैं अगले दिन का समय ले कर निराश मन से ऑफिस से बाहर आया और उबले हुए काबुली चने का नाश्ता करके ऐसे ही इधर-उधर परेशान हालत में घूमने लगा और मन में विचार करने लगा कि इतने दिनों के मेहनत के बाद भी मैं अभी तक पृथ्वीराज चौहान की समाधि को नहीं ढूँढ पाया, और क्या मैं जिस काम के लिए यहाँ आया हूँ उसमें मुझे सफलता भी मिलेगी या नहीं? लेकिन फिर मेरे अन्दर से एक आवाज़ आयी कि सफलता मिलेगी, मेहनत करते जाओ, फल ऊपर भगवान पर छोड़ दो।

दिन में जब मैं परेशानी की हालत में हेरात शहर के बाज़ार में ऐसे ही इधर-उधर घूम रहा था, मेरे मोबाइल फोन की घण्टी बजी, जब मैंने फ़ोन रिसीव किया तो उधर ग़ज़नी से ग़य्यूर भाई का फ़ोन था। ग़य्यूर भाई ने बताया कि मुहम्मद ग़ोरी की जिस मज़ार को आप ग़ज़नी में खोज रहे थे, उसके बारे में मैंने अपने वालिद के छोटे भाई से पूछा था, उन्होंने मुझे बताया है कि वह मज़ार ग़ज़नी के पास देयक गाँव में है और जिस हिन्दुस्तानी सुल्तान की क़ब्र के बारे में आप पूछ रहे थे, वह भी देयक गाँव में ही मुहम्मद ग़ोरी की मज़ार के बाहर बरामदे में है। मैंने उनको धन्यवाद कहा और उनसे पूछा कि मैं कब ग़ज़नी आऊँ जो आप मुझे यह मुहम्मद ग़ोरी की मज़ार दिखा दें, तो वह बोला कि आपने पता करने के लिए कहा था, मैंने पता कर दिया, लेकिन आप देयक

https://t.me/Sahityajunction

गाँव में नहीं जा सकते हैं, क्योंकि वह तालिबानियों का गाँव है और जिस जगह पर यह गाँव है वो पूरा इलाक़ा तालिबानियों का गढ़ है।

मैंने कहा, चलिए, नहीं जाऊँगा, लेकिन मैं आपके पास 5-6 दिन में ग़ज़नी आऊँगा तब इस बारे में आगे बातचीत करेंगे। एक बार और धन्यवाद करके मैंने फ़ोन रख दिया और फ़ोन रख कर ऊपर आसमान की तरफ़ देख कर भगवान का धन्यवाद किया, क्योंकि मुझे पूरा विश्वास था कि जिस जगह की मुझे तलाश थी, वह मुझे मिल चुकी थी। मैं जल्दी-से-जल्दी ग़ज़नी जा कर ग़य्यूर की बतायी जगह देखना चाहता था, लेकिन हेरात शहर से ग़ज़नी की दूरी क़रीब एक हज़ार कि.मी. होने के कारण बार-बार हेरात नहीं आया जा सकता था, इसलिए हेरात में मुहम्मद ग़ोरी के बड़े भाई गयासुद्दीन ग़ोरी की मज़ार को देख कर ही मैं यहाँ से वापस जाना चाहता था।

हेरात के जिस होटल में मैं रुका हुआ था, इसी होटल में 4-5 मेरी ही उम्र के लड़के भी रुके हुए थे, जो दुबई से सेकेण्ड हैण्ड गाड़ियाँ मँगवा कर यहाँ हेरात में बेचते थे। ये सभी लड़के हेरात के पास एक दूसरे शहर के निवासी थे जिसका नाम निमरोस था और जो बिलकुल ईरान की सीमा से लगा हुआ थो। जब तक इन्होंने अपनी लायी हुई गाड़ियों को नहीं बेच दिया, मैं इनकी गाड़ियों में ही हेरात और उसके आस-पास की जगह घूम आता था।

हेरात में भी मैंने वैसी ही मीनारें देखी जैसी ग़ज़नी में थीं और जैसी दिल्ली में कुतुबमीनार थी। इन मीनारों से मुझे पता चला कि यह अफ़ग़ानी सुल्तानों का उस समय शौक़ रहा होगा कि जब भी युद्ध जीतें तो एक मीनार में बनायें। इधर-उधर घूम कर हेरात में टाइम पास करने के बाद और हर रोज़ की तरह शुक्रवार को भी मैं इनफ़ॉर्मेशन और कल्चरल डिपार्टमेण्ट के ऑफिस में सुबह ही उन लोगों के पास पहुँच गया जिन्होंने मुझे मुहम्मद गयासुद्दीन की मज़ार दिखानी थी। मुझे उम्मीद थी कि आज मज़ार देखने का काम पूरा हो जायेगा, लेकिन जब मैंने उनके ऑफिस में जा कर बात की तो वह बोला कि आज वह आदमी नहीं आया, जिसके पास इसकी चाबी है, क्योंकि उसकी तबियत ठीक नहीं है।

उसकी यह बात सुन कर मुझे बहुत ग़ुस्सा आया, क्योंकि मैं काफ़ी दिन से उनकी बहानेबाज़ी देख रहा था और समझ गया था कि ये लोग मुझे मुहम्मद ग़यासुद्दीन की मज़ार का ताला खोल कर नहीं दिखाना चाहते हैं। इसलिए मैंने उनसे कहा कि अगर आप मुझे नहीं दिखाना चाहते हैं, तो बता दीजिये, मैं काबुल वापस चला जाऊँगा और वहाँ जा कर आपके हेड ऑफिस में आप लोगों के इस व्यवहार की शिकायत करूँगा।

मेरी बात सुन कर वह मेरी तरफ़ आँखें फाड़ कर देखने लगा और बोला कि आप कल सुबह 11-12 बजे आ जाइये, मैं आज ख़ुद जा कर उससे चाबी ले जाऊँगा जिसके पास है और आपको कल मज़ार अन्दर से दिखा दूँगा। मैं उसके आश्वासन पर अगले दिन फिर उनके ऑफिस में गया तो वह मेरा ही इन्तज़ार कर रहा था। मुझे देखते ही वह उठा और चाबियों का एक गुच्छा उठा कर मुझे अपने साथ उस दरवाज़े पर लाया जिसके अन्दर वे लोग मुहम्मद ग़यासुद्दीन की क़ब्र होने की बात कह रहे थे। दरवाज़े पर लगा ताला खोला तो वह एक बरामदे में खुला, जहाँ कुछ भी नहीं था। उस बरामदे से हो कर सामने की तरफ़ एक और दरवाज़ा था, उस पर भी ताला लगा हुआ था। उस ताले

https://t.me/Sahityajunction

को खोल कर एक छोटेसे हॉल में कुछ क़ब्रें थीं जिनमें मुहम्मद ग़यासुदीन की क़ब्र भी थी और दूसरी उनके परिवार के लोगों की थी।

मैंने जल्दी-जल्दी से वहाँ की रिकॉर्डिंग की और उनके बारे में पूरी जानकारी अपने साथ गये उसी आदमी से ली और बाहर आ गया। अब हेरात का मेरा काम पूरा हो चुका था और मैं आँखों से देख कर यह तसल्ली भी कर चुका था कि पृथ्वीराज चौहान की समाधि वहाँ पर नहीं थी। मैंने अपने उन दोस्तों से बता दिया कि कल मैं वापस कन्धार जाऊँगा, तो उन्होंने मुझे कभी-न-कभी निमरोस ज़रूर आने के लिए कहा और अपना सेटेलाइट फ़ोन नम्बर भी बात करने के लिए दिया। अफ़ग़ानिस्तान में अधिकतर पैसे वाले लोग सैटेलाइट फ़ोन ही इस्तेमाल करते थे, क्योंकि मोबाइल सिर्फ शहर के अन्दर ही काम करता था और भारत की तरह यहाँ सैटलाइट फ़ोन इस्तेमाल करने पर पाबन्दी नहीं थी। अगले दिन सुबह ही मैं टैक्सी से कन्धार वापस जाने के लिए बैठ गया और शाम को 4-5 बजे के क़रीब कन्धार पहुँच कर अफ़ज़ल के होटल में ही कमरा ले कर रुक गया।

https://t.me/Sahityajunction

37. मंज़िल की ओर

मेरी मंज़िल अब ग़ज़नी थी, क्योंकि ग़य्यूर भाई से मिल कर मैं जल्दी से पृथ्वीराज चौहान की समाधि देखना चाहता था। रात के समय जब मैं नीचे अफ़ज़ल भाई के पास रेस्टोरेण्ट में खाना खाने आया तो उनके पास 4-5 कन्धारी लोग पहले से बैठे हुए थे। उन सभी को हिन्दी समझ में आती थी, क्योंकि सभी काफ़ी लम्बे समय तक पाकिस्तान में रह चुके थे। वे लोग जानते थे कि मैं हिन्दुस्तानी हूँ, इसलिए वे मुझसे हिन्दुस्तान और पाकिस्तान के बारे में बातें करने लगे। उन्होंने मुझसे पूछा कि आप बताइए कि क्या भारत ने कश्मीर के ऊपर क़ब्ज़ा करके अच्छा काम किया हुआ है? और फिर यह प्रश्न करके मुझसे आगे बोले कि मुसलमानों के दो ही सपने हैं—एक तो कश्मीर को भारत से आज़ाद कराना और दूसरा इस्रायल ने जो ज़बरदस्ती फ़िलिस्तीन की धरती पर क़ब्ज़ा किया हुआ है उसे आज़ाद करवाना। फिर मेरी तरफ़ देख कर आगे बोले कि ईसाइयों ने पूरे दुनिया का माहौल लड़ाइयाँ करवा कर ख़राब किया हुआ है और ईसाई बहुत ही अत्याचारी कौम है और आप देखना कि जल्दी ही हम अफ़ग़ानी इस अंग्रेज़ नाटो सेना को अपने मुल्क से मार कर भगा देंगे। वैसे भी जल्दी ही पूरी दुनिया में इस्लाम इन ईसाइयों को हरा कर सब जगह छाने वाला है।

उनकी इस तरह की बातें सुन कर मैं समझ गया कि ये सारे तालिबानी सोच के उनके समर्थक लोग हैं और हो सकता है कि कोई तालिबानी आतंकवादी भी इनमें से हो, इसलिए मैं उनकी बातें सुनता रहा और उनकी बकवास बातों का कोई जवाब नहीं दिया, लेकिन जब वे लोग बार-बार भारत और अमरीका और हिन्दू और ईसाइयों की बेवजह ही बहुत ज़्यादा बुराइयाँ करने लगे तो मैंने उनसे कहा कि मैं आपके सभी प्रश्नों का उत्तर दे सकता हूँ, लेकिन मेरे जवाब शायद आपको अच्छे नहीं लगेंगे।

वे बोले, नहीं, आप बताओ, हमारी बात में क्या ग़लत है, तो मैंने कहा कि आपकी पहली बात कि भारत ने कश्मीर पर क़ब्ज़ा किया हुआ है, यही ग़लत है। मैंने कहा कि यह बात इसलिए ग़लत है कि आपको इतिहास मालूम नहीं है और उनसे प्रश्न किया कि क्या आप लोग पाकिस्तान को एक अलग देश मानते हो या उसे भारत का हिस्सा मानते हो, तो वे बोले कि पाकिस्तान तो एक अलग और बढ़िया देश है, तो मैंने कहा कि बस फिर आप लोगों ने ही अपने सब प्रश्नों का ख़ुद ही जवाब दे दिया।

वे बोले कैसे, तो मैंने उनसे कहा कि आज से 60-70 साल पहले अंग्रेज़ों का इस पूरे हिस्से पर, जिसमें भारत, पाकिस्तान और बांग्लादेश आता है, राज था और इस प्रकार फ़िलिस्तीन पर भी उनका उसी काल में राज था। जब अंग्रेज़ इन हिस्सों को छोड़ने लगे तो उन्होंने हिन्दू और मुसलमानों को अपने हिसाब से इस बड़े हिस्से के दो टुकड़े करके दे दिये और उनका नाम भारत और पाकिस्तान रख दिया। इसी तरह से अंग्रेज़ों ने फ़िलिस्तीन की ज़मीन को भी दो हिस्सों में बाँट कर उसका एक हिस्सा यहूदियों को और एक हिस्सा मुसलमानों को दे दिया। और भारत-पाकिस्तान की तरह इनका भी इज़रायल और फ़िलिस्तीन नाम दे दिया।

अब अगर आप यह कहते हैं कि मुसलमान तो इस हिन्दुस्तानी हिस्से में पहले से रहते थे और फ़िलिस्तीन की धरती पर यहूदियों को बाहर से ला कर बसाया गया तो मेरा

https://t.me/Sahityajunction

कहना है कि फिर आप एक हज़ार साल पहले जाइये जब भारतीय धरती पर सिर्फ हिन्दू लोग रहते थे और मुहम्मद ग़ोरी से पृथ्वीराज चौहान के हारने के बाद सबसे पहले मुसलमान इस हिन्दुस्तानी धरती पर आये और जैसे एक हज़ार साल पहले ज़बरदस्ती और अपनी ताक़त के दम पर मुसलमान हिन्दुस्तानी धरती पर आये, बिलकुल इसी तरह से यहूदी 60-70 साल पहले फ़िलिस्तीनी धरती पर आये। अगर यहूदियों ने आपके हिसाब से फ़िलिस्तीन धरती पर क़ब्ज़ा करके ग़लत किया तो मुसलमानों ने भी हिन्दुस्तानी धरती पर क़ब्ज़ा करके ग़लत किया और अगर इसरायल देश ग़लत तरह से बना है तो फिर पाकिस्तान भी ग़लत तरह से बना है। अब आप एक काम कीजिये कि पाकिस्तान, भारत और बांग्लादेश से सारे मुसलमान भाइयों को बाहर निकाल कर पूरी ज़मीन हिन्दुओं को दे दीजिये और तब मैं कहूँगा कि यहूदियों से इज़रायल की ज़मीन ख़ाली करा कर फ़िलिस्तीन के मुसलमान भाइयों को दे देनी चाहिये।

इसके अलावा कश्मीर का मसला यह है कि वहाँ के महाराज हरिसिंह ने अपने आपको दूसरे राजा-महाराजाओं और सुलतानों-नवाबों की तरह भारत में मिलाया था, इसलिए वह भारतीय हिस्सा है। अगर कश्मीर के लिए भी कोई बोलता है कि वहाँ पर मुसलमान नहीं चाहते कि वे भारत में रहें तो मेरा कहना है कि एक हज़ार साल पहले यहाँ के हिन्दू भी नहीं चाहते थे कि मुहम्मद ग़ोरी भारत पर राज करे, लेकिन किसी के चाहने से कुछ नहीं होता है और इन सारी बातों का निचोड़ मेरी नज़र में सिर्फ यह है कि धरती माँ सिर्फ उसकी हुई है और उसकी ही होगी, जिसके पास ताक़त होगी।

मैंने आगे बात बढ़ाते हुए कहा कि मेरे खयाल से आप लोगों को कश्मीर और फ़िलिस्तीन के बारे में बाद में सोचना चाहिये। मैंने उनसे कहा कि और पहले अपने देश को आज़ाद कराने की कोशिश करनी चाहिये। मैंने उनसे कहा कि आप मुसलमान सुअर से बहुत नफ़रत करते हैं और इन अंग्रेज़ों ने अपनी ताक़त के दम पर काबुल के चिड़ियाघर में सुअर रखा हुआ है। आप लोग कितने बहादुर हैं कि भारत में आ कर बेवजह बम फोड़ सकते हो, लेकिन अपने देश की राजधानी के चिड़ियाघर से उस चीज़ को नहीं निकाल सकते, जिससे हर मुसलमान बेइन्तहा चिढ़ता है।

मैंने कहा कि आप लोग ईसाइयों और यहूदियों को ज़ालिम बोलते हैं, लेकिन मेरा मानना है कि वे लोग ज़ालिम नहीं बहादुर है, क्योंकि अगर वे ज़ुल्मी होते तो आप यहाँ बैठे इस दुम्बे की टाँग न खा रहे होते, बल्कि वे आप सबको बम गिरा-गिरा कर मार देते और आप लोग कभी भी उनका कुछ नहीं बिगाड़ पाते। अगर इतनी सैनिक शक्ति, जितनी अमरीका या ईसाइयों के पास है या जितनी इज़रायल के पास फ़िलिस्तीन के मुकाबले हैं, किसी मुसलमान देश के पास होती तो कब का अपनी सैनिक शक्ति से दूसरे सभी देशों को ख़त्म कर चुका होता।

आपका यह कहना है कि अफ़ग़ानिस्तान में सारे अंग्रेज़ देश फ़ेल हो गये, यह बात भी मैं नहीं मानूँगा। इस बात पर मेरा कहना है कि असल में अफ़ग़ानिस्तान की धरती में कुछ भी नहीं है, और इस पर क़ब्ज़ा करके रखना ख़ुद एक बोझ है, क्योंकि आपके देश से न तो तेल निकलता है और न ही किसी और तरह से कोई आमदनी है। मैं आपको गारण्टी देता हूँ कि अगर आपके देश में कमाई का कोई अच्छा साधन होता जैसे अरब देशों में है तो आप सारी ज़िन्दगी अपनी धरती ख़ाली नहीं करा पाते और अंग्रेज़ आपको

https://t.me/Sahityajunction

बता देते कि आप लोग कितने लड़ाका हैं।

वैसे मेरी नज़र में आप लोगों को अफ़ग़ानिस्तान अंग्रेज़ों के क़ब्ज़े में ही रहने देना चाहिए, क्योंकि इसमें आप लोगों का ज़्यादा फ़ायदा है। देखिये जो सड़कें इन अंग्रेज़ों ने आपके देश में बनवायी हैं, वे कभी इन लोगों के बिना आपके देश में तालिबानी या कोई भी शासक नहीं बनवा सकता था। इसके अलावा आप लोगों के रोजग़ार के लिए नयी-नयी फैक्ट्रियाँ और इलाज के लिए अस्पताल भी ये लोग बनवा रहे हैं, इसलिए इन अंग्रेज़ों को आराम से यहीं रहने दीजिये, क्योंकि जब इन्हें यहाँ से कोई आमदनी नहीं होगी तो ये ख़ुद ही यहाँ से चले जायेंगे, लेकिन तब तक आपके देश को ख़ूब सारी चीजें बना कर दे जायेंगे। इन चीज़ों को चाहे वे लोग अपनी सुविधा के लिए बनायें, लेकिन उनका इस्तेमाल तो आप लोग भी करेंगे, इसलिए आराम से ऊपर वाले का नाम लीजिये और अंग्रेज़ों का धन्यवाद कीजिये।

मैंने उनसे आ़िख़र में कहा कि आप मेरी बातों से ऐसा मत सोचियेगा कि मैं मुसलमान भाइयों से या किसी भी धर्म से चिढ़ता हूँ। मेरे दिल में सभी धर्मों के लिए इज़्ज़त है, क्योंकि मेरा सीधा-सा मानना है कि ये सभी धर्म और जातियाँ इन्सान ने ख़ुद अपनी सहूलत के लिए बनायी हैं और ऐसा नहीं हो सकता है कि अलग-अलग धर्मों को मानने वाले लोगों की सुनवाई ऊपर अलग-अलग भगवान करते हैं। वह तो सिर्फ एक है और सब धर्मों ने अपनी भाषा और संस्कृति के हिसाब से उसका अलग-अलग नाम रख दिया है।

यह ऐसा ही है कि आप एक राजनैतिक पार्टी को मानते हैं और मैं किसी दूसरी राजनैतिक पार्टी की विचारधारा को मानता हूँ, लेकिन अब क्योंकि मेरा जन्म हिन्दुस्तान में हिन्दू परिवार में हुआ है, इसलिए मुझे अपने भारतीय और हिन्दू होने पर गर्व है और जैसे मुझे अपने देश पर गर्व है वैसे ही आप सबको भी अपनी क़ौम और देश पर गर्व करने का पूरा अधिकार है। मेरी नज़र में जो भी चीज़ इन्सान ने ख़ुद बनायी हैं, उसके लिए लड़ाई करना मूर्खता है। जैसे देशों की सीमाएँ हमने ख़ुद समय-समय पर बनायी हैं, इसलिए इसके पीछे लड़ाई ठीक नहीं और मेरी नज़र में सबको आपस में प्रेम से मिल-जुल कर रहना चाहिये।

आपका यह कहना कि सभी मुसलमानों का मक़सद कश्मीर को भारत से अलग कराना है, तो वह भी आप ग़लत बोल रहे है, क्योंकि अफ़ग़ानिस्तान और पाकिस्तान में कुल मिला कर जितने मुसलमान रहते हैं उससे कहीं अधिक तो मुसलमान भाई भारत में रहते हैं और हर भारतीय मुसलमान की इच्छा है कि कश्मीर भारत का एक मज़बूत हिस्सा हमेशा बना रहे। वैसे ही हमारे देश में हिन्दू-मुसलमान-सिख-ईसाई सभी आपस में मिल कर प्यार से रहते हैं और हम सभी पहले भारतीय हैं, हिन्दू-मुस्लिम, सिख-ईसाई बाद में हैं। जहाँ भी देश की बात आयेगी, वहाँ हम सब एक है और यही कारण है कि भारत में हर धर्म का आदमी बड़े-बड़े पदों पर बैठ कर देश को चलाने में अपना योगदान दे रहा है। मैंने और भी कई बातें उनको बतायीं और जब मेरी बातों का उनके पास कोई जवाब देते नहीं बना तो मैं बिना खाना खाये ही वहाँ से अपने होटल के कमरे में आ कर सो गया।

https://t.me/Sahityajunction

38. फिर ग़ज़नी

अगले दिन सुबह ही मैं टैक्सी में बैठ कर 12 बजे दिन तक ग़ज़नी पहुँच गया। ग़ज़नी पहुँच कर मैंने ग़य्यूर भाई के मोबाइल पर फ़ोन किया तो उन्होंने मुझे अपने होटल में बुला लिया। मैंने उनसे मुहम्मद शहाबुद्दीन ग़ोरी की मज़ार के बारे में पूछा तो उन्होंने मुझे बताया कि इनकी मज़ार पास ही के एक गाँव देयक में है, लेकिन मैं और वे वहाँ नहीं जा सकते हैं, क्योंकि वह तालिबानियों का गढ़ है। मैंने कहा, भैया, मेरा वहाँ जा कर उस जगह को देखना बहुत ज़रूरी है, क्योंकि अगर मैं उस जगह की फ़ोटो नहीं लूँगा तो किताब में कैसे छापूँगा और अगर मैं सिर्फ अपनी जानकारी पर उस जगह के बारे में अपनी किताब में लिखूँगा तो लोग मेरी किताब में कमियाँ निकाल सकते हैं।

मैंने उन्हें और भी कई बातें समझायीं और जब काफ़ी ज़्यादा ज़िद देयक जाने के लिए की तो वे बोले कि ठीक है, मैं कल आपके लिए एक टैक्सी का इन्तज़ाम करूँगा जो आपको वहाँ ले जाये और जो आपने देखना है, दिखा दे, लेकिन मैं ख़ुद वहाँ नहीं जाऊँगा और आपको अकेले ही जाना होगा। मैंने कहा, ठीक है। रात को मैं ग़ज़नी में ग़य्यूर भाई के होटल में ही रुक गया। अगले दिन क़रीब 10 बजे सुबह ग़य्यूर भाई मेरे पास होटल में आये और बोले कि मैंने आपके लिए एक टैक्सी का इन्तज़ाम कर लिया है, लेकिन आपको वहाँ जाने से पहले मेरी 2-3 शर्तें माननी पड़ेंगी, नहीं तो मैं आपको वहाँ नहीं जाने दूँगा, क्योंकि मैं आपका दोस्त होने के साथ-साथ एक अफ़ग़ानी पुलिस वाला भी हूँ और आपकी सुरक्षा करना मेरी ज़िम्मेदारी है।

मैने कहा कि आप बताइये मैं आपकी सारी बातें मानूँगा, लेकिन आप बस मेरा देयक जाने का इन्तज़ाम करवा दीजिये। ग़य्यूर भाई ने कहा कि ठीक है, मेरी पहली बात तो यह है कि आप देयक में अपने आपको भारतीय न बता कर पाकिस्तानी बताइयेगा। दूसरी, आप अपना नाम संजय की जगह कोई मुस्लिम नाम बताइयेगा और किसी भी तरह की ऐसी निशानी अपने पास मत रखइएगा जिससे पता चले कि आप हिन्दू हैं मुस्लिम नहीं हैं।

मैं जब उनकी सभी बातों पर तैयार हो गया तो उन्होंने एक टैक्सी वाले को होटल के नीचे से बुलाया और मेरा परिचय पाकिस्तानी के रूप में शादाब नाम से करवाया। मैंने अपना हैण्डी कैम कैमरा उठाया और ग़य्यूर भाई की बहुत सारी हिदायतें सुन कर टैक्सी में बैठ गया। मैं अपनी कमीज़ की जेब में हमेशा एक छोटी-सी हनुमान चालीसा रखता था। और जब ग़य्यूर भाई ने मुझसे कहा कि कोई भी ऐसी निशानी अपने पास न रखूँ जिससे मेरे हिन्दू धर्म का पता चले तो पहले मेरे दिमाग़ में आया कि जेब से इस हनुमान चालीसा को निकाल कर यहीं अपने होटल में रख देता हूँ, लेकिन फिर मेरे मन ने कहा कि जिन्होंने हमेशा रक्षा की, अगर उन्हें ही छोड़ कर गया तो रक्षा कौन करेगा? यह सोच कर मैंने उस हनुमान चालीसा को चुपचाप अपनी जेब में ही रखे रखा।

क़रीब 4-5 मिनट गाड़ी से चलने के बाद मैं टैक्सी के ड्राइवर के साथ देयक गाँव पहुँच गया। ड्राइवर बिलकुल भी हिन्दी या उर्दू नहीं समझता था और सिर्फ पश्तो भाषा जानता था और इसी इलाक़े का था जहाँ देयक गाँव था। जब हमारी गाड़ी देयक गाँव पहुँची तो बहुत सारे बच्चे गाड़ी के पीछे-पीछे भाग कर आने लगे और उन बच्चों से पूछ

https://t.me/Sahityajunction

कर ही उस ड्राइवर ने एक मज़ार जिसके ऊपर छोटा-सा गुम्बद भी बना हुआ था, अपनी गाड़ी ले जा कर रोक दी। हम गाड़ी से बाहर निकले तो 10-15 बच्चों ने हमें घेर लिया और ड्राइवर से अपनी भाषा में बातें करने लगे। इन बच्चों से बातें करते-करते हम मज़ार के उस भाग में पहुँच गये जहाँ गुम्बद बना था और जिसके नीचे मुहम्मद शहाबुद्दीन ग़ोरी की मज़ार थी। इस गुम्बद वाले हॉल में इस समय ताला लगा हुआ था।

मैंने ड्राइवर से कहा कि इस हॉल में तो ताला लगा हुआ है। उसने बच्चों से उस हॉल की चाबी के बारे में मालूम किया। बच्चे कुछ बताते इससे पहले ही 10-15 बड़े-बुज़ुर्ग आदमी भी वहाँ आ गये। उन आदमियों ने ड्राइवर से आने का कारण पूछा तो उसने उन्हें मेरी तरह इशारा करके बताया कि यह पाकिस्तान से यहाँ मुहम्मद शहाबुद्दीन की मज़ार की ज़ियारत करने के लिए आया है। इन 10-15 आदमियों में इस गाँव के सबसे प्रभावशाली आदमी भी थे और इनका नाम भी मुहम्मद शहाबुद्दीन ही था। यह जो शहाबुद्दीन नाम के बुज़ुर्ग आदमी थे, इन्हें सभी लोग हाजी साहब कह कर बुला रहे थे।

इन हाजी साहब ने मुझ से मेरा परिचय पश्तो भाषा में माँगा तो मैंने उन्हें कहा कि मुझे सिर्फ उर्दू भाषा आती है। मेरी बात सुन कर उन्होंने पास खड़े एक युवक को बुलाया जो काफ़ी समय पाकिस्तान में रहने के कारण उर्दू जानता था। इस लड़के ने मुझसे उर्दू में पूछा कि आप कहाँ से और क्यों आये हो, तो मैंने उन्हें बताया कि मैं पाकिस्तान के लाहौर शहर का रहने वाला हूँ अर मेरी अम्मी को ख़्वाब में मुहम्मद शहाबुद्दीन ग़ोरी बाबा दिखाई दिये थे और मैं अपनी अम्मी के कहने पर इनकी मज़ार की ज़ियारत करने आया हूँ। मेरी कही बातें उस लड़के ने अपनी भाषा में उन हाजी साहब और दूसरे सभी लोगों को पश्तो भाषा में बतायीं, तो हाजी ने अपने घर भेज कर मज़ार की चाबी लाने के लिए एक लड़के को भेज दिया।

जिस गुम्बद वाले हॉल के बन्द दरवाज़े के बाहर हम खड़े थे, वहाँ पर उस बन्द दरवाज़े के दोनों तरफ़ दो कच्ची क़ब्रें भी थी, जिन पर ये लोग जूते-चप्पल पहन कर खड़े थे, और मुझसे बातें कर रहे थे। मैंने उसी उर्दू बोलने वाले लड़के से पूछा कि ये जो दो क़ब्रें दिख रही हैं, जिन पर ये लोग खड़े हैं, किसकी हैं तो वह बोला कि यह दोनों क़ब्रें उन दोनों क़ाफिरों की है, जिन्होंने ग़ोरी बाबा को शहीद किया था। मैंने उससे उन क़ाफिरों का नाम पूछा तो उसने कोई जवाब नहीं दिया और मेरी पूछी बातों की जानकारी हाजी साहब को देने लगा। हाजी साब ने उससे कहा कि मेरे से कहे कि सब जानकारी देंगे थोड़ा सब्र करो। इतने में ही उस हॉल कमरे की चाबी आ गयी, जिसमें मुहम्मद शहाबुद्दीन ग़ोरी की क़ब्र थी। हाजी साहब ने ताला खोला और सभी लोग अपने-अपने जूते-चप्पल उन दो कच्ची क़ब्रों पर उतार कर एक-एक करके अन्दर मुहम्मद ग़ोरी की क़ब्र पर ज़ियारत करने के लिए जाने लगे। उस उर्दू जानने वाले लड़के ने मुझे भी जूते उतार कर अन्दर ज़ियारत करने के लिए कहा तो मैंने अपने जूते उन दोनों कच्ची क़ब्रों से दूर ही उतार दिये, क्योंकि मैं समझ चुका था कि ये दोनों कच्ची क़ब्रें पृथ्वीराज चौहान और शायद उनके साथी चन्द बरदाई की हैं।

मैं जूते उतार कर अन्दर मज़ार में गया और उसी तरह से ज़ियारत करने लगा जैसे गाँव के वे लोग कर रहे थे। उनमें से कुछ लोग जब अन्दर हॉल कमरे में मुहम्मद ग़ोरी की क़ब्र पर जियारत करने के लिए जा रहे थे तो वे कच्ची क़ब्रों के ऊपर रखे एक जोड़ी

https://t.me/Sahityajunction

जूते से उन कच्ची क़ब्रों को पीटते थे और फिर अन्दर हॉल में कमरे में जा कर मुहम्मद ग़ोरी की क़ब्र पर सजदा करते थे। मैंने उनसे कच्ची क़ब्रों को जूते से पीटने का कारण पूछा तो उन्होंने बताया कि इन क़ाफिरों ने ही हमारे ग़ोरी बाबा को शहीद किया था, इसलिए हमारे पूर्वजों ने इन दोनों को मार कर इन्हें मुहम्मद ग़ोरी के पैरों की तरफ़ दफ़ना दिया और हम इनकी क़ब्र की बेइज़्ज़ती करने के लिए ज़ियारत से पहले इन पर जूता मारते हैं या अपने जूते-चप्पल इन क़ब्रों के ऊपर उतार देते हैं।

मैंने इनसे मुहम्मद ग़ोरी और बाहर बनी दोनों क़ब्रों की हैण्डी कैम से वीडियो रिकॉर्डिंग करने के लिए कहा तो वे बोले कि वीडियो रिकॉर्डिंग तो हम किसी को नहीं बनाने देते हैं और तुम वीडियो रिकॉर्डिंग का क्या करोगे। मैंने उन्हें बताया कि मैं अपनी अम्मी को दिखाऊँगा, क्योंकि उन्हीं के ख़्वाबों में ग़ोरी बाबा आये थे। अम्मी को दिखाने की बात पर हाजी साहब ने मुझे वीडियो रिकॉर्डिंग करने के लिए हाँ कह दी। लेकिन मुझसे कहा कि जब वे दोनों कच्ची क़ब्रों पर जूता-चप्पल मारे वह रिकॉर्ड न करूँ। मैंने कहा मुझे इन दोनों कच्ची क़ब्रों से कुछ लेना-देना नहीं है, मुझे तो बस अन्दर मुहम्मद ग़ोरी बाबा और बाहर से इस पूरे गुम्बद वाले हॉल की रिकॉर्डिंग करनी है, जिससे मैं अपनी अम्मी को दिखा सकूँ कि ग़ोरी बाबा की मज़ार कैसी है?

मैंने उस जगह की पूरी वीडियो रिकॉर्डिंग अपने साथ लाये कैमरे से बनायी और चुपचाप उनके जूते-चप्पल मारते समय की रिकॉर्डिंग भी कर ली। मुहम्मद ग़ोरी की क़ब्र के ऊपर मार्बल पत्थर लगा हुआ था जिसे अफ़ग़ानिस्तान के बादशाह ने क़रीब 70 साल पहले लगवाया था। इस मार्बल पत्थर पर फ़ारसी भाषा में लिखा हुआ था कि मुहम्मद ग़ोरी ऐसे शेर की तरह बहादुर है कि न तो कोई उससे पहले पैदा हुआ और न ही इतना बहादुर कभी कोई पैदा होगा। उस पर यह भी लिखा था कि वह ग़ाज़ी और शहीद है और उसके जन्म और मरने की तारीख़ भी लिखी थी। मैंने उनसे जब यह पूछा कि ये ग़ाज़ी और शहीद क्यों कहलाये तो उन्होंने मुझे बताया कि ये गाज़ी इसलिए हैं, क्योंकि इन्होंने कई लाख क़ाफिरों को मौत के घाट उतारा था और जो भी क़ाफिरों को मारता है, वह ग़ाज़ी ही कहलाता है। शहीद इसलिए है, क्योंकि इसकी हत्या एक क़ाफिर के हाथों ही हुई थी।

जब मैंने पूछा कि जिस क़ाफिर ने इनकी हत्या की थी, वह कहाँ का था और उनका नाम क्या था? तो वे बोले कि वह क़ाफिर हिन्दुस्तानी सुल्तान था और उसका नाम पृथ्वीराज चौहान था और यह जो हॉल के दरवाज़े के बाहर दो कच्ची क़बें् देख रहे हो, वे उस क़ाफिर और उसके साथी की हैं। मैंने कहा कि आपने यहाँ कोई पत्थर या बोर्ड क्यों नहीं लगा रखा है, जिस पर लिखा हो कि यह वही क़ाफिर है तो वे बोले कि पहले लगा था, लेकिन अब वह टूट गया और यहाँ की सरकार अमरीका परस्त है, इसलिए इस इलाक़े का खास ध्यान नहीं देती है, क्योंकि उसका ऐसा मानना है कि हमारा गाँव और यह आस-पास इलाक़ा तालिबानियों का समर्थक है।

मैंने उनसे कहा कि ग़ज़नी शहर में महमूद ग़ज़नवी की जो मज़ार है वह तो सरकार ने बहुत ख़ूबसूरत बनवायी हुई है और बहुत बाग़-बग़ीचा भी वहाँ लगवाया हुआ है, तो वे बोले कि असल में ग़ज़नी पर शिया मुसलमानों की हुकूमत थी और जब बारहवीं सदी में मुहम्मद ग़ोरी ने हेरात से आ कर ग़ज़नी को फ़तह किया तो पूरे ग़ज़नी शहर को आग

https://t.me/Sahityajunction

लगवा दी थी, इसलिए ग़ज़नी शहर के आसपास बसे लोग शुरू से ही मुहम्मद ग़ोरी को पसन्द नहीं करते हैं और ऐसे लोगों की ही ग़ज़नी सरकार में ज़्यादा चलती है, इसलिए उन्होंने महमूद ग़ज़नवी की मज़ार पर तो ख़ूब पैसा ख़र्च करके उसे बढ़िया बनवा लिया है, मगर इस पर ध्यान नहीं देते हैं।

क़रीब दो घण्टे वहाँ रुकने के बाद मैं देयक से वापस आने लगा तो हाजी साहब मुझे अपने घर चाय पिलाने ले जाने लगे, लेकिन मैंने दोबारा आने का वादा उनसे किया और वहाँ से वापस आ गया। मैं जब सुरक्षित ग़ज़नी वापस आ गया तो ग़य्यूर भाई मुझे देख कर बहुत ख़ुश हुए और बोले कि आप पहले हिन्दुस्तानी होंगे जो उस मज़ार को देख कर आये होंगे। मुझे उस दिन भी ग़ज़नी के होटल में रुकना पड़ा, क्योंकि शाम होने लगी थी और अब कहीं और जाना ठीक नहीं था। मैं रात को जब होटल के अपने कमरे में सोने के लिए लेटा तो मन-ही-मन यह सोच कर ख़ुश था कि मैंने पृथ्वीराज चौहान की समाधि को ढूँढ लिया है, लेकिन दूसरे पल जब उस महान हिन्दुस्तानी सम्राट की क़ब्र पर जूते-चप्पल रखे दिखने की बात दिमाग़ में आती तो बहुत परेशानी और बेचैनी भी महसूस होने लगती था।

देयक गाँव को देख कर मैंने जो आज अनुभव किया था, उसका निचोड़ यह था कि इस गाँव के सभी लोग तालिबानी आतंकवादी थे और उनमें से कई के पास ए.के. 47 राइफ़ल तो ऐसे थी जैसे कोई खेलने का खिलौना पकड़ा हुआ है। मैं वहाँ के पूरे माहौल को देख कर दिमाग़ में एक पूरी प्लानिंग बना चुका था, जिससे मैं पृथ्वीराज चौहान की समाधि को खोद कर वहाँ से उनकी अस्थियों के निकाल कर भारत वापस ला सकूँ। मेरी प्लानिंग के तहत मुझे अपनी सहायता के लिए क़रीब दो लोगों की और ज़रूरत थी, जो मेरे कहे अनुसार काम कर सकें। अब मेरी परेशानी अपने काम के उन दो-तीन लोगों को ढूँढने की थी जो पैसों के लालच या किसी अन्य लालच के कारण मुझ से जुड़ सकें।

अगले दिन मैं ग़य्यूर भाई से यह कह कर होटल से सुबह ही निकल गया कि मुझे काबुल जाना है और आपका बहुत धन्यवाद जो आपने मेरी मदद की। मैं ग़य्यूर भाई से झूठ बोल कर आया था कि मैं अभी सीधा काबुल जाऊँगा, लेकिन रात को ही मैंने काबुल जाने से पहले ग़ज़नी के उस मन्दिर और गुरुद्वारे में जाने का मन बना लिया था, जिनके बारे में मुझे कन्धार में डॉक्टर साहब ने बताया था। यहाँ पर दो मन्दिर थे और मैं एक टैक्सी वाले को साथ ले कर पुराने ग़ज़नी शहर में पहुँच गया जहाँ दान शहीद मन्दिर और तीरथ नाथ जी का मन्दिर था।

वहाँ मुझे एक हिन्दू परिवार मिला जो उन मन्दिरों की सेवादारी के लिए वहाँ रहता था। इस सेवादार का नाम मिलापचन्द था, जो अपने परिवार के साथ यहाँ रहता था और बहुत ही सज्जन आदमी था। मैंने मन्दिरों में दर्शन किये तो उसने मुझे यह भी बताया ऊपर पहाड़ों पर भैरोनाथ जी का मन्दिर भी है, लेकिन 15 साल से वहाँ जाना बन्द है। इसके बाद मिलापचन्द मुझे पास में ही एक गुरुद्वारे में भी ले गये। मुझे वहाँ दो लोग मिले, जो वहाँ सेवादारी के लिए थे। इनके नाम सरदार गुरुइन्द्रसिंह तथा सरदार कुलदीप सिंह थे। मैंने गुरुद्वारे में भी मत्था टेका और उन दोनों सेवादारों से काफ़ी देर बात की और दोनों ही जगह प्रसाद भी खाया। इन सभी जगहों की वीडियो रिकॉर्डिंग भी मैंने अपनी याद के लिए कर ली।

https://t.me/Sahityajunction

इसके बाद मैं ग़ज़नी के इनफ़ॉर्मेशन और कल्चरल डिपार्टमेण्ट के ऑफिस में उसी टैक्सी से आया जिससे मैं मन्दिर और गुरुद्वारे में आया था। इस ऑफिस के बारे में मुझे हेरात में उन लोगों ने बताया था जिन्होंने मुझे मुहम्मद ग़यासुद्दीन ग़ोरी की मज़ार दिखाई थी। ग़ज़नी के इनफ़ॉर्मेशन और कल्चरल डिपार्टमेण्ट के ऑफिस में मैं इसलिए आया था, क्योंकि मैं इस बात को पक्का करना चाहता था कि एक दिन पहले मैंने देयक गाँव में मुहम्मद ग़ोरी और पृथ्वीराज चौहान की जो समाधियाँ देखी हैं, वे असल में उन्हीं की हैं। इस ऑफिस में मुझे 3-4 लोग एक कमरे में बैठे हुए मिले, किसी को भी मेरी भाषा समझ में नहीं आ रही थी, इसलिए इन्होंने मुझे क़रीब एक घण्टा अपने पास बिठाये रखा जिससे कि इनका एक साथी आ जाये जो उर्दू और इंग्लिश जानता था।

जब यह उर्दू जानने वाला आदमी आया तो मैंने उससे पूछा कि शहाबुद्दीन ग़ोरी की मज़ार अफ़ग़ानिस्तान में कहाँ पर है, तो उसने मुझे उसके दूसरे साथी से पूछ कर बताया कि इनकी मज़ार ग़ज़नी के पास देयक गाँव में है। मैंने कहा मैं वहाँ जाना चाहता हूँ, तो वे बोले कि वहाँ आपके लिए जाना ठीक नहीं है, क्योंकि वह ख़तरनाक इलाक़ा है, लेकिन अगर आप फिर भी वहाँ जाना चाहते हैं तो आपको 5-6 दिन इन्तज़ार करना पड़ेगा, क्योंकि पहले हम आपके जाने की जानकारी यहाँ ग़ज़नी में अपने बड़े अफ़सरों को देंगे, और फिर उस इलाक़े का कोई आदमी ढूँढ कर आपके साथ भेजेंगे।

मैंने कहा कि आप में से कोई मेरे साथ चलिए तो वे मुझे देख कर मुस्कुराने लगे और बोले कि मिस्टर संजय, यह भारत नहीं है। जिस इलाक़े की आप बात कर रहे हैं वह तालिबानी इलाक़ा है। उनकी यह बात सुन कर अब मैं मुस्कुराया और इनसे बोला कि मैं कल एक बार देयक हो आया हूँ और मुहम्मद ग़ोरी और पृथ्वीराज चौहान की समाधियों को भी देख आया हूँ। मेरी यह बात सुन कर वे सभी आश्चर्य से मुझे देखने लगे और काफ़ी देर के बाद उर्दू जानने वाला मुझसे बोला कि फिर आप हमारे ऑफिस में किसलिए आये हैं तो मैंने कहा कि मैं गाँव वालों की बातों को पक्की तरह से परखने के लिए आया हूँ कि देयक में ही पृथ्वीराज चौहान और मुहम्मद ग़ोरी की क़ब्र है और मैं चाहता हूँ कि आप में से कोई मेरे कैमरे के सामने देयक गाँव में मौजूद सभी क़ब्रों के बारे में बताये।

मेरी यह बात सुन कर वे बोले कि हम कैमरे के सामने मुहम्मद ग़ोरी की क़ब्र के बारे में तो बोल सकते हैं, लेकिन जो दोनों कच्ची क़ब्रें है उनके बारे में कुछ नहीं बोल सकते, क्योंकि हम सरकारी मुलाज़िम है और हमारे ऐसा बोलने से कि दोनों क़ब्रें हिन्दू क़ाफिर पृथ्वीराज चौहान और उसके साथी की हैं दोनों देशों के सम्बन्ध ख़राब हो सकते हैं। मैंने कहा चलिए छोड़िए, बस कैमरे के सामने नहीं, ऐसे ही मुझे बता दीजिये कि क्या वे दो मिट्टी की कच्ची क़बें भारतीय सुल्तान पृथ्वीराज चौहान और उनके साथी की हैं, तो वे बोले कि आप तो पहले ही देयक जा कर सब मालूम कर आये है, और गाँव वालों ने आपको जो बताया है वह ठीक है, लेकिन हमारी आपसे रिक्वेस्ट है कि यह बात बाहर मत कहियेगा कि गाँव के लोग मुहम्मद ग़ोरी की ज़ियारत करते समय उन दोनों मिट्टी की क़ब्रों पर जूते-चप्पल मारते हैं, क्योंकि इससे माहौल ख़राब हो सकता है।

मैंने कहा कि आप लोगों को माहौल की इतनी चिन्ता है तो इसे बन्द क्यों नहीं करवाते हैं, तो वे बोले कि उस इलाक़े में अफ़ग़ान सरकार की नहीं चलती है और सेना

https://t.me/Sahityajunction

भी वहाँ पूरी तैयारी से जाती है, इसलिए जब तक वह इलाक़ा पूरी तरह अफ़ग़ान सरकार के अण्डर में नहीं आ जाता तब तक इसे रोकना मुश्किल है। उनकी बातों से जब मुझे पूरा विश्वास हो गया कि मैं सही जगह गया था और उनकी मजबूरी भी ठीक है, क्योंकि यह देयक वाला इलाक़ा सच में ही पूरी तरह अफ़ग़ान सरकार के कण्ट्रोल में नहीं था, तो मैं ऑफिस से बाहर आ गया और जल्दी से दूसरी टैक्सी ले कर उसी दिन शाम तक काबुल लौट आया। इस बार भी मैं काबुल के उसी होटल में रुका जो बिलकुल काबुल के बीच मेन बाज़ार में था और जिसमें मैं पिछली बार भी रुका था। रात को फल वग़ैरा ही खा कर मैं सो गया, क्योंकि काबुल में मुझे अभी तक बिना मीट मिले खाना किसी भी होटल या उसके आस-पास शाकाहारी खाना नहीं मिला था और जहाँ मिल सकता था मैं वहाँ जाना नहीं चाहता था।

https://t.me/Sahityajunction

39. साथियों की तलाश

अगले दिन सुबह उठ कर मैं तैयार हो कर होटल के रिसेप्शिनस्ट के पास गया और उससे काबुल में मौजूद मन्दिर और गुरुद्वारे के बारे में पूछा तो उसने मुझे बताया कि यहाँ पास में ही बाज़ार में हिन्दुओं के दो मन्दिर हैं। मैं उनमें से एक मन्दिर में गया तो मुझे वहाँ पर एक सेवादार और कुछ और लोग मिले। इस मन्दिर में बहुत बड़ी जगह लोगों के रहने के लिए भी थी। ये सभी लोग मुझसे अच्छी तरह से मिले और घुमाने के लिए पास के दूसरे मन्दिर में भी ले गये, जो इससे भी बहुत बड़ा था और यहाँ पर कई हिन्दू लोग अपने परिवार के साथ मन्दिर के साइड में बने बहुत सारे कमरों में रहते थे। इन्होंने मुझसे बताया कि हर मंगलवार और शुक्रवार को यहाँ भण्डारा होता है, जिसमें काबुल के क़रीब-क़रीब सभी हिन्दू और सिख लोग आते हैं। मैं कुछ लोगों से मिल कर पूरा मन्दिर घूम कर वापस होटल में आ गया।

कई दिनों से शाकाहारी खाना नहीं मिला था, इसलिए फल और जूस पी कर ही समय पास कर रहा था। मैं इन मन्दिरों में रोज़ इसलिए जा रहा था, जिससे कि मैं अपने विश्वास के 2 लोग ढूँढ सकूँ। जिस होटल में मैं रुका हुआ था, उसी होटल में मेरे कमरे के सामने वाले कमरे में मेरे जितनी ही उम्र के दो अंग्रेज़ लड़के रुके हुए थे और इन दोनों से मेरी दोस्ती हो गयी थी, क्योंकि हम तीनों ही एक साथ काबुल की सड़कों पर घूमने निकल जाया करते थे।

इन दोनों विदेशियों में से एक नीग्रो था और दूसरा गोरा था, पर दोनों ही अमरीकी नागरिक थे। समाधि खोदने वाले काम के लिए मैं कई लोगों को अपनी निगाह में सहायता के लिए सोचे हुए था, जिसमें ये दोनों अंग्रेज़ भी थे, लेकिन मैंने अभी तक किसी से भी खुल कर बात नहीं की थी। ये दोनों अमरीकी लड़के क़रीब 15-20 दिनों से इस होटल में बेवजह ही रुके हुए थे, जिसके कारण मुझे यक़ीन था कि हो न हो ये यहाँ ड्रग्स डिलिंग के लिए आये होंगे, क्योंकि मुझे तिहाड़ जेल में रहने के कारण जानकारी थी कि अफ़ग़ानिस्तान से ही पूरे वर्ल्ड में ड्रग्स सप्लाई होती है।

मैंने इनसे एक दिन घूमते-घूमते यों ही पूछ लिया कि क्या आप दोनों यहाँ वाइट पाउडर ड्रग्स के लिए आये हो, तो वे बिना किसी झिझक के बोले कि हाँ, लेकिन काबुल में सामान बहुत महँगा है और हम किसी ऐसे की तलाश कर रहे हैं, जो कन्धार में हमारी डिलिंग करवा सके, क्योंकि कन्धार से ही माल यहाँ काबुल आता है और कन्धार में सबसे बढ़िया और सस्ता माल मिलता है। मैंने कहा कि मैं तो कन्धार कई बार गया हूँ और वहाँ पर मेरे बहुत सारे परिचित दोस्त हैं, तो वे दोनों बोले कि फ्रेण्ड, तुम हमारा काम करवा दो तो तुम्हारा बड़ा उपकार होगा और हम तुम्हें कुछ परसेण्टेज भी दे देंगे। मैंने कहा दोस्तो, मुझे आप लोगों से कोई परसेण्टेज नहीं चाहिये, लेकिन मेरा एक काम है और अगर तुम लोग मेरी भी थोड़ी सहायता करोगे तो मैं तुम्हारा काम करवाने की पूरी कोशिश कर सकता हूँ।

वे बोले, काम बताओ तो मैंने कहा कि अभी ज़रूरत नहीं है, और मैं बाद में बताऊँगा, तो वे बोले कि तुम हमारा काम कन्धार से करवा दो, हम प्रॉमिस करते हैं, तुम जैसा कहोगे, हम तुम्हारी सहायता करेंगे। मैंने कहा ठीक है तो कल तुम मेरे साथ

https://t.me/Sahityajunction

कन्धार चलो, मैं अपने परिचितों से तुम्हारी बात करवा दूँगा, तो वे बोले कि हम में से एक तुम्हारे साथ जायेगा और दूसरा यहीं काबुल में ही रहेगा।

नीग्रो वाले लड़के का नाम और्थो था और गोरे लड़के का नाम डेविड था। अगले दिन मैं और नीग्रो लड़का कन्धार के लिए बस में बैठ गये और दिन में दो बजे के क़रीब कन्धार बस स्टैण्ड पर उतर गये। जैसे ही हम दोनों बस से उतरे और्थो को देखने के लिए वहाँ ख़ूब सारे लोग इकट्ठा हो गये, क्योंकि वह नीग्रो होने के कारण एकदम काला था और उसके बाल अजीब-से थे। मैं और्थो को ले कर तुरन्त अफ़ज़ल के होटल में गया तो कई बच्चे भी और्थो के पीछेपीछे होटल तक आ गये। अफ़ज़ल भाई ने और्थो को देखा तो मुझ से पूछा कि यह कौन है? मैंने कहा मेरा दोस्त है और मेरे साथ ही कमरे में रहेगा। अफ़ज़ल भाई ने और्थो के कारण कमरा देने में पहले तो आनाकानी की, लेकिन फिर दे दिया। हम अपना सामान अपने कमरे में रख कर फिर से अफ़ज़ल भाई के पास खाना खाने आ गये। और्थो का देख कर कई अफ़ग़ानी आदमी अफ़ज़ल के रेस्टोरेण्ट में आ गये और उससे उसका नाम और देश पूछने लगे, तो उसने अपना नाम मेरे कहने पर मुस्लिम बताया और अपने आपको नाइजीरिया का बताया, जबकि असल में वह नाइजीरिया का नहीं था, और मुस्लिम भी नहीं था।

वे सभी लोग और्थो को देख कर अपनी टूटी-फूटी इंग्लिश में उससे पूछने लगे कि तुम यहाँ क्यों आये हो और नीग्रो तो हमेशा ईसाई होते हैं और तुम झूठ बोल रहे हो कि तुम मुसलमान हो। और्थो काफ़ी देर तक उन्हें समझाने की कोशिश करता रहा, लेकिन जब मैंने बात बिगड़ती देखी तो तुरन्त अफ़ज़ल भाई को बुला कर वहाँ ले आया। अफ़ज़ल भाई ने उनसे कहा कि आप लोग क्यों इसे परेशान कर रहे हैं और यह हमारा मुसलमान भाई है, क्या आप भूल गये जब बिन लादेन साहब यहाँ कन्धार में आते थे तो उनके साथ बॉडी गार्ड में मुसलमान हब्शी ही होते थे और लादेन साहब ने जिन हब्शी मुसलमानों को अपना बॉडी गार्ड रखा था, वे सभी हमारे भाई हैं और यह भी उन्हीं में से है।

अफ़ज़ल भाई की बातों ने जैसे उन पर जादू-सा किया और वे एकदम से अपनी बातों की पलटी मार कर उसी और्थो के हाथों को चूमने लगे जिसे वह अभी तक उल्टे-पुल्टे प्रश्न करके परेशान कर रहे थे। यह देख कर मुझे शान्ति हुई और फटाफट हमने खाना खाया और फिर से अपने होटल के कमरे में जा कर आराम करने लगे। होटल में आराम करने के बाद हम दोनों शाम छै बजे के क़रीब बाहर सड़क पर घूमने निकले तो और्थो को जो भी देखता वह एक बार पीछे मुड़ कर ज़रूर देखता और कई लोग तो हमारे पीछे-पीछे ही आने लगे और और्थो को ऐसे देखने लगे जैसे वह धरती का आदमी न हो कर कोई दूसरे ग्रह का प्राणी हो। जब मैंने लोगों का ऐसा व्यवहार देखा तो मैं तुरन्त औरथो को ले कर वापस अफ़ज़ल भाई के रेस्टोरेण्ट में आया और फिर 10-15 मिनट वहाँ बैठ कर वापस हम दोनों अपने होटल के कमरे में चले गये, क्योंकि अफ़ज़ल भाई भी इस समय काफ़ी बिज़ी थे।

होटल के कमरे में आने बाद मैंने खाना वहीं कमरे में ही मँगवा लिया, क्योंकि और्थो यहाँ के लोगों के व्यवहार से बहुत ही परेशानी महसूस कर रहा था। जब हमने रात का खाना खाया तो मुझे रात 8 बजे के क़रीब अफ़ज़ल भाई ने नीचे अकेले रेस्टोरेण्ट में

https://t.me/Sahityajunction

अपने पास बुलवाया। जब मैं अफ़ज़ल भाई से मिला तो वे मुझसे बोले कि संजय भाई आपको मेरी सलाह है कि अपने इस हब्शी दोस्त को कल सुबह ही वापस काबुल भेज दो, क्योंकि अगर यह यहाँ रहेगा तो हमारा होटल पुलिस और तालिबानियों की निगाह में आयेगा और अगर आप इसे नहीं भेजेंगे तो मुझे मजबूरी में आप दोनों से होटल का कमरा ख़ाली करवाना पड़ेगा। मैंने कहा कि ऐसा क्या हो गया तो वह बोला कि अगर आपके साथ यह रहा तो आप भी सबकी निगाहों में आ जायेंगे और फिर आप भी कन्धार में ऐसे फ़्रीली नहीं घूम पायेंगे, क्योंकि यहाँ का माहौल ठीक नहीं रहता है, अगर किसी को पता चल जाये कि आप हिन्दू हैं और यह ईसाई तो आप लोग कभी कन्धार से वापस नहीं जा पाओगे।

मैंने कहा कि काबुल में तो यह कई दिनों से रह रहा था, फिर यहाँ क्या प्रॉब्लम है तो वे बोले, भाई काबुल में बहुत अंग्रेज़ रहते हैं, इसलिए वहाँ के लोगों को आदत हो गयी है, लेकिन कन्धार तो आप ख़ुद देख रहे हैं कि कितना पिछड़ा हुआ शहर है और यह हब्शी तो उनके लिए विचित्र प्राणी है। यह सब मैं आपके आपकी भलाई के लिए बोल रहा हूँ, क्योंकि आप मेरे दोस्त हैं। मैंने कहा कि क्या किसी ने आपसे हमारे बारे में पूछ-ताछ की तो वे बोले कि किसी ने की क्या बात करते हो जब से यह हब्शी हमारे होटल में आया है, कई लोग पूछ-ताछ करने के लिए आ चुके हैं, लेकिन मैंने सिर्फ आपके कारण सबको सन्तुष्ट करके भेज दिया, लेकिन ज़्यादा समय तक मैं नहीं सँभाल सकता, इसलिए आप इसे कल सुबह-सुबह ही वापस काबुल भेज देना।

मैंने कहा कि ठीक है, आप परेशान न हों, मैं और्थो को समझाऊँगा और फिर वापस अपने होटल के कमरे में आ गया जहाँ और्थो बड़ी बेसब्री से मेरा इन्तज़ार कर रहा था। मैंने उसे अफ़ज़ल भाई से हुई सारी बातें बतायीं तो वह परेशान हो कर रोने लगा और बेड पर ज़ोर-ज़ोर से मुक्के मार कर मुझसे कहने लगा कि क्या हम इन्सान नहीं हैं, आपके कहने पर मैंने जीवन में पहली बार अपने आपको ईसाई से मुसलमान बताया जिसका मुझे अब बहुत दुख हो रहा है, क्योंकि मुझे अब अपने आप पर शर्म आ रही है कि जा्रजस मेरे बारे में क्या सोच रहे होंगे कि मैंने डर कर अपने आपको ईसाई से मुसलमान बना दिया। मैंने कहा और्थो ब्रदर, आप ये बातें सोच कर परेशान न हों, क्योंकि ऐसा कभी-कभी मजबूरी में करना पड़ता है और उसके पीछे कोई डर नहीं होता है, बल्कि अपना मक़सद होता है जिसे पूरा करने के लिए ऐसा ज़रूरी होता है। आप मुझे देख लीजिये, मैं हिन्दू हूँ लेकिन मुझे भी कई जगहों पर अपना नाम मुस्लिम बताना पड़ता है।

वह मेरी बात सुन कर बोला कि क्या ईसाई इन्सान नहीं हैं हमारे देश में मुसलमान या किसी भी धर्म या देश का आदमी आता है तो हम तो उसे अपना मेहमान मान कर बहुत इज़्ज़त देते हैं, फिर ये लोग हमारे साथ ऐसा व्यवहार क्यों कर रहे हैं? मैंने कहा और्थो ब्रदर, सबका अपना-अपना कल्चर है, आप परेशान न हों और कल वापस काबुल में चले जाना। मैं सुबह ही आपको काबुल जाने वाली अपने परिचित की गाड़ी में बैठा दूँगा। वह मेरी बात मान कर काबुल जाने के लिए तैयार हो गया। वैसे और्थो लोगों के व्यवहार से शायद बहुत डर भी गया था और अगर मैं नहीं भी कहता तो भी वह वापस चला जाता।

अगले दिन सुबह छै बजे ही मैंने उसको काबुल की बस में बैठा दिया और ड्राइवर

https://t.me/Sahityajunction

को समझा दिया, जिससे कई बार सफ़र करने के कारण मेरा अच्छा परिचय हो गया था। बस में बैठने से पहले मैंने उसे समझा दिया था कि मैं उसके काम के लिए यहाँ बात करूँगा और फ़ोन पर उसकी भी बात करवा दूँगा। और्थो को छोड़ कर मैं वापस अपने कमरे में आ कर सो गया, क्योंकि रात को मैं ठीक से नहीं सो पाया था। मैं कन्धार में इसलिए रुक गया था, क्योंकि पृथ्वीराज चौहान की समाधि को खोदने की जो मेरी प्लानिंग थी, उसके लिए जिन लोगों की ज़रूरत थी वे यहीं कन्धार में ही थे। मेरी प्लानिंग यह थी कि मैं देयक गाँव के लोगों से यह कहूँगा कि मेरी अम्मी ग़ोरी बाबा की मज़ार पर 2-3 लाख ख़र्च करके इसका नया फ़र्श और नयी चारदीवारी बनवाना चाहती है और जब मेरे लाये हुए मज़दूर वहाँ फ़र्श डालने के लिए खुदाई करेंगे तो मैं उनसे ही बहाने से पृथ्वीराज चौहान की समाधि को खुदवा दूँगा।

जिन मज़दूरों को मैं पैसों का लालच दे कर काम करवा सकता था, वे मुझे उसी होटल में दिख गये थे, जिसमें मैं ख़ुद रुका हुआ था। वहाँ ऊपर पाकिस्तान से आये मिस्त्री और मज़दूर एक और मंज़िल बनाने में लगे हुए थे और मैंने उनसे पहले ही थोड़ी बहुत-बात की हुई थी। और्थो के जाने के बाद जब मैं सो कर उठा तो दिन में अपने होटल की ऊपर वाली मंज़िल में गया, जहाँ पाकिस्तानी मिस्त्री काम कर रहे थे। जिस मिस्त्री से मैंने पहले हल्की-सी बातें की हुई थीं, उससे मैंने कहा कि भाई, मैं भी पाकिस्तानी हूँ और यहाँ ग़ज़नी के पास एक गाँव में मुझे एक मज़ार में नया फ़र्श डलवाना और थोड़ा और दूसरा काम करवाना है, मैं आपको और जितने आदमी आप अपने साथ ले चलोगे, उन्हें यहाँ से ज़्यादा पैसे दूँगा और आपके रुकने और खाने का भी इन्तज़ाम करवा दूँगा।

वह बोला जैसा काम आप कहेंगे, मैं वैसा कर दूँगा और अपने साथ 34 साथी भी ले लूँगा, लेकिन अभी 20-25 दिन हम आपके साथ नहीं जा सकते हैं, क्योंकि थोड़े दिन बाद ईद है और हम सब यहाँ का काम 2-3 दिन में पूरा करके ईद मनाने अपने घरों को पाकिस्तान जायेंगे। लेकिन आप अपना मोबाइल नम्बर दे दीजिए। मैं जब भी पाकिस्तान से आऊँगा, आप का काम सबसे पहले कर दूँगा। मैंने कहा कि भाई, लेकिन मैं तो ईद से पहले ही काम पूरा करवाना चाहता था, तो वह बोला कि साहब हम तो पूरे साल सिर्फ ईद के लिए कमाते हैं, इसलिए ईद से पहले तो मैं नहीं आ सकता। मैंने कहा, चलो ठीक है। तुम मेरा मोबाइल नम्बर ले लो और ईद के बाद मुझे फ़ोन कर देना, मैं तुम्हें लेने आ जाऊँगा और जगह दिखा दूँगा जिस मज़ार में फ़र्श और चारदीवारी डालनी है।

इसके बाद मैं नीचे अफ़ज़ल भाई के पास आया तो वे मुझसे बोले कि आपने ठीक किया जो उस हब्शी को वापस काबुल भेज दिया, नहीं तो आपको भी यहाँ परेशानी होती। मैंने कहा, मैंने तो आपका कहा माना और उसके बाद मैंने उनसे पूछा कि क्या कन्धार से मेरा वीज़ा का टाइम पीरिएड बढ़ सकता है, क्योंकि मेरे वीज़ा का समय जो मैंने काबुल से बढ़वाया था, वह ख़त्म होने वाला है। मेरी बात सुन कर अफ़ज़ल भाई बोले कि काबुल जाने की ज़रूरत नहीं है, आपका वीज़ा यही कन्धार से बढ़ जायेगा। यहाँ कन्धार में जो पुलिस मुख्यालय है, उसके अन्दर ही एक ऑफिस है। वहाँ से आपका वीज़ा बढ़ जायेगा। कल सुबह आप अपना पासपोर्ट ले कर वहाँ चले जाना। मैं शाम को ही यह पुलिस मुख्यालय देख आया और अगले दिन सुबह अपना पासपोर्ट ले कर इस पुलिस मुख्यालय में बने एक छोटे-से ऑफिस में आ कर वहाँ बैठे 2-3 लोगों से

https://t.me/Sahityajunction

बात की। ऊन्होंने मुझे सामने जा कर एक कमरे में अहमद भाई से मिलने के लिए कहा।

मैं सामने वाले कमरे में गया तो अहमद भाई वहाँ खाना खा रहे थे और वह एक तरह से पुलिस वालों की किचन ही थी। अहमद भाई ने मुझसे खाने के लिए पूछा और मेरे मना करने पर मुझे अपने सामने एक बेंच पर बैठने के लिए कहा। खाना खाने के बाद अहमद भाई ने मुझसे मेरा पासपोर्ट लिया और बोले कि अगर दो हज़ार अफ़ग़ानी आप मुझे दें तो मैं एक ही बारी में तीन महीने वीज़ा मोहर लगवा कर दूँगा, मैंने कहा ठीक है दो हज़ार अफ़ग़ानी दे दूँगा, लेकिन तीन महीने की मोहर ही लगवाना। उन्होंने मुझे अगले दिन आ कर अपना पासपोर्ट ले जाने के लिए कहा और काम होने के बाद ही पैसे भी लेने की बात की। मैं पुलिस मुख्यालय से बाहर आ कर पास ही एक चौराहे पर आया, जिसे शहीद पार्क कहते थे, क्योंकि बहुत साल पहले रूस ने इस जगह पर बम गिरा कर अफ़ग़ानी सैनिकों को मार दिया था। यहाँ शहीद चौक पर एक गार्ड ए.के. 47 ले कर खड़ा था। मैंने उसके ए.के. 47 राईफल अपने हाथों में ली और अपनी और उसकी ख़ूब सारी फ़ोटो खींची। यहाँ से मैं भारतीय कॉन्सलेट जो कन्धार में था, देखने गया और बाहर से ही देख कर वापस अफ़ज़ल भाई के पास आ गया।

अफ़ज़ल भाई के पास आने के बाद मैंने अफ़ज़ल भाई से कहा कि जो मेरा दोस्त और्थो नीग्रो मेरे साथ कन्धार आया था उसे यहाँ से वाइट पाउडर ख़रीदना है। क्या आप उसे दिलवा सकते हो? अफ़ज़ल भाई ने मेरी बात सुन कर उल्टा मुझसे प्रश्न किया कि क्या आप भी यह काम करते हैं? मैंने कहा—नहीं, मैं यह काम नहीं करता, लेकिन और्थो से मेरी दोस्ती काबुल के होटल में हो गयी थी, और मैं सिर्फ उसकी मदद करना चाहता हूँ, और अगर आपको भी डिंलग में कुछ बचत हो तो आप रख सकते हैं। उन्होंने कहा कि एक-दो दिन में बता दूँगा। अगले दिन मैं अपना पासपोर्ट वापस लेने पुलिस मुख्यालय गया तो वहाँ मुझे फिर अहमद भाई मिले जिन्हें मैं एक दिन पहले वीज़ा बढ़वाने के लिए अपना पासपोर्ट दे कर आया था, मैंने उन्हें दो हज़ार अफ़ग़ानी दिये जो मेरा उनसे तय हुआ था और अपना पासपोर्ट 3 महीने के वीज़ा की बढ़ी हुई मोहर देख कर ले लिया। मैंने कहा, अहमद भाई वीज़ा की मोहर नक़ली तो नहीं है। वे बोले, कोई परेशानी हो तो मेरा मोबाइल नम्बर अपने पास रखो, वीज़ा तो असली ही है।

मैं अपना पासपोर्ट ले कर पैदल ही घूमता-घूमता वापस होटल की तरफ़ आने लगा और सोचने लगा कि अभी अफ़ग़ानिस्तान में डेमोक्रैटिक सरकार बने कुछ ही समय हुआ है, लेकिन करप्शन में इतना तेज़ चल रहा है कि जल्दी ही वर्ल्ड का नम्बर एक भ्रष्टाचारी देश होगा, क्योंकि अभी तक मेरे अनुभव में यहाँ आप कोई भी काम पैसों से करा सकते थे। इस दौरान होटल में रहते हुए मैंने अनुभव किया कि लगातार होटल के कमरे ख़ाली होते जा रहे थे और अब बहुत थोड़े-से लोग ही होटल में रुके हुए थे। अफ़ज़ल भाई से मैंने इसका कारण पूछा तो उन्होंने मुझसे बताया कि थोड़े दिन बाद ईद है। इसीलिए सब लोग अपने-अपने घरों को जा रहे हैं। और हर साल ईद के समय होटल बिलकुल ख़ाली हो जाता है, क्योंकि सभी मुस्लिम लोग ईद अपने घर पर ही मनाना चाहते हैं।

उन्होंने मुझसे कहा कि मैं भी 5-6 दिन बार पाकिस्तान अपने घर जाऊँगा और फिर ईद के बाद वापस आऊँगा। मुझसे भी वह पाकिस्तान अपने घर चलने के लिए कहने

https://t.me/Sahityajunction

लगे, मैंने कहा मेरे पास वीज़ा नहीं है, मैं पाकिस्तान कैसे जाऊँगा? तो वे बोले कि वीज़ा की ज़रूरत नहीं है, न ही किसी पासपोर्ट की ज़रूरत है। यहाँ से किसी भी अफ़ग़ानी के लिए किसी काग़ज़ की ज़रूरत नहीं है; बॉर्डर पर सिर्फ 50-100 अफ़ग़ानी बख़्शीश देनी पड़ती है। और आप तो शक्ल से और बात से एकदम लाहौरी पंजाबी लगते हो और आपको पंजाबी समझ कर तो बॉर्डर पर डर के मारे आपसे कोई बख़्शीश भी नहीं लेगा, क्योंकि पाकिस्तान की पूरी हुकूमत सिर्फ पंजाबी मुसलमान चलाते हैं। हम पठानों को तो वह लोग अपने देश पर बोझ समझते हैं। मैंने कहा आपका धन्यवाद, आगे फिर कभी आपके साथ आपके घर चलूँगा, जब पहले मैं आपको अपने साथ ले जा कर भारत घुमा दूँगा।

मैंने उनसे कहा कि होटल जब ख़ाली हो जायेगा तो मेरा रुकना भी यहाँ ठीक नहीं है, इसलिए मैं काबुल वापस चला जाता हूँ। वहाँ के होटल कभी ख़ाली नहीं होंगे, क्योंकि वहाँ होटलों में काफ़ी विदेशी रहते हैं। मैंने उनसे और्थो के ड्रग्स वाले काम के बारे में पूछा तो उन्होंने मुझे एक फ़ोन नम्बर दिया और कहा कि आप इस नम्बर पर और्थो की बात करा देना। यह आदमी काबुल में ही कन्धार के रेट पर ड्रग्स दे देगा। अब मेरा कन्धार में रुकने का कोई फ़ायदा नहीं था, क्योंकि जिस पाकिस्तानी मिस्त्री को मुझे अपने साथ देयक गाँव ले जाना था, वह अब ईद के बाद ही पाकिस्तान से आने वाला था, इसलिए मैं अगले दिन सुबह ही कन्धार से ग़ज़नी के लिए गाड़ी में बैठ गया। ग़ज़नी आ कर इस बार मैं एक दूसरे होटल में रुका, क्योंकि इस बार मैं अपने दोस्त ग़य्यूर भाई से नहीं मिलना चाहता था, क्योंकि मेरे बार-बार ग़ज़नी आ कर देयक जाने से उसे शक हो सकता था कि मेरा मक़सद किताब लिखना नहीं, बल्कि कुछ और है।

वैसे भी वह ग़ज़नी पुलिस की नौकरी भी करता था और मैंने पुलिस से दूरी बनाए रखना ही ठीक समझा। इस नये होटल में मैं चुपचाप अन्दर कमरे में ही रहा और अगले दिन एक टैक्सी ले कर दोबारा देयक गाँव पहुँच गया। इस बार मैं सीधा ही मुहम्मद शहाबुद्दीन ग़ोरी और पृथ्वीराज चौहान की समाधि पर पहुँच गया। मुझे वहाँ देख कर गाँव के बड़े जिन्हें सब हाजी साहब बोलते थे और जिनसे मैं पिछली बार भी मिला था, वहाँ कई लोगों को साथ ले कर आ गये और मुझसे दोबारा आने का कारण पूछा, तो मैंने उनसे कहा कि हाजी साहब, जो फ़ोटो मैंने पिछली बार ग़ोरी बाबा के मज़ार की अपने कैमरे से ली थी, वह मैंने डाक से अपनी अम्मी को अपने घर पाकिस्तान भेजी थी। उन फ़ोटो को देख कर मेरी अम्मी ने मुझे फ़ोन पर कहा कि मज़ार की हालत तो बहुत ख़राब है और क्या कोई इतने बड़े आदमी की मज़ार का ध्यान नहीं रखता है। उन्होंने मुझसे यह भी कहा कि मैं आपसे बात करूँ कि हम अपने ख़र्चे पर मज़ार में नया फ़र्श और चार दीवारी बनवाना और रंग-रोग़न कराना चाहते हैं।

हाजी साहब मेरी बात सुन कर बहुत ख़ुश हुए और बोले कि यह तो बहुत सवाब का काम है फिर उन्होंने पूछा, कितने रुपये ख़र्च करना चाहते हो? मैंने कहा हम 3-4 लाख रुपये ख़र्च करना चाहते हैं। मैंने उनसे यह भी कहा कि मैं पाकिस्तान से ही बहुत बढ़िया मिस्त्री जो फ़र्श डालने में माहिर है अपने साथ ले आऊँगा। हाजी साहब और दूसरे सभी लोग मेरी बात से ख़ुश हुए, लेकिन 34 लोग मेरी बातों का विरोध करने लगे और कहने लगे कि इस मज़ार के नीचे बेशक़ीमती जवाहरात और हीरों की अँगूठियाँ है, जो मरते समय सुलतान और इस क़ाफिर हत्यारे ने पहनी हुई थीं। मैंने कहा कि मुझे किसी हीरे-

https://t.me/Sahityajunction

जवाहरात की ज़रूरत नहीं है और जो भी काम होगा, आप लोगों के सामने होगा। हाजी साहब ने मुझसे पूछा कि काम कब से शुरू करना चाहते हो? तो मैंने कहा कि मुझे ईद मनाने अपने घर पाकिस्तान जाना है और ईद के बाद मैं मिस्त्री और रुपये ले कर आ जाऊँगा हाजी साहब ने कहा कि ठीक है यह सवाब का काम है और तुम आ जाना।

इन सबसे बातें करके मैं वापस ग़ज़नी अपने होटल में आ गया। अब मेरा ग़ज़नी में भी रुकने का कोई फ़ायदा नहीं था, क्योंकि ईद के बाद मेरा काम शुरू होना था। और ग़ज़नी के होटल भी ईद के नज़दीक आने के कारण बिलकुल ख़ाली हो गये थे और अब मेरा काबुल में जा कर होटल में रुकना ही ठीक था।

अगले दिन मैं काबुल के उसी होटल में पहुँच गया, जिसमें मेरे दोस्त और्थो और डेविड रुके हुए थे। दोनों ने मुझसे अपने काम के बारे में पूछा तो मैंने उनसे उल्टा ही सवाल किया कि अगर तुम्हें माल मिल गया तो क्या भारत ले जा कर उसकी सौदेबाज़ी करोगे। तो वे बोले कि हम भारत में व्यापार नहीं करते हैं, हम तो अमरीका में काम करते हैं। मैंने कहा, ठीक है बस मैं यह चाहता हूँ कि मेरे कारण मेरे देश में कोई ग़लत चीज़ न पहुँचे। इस पर वे बोले कि तुम बिलकुल निश्चिन्त रहो और हमें बताओ कि हमारे काम की क्या प्रोग्रेस है? मैंने कहा कि तुम्हारा काम ईद के बाद 10-15 दिन में हो जायेगा। लेकिन मैंने उन्हें वह फ़ोन नम्बर, जो अफ़ज़ल भाई ने मुझे दिया था, नहीं दिया, क्योंकि मैं नहीं चाहता था कि उनका काम अभी हो जाये। उन्हें कुछ दिन और रोकना ज़रूरी था, जिससे कि अगर मुझे अपने काम के लिए उनकी ज़रूरत पड़े तो मैं उनसे काम ले सकूँ। अगले दिन मैं काबुल के उस मन्दिर में गया जिसमें मैं पहले भी जा चुका था और जिसमें कई हिन्दू परिवार मन्दिर के साइड में बने मकानों में रहते थे।

इन मकानों में रहने वाले हिन्दू लोगों से मैंने अच्छी जान-पहचान कर ली थी और इनमें से भी मेरी निगाह में एक-दो लड़के थे, जिनसे मैं अपने काम के बारे में बातचीत करना चाहता था। लेकिन अभी पूरा विश्वास न होने के कारण मैंने उनसे बात नहीं की। इस मन्दिर के कम्पाउण्ड में ही एक बड़ा हॉल और इस हॉल के ऊपर 3-4 कमरे भी बने हुए थे, जिसमें कोई भी हिन्दू आ कर रुक सकता था। ऊपर वाले कमरों में 3 अफ़ग़ानी लड़के, जो बचपन से दिल्ली-फ़रीदाबाद में रहे हुए थे, और एक-दो आदमी और कमरों में रहते थे। नीचे हॉल में दो बुज़ुर्ग रहते थे। मेरी प्लानिंग यह थी कि अब मुझे भी इन्हीं के साथ इन्हीं के बीच में रहना चाहिये, जिससे कि मैं ज़रूरत पड़ने पर अपने काम के लिए इनमें से किसी को अपने साथ मिला सकूँ।

मैंने अपने वहाँ रुकने के लिए वहाँ के इन्चार्ज से बात की और उनकी रज़ामन्दी के बाद होटल से अपना सामान ला कर उस बड़े हॉल में रख दिया, जहाँ दोनों बुज़ुर्ग रहते थे। मैं चाहता तो ऊपर बने हुए कमरों में भी रुक सकता था, लेकिन मैं अलग रह कर सभी लोगों को दूर से वॉच करना चाहता था, जिससे कि वे मेरे बारे में ज़्यादा न जान सकें, लेकिन मैं उनके बारे में सब कुछ जान सकूँ। यहाँ पर मेरे रुकने का दूसरा फ़ायदा यह भी था कि मुझे अपने मन-पसन्द का खाना मिल सकता था, क्योंकि सभी लोग अपना-अपना खाना अलग-अलग बनाते थे। मैंने दोनों बुज़ुर्गो के साथ रहना शुरू किया तो मैंने उनसे कहा कि जब तक मैं यहाँ रलूँगा तब तक सारा खाने-पीने का ख़र्चा मैं करूँगा, ऐसा मैंने उनसे इसलिए कहा था, क्योंकि उनके आगे-पीछे कोई नहीं था और

https://t.me/Sahityajunction

मन्दिर की तरफ़ से ही उन्हें जो खाने-पीने को मिलता था, वह उसे हीं खा कर गुज़ारा करते थे।

मैं पहले ही दिन खाने-पीने का बहुत सारा अच्छा सामान बाज़ार से ले आया और उन्हें दे दिया, जिससे ऊपर वाले कमरों में रहने वाले लड़के थोड़ा चिढ़ महसूस करने लगे। अब मैं वहीं रहने लगा था, और वहाँ परिवारों में जितने भी छोटे बच्चे रहते थे, उन्हें रोज़ अपने साथ ले जा कर बहुत सारी टॉफ़ियाँ और चॉकलेट भी दिलवाता था, जिसके कारण वहाँ पर जितने भी परिवार अपने बच्चों के साथ रहते थे, मुझसे बहुत ख़ुश रहने लगे थे। मैं यह सोच कर ख़र्च करता था कि होटल में रुकने के कारण मेरे रोज़ क़रीब तीन हज़ार अफ़ग़ानी ख़र्च होते थे तो क्यों न मैं ये तीन हज़ार अफ़ग़ानी इन बुज़ुर्गों और बच्चों के खाने-पीने पर ख़र्च करूँ और इनके साथ मैं भी अपनी इच्छानुसार खा लेता था। मन्दिर में रहने के दौरान मैं रोज़ सुबह ही काबुल में इधर-उधर घूमने निकल जाता था, और अपने दोनों दोस्तों और्थो और डेविड से भी सम्पर्क बनाये हुए था, जो अब भी उसी होटल में रुके हुए थे।

हर हफ़्ते मन्दिर में भण्डारा भी होता था, जिसमें काबुल के बहुत सारे हिन्दू और सरदार परिवार भी आते थे। दो बहुत सुन्दर लड़कियाँ भी इस भण्डारे में हर बार आती थीं, जिन पर ऊपर कमरे में रहने वाले लड़के लाइन मारते थे, लेकिन वे उनसे बात नहीं करती थी, जबकि मुझसे कभी-कभी बातें कर लेती थीं और उनके माता-पिता तो रोज़ ही मुझसे बात करते थे। इसलिए वे लड़के मुझसे अन्दर-ही-अन्दर और भी ज़्यादा चिढ़ा करते थे, और मुझे डराने के लिए अपनी बहादुरी के किस्से बढ़ा-चढ़ा कर बताते रहते थे। मैं उनकी बातें सुनता रहता था और मन-ही-मन मुस्कुराता रहता था।

https://t.me/Sahityajunction

40. शम्भू भाई

यहाँ रहने के दौरान मेरी कई लोगों से जान-पहचान भी हो गयी थी, जिनमें से एक शम्भू नाम का 40 साल की उम्र का आदमी भी था जो मुझे अपने काम के हिसाब से सही लग रहा था। यह बहुत बढ़िया हिन्दी, पश्तो फारसी भाषा भी जानता था। मैंने इससे पृथ्वीराज चौहान की समाधि के बारे में बताया और कहा कि अगर आप मेरे काम में मेरी सहायता करो तो मैं आपको 50 हज़ार रुपये दे सकता हूँ। शम्भू भाई ने कहा कि मुझे क्या काम करना होगा? मैंने उनसे कहा कि आपको मेरे साथ पाकिस्तानी मिस्त्री बन कर देयक गाँव चलना होगा और मेरे कहे अनुसार पृथ्वीराज की समाधि को खुदवाना पड़ेगा, मैंनें उनसे यह भी कहा कि मैंने पहले ही देयक गाँव में हाजी साहब से बात कर ली है और वे लोग भी इस काम में हमारी सहायता करेंगे। उसने कहा कि कब चलना होगा तो मैंने कहा कि ईद के बाद चलेंगे।

इसके बाद शम्भू भाई मेरे साथ ही काबुल में घूमने-फिरने लगे और उन्होंने मुझे काबुल में सब जगह घुमायाँ, जिनमें पहले मुगल बादशाह बाबर की मज़ार, सरदारों का बहुत बड़ा गुरुद्वारा और कई और भी ऐतिहासिक स्थल भी दिखाये। ऐसे ही समय पास हो गया और ईद भी आ गयी, ईद वाले दिन मैंने बांग्लादेश अपने दोस्त शाहीन भाई और उनके परिवार को ईद की मुबारकबाद दी और इसके बाद आयशा को भी फ़ोन पर ईद मुबारक दी। कई दिनों बाद मेरा फ़ोन आने पर वे सभी लोग बहुत ख़ुश हुए और आयशा तो बातें करते-करते रोने लगी और जिद करने लगी कि मैं जल्दी बांग्लादेश वापस आ जाऊँ। मैंने उसे बताया कि मुझे 1520 दिन और लगेंगे काम पूरा करने में। काम पूरा करते ही मैं वापस बांग्लादेश आ कर उससे मिलूँगा। उसने कहा कि ठीक है, आप मुझे रोज़ फ़ोन किया कीजिए तो मैंने उसे बताया कि यहाँ से रोज़ फ़ोन करना मुमकिन नहीं, लेकिन जब भी मौक़ा मिलेगा, मैं फ़ोन करने की कोशिश करूँगा और वह मेरे काम की सफलता के लिए अल्लाह से दुआ करे। इसके बाद मैंने फ़ोन रख दिया।

ईद के बाद अगले दिन ही मैंने शम्भू भाई से चलने का प्रोग्राम तय किया और उन्हें सारी प्लानिंग बतायी कि मैं कैसे काम करना चाहता था। इस प्लानिंग के तहत सबसे पहले हमें हेरात जाना था जहाँ की एक मस्जिद में मुहम्मद शहाबुद्दीन ग़ोरी के बड़े भाई मुहम्मद गयासुद्दीन ग़ोरी की मज़ार थी जिसे मैं पहले ही देख कर आ गया था। मुहम्मद गयासुद्दीन ग़ोरी की इस मज़ार से मुझे कोई निशानी चोरी करनी थी। इसके बाद हेरात से वापस कन्धार जाना था, कन्धार के पास पहाड़ों पर मौजूद इन दोनों भाइयों के वालिद मुहम्मद बहाउद्दीन सोम की मज़ार से भी कोई निशानी चुरानी थी और इसके बाद वापस ग़ज़नी आ कर पृथ्वीराज चौहान की समाधि को खोद कर उसमें से उनकी अस्थियाँ निकाल कर और मुहम्मद ग़ोरी की क़ब्र की कोई निशानी ले कर मुझे तुरन्त भारत वापस आना था।

मैंने यह सारी प्लानिंग शम्भू भाई को बतायी और अगले दिन हम दोनों अपना सामान ले कर कन्धार के लिए निकल गये। चूँकि काबुल से हेरात क़रीब 1200 कि. मी. था और इतनी दूर एक दिन में नहीं जाया जा सकता था, इसलिए बीच में कन्धार शहर में हम दोनों अफ़ज़ल भाई के होटल में रुक गये और अगले दिन सुबह ही हेरात की ओर

https://t.me/Sahityajunction

जाने वाली टैक्सी में बैठ कर शाम तक हेरात पहुँच गये और उसी होटल में रुक गये जिसमें मैं पहले रुका था। जिस दिन हम हेरात पहुँचे, उसी शाम को ही मैंने शम्भू भाई को ले जा कर गयासुद्दीन ग़ोरी की मज़ार बाहर से दिखाई और उन्हें बताया कि कल शाम को इसी समय के क़रीब हमें इस मज़ार के अन्दर लगे एक बोर्ड को यहाँ की निशानी के रूप में चुराना है।

वापस होटल आ कर हमने आराम किया और अगले दिन हेरात में इधर-उधर घूमते हुए शाम होने का इन्तज़ार करने लगे। मुहम्मद गियासुद्दीन की मज़ार से बोर्ड कैसे चुराना है, इसकी प्लानिंग मैंने पहले ही से अपने दिमाग़ में बनायी हुई थी। इस प्लानिंग के तहत हमें एक अच्छा कटर, जिससे कि लोहे की चादर भी कट सके, और एक छोटे हथौड़े और सरिये की ज़रूरत थी जो हमने हेरात से उसी दिन ख़रीद कर रख लिया था।

शाम होते ही जब सब लोग नमाज़ पढ़ने मस्जिद में गये तो मैंने शम्भू भाई को ऐसी जगह पर खड़ा किया जहाँ से वो मुझे किसी के आने पर सावधान कर सके। मैंने सरिये से फँसा कर फटाफट मज़ार पर लगा ताला तोड़ा फिर अन्दर बरामदे से जा कर दूसरा ताला तोड़ा और फिर कटर से वहाँ लगे एक लोहे के बोर्ड को, जिस पर फ़ारसी भाषा में गयासुद्दीन गोरी के बारे में सब कुछ लिखा हुआ था, काटा और उस बोर्ड को उठा कर फिर वापस आया और वैसे ही दरवाज़ों पर कड़ी लगा कर ताला फँसा दिया जिससे कि एकदम से देख कर किसी को पता नहीं चले कि यह किसी ने खोला है।

इसके बाद हम दोनों फटाफट होटल में वापस आ गये और उस बोर्ड को अपने होटल में ही ऐसी जगह छुपा दिया कि अगर कोई हमारे कमरे की तलाशी भी ले तो वह बोर्ड उन्हें न मिले। रात को किसी तरह की कोई तलाशी नहीं हुई और हम सुबह 5 बजे ही उस बोर्ड को अपने बैग में रख कर हेरात से कन्धार जाने वाली टैक्सी में बैठ गये। यह बोर्ड ले कर हम शाम तक कन्धार पहुँच गये और अफ़ज़ल भाई के होटल में ही रुक गये। अब अगले दिन सुबह ही हमें कन्धार से उस इलाके में जाना था जहाँ पहाड़ों पर दोनों भाइयों मुहम्मद शहाबुद्दीन ग़ोरी और उसके बड़े भाई गयासुद्दीन ग़ोरी के वालिद मुहम्मद बहाउद्दीन सोम की मज़ार थी।

रात के समय जब मैं अफ़ज़ल भाई के पास शम्भू को ले कर खाना खाने गया तो अफ़ज़ल भाई ने मुझसे कहा कि मैंने अभी तक आपके जैसा आदमी नहीं देखा जो बार-बार बिना कारण कन्धार आता है क्योंकि यह तो ऐसी जगह है कि यहाँ पर बस मजबूरी में ही आदमी रहता है, क्योंकि यहाँ पता नहीं कि कब आदमी अल्लाह को प्यारा हो जाये। अफ़ज़ल भाई ने फिर मुझसे और्थो के बारे में पूछा कि क्या उसने उस मोबाइल फ़ोन पर बात की थी जो अफ़ज़ल भाई ने मुझे दिया था, जिससे बात करके वह कन्धार से ड्रग्स ख़रीद सकता था। मैंने अफ़ज़ल भाई की बात सुन कर कहा कि अभी मैं आपका दिया फ़ोन नं. और्थो को नहीं दे पाया हूँ, क्योंकि वह काबुल से बाहर गया हुआ था, अगर मुझे वह दोबारा मिला तो दे दूँगा। मैं मन-ही-मन सोचने लगा कि अगर मुझसे इनके इस ड्रग्स वाले मामले में न पड़ना पड़े तो अच्छा हो। मेरा काम शम्भू भाई ही पूरा करवा देंगे।

अफ़ज़ल भाई ने पाकिस्तान में मनायी अपनी ईद के बारे में भी मुझे बताया। इधर-उधर की बातें करने के बाद मैं और शम्भू भाई वापस अपने कमरे में आ कर सो गये और अगले दिन सुबह ही नौ बजे के क़रीब कन्धार से टैक्सी ले कर उस इलाक़े की

https://t.me/Sahityajunction

तरफ़ गये जहाँ पहाड़ों पर बहाउद्दीन सोम की मज़ार थी। टैक्सी वाले ने गाड़ी से क़रीब दो घण्टे लगातार चलने के बाद हमें एक जगह पर उतारा जहाँ एक मज़ार थी, जिसे शहरदा बाबा के नाम से पुकारते थे। वहाँ पर 4-5 छोटी-छोटी दुकानें भी थीं।

यह इलाक़ा कन्धार के बिलकुल इण्टीरियर में था और शाम चार बजे के बाद कोई भी गाड़ी वापस कन्धार के लिए नहीं जाती थी, क्योंकि यह तालिबानियों का सबसे बड़ा गढ़ था। जिस टैक्सी में मैं और शम्भू भाई आये थे, हमने उसे बिलकुल भी एहसास नहीं होने दिया था कि हम इस इलाक़े के नहीं है, क्योंकि मैं बिलकुल चुपचाप बैठा था और शम्भू भाई ही उससे पश्तो में बातें कर रहे थे। टैक्सी वाले ने जिन छोटी-छोटी दुकानों के पास उतारा, हम दोनों उनमें से एक दुकान पर गये और बहाउद्दीन सोम की मज़ार के बारे में पूछा तो उसने पश्तो भाषा में ही शम्भू भाई को बताया कि जो सामने पहाड़ है उसके ऊपर उनकी मज़ार है। शम्भू भाई ने कहा कि उस पहाड़ पर कैसे और किधर से जाया जा सकता है, तो उसने एक तरफ़ इशारा करके बताया कि उस रास्ते से चले जाओ।

शम्भू भाई ने मुझे एक तरफ़ आ कर सारी बात बतायी तो मैंने उनसे कहा कि यह तो बहुत ऊँचा पहाड़ है और हम रास्ता भटक सकते हैं, वैसे भी हमें अपना काम शाम चार बजे से पहले पूरा करना है, क्योंकि उसके बाद हमें यहाँ से कन्धार जाने के लिए कोई टैक्सी नहीं मिलेगी। मेरी बात सुन कर शम्भू भाई बोले कि फिर आप बताओ कि क्या करें तो मैंने कहा कि आप इस दुकान वाले से पूछिये कि यह शाम तक कितनी कमाई कर लेगा और जो भी यह बताये, इसे उससे दुगने अफ़ग़ानी दे कर अपने साथ पहाड़ पर मज़ार की ज़ियारत करा लाने के लिए राज़ी कीजिए।

शम्भू भाई ने मेरे कहे अनुसार उस दुकान वाले से बात की तो वह तैयार हो गया और 200 अफ़ग़ानी में तय हुआ कि वह हमें ऊपर पहाड़ पर ले जायेगा। ऊपर पहाड़ पर चलने से पहले उसने हमें चेतावनी दी कि आज मौसम ख़राब है और अगर ऊपर या नीचे आते समय बर्फ गिर गयी तो आप लोगों के पैर रपट कर मौत भी हो सकती है, क्योंकि रास्ता बहुत ही सँकरा और पथरीला है। इस दुकानदार की बात सुन कर शम्भू भाई की ज़्यादा इच्छा ऊपर पहाड़ों पर जाने की नहीं थी और वे मुझसे बोले कि आप यहाँ नीचे से ही अपने कैमरे से फ़ोटो और वीडियो रिकार्डिंग कर लीजिये, ऊपर जाने में ख़तरा है। मैंने मना कर दिया कि यहाँ से फ़ोटो ले कर कोई फ़ायदा नहीं है और ऊपर पहाड़ पर जा कर बहाउद्दीन सोम की मज़ार को देखने की ही ज़िद की, क्योंकि मुझे वहाँ से निशानी के लिए कोई चीज़ उठानी थी।

मेरी ऊपर जाने की ज़िद को देख कर शम्भू भाई बोले कि हम तो अफ़ग़ानी हैं और आसानी से पहाड़ पर चढ़ जायेंगे, लेकिन आपको शारीरिक कष्ट होगा, क्योंकि आपको पहाड़ों पर चढ़ने की आदत नहीं है। मैं बोला आप मेरी चिन्ता मत कीजिये और जल्दी से उस दुकानदार की दुकान बन्द करवा कर अपने साथ ले कर चलिए। 10 मिनट में ही वह दुकान वाला अपनी दुकान बन्द करके आ गया। जब वह आ रहा था, तो मैंने देखा कि उसके पैर में जूता नहीं था, और वह बग़ल वाले दुकानदार से उसका जूता अपने लिए माँग कर हमारे साथ जाने के लिए आया था।

इन दुकानों से क़रीब दो कि. मी. की दूरी पर एकदम से खड़ी पहाड़ी थी और उससे पहले हल्की-हल्की चढ़ाई का पथरीला रास्ता था। जब हम तीनों इस हल्की-हल्की

https://t.me/Sahityajunction

चढ़ाई पर तेज़-तेज़ चले और मैं थोड़ी दूर जा कर हाँफने लगा, तो शम्भू भाई मुझसे मज़ाक़ करते हुए बोले कि देखा, मैंने पहले ही कहा था, इन पहाड़ों पर चढ़ना आप हिन्दुस्तानियों के बस की बात नहीं है। अभी तो पहाड़ पर चढ़ना शुरू भी नहीं किया है और आप अभी से हाँफने लगे और मेरा वज़न कम करने के लिए मेरे कन्धे पर लटक रहे कैमरे को उठा कर चलने लगे। मैं हिम्मत करके ऊपर वाले का नाम ले कर फिर तेज़-तेज़ चलने लगा और फिर हम तीनों पहाड़ पर चढ़ने लगे।

अब हुआ यह कि मैं बिलकुल नार्मल था, लेकिन शम्भू भाई की हालत ख़राब होने लगी थी और वे हर थोड़ी-थोड़ी दूरी पर चल कर बैठ जाते और कहते कि अब नहीं चला जा रहा है। मैंने उनसे मज़ा लेते हुए कहा कि देखा—हिन्दुस्तानी आदमी तो पहली बार पहाड़ पर चढ़ रहा है और तुम दोनों अफ़ग़ानियों को हराने के लिए तैयार है। मेरी बात सुन कर वे बोले कि आप जवान हो और कोई नशा भी नहीं करते, इसलिए आपके शरीर में ताक़त है, जबकि मैं बहुत सिगरेट और शराब पीता हूँ जिसने मेरा शरीर खोखला कर दिया है और फिर अपने आप से ही क़समें खाने लगे कि आज के बाद नशा नहीं करूँगा।

इसके बाद शम्भू भाई एक जगह बैठे तो बस उठने के लिए तैयार ही नहीं हुए और कहने लगे मैं यहीं आप दोनों का इन्तज़ार करता हूँ और आप दोनों ऊपर मज़ार पर ज़ियारत करके आ जाओ, मैंने कहा, शम्भू भाई, आपके बिना मैं अकेला नहीं जा सकता, क्योंकि इस दुकान वाले को पता चल जायेगा कि मैं अफ़ग़ानी नहीं हूँ, इसलिए आप चलिए, अब थोड़ा-सा ही रास्ता बचा है। मैंने उन्हें डराया कि ज़्यादा देर करोगे तो हम वापस कन्धार नहीं जा पायेंगे और यहाँ रात को रुकने की कोई जगह नहीं है। अगर हम यहाँ कहीं भी रुके तो तालिबानी ज़िन्दा नहीं छोड़ेंगे।

मेरी बात सुन कर वे जल्दी से उठे और हल्के-हल्के फिर चढ़ाई-चढ़ने लगे। पहाड़ी रास्ते पर बर्फ गिरी हुई थी, जिसकी वजह से फिसलन थी और अगर यहाँ पैर फिसल जाये तो सीधे सिर्फ मौत होती, क्योंकि ये पत्थर वाले पहाड़ थे और नीचे गिर कर किसी की जान बचना नामुमकिन बात थी। काफ़ी देर लगातार चलने के बाद जब हम पहाड़ पर ऊपर पहुँचने वाले थे, तो हमने देखा कि रास्ते में ताज़ा ख़ून पड़ा है, उस ख़ून को देख कर वह दुकान वाला शम्भू भाई से बोला कि जल्दी-जल्दी चलो यहाँ आस-पास बड़ा जानवर है, जिसने अभी किसी दूसरे जानवर का शिकार किया है और यह बड़ा जानवर हमारे ऊपर भी हमला कर सकता है।

दुकान वाले की बात सुन कर हम तीनों और भी तेज़-तेज़ चलने लगे और कैमरा भी मैंने शम्भू भाई से अपने पास वापस ले लिया, क्योंकि सबसे ज़्यादा परेशानी उन्हें ही चढ़ने में हो रही थी, जबकि उस दुकानवाले को कोई दिक़्क़त नहीं हो रही थी और वह लगभग पूरे रास्ते ही हम से पचास कदम आगे-आगे ही चलता रहा। जब हम पहाड़ के ऊपर पहुँच गये तो यहाँ पर क़रीब घुटनों-घुटनों तक बर्फ गिरी हुई थी और सामने ही एक मज़ार दिख रही थी। उस दुकान वाले ने हमें बताया कि यह वही मज़ार है जिसके लिए हम यहाँ पहाड़ों पर आये है।

मज़ार देख कर मुझमें ऐसा जोश आया कि मैं तेज़ी से उसकी तरफ़ बर्फ में भागने लगा। जब मैं मज़ार की तरफ़ भाग रहा था तो पीछे से वह दुकानदार पश्तो भाषा में

https://t.me/Sahityajunction

चिल्लाते हुए मेरे पीछे-पीछे ही आने लगा जैसे मुझे पकड़ने की कोशिश कर रहा हो। लेकिन मैं तेज़-तेज़ चलता ही जा रहा था, क्योंकि मुझे नहीं मालूम था कि वह पश्तो भाषा में मुझे उस रास्ते से जाने के लिए मना कर रहा था। थोड़ी देर बाद शम्भू भाई भी चिल्लाये और जब उन्हें लगा कि मेरी समझ में नहीं आ रहा है तो वे हिन्दी भाषा में ही चिल्लाये कि आगे खाई है। मुझे शम्भू भाई की बात ठीक से सुनाई नहीं दी, लेकिन मुझे समझ आ गया कि कोई गड़बड़ है और मैं वहीं खड़ा हो गया और उन दोनों का अपने पास आने का इन्तज़ार करने लगा।

वह दुकानदार मेरे पास आया और पश्तो भाषा में मुझ से कुछ बोलने लगा, लेकिन मेरी समझ में कुछ नहीं आया, इतने में ही शम्भू भाई भी आ गये और मुझे बताया कि जहाँ आप खड़े हो, उसके थोड़ी आगे जाते तो बर्फ इतनी नर्म है कि आप खाई में नीचे तक चले जाते और फिर बर्फ के ऊपर आना नामुमकिन होता और आपकी मौत निश्चित थी। मैं उनकी बात सुन कर एकदम सन्न रह गया, क्योंकि इसकी मुझे कोई जानकारी नहीं थी। हमें हिन्दी में बातें करते देख, दुकानदार ने शम्भू भाई से पूछा कि क्या यह कन्धार का नहीं है? शम्भू ने कहा कि नहीं, यह तो पाकिस्तानी है और मैं इसे ज़ियारत कराने बाबा की मज़ार पर लाया हूँ। फिर मैं सीधा-सीधा उसी दुकानदार के पीछे-पीछे चलने लगा। आ़खर वह मज़ार भी आ गयी जिसके लिए हम यहाँ आये थे।

ऊपर पहाड़ों पर इस मज़ार के पास 8-10 छोटे-छोटे मकान भी बने हुए थे, और यह दुकानदार उनमें से एक अपने परिचित के मकान में हमें यह कह कर चला गया कि आप लोग ज़ियारत कीजिए। मैं अपने मिलने वाले से मिल कर दस मिनट में बाबा की मज़ार पर ही आता हूँ। मैंने मन-ही-मन सोचा कि चलो, अच्छा हुआ जो यह अपने परिचित के पास रुक गया, क्योंकि इसके साथ होने से मुझे निशानी के लिए मज़ार से कुछ उठाने में परेशानी होती। जब मैं और शम्भू भाई मज़ार के पास पहुँचे तो वहाँ पर एक मलंग सेवादार बैठा था जो मज़ार की देख-भाल के लिए था। शम्भू भाई ने उसे अपने बारे में बताया और ज़ियारत करवाने के लिए कहा तो उसने हमें ज़ियारत करने के लिए कह दिया।

बहाउद्दीन सोम की यह मज़ार इस तरह से बनी हुई थी कि मज़ार के नीचे दो कमरे बने हुए थे, जिनमें वह मलंग रहता था। मलंग हमें मज़ार के नीचे बने अपने कमरे में ले आया जहाँ पर उसने लकड़ियाँ जला कर आग जलायी हुई थी, क्योंकि बर्फ यहाँ बहुत सर्दी थी। वह मलंग शम्भू भाई से बोला कि जूते उतार कर पैर आग से सेंक लो, क्योंकि बर्फ से पैर ठण्डे पड़ गये होंगे। शम्भू भाई ने जूते उतारे तो मुझे भी उतारने पड़े, लेकिन जैसे ही वह मलंग उसी कमरे में दूसरी तरफ़ हमारे लिए चाय बनाने के लिए गया तो मैंने शम्भू भाई से कहा कि आप इसे यहाँ बातों में लगाओ, मैं ऊपर जा कर मज़ार से कोई निशानी उठा कर लाता हूँ और इससे पहले की कोई कुछ बोलता मैं फटाफट अपना कैमरा उठा कर जूते पहन कर सीधा ऊपर मज़ार पर चला आया और देखने लगा कि क्या उठाऊँ।

क़ब्र की चारों तरफ़ लोहे की जाली लगी हुई थी और जालीदार ही एक छोटा-सा दरवाज़ा था जिसे खोल कर उस क़ब्र को हाथ लगाया जा सकता था। क़ब्र के ऊपर काफ़ी सारे रंग-बिरंगे सुन्दर-सुन्दर पत्थर गिराये हुए थे और इन पत्थरों के अलावा उस

https://t.me/Sahityajunction

क़ब्र पर और कुछ भी नहीं था। मैंने निशानी के लिए वहाँ से 4-5 पत्थर उठाये और नीचे आ ही रहा था कि वह मलंग शम्भू भाई को ले कर ऊपर मेरे पास ही आ गया। मैंने उसके सामने ही अपने कैमरे से उस मज़ार की फ़ोटो ली, लेकिन उसने अपनी फ़ोटो ि़खचवाने से मना कर दिया। इतने में ही वहाँ पर पास बने मकान से एक और आदमी भी आ गया। अब वहाँ हमारा ज़्यादा देर रुकना ठीक नहीं था, क्योंकि वह मलंग मुझे लगातार शक की निगाह से देखे जा रहा था।

मेरा यहाँ का काम पूरा हो चुका था, क्योंकि मैं वीडियो भी बना चुका था और निशानी के लिए यहाँ से पत्थर भी उठा चुका था, इसलिए मैंने शम्भू भाई से तुरन्त चलने के लिए कहा। मलंग ने चाय पी कर जाने के लिए कहा, लेकिन शम्भू भाई ने पश्तो भाषा में उसे समझाया कि हमें कन्धार जाना है और देर होने पर हमें टैक्सी नहीं मिलेगी। हम दोनों ने उसी घर से उस दुकानदार को अपने साथ लिया, जहाँ वह गया था और फटाफट नीचे की तरफ़ आने लगे। पहाड़ से नीचे आते समय शम्भू भाई मुझसे बोले कि यह मलंग मुझसे बहुत पूछ-ताछ कर रहा था, तो मैंने कहा कि मुझे लग रहा है कि यह कोई अलक़ायदा या तालिबान का बहुत बड़ा आतंकवादी है और मलंग बन कर अपने आपको नाटो सेना से छिपाने के लिए यहाँ रह रहा है, और यही कारण है कि यह हम पर विश्वास नहीं कर रहा था और बहुत ज़्यादा प्रश्न कर रहा था। मैंने उनसे कहा कि मलंग के पास ए.के. 47 का क्या काम और इस मलंग के पास दो ए.के. 47 थी जो उसने घास-फूस के नीचे दबायी हुई थी, लेकिन फिर भी साफ़ दिख रही थी।

शम्भू भाई ने मेरी बात का समर्थन करते हुए कहा कि आप ठीक बोलते हैं, क्योंकि वह आपके लिए कह रहा था कि यह पाकिस्तानी लड़का यहाँ कैसे आ गया और इतने बरसों से मैंने कभी नहीं सुना कि कोई बाहर का आदमी इन पहाड़ों पर ज़ियारत करने आया हो। मैंने शम्भू भाई की बात सुन कर उनसे पूछा कि क्या आपने उस मलंग को भी यह बताया कि मैं पाकिस्तान का हूँ तो वे बोले की हाँ, क्योंकि वह आप पर बहुत शक कर रहा था, और अगर यह आपसे बात करता तो उसे पता चल ही जाना था कि आप अफ़ग़ानी नहीं हो, इसलिए मैंने पहले ही बता दिया। मैंने कहा, चलो, मलंग चाहे अलक़ायदा का आतंकवादी हो या तालिबानी आतंकवादी, हमने तो उसे भी मूर्ख बना कर अपना काम कर लिया। फिर हम लोग फटाफट नीचे वहाँ दुकानों के पास आने लगे जहाँ से हमें टैक्सी कन्धार वापस जाने के लिए लेनी थी।

नीचे आने में हमें ज़्यादा समय नहीं लगा और हम सुरक्षित नीचे आ गये और उस दुकान वाले की दुकान पर गये और शम्भू भाई ने उससे तय हुए 200 अफ़ग़ानी मुझ से ले कर उसे दे दिये। मैंने उस दुकान वाले के पैरों में फटे हुए जूते देखे, जिन्हें उसने माँग कर मेरे सामने पहना था, तो मैंने उसे अपनी तरफ़ से 300 अफ़ग़ानी और दे दिये और हिन्दी में ही बोला कि इससे अपने लिए जूते ख़रीद लेना। वह दुकानवाला मेरी कितनी बात समझा यह तो मुझे पता नहीं, लेकिन जूते के लिए अलग से पैसे मुझसे मिलने पर वह बहुत ख़ुश हुआ और मेरा हाथ पकड़ कर चूमने लगा।

इस समय लगभग शाम के चार बजने वाले थे, इसलिए हम वहाँ गये जहाँ से हमें कन्धार के लिए टैक्सी मिलनी थी। वहाँ पर सिर्फ एक टैक्सी खड़ी थी, जिसे हमने कन्धार जाने के लिए राज़ी कर लिया और तुरन्त ही उसमें बैठ कर कन्धार की तरफ़ चल दिये,

https://t.me/Sahityajunction

क्योंकि अब यहाँ हल्की-सी बर्फ भी गिरने लगी थी।

यह पूरा रास्ता कच्ची सड़क का था और ड्राइवर ने बताया कि अगर ज़्यादा बर्फ गिर गयी तो आगे एक नदी है, जो गाड़ी से पार नहीं होती है। उस ने हमारे कहने से गाड़ी और भी तेज़ चलायी जिससे कि हम कन्धार पहुँच सकें, बहुत ही मुश्किल से हम रात के समय कन्धार पहुँच गये।

https://t.me/Sahityajunction

41. प्रगति और बाधाएँ

इस दौरान उस पाकिस्तानी मिस्त्री का फ़ोन भी मेरे पास आया, लेकिन मैंने उसे बता दिया कि अब आपकी ज़रूरत नहीं है, क्योंकि मेरा काम शम्भू भाई कर रहा था।

कन्धार पहुँचने के बाद हमने अफ़ज़ल भाई के रेस्टोरेण्ट में खाना खाया और मैंने उनको यह भी बताया कि कल मैं वापस जाऊँगा और फिर मैं शायद कभी कन्धार वापस न आऊँ और शायद अब आपसे आख़िरी मुलाक़ात है। मैंने उनको धन्यवाद भी दिया, क्योंकि उन्होंने हमेशा मेरी मदद की थी। इसके बाद हम कमरे में आ कर सो गये और सुबह ही अपना सारा सामान ले कर मैं शम्भू के साथ ले कर ग़ज़नी के लिए टैक्सी में बैठ गया। मैं ग़य्यूर भाई के होटल में न रुक कर, उसी होटल में रुका जिसमें पिछली बार रुका था। हमने एक कमरा होटल में किराये पर लिया, जिसमें दो बेड थे। इस दौरान उस पाकिस्तानी मिस्त्री का फ़ोन भी मेरे पास आया, लेकिन मैंने उसे बता दिया कि अब आपकी ज़रूरत नहीं है, क्योंकि मेरा काम शम्भू भाई कर रहा था। अगले दिन मैं शम्भू को सब समझा कर अपने साथ देयक गाँव ले गया। हर बार की तरह मुझे देखते ही हाजी साहब और गाँव के दूसरे सभी लोग मुहम्मद ग़ोरी की मज़ार पर मेरे पास आ गये।

मैंने हाजी साहब को दुआ-सलाम करके शम्भू भाई का परिचय असलम नाम से करवाया और बताया कि यह पाकिस्तानी है और बहुत बढ़िया मिस्त्री है, और यह मुहम्मद ग़ोरी बाबा की मज़ार का नया फ़र्श और चारदीवारी डालेगा, और मैं चाहता हूँ कि 2-3 दिन के अन्दर ही काम शुरू हो जाये। इसके बाद हाजी साहब से शम्भू ने बात की और समझाने लगा कि कैसे-कैसे चारदीवारी और फ़र्श बनेगा? शम्भू भाई हाजी साहब से पश्तो भाषा में ही बातें करने लगे तो वे और भी ख़ुश हुए और पूछने लगे कि तुम पाकिस्तानी हो और यह पश्तो भाषा कहाँ से सीखी? शम्भू भाई ने बताया कि मैं क़रीब 10 साल से अफ़ग़ानिस्तान में बिल्डिंगें बनवा रहा हूँ, इसलिए यहाँ रहते-रहते मैं पश्तो भाषा सीख गया।

इसके बाद हाजी साहब हमें अपने घर पर लाये जो इस मज़ार से सामने ही दिखता था, उन्होंने हमें दूध-चाय पिलायी और उसके बाद हम उनसे मज़ार की मरम्मत में इस्तेमाल होने वाला सामान अगले दिन ग़ज़नी से ख़रीद कर लाने की कह कर चले गये। वापस ग़ज़नी आ कर मेरे कहने पर शम्भू भाई ने एक सीमेण्ट वाले से और एक मार्बल की दुकान वाले से बात की। अगले दिन सुबह ही हम 20 कट्टे सीमेण्ट के और कुछ मारबल के अलग-अलग डिज़ाइन के छोटे-छोटे टुकड़े ले कर देयक गाँव पहुँच गये। वह सारे सीमेण्ट के कट्टे हमने हाजी साहब के घर पर ही रखवाये और मैंने उन्हें मार्बल के टुकड़े भी दिखा कर उसमें से पसन्द करवाने के लिए कहा। मैंने कहा हाजी साहब कल से काम शुरू करना है, और कल हम 3-4 मज़दूर ले कर आयेंगे, जो असलम मिस्त्री के कहने पर काम करेंगे। जब मैं इनसे यह बातें कर रहा था तो लगभग सारे गाँव के आदमी हाजी साहब के घर पर ही थे।

मज़दूरों की बात सुन कर उनमें से 2-3 लोग बोले कि बाहर से मज़दूर लाने की ज़रूरत नहीं है, गाँव के ही 2-4 लोगों को काम मिल जायेगा और वे सस्ते में भी काम करेंगे। मैंने मना करने की कोशिश की, क्योंकि मैं अपने लाये हुए मज़दूरों से ही काम

https://t.me/Sahityajunction

करवाना चाहता था, क्योंकि मैं चाहता था कि मज़दूर हमारे कहने पर काम करें और मैं चुपचाप ही उनसे पृथ्वीराज की समाधि भी ख़ुदवा दूँ, लेकिन हाजी साहब ने भी गाँव वालों की इस बात का समर्थन किया कि गाँव के लड़के ही असलम मिस्त्री के कहने पर काम कर लेंगे और बाहर से मज़दूर लाने की ज़रूरत नहीं है। मुझे उनकी बात माननी पड़ी, लेकिन मैंने मन-ही-मन यह भी तय कर लिया कि एक-दो दिन गाँव वालों से काम करवा कर और उनके काम में कमी निकाल कर मैं बाद में 2-4 लोग अपने ले आऊँगा।

इसके बाद हम अगले दिन का प्रोग्राम सेट करके वापस ग़ज़नी अपने होटल में आ गये। अगले दिन मैं और शम्भू भाई सुबह ही देयक गाँव पहुँच गये। हाजी साहब ने दो लड़के शम्भू भाई के सुपुर्द कर दिये, जिनसे मेरे कहे अनुसार उन्होंने मुहम्मद ग़ोरी की मज़ार के अन्दर लगे फ़र्श को ख़ुदवा दिया। आज इतना ही काम करवा कर मैं और शम्भू भाई वापस ग़ज़नी होटल में आ गये। मैंने शम्भू भाई से कहा कि अब कुछ दिन आप अकेले देयक गाँव जा कर काम करवाइये, क्योंकि मेरे वहाँ रहने से सारे गाँव वाले वहीं इकट्ठा रहते हैं और अगर सारा गाँव वहीं मज़ार पर मौजूद रहा तो काम कैसे होगा। इसलिए आप अकेले जा कर काम करवाइये जिससे फालतू की भीड़ वहाँ न लगे।

अगले दिन शम्भू भाई मुझे होटल में छोड़ कर अकेले ही चले गये। दिन में जब मैं होटल में खाना खा रहा था तो एक आदमी मेरे सामने वाली कुर्सी पर बैठ गया और पेन और डायरी निकाल कर मुझसे पश्तो भाषा में कुछ बोला। जब मैंने उसे इंग्लिश में बताया कि मुझे सिर्फ हिन्दी-इंग्लिश आती है तो उसने टूटी-फूटी इंग्लिश में मुझसे मेरा नाम और मेरे ग़ज़नी आने का कारण पूछा। मैंने उससे पलट कर पूछा कि आप कौन हैं तो वह बोला कि मैं ग़ज़नी पुलिस का जासूसी िंवग का आदमी हूँ। मैंने कहा मैं कैसे मान लूँ कि आप पुलिस वाले हैं तो उसने मुझे अपना आई-कार्ड दिखाया।

मैंने आई कार्ड देख कर उसे कहा कि मेरा नाम संजय है और मैं भारतीय हूँ, मैं एक किताब लिख रहा हूँ जिसमें ग़ज़नी की ऐतिहासिक जगहों की फ़ोटो की ज़रूरत है। उसने कहा कि हमारी जानकारी के हिसाब से आप देयक गाँव के इलाक़े में भी गये थे। मैंने कहा, हाँ गया था, क्योंकि वहाँ पर भी मुझे मुहम्मद ग़ोरी की मज़ार की कुछ तस्वीरें अपनी किताब में छापने के लिए चाहिए थीं। उसे मैंने अपनी बातों से पूरी तरह सन्तुष्ट कर दिया तो वह बोला कि आप मेरा मोबाइल नम्बर लिख लीजिए, क्योंकि यह ख़तरनाक इलाक़ा है और अगर आपको कोई परेशानी हो तो आप मुझे फ़ोन करके बुला सकते हैं। उसने मुझे यह भी सलाह दी कि मैं ग़ज़नी में ही रहूँ और इसके आस-पास गाँव के इलाक़ों में, जिनमें देयक गाँव भी शामिल है, न जाऊँ, क्योंकि यह तालिबानियों के समर्थक गाँव हैं। मैंने कहा, आपका धन्यवाद, मैं आपकी बातें मानूँगा।

इसके बाद मैंने उससे खाने के लिए पूछा, क्योंकि मैं भी खाना खा रहा था, लेकिन वह मुझसे हाथ मिला कर चला गया। मैं पूरे दिन होटल में ही रहा, क्योंकि मैं ज़्यादा लोगों की निगाह में नहीं आना चाहता था। शाम को शम्भू भाई वापस होटल में आये और मुझसे बोले कि आज तो गाँव वालों ने मुझे कई बार नमाज़ पढ़वा दी। मैंने कहा कि क्या आपको नमाज़ पढ़नी आती है तो वे बोले कि नहीं आती, लेकिन मैं मस्जिद में सबसे पीछे खड़ा हो गया था और जैसे-जैसे वह उठते-बैठते रहे, मैं भी वैसे ही करता रहा। मैंने कहा, कोई बात नहीं, ऊपर वाला एक है, चाहे मन्दिर में जाओ, चाहे मस्जिद में, चाहे

https://t.me/Sahityajunction

गिरजाघर में।

वे हँसने लगे और बोले कि अगर उन्हें शक हो गया और मेरी पैंट उतरवा कर देख ली तो मैं क्या करूँगा? मैंने कहा, अगर उन्होंने आपकी पैंट उतरवा कर देखी तो आपको कुछ नहीं करना होगा, गाँव वाले ख़ुद ही सब करेंगे। इसके बाद मैंने उनसे काम की प्रोग्रेस के बारे में पूछा तो उन्होंने मुझे बताया कि आप ठीक कह रहे थे गाँव के लोग आपकी वजह से ही भीड़ लगा कर काम की जगह पर खड़े रहते थे। आज आप नहीं थे तो सिर्फ कुछ बच्चे वहाँ खड़े हो गये थे, जिन्हें मैंने काम में दख़लअन्दाज़ी न करने को कह कर वहाँ से भेज दिया। मैंने उनसे यह जानकारी भी ली कि क्या पृथ्वीराज चौहान की समाधि को आप खुदवा सकते हो, तो वह बोले खुदवा दूँगा, लेकिन अभी 3-4 दिन और काम चलने दो। मैंने कहा—ठीक है और उन्हें बताया कि आप पृथ्वीराज की समाधि पर हल्का-सा फावड़ा चलवा देना और फिर ठीक करने के बहाने उसे पूरा खुदवा देंगे।

अगले दिन शम्भू भाई रोज़ की तरह अपने काम पर देयक गाँव चले गये। दिन में क़रीब एक बजे मैं अपने होटल के कमरे में बैठा हुआ अपने वॉकमैन से गाने सुन रहा था तो मैंने नीचे देखा, शम्भू भाई कमरे की तरफ़ आ रहे हैं। उनको देखते ही मेरा मन बैचेन हो गया, क्योंकि उन्हें इस समय देयक गाँव में होना चाहिये था और उनका इस समय यहाँ ग़ज़नी में होने का मतलब था कि काम में कोई रुकावट आ गयी है। वे अन्दर कमरे में आये तो मैंने उनसे पूछा कि शम्भू भाई, क्या हुआ, आप इतनी जल्दी वापस कैसे आ गये? वे बोले सारा काम गड़बड़ हो गया है और गाँव वालों ने काम रुकवा दिया है। मैंने काम रुकने का कारण पूछा, तो उन्होंने मुझे कहा कि कारण तो मुझे नहीं मालूम, लेकिन गाँव में हाजी साहब के जो विरोधी हैं, उन्होंने मुझे काम बन्द करवाने के लिए कहा और फिर आपको और मुझे गाँव में कभी न आने के लिए भी कहा। शम्भू भाई की बातें सुन कर मैं बहुत परेशान हो गया और उन्हें खाना खाने के लिए भेज कर आगे की रणनीति सोचने लगा।

काफ़ी देर सोचने के बाद मैंने तय किया कि मैं ख़ुद गाँव में जाऊँगा और हाजी साहब से अलग से बात करूँगा कि वे मुझे चुपचाप रात को उस क़ाफिर हिन्दुस्तानी सुल्तान की क़ब्र को खोदने दें, जिसके ऊपर वे लोग अपने जूते-चप्पल उतारते हैं और उस क़ब्र की कोई इज़्ज़त उनके मन में नहीं है और उसे हम खोद देंगे तो कोई परेशानी भी नहीं आयेगी। मुझे ऐसा लग रहा था कि मैं एक लाख रुपये तक का लालच दे कर हाजी साहब को इस काम के लिए मना लूँगा। खाना खा कर जब शम्भू भाई वापस कमरे में आये तो मैं उनसे बोला कि हम अभी वापस देयक गाँव जायेंगे और हाजी साहब से बात करके चुपचाप आज रात को ही अपना काम करेंगे। मैंने इन कामों के लिए पहले ही दो छोटे हथौड़े, कटर, बिना हैण्डल का फावड़ा ले रखे थे। यह सारा सामान मैं एक छोटे बैग में डालने लगा तो शम्भू भाई ने मुझसे कहा कि आप मेरी बात मानिए, अब वहाँ जाना ठीक नहीं है। मैंने उनसे कहा कि अगर काम पूरा नहीं हुआ तो मैं आपको वे पैसे भी नहीं दूँगा जो हमारे बीच तय हुए थे। वे बोले ठीक है, मैं साथ चलूँगा, लेकिन आगे सारा काम आप ख़ुद ही करना। मैंने कहा ठीक है और हम एक टैक्सी ले कर शाम को देयक गाँव में पहुँच गये।

https://t.me/Sahityajunction

हम दोनों पैदल ही हाजी साहब के घर की तरफ़ जा रहे थे तो सामने से 15-20 लड़के हमें देख कर चिल्लाने लगे और भाग कर सभी हमारी तरफ़ आ गये। उन्होंने हमें चारों ओर से घेर लिया और वे अपनी टूटी-फूटी उर्दू में मुझसे बोलने लगे कि तुम क़ाफिर हो और तुम्हें अभी मस्जिद में नमाज़ पढ़नी पड़ेगी। कुछ उत्साहित लड़के हमारा हाथ खींच कर हमें मस्जिद की तरफ़ लाने लगे जो हाजी साहब के घर के पास ही थी। मैं मन-ही-मन ऊपर वाले का नाम ले रहा था, क्योंकि मुझे लग रहा था। कि अब हम फँस गये, लेकिन जैसे ही हम लोग मस्जिद के दरवाज़े पर पहुँचे तो मस्जिद के अन्दर से हाजी साहब 3-4 आदमियों के साथ बाहर आये और मुझे उन लड़कों के बीच में फँसा देख कर मुझे उनसे छुड़वाया। जब उन लड़कों ने कहा कि हम इनसे नमाज़ पढ़वायेंगे तो हाजी साहब बोले कि नमाज़ का समय ख़त्म हो गया है और तुम इन्हें परेशान न करो और मुझे अपने साथ यह कह कर अपने घर ले जाने लगे कि तुम हमारे मेहमान हो, चाय पी कर जाना। मैं और शम्भू भाई चुपचाप हाजी साहब के घर आ गये, क्योंकि उन लड़कों से छुटकारा पाने का इसके सिवा कोई दूसरा चारा नहीं था। हाजी साहब के घर हमें आये आधा घण्टा भी नहीं हुआ था कि हाजी साहब के बरामदे में गाँव के क़रीब 50-100 आदमी ए.के. 47 जैसे हथियार ले कर आ गये और ज़ोर-ज़ोर से हम दोनों को अपने सुपुर्द करने के लिए चिल्लाने लगे।

इतने सारे लोग जब हाजी साहब के बरामदे में आ कर चिल्लाने लगे, तो हाजी साहब हमें हॉल में ही बैठा कर अपने 3-4 परिचितों के साथ बरामदे में बात करने के लिए गये। जाते समय उन्होंने उस कमरे की बाहर से कुण्डी लगा दी, जिसमें मुझे और शम्भू भाई को बैठा कर गये थे, बहुत देर तक चीखने-चिल्लाने की आवाज़ें बाहर बरामदे से आती रहीं। इस पूरे माहौल को देख कर मैं बहुत घबरा गया, लेकिन यह घबराहट मौत के डर की नहीं थी, क्योंकि काम शुरू करने से पहले ही मैंने अपने आपको मरा हुआ समझ लिया था, बल्कि यह घबराहट इस डर के कारण थी कि अब पृथ्वीराज की समाधि मैं नहीं खोद पाऊँगा। उनकी बातें जो बाहर बरामदे में हो रही थीं मेरी समझ में नहीं आ रही थीं, इसलिए मैंने शम्भू भाई से पूछा कि बाहर क्या बातें हो रही हैं?

शम्भू भाई ने मुझे बताया कि वे लोग हाजी साहब से हम दोनों को अपने सुपुर्द करने के लिए बोल रहे हैं, और हमें हिन्दुस्तान का जासूस और क़ाफिर बता रहे हैं और हमसे पूछ-ताछ करना चाहते हैं। मैंने कहा, किस बात की पूछ-ताछ तो वे बोले, यही कि हमारा यहाँ आने का क्या मक़सद है? मैं तो इस बात से डर रहा था कि अब शायद काम नहीं होगा, लेकिन शम्भू भाई के चेहरे पर मौत का ख़ौफ़ साफ़ दिख रहा था। शम्भू भाई मुझसे बोले कि अगर उन्होंने हमारे बैग की तलाशी ले कर खुदाई का सामान देख लिया तो बहुत मुसीबत हो जायेगी। मैंने कहा कि आप चिन्ता न करें, सब अच्छा होगा। फिर मैं दूसरी बातें करके शम्भू भाई का हौसला बढ़ाने लगा।

क़रीब आधे घण्टे बाद, जिस कमरे में हम बैठे थे उसका दरवाज़ा खुला और हाजी साहब अपने साथ 10-15 आदमियों को ले कर कमरे में आये। इनमें से कई लोगों के हाथों में हथियार भी थे, हाजी साहब ने मेरी तरफ़ इशारा करके उन्हें पश्तो भाषा में कुछ कहा और सबको वहीं कमरे में बैठा दिया। उनमें से कई लोगों को पाकिस्तान में रहने के कारण उर्दू भाषा आती थी और उन्होंने मुझसे मेरा नाम पूछा, तो मैंने उन्हें अपना नाम शादाब ख़ान बताया। उन्होंने कहा कि तुम दोनों का पासपोर्ट कहाँ है तो मैंने कहा कि

https://t.me/Sahityajunction

आप पाकिस्तान गये हैं? उनमें से कई लोग बोले कि हाँ गये हैं और हमारे परिवार पाकिस्तान में ही रहते हैं तो मैंने कहा कि क्या आपसे पाकिस्तान में किसी ने पासपोर्ट के बारे में पूछा तो वे बोले, नहीं। तब मैंने कहा कि मुझे फिर पासपोर्ट की क्या ज़रूरत है?

उन्होंने मुझसे कहा कि चलो, पासपोर्ट की छोड़ो यह बताओ तुम पाकिस्तान में कहाँ रहते हो? मैंने कहा, लाहौर में। उनमें से एक बोला, लाहौर में कहाँ? शहर के अन्दर बाज़ार में। बाज़ार में कहाँ? मैंने ऐसे ही अन्दाज़े से सर्राफ़ा बाज़ार बोल दिया, क्योंकि मैंने सोचा कि इतने बड़े शहर में सोने-चाँदी के व्यापार के लिए बाज़ार ज़रूर होगा। तो वे बोले कि सर्राफ़ा बाज़ार तो ा़िकले के पास है तो मैंने कहा, हाँ, मेरी रिहाइश वहीं है।

काफ़ी देर तक वह मुझसे और शम्भू भाई से ऐसे ही पूछ-ताछ करते रहे और जब उन्हें कोई ऐसी बात नहीं मिली जिस पर वह हमें कुछ बोल पाते तो उनमें से एक आदमी बोला कि हमें इनकी तलाशी लेनी है और इतना कहते ही 2-3 लोग जिनके हाथों में ए.के. 47 थी हमारी तरफ़ तलाशी लेने के लिए बढ़े, लेकिन एकदम से हाजी साहब खड़े हुए और उन्हें बैठने के लिए कहा और पश्तो भाषा में ही उन पर बिगड़ गये कि ये मेरे मेहमान हैं और इस समय मेरे घर पर बैठे हैं और इनकी तलाशी लेना मेरी तौहीन है और मैंने तुम्हें इनसे इतनी पूछताछ करने दी, क्योंकि गाँव का कोई भी आदमी यह न समझे कि इन लड़कों से मज़ार के काम के लिए हाजी ने कुछ ले लिया है।

हाजी का भाई और उनके गाँव के अनेक समर्थक भी अपने-अपने हथियार ले कर अब तक वहाँ आ चुके थे, इसलिए हाजी साहब अब उन पर हावी थे। हाजी साहब ने बात यहीं पर ख़त्म करवा दी कि वे मुझे और शम्भू भाई को अगले दिन उस इलाक़े के वली के पास ले जायेंगे और वे जो फ़ैसला करेंगे, वह हम सबको मानना पड़ेगा। सभी लोग हाजी की इस बात पर राज़ी हो गये और फिर वहाँ से चले गये। अब कमरे में सिर्फ मेरे और शम्मू भाई के अलावा 2-3 बच्चे हाजी साहब के परिवार के बैठे हुए थे और दूसरे सभी लोग बाहर चले गये थे।

अब माहौल लगभग शान्त हो चुका था और थोड़ी देर बाद ही हमारे लिए खाना लाया गया, मैंने देखा खाने में सिर्फ दो तरह का मीट है। शम्भू भाई ने मुझे चुपचाप बताया कि एक तो गाय का है और दूसरा दुम्बा है। मुझे मजबूरी में दुम्बा खाना पड़ गया, क्योंकि हाजी साहब और उनका भाई भी हमारे साथ ही खाना खा रहे थे। उन्होंने मुझे कई बार दूसरा मीट खाने को कहा, क्योंकि वे भी शायद मुझे जाँचना चाहते थे कि मैं हिन्दुस्तानी क़ाफिर तो नहीं हूँ, लेकिन मैंने बहाना बना कर गाय का मीट नहीं खाया और दुम्बे वाले मीट की तरी से ही एक-दो रोटी दिखावे को खा ली।

इसके बाद हाजी साहब ने हमें सोने के लिए कहा और अपने घर के दो बच्चों को हमारे वाले कमरे में ही सोने के लिए कहा जिससे कि वे रात के समय हमारा ध्यान रख सकें। जब हाजी साहब और उनका भाई कमरे से चले गये तो मैंने ऐसे ही शम्भू भाई से पूछा कि अब तो हाजी साहब से यह बात करना ठीक नहीं होगा कि वे पृथ्वीराज की समाधि को खोदने के लिए रात के समय में हमारी सहायता कर दें, तो शम्भू भाई मेरी बात सुन कर बोले कि हाजी साहब से इस बारे में बात करके क्या मरना है? अभी बड़ी मुश्किल से तो मौत के मुँह से निकले हैं और आप फिर वहीं ले जाने की बात कर रहे हैं।

https://t.me/Sahityajunction

शम्भू भाई परेशानी की हालत में ही मुझसे बोले कि लगता है, आपके आगे-पीछे कोई नहीं, आप शायद मरने के लिए यहाँ आये हो, लेकिन भाई साहब मेरे तो दो छोटे बच्चे और बीवी है और बस मैं तो यह इन्तज़ार कर रहा हूँ कि यहाँ से कैसे ज़िन्दा अपने घर काबुल पहुँचे। मैंने मुस्कुराते हुए कहा चिन्ता न करो, जैसा आपको काबुल से लाया था वैसे ही वापस छोड़ूँगा।

इसके बाद थोड़ी देर इधर-उधर की बातें करके शम्भू भाई सो गये, लेकिन मुझे नींद नहीं आयी और मैं कमरे में लेटा-लेटा उस मजार को ही देखता रहा, जिसका गुम्बद इस कमरे से दिखता था और रात भर यह सोचता रहा कि पृथ्वीराज चौहान की समाधि के इतने नज़दीक होने के बाद भी मैं उनकी अस्थियाँ खोद कर नहीं निकाल पा रहा हूँ। यही सोचते-सोचते पता नहीं कब मुझे नींद आ गयी और जब मेरी आँखें खुली तो हाजी के बच्चे उठ कर जा चुके थे। मैंने शम्भू भाई को उठाया और फिर हम दोनों ही हाथ-मुँह धो कर और फ्रेश हो कर तैयार हो गये। सुबह का नाश्ता करने के बाद सुबह सात बजे मैं शम्भू और हाजी साहब पैदल ही उस अफ़सर के घर की तरफ़ चल दिये जिसको यह तय करना था कि आगे काम होगा या नहीं।

इस अफ़सर का घर देयक से 2-3 गाँव छोड़ कर एक गाँव में था। खेतों पर जिन पर बर्फ गिरी हुई थी पैदल ही क़रीब 2 घण्टे चल कर हम उस अफ़सर के गाँव में पहुँचे। गाँव के शुरुआत में ही एक बहुत बड़ा ाfकले की ि़कस्म का मकान बना था जो उस अफ़सर का था। जिस समय हम वहाँ पहुँचे तब बाहर के लोगों की वहाँ भीड़ मौजूद नहीं थी, सिर्फ उस अफ़सर के 20-25 गार्ड जिनके पास ए.के. 47 राइफ़लें थीं, मौजूद थे। वे लोग हाजी साहब को जानते थे इसलिए उन्होंने हमें एक बैठकनुमा कमरे में बैठाया और चाय वग़ैरा पिलाई। इस बैठक में 2-3 लोग और भी बैठे थे और यहाँ पर दीवार के सहारे क़रीब 30-40 ए.के. 47 राइफ़लें और रॉकेट लॉन्चर रखे हुए थे।

10-15 मिनट बाद क़रीब 45 साल का एक रोबीला-सा आदमी आया। यह वही अफ़सर था जिससे हमें मिलना था, हाजी साहब ने उसे पूरी बात बतायी तो उसने मुझसे पश्तो भाषा में पूछा जो मेरी समझ में नहीं आया, तो शम्भू भाई ने मुझे बताया कि ये पासपोर्ट के बारे में पूछ रहे हैं मैंने शम्भू भाई को कहा कि इन्हें पश्तो भाषा में बता दो कि मैं बिना पासपोर्ट के आया हूँ। उस अफ़सर ने शम्भू भाई से कहा कि तुम लोग जैसे काम करना चाहते हो, वैसे काम नहीं होगा। मैं ग़ज़नी में गवर्नर साहब से बात करूँगा और तुम्हें जितने भी पैसे मज़ार पर लगाने हैं, वे तुम हमारे पास जमा करोगे और हम तुम्हारी तरफ़ से काम करवायेंगे। मैंने कहा, ठीक है, तो वह बोला कि अभी तो यहाँ बहुत बर्फ गिर रही है, इसलिए तुम 2-3 महीने बाद पैसे ले कर आओ और तब तक हम काम के लिए गवर्नर साहब की परमिशन भी ले लेंगे। मैंने कहा—ठीक है इसके बाद उसने हमसे पूछा कि अब कहाँ जाओगे? तो हमने उसने कहा कि हम ग़ज़नी जायेंगे। उसने कहा कि ठीक है, हम तुम्हें अपनी गाड़ी में ग़ज़नी के पास तक छोड़ देंगे, हम भी वहीं जा रहे हैं।

इसके बाद हम उसके साथ चल रही उसके बॉडी गार्डों की एक पिज़ारो गाड़ी में बैठ गये और हाजी साहब बीच में अपने गाँव के पास उतर गये और हम ग़ज़नी के पास उतर गये। मैंने और शम्भू भाई ने होटल से अपना सभी सामान लिया और उसी दिन

https://t.me/Sahityajunction

वापस काबुल आ गये। मैंने शम्भू भाई से कहा कि मैं अब मन्दिर में नहीं रलूँगा, क्योंकि मैं किसी को भी बिना कारण ख़तरे में नहीं डाल सकता और मैं उसी होटल में जा कर रुक गया जहाँ और्थो और डेविड रुके हुए थे।

https://t.me/Sahityajunction

42. बाल-बाल बचे

होटल में डेविड और और्थो ने अपने ड्रग्स वाले काम के बारे में मुझसे पूछा तो मैंने कहा कि तुम्हारा काम 2-4 दिन में करवा दूँगा। उन्होंने मुझसे मेरे काम के बारे में पूछा तो मैंने कहा कि काफ़ी हो गया है, लेकिन पूरे काम में तुम लोगों की हेल्प की ज़रूरत पड़ सकती है। उन्होंने कहा कि हम तुम्हारी हेल्प कर देंगे।

अगले दिन मैं शम्भू भाई के पास मन्दिर में गया तो वे तीनों लड़के भी मुझे मिल गये जो बातों-बातों में शेख़ी मार कर मुझे डराने की कोशिश करते रहते थे। उन्होंने मुझसे पूछा कि इतने दिनों तक कहाँ थे? तो मैंने उन्हें ऐसे ही घुमाफिरा कर जवाब दे कर टाल दिया। इतने में ही शम्भू भाई भी वहाँ आ गये। शम्भू भाई और मैं मन्दिर से बाहर निकल कर आ गये और ऐसे ही सड़क पर घूम कर यहाँ-वहाँ की बातें करने लगे। शम्भू भाई ने कहा कि आपने मुझे 50 हज़ार देने का वादा किया था। मैंने कहा, वादा तो किया था, पर काम पूरा कहाँ हुआ है? वे बोले, मैं तो हर जगह आपके साथ गया। मैंने कहा, यह तो ठीक है, लेकिन जो मेन काम था, वो तो नहीं हुआ, तो वे बोले कि जब मेन काम आप देयक वाले को समझते हैं, तो हेरात से ग़यासुद्दीन ग़ोरी और कन्धार के पहाड़ों से बहाउद्दीन सोम की मज़ार से वह सामान क्यों उठा कर लाये और बेवजह ही इतना ख़तरा क्यों लिया जब उस काम की कोई अहमियत देयक की क़ब्र खोदने के सामने नहीं थी?

मैंने कहा, शम्भू भाई, बात यह है कि मेरा मक़सद सिर्फ पृथ्वीराज की उस समाधि को खोद कर उसमें से उनकी अस्थियों को निकालना है जो देयक गाँव में है। इसके अलावा जो सामान मैं हेरात और कन्धार से लाया हूँ, वह सिर्फ इसलिए लाया हूँ कि मैं दुनिया को यह दिखाना चाहता हूँ कि अगर कोई हमारे महान पूर्वज की जूते-चप्पल मार कर बेइज़्ज़ती करेगा तो हम हिन्दुस्तानी भी अगर चाहें तो उन लोगों के उन पूर्वजों की मज़ारों को तोड़ कर उनकी बेइज़्ज़तीr सकते हैं, और इसीलिए मैं वहाँ से 1-1 निशानी यह दिखाने के लिए ले कर आया कि जब हम यह निशनियाँ उन मज़ारों से उठा सकते हैं तो ऐसे ही चुपचाप अगर चाहें तो उन मज़ारों को तोड़ भी सकते हैं, लेकिन मेरी भारतीय सभ्यता ऐसी नहीं है कि हम किसी की मज़ार को तोड़ें या उन्हें किसी तरह का नुक़सान पहुँचायें। ये निशानियाँ तो उन लोगों को लिए चेतावनी है जो लोग हमारे महान सम्राट पृथ्वीराज चौहान की समाधि पर जूते-चप्पल मार कर हमारे हिन्दुस्तान की बेइज़्ज़ती करना चाहते हैं।

शम्भू भाई बोले, चलिए ठीक है, आपका मुख्य काम न सही, लेकिन कुछ काम तो मैंने आपके साथ जा कर करवाये हैं तो मैंने कहा ठीक है, मैं आपको 25 हज़ार रुपये दे देता हूँ और अगर आपको पूरे 50 हज़ार रुपये ही चाहिएँ, तो आपको देयक वाले काम में भी मेरी सहायता करनी पड़ेगी। उन्होंने कहा कि अब भी आप समझते हैं कि आपका काम देयक वाला होगा। मैंने कहा, मैं ज़रूर करूँगा, चाहे इसका परिणाम जो भी हो।

उन्होंने कहा कि आप मुझे 25 हज़ार ही दे दीजिए, क्योंकि मैं अब किसी भी हालत में आपके साथ ग़ज़नी या देयक गाँव नहीं जाऊँगा। मैंने कहा, ठीक है और उन्हें अपने होटल के कमरे में ला कर 25 हज़ार दे दिये। पैसे लेने के बाद वे मेरे बारे में और मेरे

https://t.me/Sahityajunction

परिवार के बारे में मुझसे पूछने लगे और फिर बोले कि अगर आप कहें तो आपकी शादी उन दो सुन्दर बहनों में से किसी एक से करवा दे जिन्हें आप मन्दिर में देखा करते हो। उन्होंने मुझसे यह भी कहा कि वे दोनों लड़कियाँ बहुत अच्छी हैं और अगर शादी करके भारत चली जायें तो बहुत अच्छा होगा, क्योंकि अफ़ग़ानिस्तान हिन्दुओं के लिए ठीक नहीं है।

मैंने कहा कि शम्भू भाई वह दोनों बहनें बहुत सुन्दर और अच्छी हैं, और मैं भी चाहता हूँ कि उन लड़कियों की शादी हिन्दुस्तान में ही किसी अच्छे घर में हो, क्योंकि मुझे मालूम है कि अफ़ग़ानिस्तान में जिन्दगी के मायने कम हैं; लेकिन मेरी मजबूरी है और भारत में मुझे कुछ परेशानियाँ हैं जिनके चलते मैं किसी से शादी वग़ैरा नहीं कर सकता। इसके बाद शम्भू भाई वहाँ से चले गये।

ग़ज़नी शहर में हाजी साहब के छोटे भाई की हार्ड वेयर की दुकान थी। जिस दिन शाम को मैं हाजी साहब से पृथ्वीराज चौहान की समाधि को खोदने में मदद करने के लिए बात करने गया था, उस दिन माहौल ख़राब होने के कारण रात को मैं बात नहीं कर पाया था, इसलिए मैं अगले दिन काबुल से ख़ाली हाथ ही ग़ज़नी पहुँच गया और सीधा हाजी साहब के भाई की दुकान पर गया। दुकान पर हाजी साहब का छोटा भाई मिला जिसने मुझसे कहा कि मैं अब कभी देयक गाँव न जाऊँ, क्योंकि जिस अफ़सर के पास मुझे हाजी साहब ले गये थे, उसने मुझे गाँव जाने पर पकड़ने के लिए कहा है, क्योंकि उनका मानना है कि मैं हिन्दुस्तानी जासूस हूँ। मैंने कहा कि क्या मेरी हाजी साहब से बात हो पायेगी? तो वे बोले कि हाजी साहब अब आपसे नहीं मिलेंगे और अब आप कभी ग़ज़नी भी मत आना।

जब बात ख़त्म करके मैं दुकान से बाहर आया तो मुझे देयक गाँव का वह लड़का मिला जो बहुत अच्छी उर्दू भाषा जानता था और यही लड़का हमेशा मेरी बात को पश्तो भाषा में ट्रान्सलेट करके गाँव वालों को समझाता था। मैंने इससे दुआ-सलाम करके कहा कि मुझे आपसे एक ज़रूरी बात करनी है और हम दोनों बात करने के लिए पास में ही एक रेस्टोरेण्ट में आ गये। यह क़रीब 35 साल का बहुत ही ग़रीब परिवार का लड़का था, जो काफ़ी लम्बे समय तक पाकिस्तान में मज़दूरी करता रहा था और बाद में अपने देयक गाँव में वापस आ गया था।

इस लड़के से मैंने कहा कि मेरे पास तुम्हारे लिए एक काम है जिससे तुम एक लाख अफ़ग़ानी तक कमा सकते हो। उसने कहा कि मैं एक लाख अफ़ग़ानी के लिए मैं कुछ भी करूँगा, आप मुझे काम बताइये। मैंने कहा कि काम बहुत ही आसान है, लेकिन तुम्हें मुझसे वादा करना होगा कि जो हम आपस में बातें करेंगे, उसका ज़िक्र तुम किसी से नहीं करोगे। उसने कहा, वादा है, नहीं करूँगा, आप काम बताइये। मैंने कहा कि जो तुम्हारे गाँव में ग़ोरी बाबा की मज़ार है, उसके दरवाज़े पर जो पृथ्वीराज चौहान की क़ब्र है जिस पर तुम जूते-चप्पल रखते हो और जिसकी तुम्हारे लिए कोई अहमियत नहीं है, मैं चाहता हूँ कि तुम उस क़ब्र को रात के समय खोद दो और उसके अन्दर से जो भी कंकाल मिले, वह तुम मुझे दे देना।

उसने कहा कि उस क़ाफिर की क़ब्र के नीचे तो हीरे की अँगूठियाँ और ज़ेवरात हैं और हमारे इलाक़े की मान्यता है कि इस मज़ार के कारण ही उस पूरे इलाके में कभी

https://t.me/Sahityajunction

चोरी नहीं होती है, और आप मुझे उसी को चुराने के लिए बोल रहे हैं। मैंने कहा, भाई उस क़ब्र के नीचे अगर कोई भी हीरे-जवाहरात की चीज़ मिली तो उसमें से आधी तुम रखना और आधी मैं, और अगर कुछ भी नहीं मिला तो मैं तुम्हें एक लाख सिर्फ ख़ुदाई के लिए दूँगा। उसने कहा ठीक है इसके लिए मुझे एक-दो लोगों की ज़रूरत पड़ेगी और क्या आप भी वहीं रहेंगे? मैंने कहा कि मैं तब आऊँगा जब तुम खुदाई का आधा काम कर चुके होगे, क्योंकि तब मुझे विश्वास होगा कि तुम मेरा काम कर रहे हो।

उसने कहा—ठीक है, मैं गाँव के एक-दो लोगों से, जो मेरा इस काम में साथ दे सकें, बात करता हूँ और कल ठीक दिन में 12 बजे इसी होटल पर आप मुझे मिलना और फिर हम आगे की योजना बनायेंगे। मैंने कहा ठीक है और वह लड़का वहाँ से चला गया। मैं वापस काबुल आने के लिए टैक्सी स्टैण्ड आया और शाम तक काबुल वापस आ गया। काबुल आ कर मैंने भारत अपने परिचित से फ़ोन पर पैसों के लिए बात की, क्योंकि मेरे पास पैसे कम हो गये थे और अगर उस लड़के को एक लाख देने पड़ते तो मेरे पास कुछ पैसे कम पड़ सकते थे। जिस व्यक्ति से मैंने भारत बात की उसने कहा, जहाँ आप कहेंगे, मैं भारत के उस शहर में पैसे दिलवा दूँगा।

मैंने उन्हें धन्यवाद कहा और उस भारतीय जैसलमेर रेस्टोरेण्ट में गया और वहाँ के हिन्दुस्तानी मैनेजर से मिला, जिसने मुझे पहले दिन काबुल आने पर अपने परिचित के पास कन्धार भेजा था। मुझे देख कर वे बोले कि इतने दिन कहाँ थे? मैं तो सोच रहा था कि आप वापस भारत चले गये होंगे। मैंने कहा मैं थोड़े दिन बाद वापस जाऊँगा, लेकिन अभी मुझे आपकी थोड़ी मदद चाहिये। वे बोले कि बताओ, क्या मदद चाहिए? मैंने कहा कि अगर मैं आपके किसी परिचित को हिन्दुस्तान में एक लाख रुपये अपने घरवालों से दिलवा दूँ तो क्या आप मुझे उन एक लाख रुपयों के हिसाब से यहाँ काबुल में पैसे दे सकते हो, क्योंकि मेरे पास पैसे ख़त्म हो चुके हैं और मुझे यहाँ कुछ दिन और रुकना है। वे बोले ठीक है, मैं दे दूँगा और फिर मुझे वह भारतीय पता लिखवा दिया जिस पते पर मुझे अपने परिचित से एक लाख रुपये दिलवाने थे। मैंने पता ले कर उनसे कहा कि एकदो दिन में मैं आपके बताये गये पते पर पैसे दिलवा दूँगा और फिर आप जब उनसे पूछ लेंगे तो मैं आपसे आ कर पैसे ले लूँगा। इसके बाद मैं वहीं खाना खा कर वापस अपने होटल में आ कर सो गया।

अगले दिन जब मैं सुबह ग़ज़नी जाने के लिए सो कर उठा तो देखा कि रात को बाहर बहुत बर्फ गिरी है और अभी तक मौसम साफ़ नहीं है, लेकिन मौसम ख़राब होने के बाद भी आज मुझे हर हाल में ग़ज़नी जाना ही था, क्योंकि आज मुझे देयक वाले लड़के से मिलना था और आगे की प्लानिंग अपने काम के लिए बनानी थी। मैं काबुल से ग़ज़नी के लिए टैक्सी से चला और क़रीब 11 बजे तक ग़ज़नी पहुँच गया। ग़ज़नी का मौसम भी ख़राब था और लग रहा था कि बर्फ गिर सकती है। मैं 12 बजे के क़रीब उसी होटल के गेट के पास ऐसी जगह छुप कर खड़ा हो गया जहाँ से मुझे होटल के अन्दर बाहर आने वाले लोग दिख रहे थे, लेकिन मुझे वे नहीं देख सकते थे। क़रीब 12.30 बजे वही देयक वाला लड़का होटल के गेट पर आ कर खड़ा हो गया, मैंने 5 मिनट तक उसे वहीं खड़े देखा और जब मुझे लगा कि वह अकेला ही आया है और उसने गाँव में शायद किसी को मेरे काम के बारे में नहीं बताया है, तो मैं उसके पास गया और दुआ-सलाम करके होटल के अन्दर चल कर बात करने के लिए कहा। इस पर वह लड़का बोला कि

https://t.me/Sahityajunction

होटल में कोई हमारी बातें सुन सकता है, इसलिए पास में ही पार्क है, वहाँ चल कर बातें करते हैं।

मैंने कहा ठीक है और हम दोनों पैदल बातें करते-करते पार्क की तरफ़ जाने लगे और वह बातों-बातों में मेरे से ख़ुदाई कैसे करनी है उसकी प्लानिंग पूछने लगा। मैं उसे कुछ बताता, इससे पहले ही जब हम पार्क के पास पहुँचे तो सामने से मुझे हाजी साहब जैसा आदमी आता दिखाई दिया। उस आदमी को मैंने दूर से ही देख कर साथ चल रहे लड़के से पूछा कि क्या सामने से हाजी साहब आ रहे हैं? और क्या आपने हाजी साहब को मेरे काम के बारे में बताया है? तो वह बोला नहीं, मैंने किसी को नहीं बताया और आपको ग़लतफ़हमी हो रही है कि सामने जो आदमी आ रहा है, हाजी साहब हैं।

मैं उस लड़के की बातों पर विचार कर ही रहा था कि सामने से चला आ रहा आदमी हमारे और भी नज़दीक आ गया और उसके नज़दीक आने पर मेरा सन्देह ठीक निकला, क्योंकि वह आदमी कोई और नहीं, बल्कि हाजी साहब ही थे। जब मुझे पक्का यक़ीन हो गया कि वे हाजी साहब ही हैं, तो मैंने उस लड़के से कहा कि तुमने हाजी साहब से बता दिया। वह बोला नहीं बताया और हाजी साहब अपने किसी काम से ग़ज़नी आये होंगे और इनका यहाँ आना एक इत्तफ़ाक है। इतनी देर में ही हाजी साहब एकदम पास आ गये और उनके पास आते ही मेरे साथ चल रहे लड़के ने मुझे पीछे से धक्का दे कर नीचे गिरा दिया। जब मैं नीचे ज़मीन पर गिरा तो पता नहीं कहाँ से 6-7 आदमी, जो हाजी साहब के साथ ही थे, मुझे आ कर पीटने लगे। मैंने भी जवाब में उनको मारा तो उन्होंने मुझे हाथ से पकड़ लिया और मुझसे बोले कि यहाँ पर लड़ाई नहीं करनी है और हमें सिर्फ तुमसे बात करनी है, इसलिए तुम हमारे साथ चलो और हल्ला मत मचाओ।

वे लोग पैदल ही मुझे उसी होटल के पास ले आये जहाँ मैं इस गाँव वाले लड़के से मिला था और जिसने मुझे अभी फँसवाया था। यह होटल एक चौराहे पर था। और इस चौराहे से 2-3 छोटी गलियाँ भी अन्दर को जा रही थीं। इस चौराहे के पास ला कर उन्होंने मेरी तलाशी ली और मेरी जेब से मेरा मोबाइल फ़ोन निकाल लिया। उन्होंने मुझसे कहा कि तुम्हारा वीडियो कैमरा कहाँ है जिसमें तुमने ग़ोरी बाबा के मज़ार की रिकॉर्डिंग की थी। मैंने कहा, वह तो अभी मेरे पास नहीं है और काबुल में रखा हुआ है। वे बोले कि हमें वह रिकार्डिंग वापस चाहिये जो तुमने हमारे गाँव में की थी, तो मैंने कहा कि ठीक है मैं दे दूँगा, लेकिन उसके लिए मुझे काबुल जाना पड़ेगा, और अगर आपको मेरे ऊपर विश्वास नहीं है कि मैं वापस नहीं आऊँगा, तो आप में से कोई भी मेरे साथ काबुल चल कर वह वीडियो कैसेट ले सकता है, जिसमें आपके गाँव की रिकॉर्डिंग है। उन्होंने कहा कि तुम अपने किसी परिचित से ग़ज़नी में हमें गारण्टी दिलवाओ तो हम तुम्हें काबुल वापस जा कर वह वीडियो कैसेट लाने के लिए छोड़ सकते हैं।

मैंने कहा कि मैं तो ग़ज़नी शहर में किसी को भी नहीं जानता हूँ। वे बोले की तुम हमेशा झूठ बोलते हो और जिस काम के लिए यहाँ आये थे, उसके लिए तुम अकेले नहीं आ सकते। इसलिए अपने साथियों को वह कैसेट लाने के लिए कहो। मैंने कहा कि मेरा कोई साथी नहीं है और बार-बार उनसे अपना मोबाइल फ़ोन यह कह कर वापस माँगने लगा कि इसमें मेरे बहुत ही ज़रूरी फ़ोन नम्बर हैं और अगर यह मुझे वापस नहीं मिला

https://t.me/Sahityajunction

तो मुझे बहुत परेशानी होगी। मोबाइल फ़ोन की अहमियत मैंने यह सोच कर दिखाई, क्योंकि मैं चाहता था कि वे लोग इस मोबाइल को ही मेरी गारण्टी मान कर अपने पास तब तक रख लें जब तक मैं उन्हें वीडियो कैसेट काबुल से ला कर नहीं दे देता। जब 5-6 मिनट ऐसे ही बातें करते-करते कोई हल नहीं निकला तो उनमें से 3-4 लोग बोले कि इसे देयक गाँव ले चलो वहीं इससे सभी बातें मालूम करेंगे। जबकि 3-4 लोगों का मेरे बारे में यह मत था कि मुझे ग़ज़नी की पुलिस को सौंप दिया जाये और वही मेरी असलियत पता करेगी। मैंने उनकी बातें सुन कर मन-ही-मन विचार किया कि अगर ये लोग मुझे ग़ज़नी पुलिस को दे दें तो अच्छा होगा, क्योंकि अगर ये मुझे देयक ले गये तो मेरी मौत निश्चित है, क्योंकि कभी किसी को नहीं पता चलेगा कि मैं देयक गाँव गया था।

इतने में ही दूर से नाटो सेना की 3-4 गाड़ियाँ आती दिखाई देने लगीं। नाटो सेना की गाड़ियाँ देख कर वही लड़का, जिसने मुझे फँसाया था, मुझसे बोला कि नाटो सेना की गाड़ियाँ आ रही हैं और तुम चुपचाप खड़े रहना, वरना तुम्हारे लिए ठीक नहीं होगा। मैंने कहा, ठीक है, मैं चुप ही खड़ा हूँ। नाटो के सैनिक भीड़ देख कर किसी तरह का शक न करें, इसलिए इस लड़के के अलावा सभी लोग मुझ से 15-20 क़दम दूर जा कर खड़े हो गये और इस लड़के ने सिर्फ हल्के से मेरा हाथ इस तरह पकड़ लिया जैसे दोस्तों का हाथ पकड़ते हैं।

मैंने जब देखा कि मुझे फँसाने वाले लड़के ने मेरा हाथ हल्के से पकड़ा है तो मैंने तुरन्त ही उसे धक्का दे कर भागने का विचार बना लिया और बिना कोई देर किये, मैंने उस लड़के से अपना हाथ झटका और उसे धक्का दे कर नीचे गिरा दिया और वहीं पास से ही जो पतली-सी गली जा रही थी, उसमें बहुत तेज़ी से भाग निकला। मैं काफ़ी दूर तक पैदल भागता रहा और मुड़-मुड़ कर पीछे भी देख रहा था। भाग कर मैं सीधा एक बड़ी सड़क पर आया और वहाँ खड़ी एक टैक्सी में बैठ कर उसे उस अड्डे पर चलने के लिए कहा, जहाँ से काबुल के लिए टैक्सी और बसें मिलती थीं। मेरे टैक्सी में बैठते ही बर्फ गिरने लगी और जब टैक्सी वाले ने मुझे अड्डे पर उतारा तो बर्फ और भी तेज़ी से गिरने लगीr। मैंने काबुल चलने के लिए कई टैक्सी वालों से बात की जो वहाँ खड़े थे, लेकिन मौसम ख़राब होने के कारण कोई भी टैक्सी वाला जाने को तैयार नहीं हुआ।

इस समय मैं जल्दी से काबुल जाने वाली किसी भी टैक्सी या गाड़ी में बैठना चाहता था, क्योंकि हाजी और उनके साथ वाले आदमी वहाँ भी मुझे ढूँढते-ढूँढते आ सकते थे। जब कोई टैक्सी वाला काबुल जाने के लिए तैयार नहीं हुआ तो मैंने देखा एक छोटी बस, जिसमें क़रीब 20-25 लोग बैठ सकते थे काबुल जाने के लिए एकदम तैयार थी, और उस छोटी बस में सिर्फ एक-दो सीटें ही ख़ाली बची थीं। मैं इस मिनी बस में नहीं जाना चाहता था, क्योंकि इसमें जाने में मेरे जैसे किसी भी आदमी के लिए ख़तरा हो सकता था, क्योंकि यह लोकल गाड़ी होती थी जिसमें अगल-बग़ल के गाँव वाले सफ़र करते थे, जिनमें से कई तो आतंकवादी भी हो सकते थे और यह टैक्सी से दोगुना समय भी लेती थी, क्योंकि बीच में यह बहुत रुकती-रुकती जाती थी, लेकिन कोई और रास्ता न देखते हुए मुझे मजबूरी में इसी मिनी बस में काबुल जाने के लिए बैठना पड़ा।

मैंने अपनी सीट का किराया चुपचाप गाड़ी वाले को दिया और शान्ति से अपनी सीट पर पीछे जा कर बैठ गया। मिनी बस ग़ज़नी से काबुल की तरफ़ चली तो मुझे मन-

https://t.me/Sahityajunction

ही-मन कुछ शान्ति-सी हुई और मैंने आज जीवन बचाने के लिए ऊपर वाले को धन्यवाद दिया। मेरे मन में जो शान्ति ग़ज़नी से गाड़ी निकलने पर हुई थी, वह ज़्यादा देर नहीं रह सकी, क्योंकि उस मिनी बस में क़रीब 8-10 आदमी बैठे हुए थे जो गाड़ी में ही चरस का नशा कर रहे थे और उल्टी-पुल्टी बातें सभी लोगों से कर रहे थे। मुझ से भी उन्होंने नशा करने के लिए कहा तो मैंने इशारे से ही उन्हें मना कर दिया, क्योंकि मैं किसी भी हालत में हिन्दी भाषा बोल कर उस बस में सवार लोगों को यह नहीं बताना चाहता था कि मैं अफ़ग़ानी नहीं हूँ, बल्कि एक हिन्दुस्तानी हूँ और ऐसा दिखाने में मैं काफ़ी दूर तक सफल भी रहा, लेकिन गाड़ी को चलते हुए क़रीब एक घण्टा हो गया तो मुझे बहुत तेज़ पेशाब आने लगा।

मैंने काफ़ी देर तक कण्ट्रोल किया लेकिन जब मैंने सोचा कि अब शायद मेरी पैण्ट ही गीली हो जायेगी तो मैंने गाड़ी के कण्डक्टर से हिन्दी भाषा में ही बोल कर गाड़ी रोकने के लिए कहा। जब मैं हिन्दी भाषा में बोला तो सब लोग मेरी तरफ़ आश्चर्य से देखने लगे, क्योंकि वे सभी मुझे अब तक अफ़ग़ानी ही समझ रहे थे। मेरी हिन्दी भाषा को जब कण्डक्टर नहीं समझा तो उन चरसी लड़कों में से ही एक लड़के ने उस कण्डक्टर को फ़ारसी भाषा में बताया कि मैं पेशाब करने के लिए गाड़ी रोकने को कह रहा हूँ, उसने ड्राइवर से गाड़ी रुकवायी तो मैं अकेला ही नीचे उतरा। इस समय बहुत तेज़ बर्फबारी हो रही थी और सड़क के दोनों तरफ़ काफ़ी बर्फ गिरी हुई थी। अब मेरी दूसरी मुसीबत यह थी कि मैंने टाइट पैण्ट पहनी हुई थी और इस समय मुझे नीचे बैठ कर टायलेट करना था, क्योंकि अन्दर गाड़ी से सभी मुझे देख रहे थे, अगर मैं नीचे बैठ कर पेशाब न करूँ तो वे समझ जाते कि मैं मुसलमान नहीं हूँ, क्योंकि मुस्लिम लोग बैठ कर पेशाब करते हैं। मजबूरी में मैंने अपनी टाइट पैण्ट पूरी खोली और मैं घुटनों के बल बर्फ पर बैठ गया और बर्फ के ऊपर आगे की तरफ़ पेशाब करने लगा।

जब मैं गाड़ी में वापस आ बैठा तो सभी चरसी लड़के मुझ से बातें करने लगे और बोले कि तुम तो बहुत ही छुपे रुस्तम निकले और तुमने किसी को पता ही नहीं चलने दिया कि तुम अफ़ग़ानी नहीं हो। उनसे मैंने ज़्यादा बात नहीं की तो वे मुझसे नाराज़ हो गये, लेकिन दूसरे लोगों के कहने पर चुपचाप बैठ गये। मैं मन-ही-मन सोच रहा था कि जल्दी से काबुल आ जाये, लेकिन बर्फ तेज़ी से गिरने के कारण अब सड़क पर गाड़ी नहीं चल पा रही थी, इसलिए एक जगह गाड़ी रोक दी और गाड़ी वाला गाड़ी के पहियों पर लोहे की चेन बाँधने लगा। जिससे टायर बर्फ के कारण सड़क पर न फिसलें।

लोहे की चेन पहियों पर बाँधने के कारण जब गाड़ी दोबारा चली तो गाड़ी की रफ़्तार सिर्फ 30-40 कि. मी. प्रति घण्टा की ही थी, इसलिए मैं सोचने लगा कि इस रफ़्तार से तो काबुल पहुँचने में मुझे रात के 11-12 बज जायेंगे, और फिर काबुल में भी पहुँच कर परेशानी होगी। लेकिन चाहे देर से ही सही, मैं काबुल वापस पहुँचना चाहता था, क्योंकि बीच में ऐसा कोई शहर या जगह नहीं थी, जहाँ मैं रुक सकूँ। शाम 5 बजे के क़रीब गाड़ी एक छोटे-से क़स्बे में रुकी जो सड़क पर ही ग़ज़नी-काबुल के बीच में पड़ता था। ये सभी चरसी लड़के उतर गये और मुझ से भी आज रात यहीं रुक कर अगले दिन आराम से जाने के लिए कहा, लेकिन मैंने मना कर दिया। थोड़ी देर में गाड़ी वहाँ से काबुल के लिए आगे बढ़ी।

https://t.me/Sahityajunction

रात को क़रीब 11 बजे गाड़ी काबुल पहुँची और अब मेरी परेशानी यह थी कि मुझे उस इलाक़े का नाम याद नहीं था जहाँ मेरा होटल था और टैक्सी वाले से भी मैं इस समय ज़्यादा बात करके यह नहीं दिखाना चाहता था कि मुझे काबुल के बारे में ज़्यादा नहीं मालूम। बस ने जहाँ मुझे उतारा था, वहाँ सिर्फ 34 टैक्सियाँ खड़ी थीं इनमें से एक से मैंने सीधे एक बहुत ही फ़ेमस जगह का नाम ले कर वहाँ चलने के लिए कहा, क्योंकि यह फ़ेमस जगह इस जगह से मेरे होटल के बाद में पड़ती थी और मैंने मन-ही-मन सोचा जब यह उस सड़क पर जायेगा तो मैं अपने होटल के पास उतर जाऊँगा और जैसा मैंने सोचा था, वैसे ही हुआ और मैं ठीक-ठाक अपने होटल में पहुँच गया।

इस समय पूरा काबुल शान्त था और पूरी सड़क पर कोई भी नहीं था। होटल का मेन गेट भी बन्द था। 10 मिनट चिल्लाने के बाद होटल का दरवाज़ा खुला और मैं अपने कमरे में गया। अपने बेड पर लेट कर मैं सोचने लगा कि आज के दिन को मनहूस कहूँ या लकी, क्योंकि जब से मैं अफ़ग़ानिस्तान आया था, आज के दिन ही मैंने एक साथ कई परेशानियों का सामना किया था, लेकिन ऊपर वाले ने मुझे हर परेशानी से बचा भी लिया था, और इसी का परिणाम था कि मैं इस समय सुरक्षित अपने होटल के कमरे में बेड पर लेटा था। मैंने मन-ही-मन ऊपर वाले का धन्यवाद दिया और आँखें बन्द करके सो गया।

https://t.me/Sahityajunction

43. मंज़िल की ओर

अगले दिन जब मैं सुबह को सो कर उठा तो डेविड मेरे कमरे में आया और मुझे अपने साथ अपने कमरे में और्थो के पास ले गया। डेविड और और्थो के कमरे में हमेशा बियर के बहुत सारे कैन रखे रहते थे और वे दोनों ही हर समय बियर पीते रहते थे। और इस समय भी दोनों बियर पीने लगे और अपने काम के बारे में मुझसे पूछने लगे। मैंने कहा कि एक-दो दिन में मैं तुम्हारी डिंलग करवा दूँगा। दोनों बोले, इतने दिनों से बस आश्वासन दे रहे हो, तो मैंने कहा कि तुम दोनों काबुल में इतने दिनों से रह रहे हो और अभी तक तुम ख़ुद नहीं ढूँढ पाये, इसलिए मुझे एक-दो दिन और दो, अगर एक-दो दिन में नहीं होगा तो मैं तुम्हें साफ़ मना कर दूँगा। वे मेरे काम के बारे में पूछने लगे कि तुम इतनी रात तक कहाँ अपनी जान को रिस्क में डाल कर घूमते रहते हो। मैंने कहा जब जो होना है, वही होगा, डरना किससे है।

हम बातें कर ही रहे थे कि शम्भू भाई वहाँ आ गये और मुझसे बोले कि मैं कल से आपके मोबाइल पर आपको फ़ोन कर रहा हूँ, लेकिन वह बन्द है और आप मोबाइल बन्द करके कहाँ चले गये थे? मैंने कहा, मेरा मोबाइल खो गया है और मैं तो बस यहीं काबुल में ही इधर-उधर घूम रहा था। मैंने जान-बूझ कर शम्भू भाई और इन दोनों को ग़ज़नी में अपने साथ हुई घटना के बारे में नहीं बताया, क्योंकि मुझे इनसे अभी अपने काम के लिए सहायता लेनी थी और मैं इन्हें ग़ज़नी वाली घटना बता कर डराना नहीं चाहता था। क्योंकि फिर इनमें से कोई भी मेरे साथ ज़रूरत पड़ने पर ग़ज़नी जाने के लिए तैयार नहीं होता। मैंने शम्भू भाई से आने का कारण पूछा तो वे बोले, आप अपना पासपोर्ट ले कर मुझे उस शॉपिंग कॉम्प्लेक्स से 3-4 शराब की बोतलें दिलवा दो, जिससे आपने मुझे पहले भी दिलवायी थीं।

यह जो शॉपिंग कॉम्प्लेक्स काबुल में था, सिर्फ विदेशियों के लिए ही था और सिर्फ बाहरी देश का पासपोर्ट दिखा कर ही इसके अन्दर जाकर ख़रीदारी की जा सकती थी। यह शॉपिंग कॉम्प्लेक्स नाटो सेना वालों ने अपने और विदेशी एम्बेसियों के लिए खोला हुआ था और यहाँ पर सभी विदेशी सामान मिलता था। और्थो और डेविड भी मेरे और शम्भू भाई के साथ अपने लिए बियर ख़रीदने के लिए चल दिये, क्योंकि वे भी वहाँ से ख़रीदारी करते थे।

शॉपिंग कॉम्प्लेक्स से जब हम चारों ख़रीदारी करके वापस आ रहे थे तो और्थो और डेविड ने टैक्सी पाकिस्तान ऐम्बेसी पर रुकवा ली जो रास्ते में पड़ती थी, क्योंकि उन्हें वहाँ कुछ काम था। जब तक वह काम करते तो मैं भी एक काउण्टर पर जा कर इंगलिश में बात करके उस काउण्टर वाले से पूछने लगा कि मैं भी पाकिस्तान जाना चाहता हूँ, उसके लिए मुझे क्या करना होगा? उसने मुझसे पूछा कि क्या आप पाकिस्तान में किसी को जानते हैं? तो मैंने कहा—हाँ, एक अंकल जी को जानता हूँ और उनका नाम परवेज़ अंकल बताया। उस काउण्टर वाले ने कहा कि तुम्हारे परवेज़ अंकल पाकिस्तान में किस शहर में रहते हैं, तो मैंने कहा, इस्लामाबाद में रहते हैं। उसने कहा इस्लामाबाद में कहाँ? मैंने कहा— इस्लामाबाद में राष्ट्रपति भवन में।

राष्ट्रपति भवन का नाम सुन कर वह समझ गया कि मैं उससे मज़ाक कर रहा हूँ

https://t.me/Sahityajunction

और मुझसे बोला कि कहीं तुम्हारे जानने वाले राष्ट्रपति परवेज़ मुशर्रफ़ साहब तो नहीं हैं, जिनको तुम अपना परवेज अंकल बता रहो हो। मैंने कहा, हाँ वही हैं, मैं उन्हीं को जानता हूँ तो वह बोला कि क्या वे भी आपको जानते हैं। मैं बोला, आपके फ़ॉर्म में कहीं भी ऐसा नहीं लिखा है कि जिसे हम जानते हैं, वह भी हमें जानता हो? उसने पूछा आप कौन-से देश के हो? मैंने कहा, जो आपके देश का सबसे पक्का दोस्त है। उन्होंने कहा कि उस दोस्त देश का क्या नाम है? मैंने कहा, भारत। भारत का नाम सुन कर उसने अजीब-सा मुँह बनाया और बोला भारतीयों को यहाँ से वीज़ा नहीं मिलता है, आप दिल्ली से वीज़ा लेना और वहाँ से पाकिस्तान जाना।

इतने में और्थो और डेविड बाहर आ गये और मैं और शम्भू भाई उस काउण्टर वाले से मज़े ले कर टैक्सी में आ कर बैठ गये। वापस होटल आने के बाद मैं एक एस.टी.डी. बूथ पर फ़ोन करने गया, जहाँ से सैटेलाइट फ़ोनों द्वारा फ़ोन कराये जाते थे। मुझे एस.टी.डी. बूथ पर इसलिए आना पड़ा, क्योंकि मेरा मोबाइल फ़ोन ग़ज़नी में गाँव वालों ने ले लिया था। यहाँ से मैंने अपने उस परिचित से फ़ोन पर बात की, जिसको मैंने एक लाख रुपये उस जैसलमेर होटल के मैनेजर द्वारा बताये गये पते पर देने के लिए कहा था। मेरे परिचित ने बताया कि पैसे आपके पते पर भेज दिये हैं, मैंने उनको धन्यवाद कहा और बताया कि एक हफ़्ते के अन्दर मैं अपना काम पूरा करके वापस आऊँगा।

फ़ोन पर बात पूरी करके मैं वापस होटल में अपने कमरे में आ गया, और अपने बेड पर लेट कर सोचने लगा कि अब समाधि को कैसे खोद कर निकाला जाये। जब मैं यहाँ आने से पहले तिहाड़ जेल में बन्द था तो हमेशा रात को सोते समय यह सपना देखता था कि मैं रात के अँधेरे में चोरी से पृथ्वीराज की क़ब्र को खोद रहा हूँ और वहाँ से उनकी अस्थियों को निकाल रहा हूँ। जैसी मज़ार और लोकेशन मैं तिहाड़ जेल में लेटा हुआ सोचता था, यह बिलकुल वैसी ही थी और अब क़रीब 3 महीने अफ़ग़ानिस्तान में लगातार मेहनत करने के बाद मेरे पास इसके सिवा कोई और रास्ता नहीं बचा था कि मैं रात को जा कर चोरी से उस क़ब्र को खोदूँ जिसके लिए मैं यहाँ आया था, क्योंकि मेरी अभी तक की सभी प्लानिंग, जो मैंने पृथ्वीराज की समाधि को खोदने के लिए की थी, फ़ेल हो गयी थी।

रात को देयक गाँव में जा कर वहाँ खुदाई करने के लिए मैं अपना मन बना चुका था, लेकिन इस काम के लिए मुझे एक हिम्मत वाला भरोसेमन्द साथी चाहिये था, और इस साथी की तलाश में मैं शम्भू भाई के पास शाम के समय गया। मैंने शम्भू भाई से अपनी पूरी नयी प्लिंनग देयक गाँव में जा कर चोरी से समाधि निकालने की बताई तो वे बोले कि आप बुरा मत मानना, लेकिन मैं अब आपके साथ वहाँ नहीं जा सकता और मेरी आपको भी सलाह है कि आप भी वहाँ न जाये। मैंने कहा, शम्भू भाई यह काम मेरे लिए अपने जीवन से ज़्यादा प्रिय है इसलिए मुझे तो जाना ही है। अगर आप मेरे साथ नहीं जा सकते, तो आप मुझे कोई दूसरा भरोसेमन्द आदमी दे दीजिए जो मेरे साथ वहाँ जा सके। जब मैंने शम्भू भाई के ऊपर काफ़ी दबाव दिया और कुछ पैसों का लालच भी दिया और थोड़ा धर्म का वास्ता भी दिया, तो वे बोले कि मैं आपको कल बात करके बताऊँगा।

शम्भू भाई से पूरी बात करके मैं जैसलमेर होटल पहुँचा और वहाँ पर मैनेजर को

https://t.me/Sahityajunction

बताया कि जो पता आपने दिया था, उस पते पर मैंने एक लाख रुपये दिलवा दिये हैं, और आप उस एक लाख रुपये के जितने अमरीकन डॉलर बनते हैं मुझे दे दीजिए। उन्होंने मुझसे बताया कि मैं तो कल से आपके मोबाइल फ़ोन पर सम्पर्क कर रहा था, लेकिन आपका फ़ोन बन्द था, मैंने कहा हाँ वह फ़ोन खो गया है इसके बाद उसने मुझे हिसाब लगा कर अमरिकन डॉलर दे दिये जिन्हें ले कर मैं वापस अपने होटल में आ गया। अगले दिन मैं 12 बजे दोपहर के समय शम्भू भाई के पास गया और उनसे काम के बारे में पूछा, तो वह बोले कि मैंने आपके साथ देयक गाँव जाने के लिए एक लड़का तैयार किया है, लेकिन उसे इस काम के कितने पैसे देने हैं यह आप उससे मिल कर ख़ुद तय कर लो, मैंने कहा ठीक है, आप उस लड़के को बुलाओ तो उन्होंने वहीं से आवाज़ दे कर एक आदमी को बुलाया जिसकी उम्र 40 साल के क़रीब थी और उसने अपना नाम मुझे श्याम सुन्दर बताया।

श्याम भाई से मैंने पूछा कि आपको शम्भू भाई ने काम बता दिया तो वह बोले हाँ बता दिया है, लेकिन मेरी यह शर्त होगी कि मैं किसी भी क़ब्र को खोदने में आपकी मदद नहीं करूँगा, क्योंकि मुझे क़ब्रों से डर लगता है। मैंने कहा, सारी खुदाई मैं ख़ुद करूँगा, बस आप मेरे साथ वहाँ तक चलो—क्योंकि अगर कोई बीच रास्ते में हमें मिलता है तो आप उसे अपनी पश्तो और फ़ारसी भाषा में जवाब दे कर समझा सकते हो कि हम उसी इलाक़े के लोग हैं। मैंने उनसे कहा कि आपको इस काम के कितने पैसे चाहिये, तो वे बोले आप 50 हज़ार अफ़ग़ानी दे देना। मैंने कहा ठीक है, लेकिन काम आपको मेरे कहे अनुसार करना होगा और अगर काम किसी कारणवश पूरा नहीं हुआ तो मैं आपको पैसे नहीं दूँगा। श्याम भाई बोले, ठीक है और फिर शम्भू भाई ने पैसों की गारण्टी ख़ुद ली कि काम होने के बाद श्याम उनसे पैसे ले सकता है।

हमने अगले दिन 3 बजे दिन में चलने का प्रोग्राम तय कर लिया। श्याम से अगले दिन की बात तय होने के बाद मैं शम्भू भाई को ले कर बाज़ार में आया और ख़ुदाई के लिए सभी सामान ख़रीद कर एक बैग में रख कर पैक कर दिया। अगले दिन सुबह 10 बजे के क़रीब ही मैं काबुल एयरपोर्ट पर मौजूद एयरलाइन्स के ऑफिस में गया और उन्हें बताया कि मैं 4 दिन बाद वाली आपकी फ़्लाइट में वापस दुबई जाना चाहता हूँ। उन्होंने मेरा दुबई की वापसी का टिकट देखा और मुझे बताया कि अच्छा हुआ आप आ गये, क्योंकि आज से पाँचवें दिन आपका वापसी टिकट ख़राब हो जाता, क्योंकि इसकी समय सीमा पाँचवें दिन पूरी हो जायेगी। मैंने कहा, ठीक है, चौथे दिन जाने वाली फ़्लाइट में आप मेरा नाम बुक कर लीजिए।

अपनी टिकट बुक करा कर मैं वापस होटल में आ कर अपने कमरे में यह सोच कर लेट गया कि आज पूरी रात जगना पड़ेगा। क़रीब एक बजे मैं शम्भू भाई के पास गया और उनसे श्याम भाई को बुलवाने के लिए कहा, जिससे हम अपने काम पर जा सकें शम्भू भाई ने श्याम भाई को बुलवा दिया। हम अपना सभी सामान, जो हमने बैग में पहले से पैक किया हुआ था, ले कर काबुल के उस टैक्सी स्टैण्ड पर आये जहाँ से ग़ज़नी जाने के लिए टैक्सी मिला करती थी। बीच रास्ते में ही मैंने श्याम भाई को समझाया कि आप ऐसे टैक्सी वाले को खोजियेगा जो हमें सुबह वापस काबुल भी लाये, मैंने उन्हें यह भी समझाया कि पूरे रास्ते आप मुझसे बात मत करना, क्योंकि टैक्सी वाले को पता नहीं चलना चाहिये कि मैं अफ़ग़ानी नहीं हूँ।

https://t.me/Sahityajunction

टैक्सी स्टैण्ड पर जा कर श्याम भाई ने एक ऐसे टैक्सी वाले से बात कर ली जो आने-जाने के लिए तैयार हो गया। हम दोनों टैक्सी में बैठ कर देयक गाँव की तरफ़ चल दिये और शम्भू भाई टैक्सी स्टैण्ड से वापस चले गये। जिस समय हम काबुल से चले थे तब काबुल में मौसम बिलकुल साफ़ था, लेकिन काबुल से ग़ज़नी की तरफ़ क़रीब सौ डेढ़ सौ कि. मी. आने के बाद मौसम एकदम से ख़राब दिखने लगा। इस समय बहुत तेज़ बर्फीली हवाएँ चल रहीं थीं और एकदम से आसमान में अँधेरा छा गया। मौसम का मिजाज देख कर मुझे लगा कि पता नहीं शायद हम देयक गाँव पहुँच भी पायेंगे या नहीं। मैं ऊपर वाले से मन-ही-मन प्रार्थना करने लगा कि आज मुझे मेरे काम में सफलता दे दीजिए। पूरे रास्ते मौसम ऐसे ही ख़राब बना रहा, लेकिन बर्फबारी नहीं हुई।

टैक्सी से लगातार चलने के बाद हम क़रीब 7 बजे शाम को देयक से 5/6 कि. मी. दूर एक छोटे-से क़स्बे में पहुँचे, जहाँ पर एक छोटा-सा होटल सड़क के किनारे बना हुआ था। मैंने श्याम भाई को चुपचाप कान में समझा दिया कि इस टैक्सी वाले को बता दीजिए कि कल सुबह 5-5.30 बजे यह हमें वापस काबुल छोड़ने के लिए इस होटल के बाहर से ले ले। उस टैक्सी वाले को श्याम भाई ने मेरे कहे अनुसार अगले दिन आने के लिए समझा दिया और हम इस होटल से थोड़ा आगे जा कर उतर गये, जब टैक्सी वाला चला गया तो मैंने पैदल ही देयक गाँव की तरफ़ चलने के लिए श्याम भाई से कहा, श्याम भाई मेरी बात सुन कर बोले कि मैं इस होटल में ही रुक जाता हूँ और आप अपना गाँव का काम पूरा करके वापस यहीं आ जाइएगा। मैंने कहा, श्याम भाई आपको मेरे साथ देयक गाँव में पृथ्वीराज की समाधि तक साथ चलना होगा नहीं तो आपको पैसे नहीं दूँगा। वे बोले कि मैंने तो साथ आने के लिए कहा था और मैं खुदाई नहीं करूँगा। मैंने कहा मैं आपसे खुदाई नहीं करवाऊँगा, बस आप वहाँ मेरे साथ खड़े रहना, क्योंकि यहाँ से अगर मैं अकेला पैदल जाऊँगा और बीच रास्ते में किसी ने मुझसे कुछ पूछ लिया तो मैं क्या जवाब दूँगा? मुझे तो आप लोगों की भाषा समझ में और बोलनी नहीं आती है।

मेरी बात सुन कर श्याम भाई मेरे साथ चल दिये और सड़क पर 5 कि. मी. के इस रास्ते पर हमें एक भी आदमी नहीं मिला। मैंने आसमान की ओर देखा तो मौसम अभी ख़राब ही था, लेकिन बर्फबारी अभी तक नहीं हुई थी। जब हम देयक गाँव के उस हिस्से में पहुँचे जहाँ से वह गाँव शुरू होता था, तो वहाँ पर बहुत सारे कुत्ते हमें देख कर भौंकने लगे। हमने काफ़ी कोशिश की कि वो किसी तरह भौंकना बन्द करें, क्योंकि उनके भौंकने से गाँव वाले जाग सकते थे और इस बार अगर गाँव का कोई भी आदमी मुझे देख लेता तो बिना कुछ पूछे ही मुझे जान से मार देता। कुत्तों के भौंकने के कारण हमें वापस आना पड़ा और गाँव से एक जगह बाहर आ कर जहाँ कुत्ते हम पर नहीं भौंक रहे थे, हम दोनों खड़े हो गये। श्याम भाई ने मुझसे कहा कि वह मज़ार गाँव में किस तरफ़ है?

मैंने वहीं खड़े हो कर गाँव के आख़री हिस्से में दूर दिख रही गुम्बद और मीनार दिखा कर बताया कि हमें उस गुम्बद तक जाना है। मैंने श्याम भाई से कहा कि गाँव के अन्दर वाले रास्ते से हम कुत्तों के भौंकने के कारण नहीं जा सकते, इसलिए हमें गाँव के चारों तरफ़ पड़े ख़ाली खेतों पर चल कर गाँवों के पीछे की तरफ़ जाना होगा और वहाँ पीछे से उस गुम्बद के पास आ जायेंगे। इससे हमें गाँव के अन्दर नहीं जाना पड़ेगा और

https://t.me/Sahityajunction

हम आसानी से बिना कुत्तों के सामने पड़े वहाँ पहुँच जायेंगे। ऐसा सोच कर मैं और श्याम भाई खेतों से हो कर चलने लगे। यहाँ चलने में बहुत परेशानी हो रही थी, क्योंकि खेतों में क़रीब घुटनों-घुटनों तक बर्फ गिरी हुई थी और हम जहाँ भी पैर रखते, हमारा पाँव बर्फ में धँस जाता था, जिस कारण हम तेज़ी से नहीं चल पा रहे थे।

काफ़ी देर तक चलने के बाद मुझे लगा कि हम गाँव के आख़री हिस्से के बाहर वाले खेत में आ गये हैं, इसलिए हमने गाँव की तरफ़ अन्दर घुसना शुरू किया, लेकिन जब हम एक मकान के पास पहुँचे तो उस मकान से भी कुत्ते भौंकने लगे और दूर से उन कुत्तों की आवाज़ सुन कर और भी कुत्ते हमारी तरफ़ भौंकते हुए आने लगे, जिसके कारण हमें दोबारा खेतों की तरफ़ आना पड़ा। खेतों में दोबारा आने पर मैंने श्याम भाई से कहा कि शायद अभी गाँव ख़त्म नहीं हुआ है, इसलिए हमें खेतों में ही थोड़ा और आगे की तरफ़ चलना चाहिये, जिससे कि हम गाँव के पीछे मज़ार के पास पहुँच सकें।

हम बर्फ भरे खेतों ही खेतों में फिर पैदल चलने लगे और फिर गाँव की तरफ़ मुड़ कर अन्दर की तरफ़ चलने लगे, लेकिन इस बार जहाँ हम पहुँचे, वहाँ कुत्ते तो नहीं आये, लेकिन मज़ार भी दिखाई नहीं दी, जहाँ हम खड़े थे, वहाँ पीछे से हम फिर से गाँव में अन्दर घुसने लगे, तो थोड़ी दूर चलने पर फिर से मकान दिखने लगे, लेकिन मज़ार का गुम्बद और मीनार दिखाई नहीं दी। इधर-उधर घूम कर काफ़ी देर हमने उस मज़ार के गुम्बद को खोजने की कोशिश की, लेकिन हमें दिखाई नहीं। थोड़ी देर में इधर भी कुत्ते भौंकते हुए आने लगे तो श्याम भाई ने मुझे खेतों की तरफ़ पकड़ कर ले आये। गाँव से बाहर खेतों में आने पर मैंने श्याम भाई से कहा कि भैया, वापस वहीं गाँव की शुरुआत में ही चलते हैं, जहाँ से मज़ार का गुम्बद और मीनार दिखाई दे रही थी। इस बार गुम्बद को ठीक से देखते हुए आयेंगे। श्याम भाई ने कहा ठीक है और हम फिर बर्फ में बड़ी कठिनाई से चलते हुए बड़ी मुश्किल से उसी जगह पर पहुँचे जहाँ से गाँव शुरू होता था।

यहाँ खड़े हो कर जब हमने गाँव की तरफ़ देखा तो मज़ार का गुम्बद साफ़-साफ़ दिख रहा था। मैंने जब दोबारा मज़ार की तरफ़ चलने के लिए कहा तो एकदम से ख़ूब तेज़ बर्फ गिरने लगी। श्याम भाई ने मुझसे कहा कि अब दोबारा उधर जाना ठीक नहीं है, क्योंकि बर्फ गिरनी शुरू हो गयी है और उधर मज़ार की तरफ़ जाने में और भी परेशानी होगी और उन्होंने अपने हाथ में बँधी घड़ी की तरफ़ देख कर कहा कि इस समय एक बज रहा है और हमें एक घण्टा उधर मज़ार की तरफ़ जाने में लगेगा और आप खुदाई नहीं कर पाओगे, क्योंकि गाँव वाले सुबह चार बजे ही जाग जायेंगे। मैंने कहा, चाहे कुछ भी हो, आप बस एक बार और मेरे साथ उस मज़ार की तरफ़ चलिए, मैं फटाफट अपना काम खोद कर पूरा कर लूँगा, लेकिन उन्होंने दोबारा जाने से साफ़ मना कर दिया। मैं अकेला उधर नहीं जा सकता था, और जब मुझे लगा कि इतनी नज़दीक खड़े हो कर भी जहाँ से मंज़िल साफ़ दिख रही है, काम में सफलता नहीं मिलेगी तो मेरी आँखें में आँसू आ गये और मैं मज़ार की तरफ़ देख कर जोर-जोर से रोने लगा। मुझे वहीं अकेला खड़ा छोड़ कर श्याम भाई वापस उधर की तरफ़ जाने लगे जिस रास्ते से हम यहाँ आये थे।

जब वे काफ़ी दूर चले गये तो मैं रोते-रोते ही वापसी वाले रास्ते पर श्याम भाई के पीछे चलने लगा, क्योंकि इस मौसम में और इन हालात में मज़ार पर अकेले जा कर खुदाई करना मेरे लिए मुमकिन नहीं था। मुझे पीछे आता देखा श्याम भाई रुक गये और

https://t.me/Sahityajunction

जब मैं उनके पास पहुँचा तो मैंने उन्हें एक बार फिर चलने के लिए प्रार्थना की, लेकिन उन्होंने मना कर दिया, और बोले कि आज काम नहीं होगा और हम 2-3 दिन बाद दोबारा आ जायेंगे। मैंने कहा कि क्या आप मेरे साथ कल दोबारा यहाँ आयेंगे तो वे बोले कि मैं पक्का आऊँगा, लेकिन अभी आप यहाँ से चलिए।

मैं भारी मन से उनके साथ-साथ वापस उस होटल की तरफ़ चलने लगा जिस होटल के बाहर हमें सुबह टैक्सी वाले को मिलना था। जब हम गाँव से क़रीब 2-3 कि. मी. वापसी में दूर आ गये तो एक जगह पत्थरों पर बैठ गये और सुस्ताने लगे, क्योंकि लगातार इतनी देर से पैदल चलने के कारण बहुत थक गये थे। मैंने बैग से बादाम निकाले। और हम दोनों बैठ कर बादाम खाने लगे। हमने अपने जूते भी खोल कर उनमें से बर्फ बाहर निकाली जो पैदल चलने से घुस गयी थी और अपनी जुराबें भी उतार दीं, क्योंकि वे पूरी गीली हो गयी थी। क़रीब आधा घण्टा वहीं खुले आकाश के नीचे बठ कर सुस्ताने के बाद हम दोबारा होटल की तरफ़ चल दिये, बर्फ गिरनी भी अब बन्द हो गयी थी।

सुबह चार बजे के क़रीब हम उस होटल के बाहर पहुँचे और श्याम भाई ने उस होटल का दरवाज़ा खटखटाया और थोड़ा आराम करने के लिए उस आदमी से जगह माँगी दरवाज़ा खटखटाने पर बाहर आया था। उसने अपनी भाषा में ही कहा कि जगह तो है, लेकिन ओढ़ने के लिए कोई कपड़ा नहीं है, श्याम भाई ने कहा कि किसी कपड़े की ज़रूरत नहीं, बस आप हमें होटल के अन्दर थोड़ी देर बैठने दीजिए। जब हम अन्दर गये तो 3-4 लोग वहाँ सो रहे थे। हम नीचे फ़र्श पर जूते उतार कर लेट गये। कमरा एकदम गर्म था, इसलिए हमारे शरीर को काफ़ी आराम मिला।

ज़मीन पर लेटे-लेटे ही मुझे देयक गाँव के लोगों की बात याद आने लगी कि इस मज़ार के कारण हमारे इलाके में कभी चोरी नहीं होती है और मैं आज अपने साथ घटे पूरे घटनाक्रम को याद करने लगा कि कैसे और क्यों मुझे वह मज़ार उसके इतनी नज़दीक पहुँचने के बाद भी दिखाई नहीं दी और कैसे गाँव के बाहर आते ही दूर से मज़ार का गुम्बद दिखाई देता था। यही सब सोच कर मुझे लगा जैसे उस जगह में कोई शक्ति हो कि मेरे इतना नज़दीक पहुँचने के बाद भी पृथ्वीराज चौहान की समाधि तक मैं नहीं पहुँच पाया। यही सब मैं सोच रहा था कि सब लोग जो वहाँ सो रहे थे, उठ गये और मुझे जगता हुआ देख कर फ़ारसी में मुझसे कुछ बोले जिसका मैंने कोई जवाब नहीं दिया और हाथ से धक्का दे कर तुरन्त श्याम भाई को जगाया, क्योंकि उनकी आँख लग गयी थी। वह आदमी फिर हमारी तरफ़ देख कर कुछ बोला, तो श्याम ने उसे अपनी भाषा में मेरे बारे में बताया कि यह गूँगा है और बोल नहीं सकता है और हमारे कपड़े बहुत गन्दे हो गये है। इसलिए हम इस समय नमाज़ नहीं पढ़ सकते हैं।

5.30 बजे के क़रीब हम दोनों होटल के बाहर गेट पर खड़े हो गये,क्योंकि हमारा टैक्सी वाला अब कभी वहाँ आ सकता था। ठीक 5.30 बजे अपने वादे के अनुसार वह टैक्सी वाला होटल के गेट पर आ गया। हम फटाफट टैक्सी में बैठे और काबुल की तरफ़ चलने लगे। सुबह 11 बजे के क़रीब हम काबुल पहुँच गये और काबुल पहुँच कर मैं सीधे अपने होटल चला गया और श्याम भाई शम्भू भाई के पास चले गये। 3-4 घण्टे आराम करने के बाद मैं सीधा शम्भू भाई के पास पहुँच गया और उनसे रात को देयक

https://t.me/Sahityajunction

गाँव में हमारे साथ हुई घटना को बताने लगा, लेकिन उन्होंने बीच में ही मुझे रोक दिया और बोले कि श्याम भाई ने मुझे सब बता दिया है और मुझसे बहुत नाराज़ है, क्योंकि वह कह रहा है कि यह जानते हुए भी कि वह इलाक़ा तालिबानियों का है, मैंने उसे वहाँ मरने के लिए भेज दिया।

मैंने शम्भू भाई की बात सुन कर कहा कि भैया, आप कैसी बात कर रहे हैं। श्याम भाई तो वहाँ आज रात फिर मेरे साथ वहाँ जाने के लिए मुझसे कह रहे थे और इसीलिए मैं प्रोग्राम बनाने आया हूँ, क्योंकि मैं आज रात को ही पूरा काम करके वापस भारत जाना चाहता हूँ। शम्भू भाई ने श्याम भाई को अपने पास वहीं बुलवा लिया, जिससे कि मैं ख़ुद उनसे बात कर सकूँ। श्याम भाई जब हमारे पास आये तो मैंने उनसे फिर आज या कल रात फिर से देयक गाँव चलने के लिए कहा तो वे बोले कि भाई मुझे तो शम्भू ने ग़लत जानकारी दे कर आपके साथ भेज दिया था और अगर मुझे पहले पता होता कि आपका काम इतना ख़तरनाक है तो मैं कभी 50 हज़ार के लिए वहाँ नहीं जाता। मैंने कहा कि अगर 50 हज़ार कम है तो एक लाख ले लो, लेकिन कल ही आप मेरे साथ चल कर यह काम पूरा करवा दीजिए

।

एक लाख की बात सुन कर श्याम भाई बोला कि आप एक लाख तो क्या, अगर एक करोड़ भी देंगे तो मैं क्या, जिसको भी उस इलाक़े का माहौल पता है, वह कभी उधर नहीं जायेगा, क्योंकि वहाँ पकड़े जाने का मतलब सिर्फ मौत है और मरने के बाद एक लाख या एक करोड़ का क्या करूँगा? मैंने कहा कि मैं भी तो आपके साथ जाता हूँ तो वे बोले कि आप तो लगता है भारत से अफ़ग़ानिस्तान मरने के लिए आये हैं, लेकिन ज़रूरी नहीं हर आदमी आपकी तरह जल्दी मरना चाहता हो? श्याम भाई ने अपने काम के 50 हज़ार अफ़ग़ानी मुझसे माँगे तो मैंने कहा कि काम तो कुछ हुआ ही नहीं और मैंने उन्हें याद दिलाया कि मैं कैसे रोरो कर रात को उनसे प्रार्थना कर रहा था कि एक बार फिर से दोबारा मज़ार की तरफ़ चलिए, लेकिन वे मेरी बात नहीं माने और मुझे वहीं अकेला छोड़ कर जाने लगे। मैंने कहा, अगर आप तब मेरी बात मान लेते तो मेरा काम पूरा हो जाता और मैं आपको 50 हज़ार दे देता।

काफ़ी देर तक पैसों की बात पर बहस होने के बाद मैंने श्याम भाई को 25 हज़ार अफ़ग़ानी यह सोच कर दिये कि वे मेरे साथ ख़तरा मोल ले कर गये तो थे ही। 25 हज़ार अफ़ग़ानी ले कर श्याम वहाँ से चले गये, तो मैंने शम्भू भाई से किसी दूसरे आदमी का इन्तज़ाम करने के लिए कहा जो मेरे साथ देयक जा सके। मैंने उन्हें यह भी बताया कि दो दिन बाद मैंने दुबई जाने के लिए टिकट बुक करा ली है और हर हाल में इन दो दिनों के अन्दर मुझे अपना काम करना है। मेरी बात सुन कर वे तभी मेरे साथ बाहर सड़क पर आये और एक लगभग 30 साल की उम्र के आदमी से मेरे काम के बारे में बातें करने लगे।

यह लड़का बाहर सड़क पर ड्राई फ़्रूट की दुकान लगाता था और मैं भी इसे पहले से जानता था, क्योंकि शम्भू भाई और मैं अधिकतर इसी दुकान पर आ कर मिलते थे। शम्भू भाई इस लड़के की और इसके क़बीले की बहादुरी की हमेशा बड़ी तारीफें मुझसे करते थे और बताते थे कि यह मसूद ग्रुप के पंजशेर क़बीले के लोग हैं और इन्होंने ही

https://t.me/Sahityajunction

हमेशा तालिबानियों से लड़ाई में टक्कर ली है, और इन्हीं के मसूद ग्रुप के कारण तालिबानी कभी ग़ज़नी से आगे नहीं बढ़ पाये और काबुल पर क़ब्ज़ा नहीं कर पाये। इस लड़के से शम्भू भाई ने बात की और मेरे कहे अनुसार उसे एक लाख अफ़ग़ानी का लालच भी दिया, तो उसने अगले दिन सुबह जवाब देने के लिए कहा कि मेरे साथ जायेगा या नहीं।

मैं वापस शम्भू भाई के साथ मन्दिर वाले उन तीनों लड़कों के पास आया जो हमेशा अपनी बहादुरी की डींगें मार-मार कर मुझे डराने की कोशिश करते रहते थे। मैंने उनसे अपने काम के बारे में बताया और उन्हें इस बात का वास्ता भी दिया कि आप लोग तो कई साल से भारत में रहे हो और मेरा यह काम तो पूरे भारत की इज़्ज़त से जुड़ा है, इसलिए आप में से कोई भी मेरे साथ चल कर मेरा काम पूरा करवा दीजिए। और जो मेरे साथ जायेगा, मैं उसे अभी तो एक लाख दूँगा ही जब तुम भारत वापस आओगे तो अच्छे से तुम सभी को कोई बढ़िया काम-धन्धा भी करवा दूँगा।

तीनों में जो दो सगे भाई थे, बोले कि हम में से कोई अकेला नहीं जायेगा, अगर तुम कहो तो हम तीनों या दोनों भाई तुम्हारे साथ चलेंगे। मैंने कहा, ठीक है, तीनों चलो तब तो काम और भी जल्दी होगा, तो उन्होंने कहा कि ठीक है, कल हम तीनों तुम्हारे साथ चलेंगे। इन तीनों से बात करके मैंने शम्भू भाई को वहीं छोड़ दिया और वापस अपने होटल आ गया।

पता नहीं क्यों मेरा मन और दिमाग़ बोल रहे थे कि जिनसे भी मैं कल अपने साथ देयक चलने की बात करके आया हूँ, वे मेरे साथ नहीं जायेंगे, क्योंकि वे लोग मुझे इतने बहादुर नहीं लग रहे थे, जितनी बहादुरी कम-से-कम वहाँ जाने के लिए चाहिये थी। इसलिए मैंने डेविड और और्थो से अपने काम के बारे में बात करने की सोची, क्योंकि ये दोनों ही बहादुर थे और जो लोग इतनी दूर से अफ़ग़ानिस्तान आ सकते थे, वे मेरे साथ भी जा सकते थे, बस सवाल यह था कि उन्हें काम में कोई फ़ायदा दिखना चाहिये और उनका भी उसमें कोई इण्टरेस्ट होना चाहिये। यही सब बातें अपने दिमाग़ में विचार करके मैं डेविड और और्थो का इन्तज़ार करने लगा, क्योंकि दोनों इस समय अपने कमरे में मौजूद नहीं थे।

शाम को 7 बजे के क़रीब वे दोनों वापस अपने होटल के कमरे में आये तो मैं अपने कमरे से उठ कर इनके पास गया और इन्हें बताया कि दोस्तों, मैं तुम्हारा काफ़ी देर से इन्तज़ार कर रहा था, क्योंकि मैंने तुम्हारा काम करवा दिया है। वे बोले कैसे? तो मैंने उन्हें अफ़ज़ल भाई का दिया वह मोबाइल नं. दिया जिस पर बात करने से उन्हें काबुल में ही कन्धार के रेट पर जितनी ड्रग्स वे चाहते, मिल सकती थी। और्थो ने अपने मोबाइल से उस नम्बर पर फ़ोन किया तो उसकी बात हो गयी और फ़ोन पर बात करने वाले ने दो दिन बाद आमने-सामने मिल कर बात करने के लिए कहा जिससे कि वे ड्रग्स की क्वालिटी और उसके रेट तय कर सके।

दोनों मुझसे बहुत ख़ुश हुए और मुझे धन्यवाद देने लगे। काफ़ी देर इधर-उधर की बातें करने के बाद मैं वापस अपने कमरे में आ गया। और अभी मैंने इनसे अपने काम के बारे में कोई बात नहीं की। अगले दिन सुबह मैं फिर शम्भू भाई को साथ ले कर उस दुकान वाले के पास गया तो उसने मेरे साथ देयक के इलाक़े में जाने से यह कह कर

https://t.me/Sahityajunction

मना कर दिया कि वो इलाक़ा हमारे दुश्मन तालिबानियों का है। काफ़ी ज़ोर और लालच देने के बाद भी वह मेरे साथ जाने के लिए तैयार नहीं हुआ। जब इस दुकान वाले लड़के से बात नहीं बनी तो शम्भू भाई को ले कर मैं उन तीनों लड़कों के पास गया और शाम को देयक चलने के लिए कहा, लेकिन उन्होंने भी बहाने बनाने शुरू कर दिये और जब मुझे पक्का यक़ीन हो गया कि इन तीनों में से कोई नहीं जायेगा, तो बस मैं इनको यह कह कर वापस आ गया कि कृपा करके आगे से अपनी बहादुरी की डींगे किसी के सामने मत मारना।

https://t.me/Sahityajunction

44. अन्त में सफलता

मैं शम्भू भाई को वहीं छोड़ कर वापस होटल में आया और सीधा डेविड और और्थो के पास गया और उनसे पूरी बात बतायी और अपने साथ चलने के लिए कहा। मैंने उन्हें इशारों-ही-इशारों में यह भी समझा दिया कि अगर मेरा काम नहीं हुआ तो मैं भी उनका ड्रग्स वाला काम, जो मेरे द्वारा होना था, नहीं करूँगा। दोस्ती का भी वास्ता मैंने उन दोनों को दिया। बिना ज़्यादा नखरे दिखाये दोनों तैयार हो गये। मैंने कहा दोनों के चलने की ज़रूरत नहीं है, सिर्फ डेविड मेरे साथ चले, क्योंकि और्थो को कोई भी देख कर जान जायेगा कि यह विदेशी है, जबकि डेविड गोरा अंग्रेज़ लड़का था और अगर पठानों के कपड़े सलवार-कमीज़ पहन लेता तो कोई भी उसे अफ़ग़ानी ही समझता। मैंने और्थो को कन्धार वाली बातें भी याद दिलवायीं जब वह मेरे साथ कन्धार गया था और उसके नीग्रो होने के कारण सभी लोग उसके पीछे पड़ गये थे और उसको अगले ही दिन वापस काबुल आना पड़ा था।

जब डेविड मेरे साथ अकेला चलने के लिए तैयार हो गया तो मैं उस परिचित टैक्सी वाले के पास बात करने गया। जो हमें काबुल से देयक छोड़ देता और अगले दिन सुबह वापस काबुल ले आता। इस टैक्सी वाले से मैंने यही सोच कर अच्छी जान-पहचान की हुई थी कि कभी इसकी भी ज़रूरत पड़ सकती है, इसलिए जब भी मुझे काबुल में टैक्सी की ज़रूरत पड़ती थी मैं इसे ही बुलवा लेता था। यह टैक्सी वाला हिन्दी भी समझता और बोलता था और भारतीय लोगों के लिए एक अच्छी फ़िलिंग भी रखता था। मैंने टैक्सी वाले को पूरी बात नहीं बतायी, बस इतना बताया कि हमें ग़ज़नी के पास अपने परिचित एक आदमी से मिलना है और अगले दिन वापस सुबह काबुल आना है। टैक्सी वाले को तैयार करके मैं वापस होटल में आ गया और और्थो डेविड से उनके और अपने काम के बारे में बातें करने लगा।

अगले दिन सुबह ही मैंने एक बैग में खुदाई का सामान, एक तिरंगा झण्डा और कुछ खाने-पीने की चीजें रख कर पैक कर दिया और अपना दूसरा सभी सामान भी पैक कर दिया, क्योंकि देयक से काम पूरा करके मुझे उसी दिन दो बजे की फ़्लाईट से वापस दुबई जाना था। मैंने डेविड को एक पठानी सूट पहनने के लिए अपने पास से दे दिया, जो मैंने उसके लिए सिलवाया था, जिससे कि डेविड अफ़ग़ानी आदमी लगे। इस बार टैक्सी में जाते समय डेविड को गूँगा बने रहना था जैसे मैं श्याम भाई के साथ जाते समय बन गया था, टैक्सी वाला मेरा परिचित था, इसलिए मेरे बोलने पर इस बार कोई पाबन्दी नहीं थी।

पिछले तजुर्बे से मैंने बहुत कुछ सीखा था, इसलिए इस बार मैंने टैक्सी वाले को जल्दी जाने के लिए बुला लिया था, जिससे कि हम देयक गाँव के पास ऐसे समय पर पहुँचें कि बस तभी ताज़ा-ताज़ा अँधेरा हुआ हो। डेविड को मैंने सब समझा दिया और हम अपना और कैमरे वाला बैग ले कर देयक जाने के लिए अपने परिचित की टैक्सी में बैठ गये, जो हमें लेने के लिए होटल में में आ गयी थी। आज मौसम बिलकुल साफ़ था और जब हम देयक के पास उस होटल के सामने पहुँचे, जहाँ मैंने पिछली बार टैक्सी वाले को बुलाया था, तो मैंने इस बार भी टैक्सी वाले को सुबह 5.30 बजे वहीं आने के

https://t.me/Sahityajunction

लिए कहा और उस होटल से थोड़ा आगे हमें छोड़ कर वह टैक्सी वाला ग़ज़नी वापस चला गया, जहाँ रात को उसे रुकना था और सुबह 5.30 बजे वहाँ से हमें लेने आना था।

डेविड के चेहरे पर मैंने देखा तो कोई डर नहीं था और वह मेरी सोच से ज़्यादा बहादुर था। डेविड ने एक बैग ख़ुद उठा लिया और दूसरा मैंने, जबकि श्याम भाई के साथ जब मैं आया था तो दोनों बैग मुझे ही उठाने पड़े थे। इस बार जब हम गाँव के शुरुआती भाग में पहुँचे तो वहाँ कुत्ते नहीं थे, क्योंकि अभी सिर्फ शाम के क़रीब सात ही बजे थे और गाँव वाले जगे हुए ही थे, लेकिन हम दोनों ने अपने चेहरे पूरी तरह गर्म लोई से ढँके हुए थे और सिर्फ हमारी आँखें ही दिख रही थीं। इस बार मैं सोच कर आया था तो आज काम पूरा होगा या मेरी क़ब्र भी वहीं पृथ्वीराज की समाधि के पास बनेगी, इसलिए मैं सीधा गाँव के मुख्य रास्ते से ही अन्दर घुसने लगा, क्योंकि किसी दूसरे रास्ते से जाने में हो सकता था, पिछली बार की तरह इस बार भी हम मज़ार ढूँढ पाते।

आधे रास्ते तक हमें कोई भी आदमी बीच में नहीं मिला, लेकिन जब हम एक घर के बग़ल से निकले तो वहाँ से 2-3 आदमियों की आवाज़ें आयी जो बातें करते हुए घर से बाहर आ रहे थे। मैंने डेविड का हाथ पकड़ा और हम चुपचाप एक दूसरे मकान की दीवार से सट कर खड़े हो गये जिससे कि वे लोग हमें न देख सकें। जब वह 2-3 आदमी वहाँ से चले गये तो डेविड ने मुझ से कहा कि अब किधर जाना है। इतने में ही वहाँ पर दो-एक कुत्ते आ कर हमारी तरफ़ भौंकने लगे। इस छुपने के चक्कर में मैं थोड़ा कन्फ़्यूज़ हो गया और रास्ता थोड़ा भटक गया, डेविड बार-बार मुझसे चलने के लिए कहने लगा तो अन्दाज़े से मैं उसे एक रास्ते पर ले गया, थोड़ी दूर जब हम चले तो कुत्तों ने भौंकना बन्द कर दिया, लेकिन मुझे लगा कि हम शायद ग़लत रास्ते पर आ गये है, लेकिन फिर भी हम चलते रहे, लेकिन जब हम थोड़ी दूर और आये तो सामने मुझे मज़ार का गुम्बद दिखाई दिया, जिसे देख कर मैं ख़ुश हो गया और डेविड को बताया कि हमें सामने जाना है।

आज जिस रास्ते से हम गये, उसके बीच में हाजी साहब का घर भी पड़ा, लेकिन हमें किसी ने नहीं देखा। हम मज़ार के बिलकुल पास में जब पहुँच गये तो मैंने डेविड से कहा कि हमें अभी खुदाई का काम शुरू नहीं करना है, क्योंकि अभी गाँव वाले जग रहे हैं, अभी हम लोग मज़ार के पास एक खेत में छिपेंगे और थोड़ी बाद में खुदाई करेंगे। खेतों में अबी भी थोड़ी-थोड़ी बर्फ गिरी हुई थी, लेकिन हम वही मुँडेर पर छिप कर बैठ गये। डेविड एक नम्बर का चरसी था और वह समय बिताने के लिए अपनी चरस भरी हुई सिगरेट जलाने लगा। मैंने उससे कहा कि सिगरेट की आग बहुत दूर से इस अँधेरे में दिख सकती है, लेकिन वह बोला कि चिन्ता मत करो, मैं ऐसे सिगरेट पीऊँगा कि तुम्हें भी रोशनी नहीं दिखेगी। वह सिगरेट जला कर मुझ से बोला कि यह मेरे शरीर के लिए एक टॉनिक की तरह है और अभी तुम्हारे साथ खुदाई करनी है, इसलिए ताक़त के लिए इसे पी रहा हूँ। मैं भी साथ लाये खाने-पीने का सामान निकाल कर खाने लगा और डेविड को भी खाने के लिए दिया।

रात के क़रीब 10 बजे तक हम ऐसे ही चुपचाप खेतों में छिपे रहे और जब हमें लगा कि पूरा गाँव सो गया है, तो हमने अपने बैग उठाये और फटाफट मज़ार पर आ गये। मज़ार के चबूतरे पर खड़े हो कर मैंने गाँव की तरफ़ देखा तो पूरा गाँव सुनसान था और

https://t.me/Sahityajunction

कोई भी नहीं दिख रहा था। मैंने खोदने के लिए लाया बेलचा बैग से निकाल कर पृथ्वीराज चौहान की समाधि को पैरों की तरफ़ से खोदना शुरू कर दिया, जिससे कि पैरों की तरफ़ उनकी समाधि पर लगा एक कीमती पत्थर मैं निकाल सकूँ। मैंने खोद कर वह पत्थर उठाया और उसी ख़ाली बैग में डाल लिया जिसमें हम खुदाई का सामान लाये थे। इसके बाद मैं खुदाई करता रहा और मैंने डेविड से दूसरे बैग से हैण्डी कैम निकाल कर खुदाई के समय मेरी वीडियोग्राफी करने के लिए कहा, क्योंकि मैं अपने पास इस रिकार्डिंग को सबूत के तौर पर रखना चाहता था, क्योंकि दुनिया में ऐसे लोगों की कमी नहीं है, जिनका काम सिर्फ दूसरों के कामों में कमियाँ निकालने का होता है और ऐसे लोग बिना वीडियोग्राफ़ी के मेरी बात पर यक़ीन न करते कि मैंने पृथ्वीराज चौहान की समाधि को इतने मुश्किल हालात में खोदा है।

मैंने डेविड को भी अपने साथ खोदने के लिए कहा और डेविड भी जल्दीजल्दी खोदने लगा, डेविड को खुदाई करते हुए छोड़ कर मैंने साथ लाये हथौड़े से मज़ार के दरवाज़े पर लगा ताला तोड़ दिया, जिसके अन्दर मुहम्मद ग़ोरी की क़ब्र थी। मज़ार के अन्दर से मैंने फटाफट वे जूतियाँ उठा लीं जो उन्होंने पृथ्वीराज की समाधि पर मारने के लिए रखी हुई थीं। काफ़ी देर खुदाई करने के बाद डेविड मेरे पास आया और मुझसे हथौड़ा ले कर मुहम्मद ग़ोरी की क़ब्र को तोड़ने के लिए उस पर मारने की कोशिश करने लगा, लेकिन मैंने उसे ऐसा करने के लिए मना कर दिया और उसे समझाया कि हमारा मक़सद इसे तोड़ना नहीं है, बल्कि हमारा मक़सद सिर्फ अपने भारतीय पूर्वज की क़ब्र को खोद कर वहाँ से उनकी अस्थियाँ निकालना है। मैंने कहा कि वैसे भी किसी मरे हुए की क़ब्र को तोड़ कर उसका अपमान करना हमारी भारतीय सभ्यता नहीं है।

मेरी बात सुन कर डेविड तालिबानियों को गालियाँ देने लगा और कहने लगा कि ये लोग भी तो जूते-चप्पल मार कर तुम्हारे पूर्वज राजा को बेइज़्ज़त करते हैं और तुम क्यों नहीं इसका बदला लेने के लिए इस क़ब्र को तोड़ देते जिसको ये लोग इज़्ज़त देते हैं। मैंने कहा कि भाई, मैं भी मुहम्मद ग़ोरी की क़ब्र को इज़्ज़त देता हूँ, क्योंकि भले ही इन्होंने हमारे देश पर हमला किया हो, लेकिन ये भी एक बहादुर इन्सान थे, और हमारा मक़सद किसी को बेइज़्ज़त करना नहीं, बल्कि उस काम को ख़त्म करना है जिससे हमारी और हमारे देश की बेइज़्ज़त हो रही थी और इसीलिए मैंने पृथ्वीराज की समाधि को खोदा क्योंकि मैंने सुना है कि किसी भी क़ब्र को एक बार खोदने से उसकी शक्ति ख़त्म हो जाती है और इसे भी खोदने से इसकी भी ताक़त ख़त्म हो जायेगी और जो कष्ट जूते-चप्पल के कारण पृथ्वीराज की समाधि को हो रहा था वह भी ख़ुदाई होने के बाद ख़त्म हो जायेगा।

मेरी बातें सुन कर डेविड फिर से मुसलमानों और तालिबानियों को गालियाँ देने लगा और फटाफट मेरे कहे अनुसार पृथ्वीराज चौहान की और उसके बग़ल में मिट्टी की दूसरी बनी क़ब्र को, जो शायद कवि चन्दबरदाई की हो सकती थी, खोदने लगा। प्लास्टिक का एक छोटा स्टूल भी हमारे पास था और जब ख़ुदाई करने से क़ब्र में गढ्ढा ज़्यादा हो गया तो हमने टेबल स्टूल भी उस क़ब्र में रख दिया, जिससे कि हम गढ्ढे से बाहर आ-जा सके, सुबह 3 बजे तक हम दोनों ने मिल कर उन क़ब्रों की लगातार खुदाई की, लेकिन किसी भी तरह का हमें कोई कंकाल नहीं मिला, इसलिए मैंने पृथ्वीराज चौहान और चन्द्रबरदाई की खोदी हुई क़ब्रों से सबसे नीचे ज़मीन से मिट्टी निकाली और अपने

https://t.me/Sahityajunction

बैग में डाली। इस समय हमने दोनों क़ब्रों की मिट्टी, एक बड़ा कीमती पत्थर जो पृथ्वीराज चौहान की क़ब्र के पैरों की तरफ़ लगा था, और एक जोड़ी जूती जिसे वे पृथ्वीराज की क़ब्र को बेइज़्ज़त करने के रखते थे, बैग में वहाँ से उठा कर रख लिये थे। इससे ज़्यादा खुदाई हम नहीं कर सकते थे, क्योंकि सुबह के क़रीब 3 बज चुके थे और थोड़ी देर बाद ही गाँव के लोग जाग जाते। हमें इस मज़ार से क़रीब 7-8 कि. मी. पैदल चल कर उस जगह तक भी जाना था, जहाँ से हमें काबुल जाने के लिए टैक्सी पकड़नी थी।

मज़ार से चलने से पहले मैंने अपने बैग में रखा तिरंगा झण्डा जो कि भारत देश का था उस क़ब्र में यह सोच कर गाड़ दिया कि यह हमारी और हमारे देश की जीत की निशानी है। इसके बाद सब बातों को ध्यान में रख कर मैंने डेविड से वापस चलने के लिए कहा और खुदाई का लाया सारा सामान हमने वहीं छोड़ दिया, जिससे हमें फ़ालतू वज़न न उठाना पड़े। थोड़ी दूर तक बैग उठा कर मैं चला, लेकिन फिर डेविड ने मुझे थका जान कर सामान वाला भारी बैग ख़ुद उठा लिया और कैमरे वाला हल्का बैग मुझे दे दिया। इस बार हम वापसी में गाँव के उस रास्ते से न हो कर जिससे हम आये थे, बल्कि खेतों वाले बाहर के रास्तों से गये जिससे कि हम पिछली बार गये थे।

खेतों वाले रास्ते से जाने के कारण हमें चलने में काफ़ी परेशनी हुई, क्योंकि खेतों में बर्फ गिरी हुई थी जो हमारे जूतों में घुस गयी, लेकिन ऊपर वाले ने इस शारीरिक कष्ट के अलावा और कोई परेशानी हमारे सामने नहीं दी। जब हम सुबह पैदल चल कर 5.30 बजे के आस-पास उस होटल के पास पहुँचे तो हमने देखा टैक्सी वाला हमारा इन्तज़ार कर रहा है। हम फटाफट टैक्सी में बैठे और सीधा सुबह 10 बजे के आस-पास हम काबुल अपने होटल में पहुँच गये।

मैंने डेविड और और्थो को सहायता करने के लिए बहुत-बहुत धन्यवाद दिया और और्थो से डेविड की बहादुरी भी बतायी कि कैसे उसने इतनी ख़तरनाक जगह पर मेरे साथ मिल कर काम किया। आज दोपहर दो बजे के क़रीब दुबई के लिए मेरी फ़्लाईट थी और मैं मन-ही-मन बहुत ख़ुश था कि मैं जिस मक़सद से यहाँ आया था, वह सफल हुआ। 12 बजे ही मुझे एयरपोर्ट के लिए निकलना था, इसलिए मैंने फटाफट मुँह-हाथ धोये और बाज़ार जा कर जो हमारे होटल के सामने ही था, 10-10 हज़ार रुपये की दो घड़ियाँ ख़रीदीं और ला कर और्थो और डेविड को तोहफ़े के रूप में भेंट कीं, दोनों बड़े ख़ुश हुए। मैंने उन्हें कन्धार के अफ़ज़ल भाई का फ़ोन नम्बर भी दे दिया ताकि अगर उनको ड्रग्स वाले अपने काम में कोई परेशानी हो तो वे अफ़ज़ल भाई से बात करके दूर कर सकें।

https://t.me/Sahityajunction

45. वापसी

दोपहर 12 बजे के आस-पास मैंने अपना सभी सामान ले कर होटल से चेक आउट किया और टैक्सी से एयरपोर्ट जाने लगा। जब मैं काबुल एयरपोर्ट के उस गेट पर पहुँचा जहाँ तक टैक्सी जाती थी तो मैंने देखा, शम्भू भाई वहाँ खड़े हैं। मुझे देखते ही शम्भू भाई मेरे पास आ कर बोले कि भाई साहब आपने तो अपना काम कर लिया, और वापस भारत जा रहे हैं, लेकिन मुझे तो आपने कुछ दिया ही नहीं। मैंने कहा, भाई साहब, जो आपसे मैंने तय किया था, वह मैंने आपको पहले ही दे दिया है और काम की सफलता में आपका कोई योगदान नहीं है।

वह बोला, भाई साहब यह ठीक है कि कल के आपके काम में मेरा कोई योगदान नहीं है, लेकिन एक हिन्दू होने के नाते क्या आप मेरी थोड़ी आर्थिक सहायता नहीं कर सकते? मैंने यहाँ पर ज़्यादा बहस करना ठीक नहीं समझा, इसलिए शम्भू भाई को 400 अमरीकी डॉलर दिये और उनसे कहा कि अपने हिन्दू होने की बात आप मुझसे मत कीजिए, क्योंकि जिस काम के लिए आप और आपके मिलवाये हुए लोग 1-1 लाख रुपये माँग रहे थे, वही काम एक क्रिस्चियन ने बिना किसी लालच के, मेरे साथ मिल कर फ़्री में कर दिया, जबकि उसका इस काम से कोई लेना-देना नहीं था।

मेरी बात सुन कर वह 400 डॉलर ले कर वहाँ से चला गया और मैं अपने दोनों बैग उठा कर एयरपोर्ट के अन्दर प्रवेश कर गया। गेट में प्रवेश करते ही 3-4 लोग टेबल लगा कर लोगों के सामान की तलाशी ले रहे थे मैंने अपना एक बैग टेबल पर रखा और दूसरा नीचे ज़मीन पर। टेबल पर रखे बैग में वह क़ीमती पत्थर था, जो मैंने पृथ्वीराज चौहान की क़ब्र से उठाया था और दूसरा सभी सामान ज़मीन पर नीचे रखे बैग में था।

टेबल पर रखे बैग में जैसे ही तलाशी करने वाले ने वह पत्थर देखा, उसने मुझसे कहा कि यह तो ऐण्टीक पत्थर है और आप इसे कहाँ से लाये हैं? मैंने कहा कि मैंने इसे ऐण्टीक सामान बेचने वाली दुकान से ख़रीदा है। उसने कहा कि आप ख़रीदारी की रसीद दिखाइये मैंने कहा कि मैंने रसीद तो नहीं ली थी तो वह बोला कि बिना रसीद दिखाये, यह पत्थर बाहर नहीं जा सकता। वह उस पत्थर को उठा कर पास ही बने अपने बड़े अफ़सर के कमरे में ले गया, मैं भी अपने दोनों बैग उठा कर उसके पीछे-पीछे उस अफ़सर के कमरे तक पहुँच गया, इस हड़बड़ाहट में किसी ने भी यह नहीं देखा कि ज़मीन पर रखा मेरा बैग बिना चेक कराये ही मैं उठा कर ले गया। मेरा लाया पत्थर अब जिस अफ़सर के क़ब्ज़े में था, मैंने उससे बात करनी चाही तो पहले उसने बात करने में ही कोई दिलचस्पी नहीं दिखाई, लेकिन ज़्यादा जोर देने पर वह ग़ुस्से में मुझसे बोला कि अगर आप मुझसे बहस करोगे तो मैं आपका पासपोर्ट जब्त करवा दूँगा।

उससे और ज़्यादा बहस करना मैंने ठीक नहीं समझा और अपने दोनों बैग उठा कर यह सोच कर वहाँ से आगे चल दिया कि क़ब्र की वह मिट्टी मेरे लिए ज़्यादा ज़रूरी है मेरे पास मेरे बैग में ही है। इस बार जहाँ मैं पहुँचा तो वहाँ एक्सरे मशीन से सभी के सामान की तलाशी वहाँ हो रही थी, मैंने भी अपने दोनों बैग एक्स रे मशीन में डाले तो लोहे का वह बोर्ड जो मैं हेरात से लाया था, आ गया। उसने मुझे बैग को खोल कर दिखाने के लिए कहा तो मैंने उसे बैग में रखा वह बोर्ड दिखाया, जिसे मैंने इस तरह से मोड़ा हुआ

https://t.me/Sahityajunction

था कि उस पर लिखी बात बिना उसे सीधा किये पढ़ी नहीं जा सकती थी।

बोर्ड को दिखा कर मैंने चिंकग करने वाले से कहा कि मैंने यह बोर्ड ऐण्टीक शॉप से ख़रीदा था और बाहर जिसने मेरी तलाशी ली है, उसे मैंने सभी काग़ज़ दिखा दिये हैं और एक ऐण्टीक पत्थर जिसकी रसीद नहीं थी, वह उन्होंने ही रख लिया है। उसका ध्यान बँटाने के लिए मैं उसके इस बात पर पीछे पड़ गया कि वह मेरा ऐण्टीक पत्थर वहाँ से वापस दिलवा दे। जब पत्थर के लिए उसने मुझे अपने ऊपर हावी होते देखा तो अपना सामान ले कर मुझे आगे जाने के लिए कहा। आगे चल कर फिर तलाशी हुई और मुझसे मिट्टी के बारे में पूछने लगा तो मैंने कहा कि मैं अपनी यादगार के लिए इसे ले जा रहा हूँ। तलाशी पूरी होने के बाद क़रीब आधे घण्टे तक मैं अपने सामान के साथ एक हॉल में बैठा अपनी फ़्लाइट का इन्तज़ार करता रहा।

दिन में दो बजे के आस-पास मैं हवाई जहाज़ में बैठ कर दुबई के लिए रवाना हो गया। जहाज़ में मेरी विण्डो सीट थी और जब जहाज़ से मैंने नीचे देखा तो ऐसा लग रहा था जैसे बादलों के बीच में जहाज़ खड़ा हो और बादल ऐसे लग रहे थे जैसे ताज़ा-ताज़ा बर्फ गिरी हो। अफ़ग़ानिस्तान के ऊँचे-ऊँचे पहाड़ों पर हमारा उड़ता विमान शाम तक दुबई एयरपोर्ट पहुँच गया। दुबई पहुँच कर मेरी इच्छा कुमार भाई से मिलने की हुई, जिन्होंने मुझसे वादा किया हुआ था कि जब मैं अफ़ग़ानिस्तान से वापस दुबई आऊँगा तो वे मुझे 10-15 दिन पूरा दुबई शहर घुमायेंगे। लेकिन मैंने कुमार भाई से मिलना अभी ठीक नहीं समझा, क्योंकि मेरे पास जो अफ़ग़ानिस्तान से लाया सामान था, मैं उसे जल्दी-से-जल्दी ले कर भारत आना चाहता था।

मैंने एयरपोर्ट के एक काउण्टर पर जा कर इंगलिश में उससे इण्डिया जाने वाली उड़ान के टिकटों के बारे में जानकारी माँगी तो वहाँ बैठा आदमी अन्दर से बोला, इंग्लिश बोलने की ज़रूरत नहीं है, हिन्दी में ही बात कर लीजिये, मैं भी भारतीय हूँ। उसने मुझे पूरी जानकारी दी और मैं कोच्चि होते हुए सुबह 6 बजे के आस-पास मुम्बई एयरपोर्ट पर पहुँच गया। मुम्बई इण्टरनेशनल एयरपोर्ट से मैंने जेट एयरवेज़ की कलकत्ता की टिकट ली और वहाँ से डोमेस्टिक एयरपोर्ट पर आ गया।

इस डोमोqस्टक एयरपोर्ट से मैंने कांग्रेस के लोकसभा एम. पी. श्री संजय सिंह से फ़ोन पर बात की, जो उस समय राजपूत सभा के अध्यक्ष भी थे और मेरे अच्छे परिचित भी थे। मैंने उनसे बताया कि मैं पृथ्वीराज चौहान की समाधि अफ़ग़ानिस्तान से खोद कर ले आया हूँ। मेरी बात सुन कर वे बोले कि आपने देश भक्ति का बहुत अच्छा यह काम किया है और आप अपना लाया सभी सामान हमारे पास भिजवा दीजिए। हम उस मिट्टी को, जिसे आप लाये हैं, दिल्ली में सरकार से पृथ्वीराज चौहान की समाधि बनाने के लिए ज़मीन अलॉट करा के स्थापित करेंगे। मैंने कहा ठीक है, मैं सभी सामान आप तक पहुँचा दूँगा।

मुम्बई से मैं कलकत्ता आया और एक होटल में अपना सभी सामान रख कर, मैंने एक परिचित को बुलाया जिसे मैं अफ़ग़ानिस्तान से लाया सभी सामान दे कर बांग्लादेश जाना चाहता था, क्योंकि मैंने कुछ भारतीय न्यूज़ चैनल वालों को भी फ़ोन करके अपने काम के बारे में बता दिया था और वे इस सिलसिले में मेरा इण्टरव्यू लेना चाहते थे, मैं जानता था कि टी.वी. पर अगर मेरा इण्टरव्यू आयेगा तो पुलिस मुझे पकड़ सकती है

https://t.me/Sahityajunction

और मैं अभी पकड़ा नहीं जाना चाहता था, बल्कि कुछ समय बाद मैं ख़ुद ही समर्पण करना चाहता था और यही सब सोच कर मैंने अपने परिचित को सामान लेने के लिए बुलाया था, जिससे कि बाद में मैं वह सामान संजय सिंह जी के पास उसके द्वारा भिजवा सकूँ।

https://t.me/Sahityajunction

46. फिर बांग्लादेश

देश के सबसे मुख्य न्यूज़ चैनल में से एक चैनल ने मुझे यह ऑफ़र दी कि मैं वह सभी सामान उस न्यूज़ चैनल को दे दूँ तो वे मुझे इसके बदले में 25 लाख रुपये दे देंगे और पूरी ख़बर अपने हिसाब से सिर्फ न्यूज़ चैनल पर चलायेंगे, लेकिन मैंने उनकी यह ऑफ़र नहीं मानी और सभी न्यूज़ चैनल वालों को पूरी न्यूज़ दे दी और आज तक, राष्ट्रीय सहारा और इण्डिया टी.वी. को अपना आधे घण्टे का एक-एक इण्टरव्यू भी दे दिया। अफ़ग़ानिस्तान में की गयी पूरी वीडियो रिकॉर्डिंग की सी. डी. भी मैंने सभी न्यूज़ चैनल वालों को दे दी, जिससे कि वे लोग उसे भी अपने चैनल पर दिखा दें। सभी ने सी. डी. और मेरा इण्टरव्यू चला दिया, लेकिन उससे पहले ही मैं बांग्लादेश का वीज़ा ले कर वापस खुलना बांग्लादेश चला गया।

मैं खुलना शहर के अपने उसी फ़्लैट में रहने लगा जिसमें पहले रहता था शाहीन भाई, उनका 5 साल का बच्चा तौफ़ीक़ और उनका पूरा परिवार मेरे वापस आने से ख़ुश था। आयशा से भी मैं अभी नहीं मिला था, लेकिन उसे पता नहीं कहाँ से मेरे वापस आने का पता चल गया और वह मेरे फ़्लैट पर ही आ गयी और मुझसे मिल कर बहुत ख़ुश हुई, लेकिन नाराजग़ी भी दिखाती रही कि मैंने उसे न तो फ़ोन किये और न ही अपने आने की जानकारी दी।

ऐसे ही 10-15 दिन बीत गये, लेकिन इस दौरान मैं रोज़ भारत उस आदमी को फ़ोन कर रहा था, जिसके पास मैं अफ़ग़ानिस्तान से लाया सभी सामान छोड़ कर आया था, ताकि मौक़ा लगते ही यह सभी सामान श्री संजय सिंह जी के पास पहुँचवा सकूँ। एक दिन मैंने जब अपने इस सामान रखने वाले परिचित को फ़ोन किया तो वह बोला कि भाई, जब से आपके इण्टरव्यू टी.वी. के न्यूज़ चैनल पर आये हैं तब से पुलिस आपको दोबारा से बुरी तरह ढूँढने लगी है, क्योंकि पुलिस नहीं चाहती कि आप सरेण्डर करें, वह आपको सरेण्डर से पहले ही पकड़वाना चाहते हैं और मेरे पास भी पुलिस वाले आपके बारे में पूछ-ताछ करने आये थे। पुलिस ने उससे मेरे बारे में जो पूछ-ताछ की थी, उससे वह इतना घबरा गया कि मुझसे मेरा अफ़ग़ानिस्तान से लाया सामान कहीं और रखवाने के लिए बोलने लगा।

इस दौरान मैं समाधि के काम के सिलसिले में कई लोगों से फ़ोन पर बातें कर रहा था, जिनमें एक पूर्व विधायक उपदेश सिंह चौहान भी थे, जो ज़िला मैनपुरी के एक छोटे-से क़स्बे बेबर में रहते थे। मैंने उपदेश सिंह जी से तब तक अफ़ग़ानिस्तान से लाया सामान अपने पास सुरक्षित रखने के लिए बात की जब तक मैं उसे संजय सिंह जी या किसी ऐसे ज़िम्मेदार व्यक्ति के पास न पहुँचवा दूँ जो दिल्ली में इस सारे सामान को रख कर पृथ्वीराज चौहान की एक भव्य समाधि बनवा सके। मेरी बात सुन कर उपदेश सिंह जी ने सारा सामान तब तक अपने पास रखने की ज़िम्मेदारी ले ली, जब तक मैं उसे किसी अन्य को देने के लिए न कह दूँ। मैंने पार्सल से सारा सामान उपदेश सिंह जी के पास भिजवा दिया और जब कई लोगों से मेरी यह बात हो गयी की सब मिल कर एक भव्य समाधि दिल्ली में बनवायेंगे तो मैंने उपदेश सिंह से वह सारा सामान दिल्ली में राजपूत सभा के अध्यक्ष के पास भिजवाने के लिए कहा।

https://t.me/Sahityajunction

सामान दिल्ली भिजवाने की बात सुन कर उपदेश सिंह ने पहले तो 23 दिनों तक मुझसे झूठ बोला कि सामान तो पुलिस ले गयी, लेकिन जब मैंने उनकी बात पर विश्वास नहीं किया तो वे बोले कि हमारे मैनपुरी ज़िले में दो लाख चौहान हैं और सभी ने मिल कर फ़ैसला किया है कि आपके द्वारा लाये सामान से हम यहीं एक भव्य समाधि बनवा देंगे। मैंने जब ऐसा करने से मना किया और बताया कि अगर समाधि दिल्ली में बनेगी तो पूरी दुनिया उनके समाधि के दर्शन कर सकेगी, जबकि जहाँ आप कह रहे हैं, वहाँ बनवायेंगे तो कोई भी नहीं आयेगा।

मेरी बात सुन कर वे बोले कि मैंने तो पूरे इलाक़े में सबको बता दिया है और इसकी तैयारी में ख़ूब पैसा भी ख़र्च कर दिया है, अब अगर मैं पीछे हटा तो मेरी बहुत बेइज़्ज़ती होगी। मैंने कहा मैं जानता हूँ कि आप मेरे द्वारा लाये सामान से इसलिए अपने यहाँ पृथ्वीराज चौहान की समाधि बनवाना चाहते हैं, क्योंकि आपको लगता है कि ऐसा करने से इस इलाक़े के सभी राजपूत चौहान आपके चुनाव में वोट दे देंगे। मेरी इस बात का जवाब न दे कर वह बोले कि हमने माताजी को ही मुख्य अतिथि बनाया है और देश के सभी बड़े लोगों को इसमें निमन्त्रण भिजवाया जायेगा। मैंने कहा कि आपकी किसी भी बात का अब मेरे ऊपर कोई असर नहीं होने वाला है, क्योंकि आपने मुझे धोखा दिया है और मेरी अमानत को धोखे से क़ब्ज़ा लिया है, मैं अपने साथ हुए धोखे का आपसे बदला ले सकता हूँ और अपना सामान भी ज़बरदस्ती आपसे वापस ले सकता हूँ, लेकिन ईश्वर आपको अपनी इस हरकत की सजा ख़ुद देंगे, क्योंकि आप इस सामान के बल पर अपनी नेतागीरी चमकाने की कितनी भी कोशिश कीजिये, एक दिन सब को ज़रूर पता चल जायेगा कि आपने अपनी नेतागीरी चमकाने के लालच में पृथ्वीराज चौहान की समाधि दिल्ली में नहीं बनने दी, जहाँ उन्हें ज़्यादा इज़्ज़त और सम्मान के साथ रखा जा सकता था। उन्होंने मुझ से क्षमा माँगी, लेकिन मैंने फ़ोन रख दिया।

मेरी माताजी मेरे इस काम से बहुत ख़ुश थीं और जब मैंने उनसे फ़ोन पर बात की तो उन्होंने मुझे बताया कि उन्हें उपदेश सिंह ने मुख्य अतिथि के रूप में समाधि स्थापित करवाने के लिए बेवर आमन्त्रित किया है। मैंने माताजी को उपदेश सिंह से हुई बातों के बारे में कुछ नहीं बताया और उन्हें वहाँ जाने के लिए बोल दिया। थोड़े दिन बाद ही बेवर-कानपुर हाइवे पर मेरे द्वारा लाया सामान रख कर क़रीब 5 एकड़ ज़मीन पर एक भव्य समाधि स्थल का उद्घाटन मेरी माताजी ने क़रीब 50 हज़ार से भी ज़्यादा लोगों की भीड़ के सामने किया। लोगों की भीड़ ने शेर सिंह राणा ज़िन्दाबाद के बहुत नारे लगाये, क्योंकि सब जानते थे कि यहाँ रखा सभी सामान मैं ही लाया हूँ। मेरी माता जी को भी बहुत सम्मान वहाँ के लोगों ने दिया।

https://t.me/Sahityajunction

47. बर्मा

पृथ्वीराज चौहान की समाधि का पूरा काम ठीक से निपटने के बाद मैं अपने आगे के जीवन के बारे में सोचने लगा और सरेण्डर करने का विचार करने लगा, लेकिन सरेण्डर करने से पहले मेरे दिमाग़ में एक और भी काम था और वह था म्याँमार की राजधानी रंगून से दिल्ली के हमारे आख़िरी बादशाह बहादुरशाह ज़फ़र की अस्थियों को भी वापस भारत लाना, क्योंकि मेरी नज़र में वे एक महान स्वतन्त्रता सेनानी थे और जब भी मैं उनकी यह लिखी शायरी कहीं पढ़ता था कि उन्हें अपनी भारतीय धरती पर इतनी ज़मीन भी नहीं मिली कि उनकी क़ब्र वहाँ बन सके और इसी अरमान के साथ उनका वहीं रंगून में देहान्त हो गया, तो मैं हमेशा सोचता था कि जब मैं पृथ्वीराज चौहान की समाधि को अफ़ग़ानिस्तान से वापस ले आऊँगा तो उसके बाद रंगून से बहादुरशाह की अस्थियाँ भी ला कर दिल्ली में उनकी उसी जगह पर स्थापित करवाऊँगा जहाँ इस महान स्वतन्त्रता सेनानी की इच्छा थी।

यही सोच कर मैंने म्याँमार बर्मा जाने की सोची और शाहीन भाई को ले कर बांग्लादेश के चिट्टा गाँव पहुँच गया, क्योंकि यह इलाक़ा म्याँमार से लगता था और बॉर्डर के एकदम नज़दीक ही था। मैं और शाहीन भाई चिट्टा गाँव से एक ऐसी जगह पर पहुँचे जहाँ से कोई भी बांग्लादेशी नागरिक एक टेम्परेरी आई कार्ड बनवा कर बोट के द्वारा नदी पार करके म्याँमार जा सकता था। हम दोनों ने अपने आइ कार्ड बनवाये और बोट से शाम तक म्याँमार के एक शहर में पहुँच गये और अपना आई कार्ड दिखा कर वहाँ पर मौजूद इमीग्रेशन ऑफिस में अपनी एण्ट्री करवा दी।

इसके बाद हमने एक होटल में कमरा ले लिया और थोड़ी देर आराम करने के बाद नीचे जा कर बांग्लादेश करेन्सी को म्याँमार करेंसी में बदलवाया जिससे कुछ खा पी सकें। म्याँमार करेंसी का रेट इतना नीचा था कि 5 हज़ार टके की जगह उसने लाखों की म्याँमार करेंसी हमें दे दी, जिसमें 10-10 हज़ार के नोट भी थे। लेकिन वहाँ पर सामान भी ऐसे ही मिलता था और एक बार खाना खाने का बिल ही 20-20 हज़ार आता था।

जब हमें इस बॉर्डर वाली जगह पर 2-3 दिन हो गये तो हमने यहाँ की राजधानी रंगून जाने की जानकारी लोगों से ली तो उन्होंने हमें बताया कि यहाँ से रंगून बाई रोड नहीं जाया जा सकता है, क्योंकि जो यहाँ के नागरिक हैं, उन्हें भी राजधानी जाने के लिए पहले यहाँ अफ़सरों से लिखित आज्ञा लेनी पड़ती है। मैंने कहा अजीब है अपने देश में अपने ही लोगों को अपनी राजधानी में जाने के लिए आज्ञा क्यों लेनी पड़ती है? तो वे बोले कि यहाँ पर आर्मी का शासन है, और आर्मी जैसा ठीक समझती है, उसने वैसे नियम बनाये हुए हैं।

पानी के जहाज़ से हम लोग रंगून के पास एक दूसरे बड़े शहर तक जा सकते थे, लेकिन ऐसे जाने पर हमें एक महीने का पानी का सफ़र तय करना पड़ता। जब किसी भी तरह से हम वहाँ से रंगून नहीं जा सके तो हम वापस चिट्टा गाँव आ गये और वहाँ से ढाका वापस आ गये।

ढाका आ कर मैंने म्याँमार एम्बेसी में वहाँ के वीज़ा के लिए बात की तो उन्होंने

https://t.me/Sahityajunction

बताया आप अप्लाई कीजिये, वीज़ा मिल जायेगा। मैंने ढाका से रंगून के हवाई टिकट का किराया पता किया तो वह काफ़ी महँगा था, क्योंकि एयरलाइन्स वालों का कहना था कि ज़्यादा लोग रंगून नहीं जाते हैं, इसलिए कोई भी एयरलाइन्स अपनी सिवस इस रूट पर नहीं देती है। रंगून जाने की सारी मालूमात करके मैं पैसों का इन्तज़ाम करने के लिए वापस खुलना आ गया।

https://t.me/Sahityajunction

48. समर्पण

मैंने भारत में अपने कई परिचितों से पैसों के लिए कहा, तो कई लोगों ने मेरे लिए हवाला के रास्ते पैसे भिजवा दिये।

इस दौरान मेरे ऊपर उन लोगों का बहुत ही भारी दबाब होने लगा, जो अण्डरवर्ल्ड से सम्बन्धित लोग थे और जो मुझे क्राइम लाइन में बॉस बनवाना चाहते थे। उन्होंने मुझे कई लोगों के फ़ोन नम्बर fदिये और इन फ़ोन नम्बरों पर फ़ोन करके इनसे एक्सटॉर्शन मनी माँगने के लिए कहा। जब मैंने काफ़ी दिन तक किसी को फ़ोन करके नहीं धमकाया तो वे लोग नाराज़ होने लगे और मुझसे बोले कि आपने पहले कहा था कि अफ़ग़ानिस्तान वाला काम मैं पहले करूँगा, उसके बाद आप लोगों के साथ मिल कर अण्डरवर्ल्ड में काम करूँगा, तो मैंने उन्हें कुछ और दिन टरका दिया, लेकिन मेरा दिमाग़ जानता था कि मैं ज़्यादा दिन इन लोगों को नहीं टरका सकता और इनसे छुटकारे की सिर्फ यही तरीक़ा था कि या तो मैं चुपचाप बांग्लादेश से कहीं और चला जाता या फिर भारतीय पुलिस के सामने सरेण्डर कर देता।

मेरी इच्छा म्याँमार से बहादुर शाह ज़फ़र की समाधि को वापस भारत ला कर स्थापित करने के बाद सरेण्डर करने की थी, लेकिन मेरे ऊपर क्राइम लाइन से सम्बन्धित कोई भी काम करने का इतना दबाव होने लगा कि मैंने दिल्ली पुलिस के सामने आत्म-समर्पण का मन बना लिया, क्योंकि किसी भी हालत में मैं पैसों के लिए कोई भी क्राइम नहीं करना चाहता था। आत्म-समर्पण के लिए मैंने देश के अपने एक परिचित बड़े नेता से बात की तो उन्होंने दिल्ली पुलिस के एक बड़े अफ़सर से मेरी बात करवा दी।

अभी आत्म-समर्पण की बातचीत शुरुआती दौर पर ही चल रही थी कि पुलिस के उस अफ़सर को इस बारे में कहीं से पता चल गया जो मुझे बहुत लम्बे समय से पकड़ने के लिए लगा हुआ था। उस पुलिस वाले ने मेरे एक परिचित द्वारा मेरे पास अपने मोबाइल फ़ोन नम्बर पर बांग्लादेश बात की और कहा कि मैंने सुना है कि आप सरेण्डर करना चाहते हैं। मैंने कहा, हाँ। तो वह बोला कि मुझे मेरे डिपार्टमेण्ट ने आपको पकड़ने के लिए लगाया हुआ है और अगर मैं चाहता तो आपको अफ़ग़ानिस्तान जाने से पहले ही पकड़ लेता, लेकिन मैं ख़ुद चाहता था कि आप पृथ्वीराज चौहान की समाधि को वहाँ से वापस लाइए और इसलिए मौक़ा मिलने के बाद भी मैंने आपको नहीं पकड़ा।

उस पुलिस अफ़सर की बात सुन कर मैं हँसा और बोला कि भाई साहब, क्यों मुझे पागल बनाते हैं। मैं आपकी बात पर कैसे यक़ीन करूँ कि आपने मुझे अफ़ग़ानिस्तान जाने के कारण जान-बूझ कर मौका होने के बाद भी नहीं पकड़ा।

मेरी बात सुन कर उस पुलिस अफ़सर ने मुझे 2-3 जगहें बतायीं जहाँ मैं अफ़ग़ानिस्तान जाने से पहले गया था और बोला कि अगर मैं चाहता तो तब आपको पकड़ सकता था। उस पुलिस अफ़सर की बात में मुझे थोड़ा दम लगा। मैंने उससे पूछा कि आप मुझसे क्या चाहते हैं? वह बोला कि जब आपको सरेण्डर करना ही है तो मेरे पास कर दीजिये। मैंने कहा, ठीक है, मैं आपको बाद में विचार करके बताऊँगा। इसके

https://t.me/Sahityajunction

बाद मैंने अपने परिचित पुलिस अफ़सरों से इस अफ़सर के बारे में पता किया तो उन्होंने बताया कि यह ठीक आदमी है और अफ़ग़ानिस्तान से समाधि लाने वाले काम के कारण तुम्हारी इज़्ज़त भी करता है। जानकारी लेने के बाद मैंने मन बना लिया कि मैं इसी के पास समर्पण करूँगा जब करना होगा।

मैंने शाहीन भाई से बताया कि भाई साहब, थोड़े दिन बाद मैं भारत जाऊँगा और फिर काफ़ी साल तक शायद वापस न आ सकूँ और आपसे न मिल सकूँ। उन्होंने कारण पूछा तो मैंने कहा कि कारण तो मैं भी नहीं बता सकता, लेकिन मेरा आपसे यह वादा है कि कभी-न-कभी मैं वापस आ कर आपसे और आपके परिवार से ज़रूर मिलूँगा और मुझसे जितनी भी आपकी सहायता हो सकेगी, मैं ज़रूर करूँगा। इस समय मेरे पास क़रीब तीन लाख रुपये थे, जिनमें से दो लाख रुपये मैंने शाहीन भाई को अपने लिए एक मकान बनाने के लिए दे दिये और वादा किया कि अब जब भी मैं भारत से आ कर आपसे मिलूँगा तो आपको पूरी तरह वेल सेटल करवा दूँगा।

अगले दिन मैंने आयशा को अपने पास बुलाया और उसे बताया कि अब शायद मैं वापस बांग्लादेश नहीं आऊँगा और मैं 2-3 दिन बाद हमेशा के लिए भारत वापस जा रहा हूँ। मेरी बात सुन कर आयशा ने रोना शुरू कर दिया और बहुत देर तक रोती रही। मैंने उसे प्यार से चुप कराया तो उसने पहली बार मुझे अपनी बंगाली भाषा में आपनी (आप) कह कर पुकारा, जबकि वह मुझे हमेशा तुमी (तुम) कह कर पुकारती थी, क्योंकि उसका मानना था कि आपनी शब्द इस्तेमाल करने से परायापन लगता है और तुमी कहने से अपनापन लगता है। मैंने उसे आपनी शब्द के इस्तेमाल का कारण पूछा तो वह फिर रोने लगी और बोली कि मैं जानती हूँ कि आप मुझे इसलिए छोड़ कर जा रहे हैं, क्योंकि मैं मुस्लिम हूँ और आप हिन्दू हैं। अगर आप चाहें तो आपके लिए मैं हिन्दू भी बन सकती हूँ।

उसकी बात सुन कर मैंने आज उसे पहली बार तूमि कह कर पुकारा जबकि इससे पहले मैं हमेशा उसे आपनी कह कर ही पुकारता था। मैंने उससे कहा कि तुम्हारा यह मानना ग़लत है कि तुम्हारे मुस्लिम होने के कारण मैं तुम्हें छोड़ कर जा रहा हूँ। मेरे दिल में हर धर्म के लिए बराबर इज़्ज़त है और अगर भारत में मेरी कुछ मजबूरियाँ न होतीं तो मैं तुम्हें दिखाता कि कैसे एक ही जगह पर मैं पूजा करता और तुम मेरी बग़ल में जीवन भर नमाज़ पढ़तीं, लेकिन कुछ परिस्थितियों के कारण मैं तुम्हारे साथ जीवन भर का रिश्ता नहीं निभा पाऊँगा, जिसके लिए मुझे भी तुम्हारे जितना अफसोस है।

मैंने उससे यह भी वादा लिया कि मेरे भारत जाने के बाद वह अपनी पूरी पढ़ाई ठीक से करके किसी अच्छे लड़के से निकाह कर लेगी। मैंने उसका मूड ठीक करने के लिए कहा कि जब मैं बहुत सालों बाद कभी भारत से बांग्लादेश आऊँ तो 2-3 नन्हे-मुन्ने बच्चे तुम्हारी गोद में होने चाहिएँ। लेकिन मेरी बातों से उसका मूड ठीक होने का नाम ही नहीं ले रहा था। इसके बाद मैंने उसे 2-3 तोहफ़े दिये जो मैं उसके लिए ख़रीद कर लाया था। वह उन तोहफ़ों को नहीं ले रही थी, लेकिन मैंने ज़बरदस्ती अपनी यादगार के तौर पर उन्हें अपने पास रखने के लिए कहा। काफ़ी देर और बहुत-सी बातें करने के बाद मैं उसे उसके घर छोड़ कर आ गया। दो दिन बाद मैंने वापस भारत जाने के लिए मन बना लिया।

https://t.me/Sahityajunction

शाहीन भाई के 5 साल के बच्चे तौफ़ीक़ को भी मैं अगले दिन घुमाने ले गया और उसे भी बहुत सारे तोहफ़े दिलवाये। आयशा की अम्मी का शाम के समय मेरे पास फ़ोन आया और उन्होंने मुझसे पूछा कि क्या आयशा से तुम्हारी लड़ाई हो गयी है? मैंने कहा नहीं आण्टी लड़ाई नहीं हुई, बस मैं अब हमेशा के लिए भारत जा रहा हूँ, क्योंकि यहाँ मेरा काम पूरा हो गया है। वह बोली, बेटे, भारत जा कर क्या करोगे? आयशा तुम्हें बहुत पसन्द करती है और अगर तुम उससे निकाह करके उसके अब्बा का करोड़ों का बिज़नेससँभाल लो तो हमारे पूरे परिवार को बहुत अच्छा लगेगा। मैंने कहा, आण्टी, ऐसा मुमकिन नहीं, क्योंकि मैं अपने देश और परिवार को नहीं छोड़ सकता।

आण्टी ने मुझसे आयशा से फ़ोन पर बात करने के लिए कहा, लेकिन मैंने बात नहीं की, क्योंकि मैं जानता था मेरा फ़ैसला अटल है और मैं आयशा का दिल और नहीं दुखाना चाहता था। इसलिए मैंने फ़ोन काट दिया और फिर स्विच ऑफ़ करके रख दिया। मैंने शाहीन भाई को अगले दिन सुबह ही मुझे बॉर्डर तक छोड़ कर आने के लिए कहा। जब अगले दिन सुबह मैंने अपना थोड़ा-सा सामान उठाया और शाहीन भाई से चलने के लिए कहा, तो उनका बच्चा तौफ़ीक़ भी उनके साथ बाहर आ गया और मेरे हाथ में बैग देख कर बंगाली भाषा में मुझसे बोला कि अंकल आप कहाँ जा रहे हो? मैंने कहा, बेटे, मैं इण्डिया जा रहा हूँ, तो वह हमेशा की तरह बोला कि अंकल आप खो मत जाना और घर का पता याद रखना, जिससे कि आप वापस आ सकें और फिर मुझे अपने घर का पता याद कराने लगा। लेकिन वह यह नहीं जानता था कि अंकल अब कब वापस आयेंगे यह अंकल को ख़ुद भी नहीं पता था। इसके बाद शाहीन भाई मुझे बॉर्डर तक छोड़ने आये और मुझसे गले लग कर आख़िरी दुआ-सलाम करके मुझे विदा किया।

बॉर्डर पार करके मैं सीधा कलकत्ता आया और उसी पुलिस अफ़सर से अपने आप को आ कर पकड़ने के लिए कहा जिसने मुझे पहले जान-बूझ कर पकड़ा नहीं था। 7 बजे शाम को अपनी टीम के साथ आ कर उन्होंने मुझे कलकत्ता से पकड़ा और हवाई जहाज़ में बैठा कर रात को ही दिल्ली ले आये। मैंने अपने आप को इस पुलिस अफ़सर से इसलिए पकड़वाया, क्योंकि मैं इसकी देश भक्ति का इनाम देना चाहता था।

अगले दिन मुझे कोर्ट में पेश किया तो मेरी माता जी 100-200 राजपूत सभा के लोगों के साथ कोर्ट के बाहर ही मिलीं। कोर्ट रूम के अन्दर जज साहब के आदेश ले कर मेरी माताजी मुझसे बातें करने लगीं और गले लगा कर रोने लगीं, जिसके कारण मेरी भी आँखों में आँसू आ गये। मेरी माताजी ने मुझे बताया कि तुम्हारे पिताजी का अन्तिम संस्कार तुम्हारे ताऊजी के लड़के को करना पड़ा था, क्योंकि तुम्हारे दोनों भाइयों को पैरोल नहीं मिल पाई थी और यह बात मैंने तुम्हें पहले इसलिए नहीं बतायी थी, क्योंकि मैं नहीं चाहती थी कि तुम ग़ुस्से या परेशानी में कोई ग़लत कदम उठा कर अपने असली मक़सद से भटको।

इसके बाद पुलिस जब मुझे कोर्ट से बाहर ले जाने लगी तो राजपूत सभा के लोगों ने मेरे पक्ष में ख़ूब नारे लगाये और मुझे आश्वासन दिया कि हम सब मिल कर तुम्हें जेल से एक दिन आज़ाद करायेंगे। थोड़े दिन बाद पुलिस वालों ने जब मुझे जेल भेज दिया तो वहाँ पर मेरी मुलाक़ात अपने भाई और पुराने साथियों से हुई जेल में मुझे वे लोग भी

https://t.me/Sahityajunction

दोबारा मिले जो मेरी अफ़ग़ानिस्तान जाने की बात पर मुझ पर हँसते थे, लेकिन अब वे मेरी कामयाबी को देख कर मुझसे शर्म के कारण नज़र नहीं मिला पा रहे थे। अब मैं जेल में ही हूँ और कहानी पढ़ने वालों से ही मेरा निवेदन है कि वे फ़ैसला करें कि क्या मुझे समाज में रहने का मौक़ा नहीं मिलना चाहिए, क्योंकि मैं समाज में रह कर अपने देश के लिए अच्छे काम करना चाहता हूँ।

https://t.me/Sahityajunction

आभार

अपनी इस किताब को मैं अपने स्वर्गीय पिताजी श्री सुरेन्द्र सिंह राणा जी के श्रद्धांजलि के रूप में अर्पित करता हूँ, जिन्होंने मुझे बचपन से सिर्फ एक ही बात सिखायी थी कि ईश्वर के सिवा किसी से मत डरना और आख़िरी दम तक अपने समाज और देश की तरक़्क़ी के लिए काम करते रहना, क्योंकि मानवता के लिए किये गये काम से ही ईश्वर की सच्ची आराधना होती है।

अपनी माता जी श्रीमती सत्यवती राणा जी को मैं इस किताब के माध्यम से धन्यवाद देता हूँ जिन्होंने इतने कष्ट सहने के बाद भी मेरा मनोबल नहीं गिरने दिया और हमेशा अपने समाज और देश के लिए आख़िरी साँस तक कार्य करने के लिए मुझे प्रेरित किया। अपने दोनों छोटे भाइयों विक्रम सिंह राणा और विजय सिंह राणा को भी मैं उनकी सहायता के लिए धन्यवाद देना चाहता हूँ, क्योंकि उनकी सहायता के बिना अफ़ग़ानिस्तान से आख़िरी हिन्दुस्तानी सम्राट पृथ्वीराज चौहान की समाधि लाना नामुमकिन कार्य था।

मैं अपने उन सभी साथियों का धन्यवाद करता हूँ जिन्होंने सदैव मेरी सहायता की और कई कार्यों को मैं इन्हीं की सहायता के कारण मैं सफलतापूर्वक कर पाया हूँ। उनमें मेरे प्रिय साथी धीरज राणा, शेखर सिंह पवार, राजबीर सिंह गुर्जर, मोहर सिंह, पिण्टू राणा और कुलदीप तोमर का मैं विशेष तौर पर धन्यवाद देता हूँ। बहुत-से आदरणीय लोगों उन सभी का भी मैं हाथ जोड़ कर धन्यवाद देता हूँ जिन्होंने समाज में किसी-न-किसी रूप में मेरी प्रतिष्ठा बढ़ाने की कोशिश की विशेष कर—श्री लिऐंडर पेस, एस.ओ. शिवराम सिंह गौर, एस.ओ. विजय केशरी बुन्देल, ऐडवोकेट स्वराज सिंह और श्री जगजीत सिंह वालिया जी का मैं जीवन में बेहद आभारी हूँ। श्री सिद्धार्थ चन्द्र का भी जिन्होंने मेरे जीवन पर आधारित फ़िल्म बनाने का निश्चय किया।

अन्त में अपनी और अपने भाइयों की ओर से मैं अपने पिताजी से क्षमा माँगता हूँ कि हम तीनों भाइयों में से कोई भी आपका अन्तिम संस्कार नहीं कर पाया, क्योंकि उस समय हम आपके दिखाये हुए उस मार्ग पर फँसे हुए थे जो आप हमें बचपन से दिखाया था कि अपने परिवार से पहले देश और समाज के लिए कार्य करना।

https://t.me/Sahityajunction

जेल डायरी

25 जुलाई, 2001 को फूलन देवी, जो तब तक एक सांसद हो गयी थीं, को उनके निवास से निकलते समय गोली मार कर हत्या कर दी गयी थी। शेर सिंह राणा, धीरज राणा और राजबीर को इस वारदात का मुजरिम बनाया गया। 25 वर्षीय शेर सिंह राणा ने अभिकथित रूप से देहरादून में अपने को स्वयं क़ानून के हवाले कर दिया और यह स्वीकरोक्ति की कि उन्होंने बेहमई में फूलन के हाथों मारे गये 22 क्षत्रियों की हत्या का बदला लिया था। सन 2004 में वह तिहाड़ जेल से भाग निकले और बांग्लादेश होते हुए अफ़ग़ानिस्तान जा पहुँचे जहाँ वह अन्तिम हिन्दू राजा पृथ्वीराज चौहान की समाधी से उनके अवशेष अपने देश लौटा लाने गये थे। सन 2006 में वापस आने पर कोलकाता में वह पकड़े गये और उन्हें दिल्ली स्थित रोहिणी जेल में रखा गया। वह अभी भी वहीं अपने फैसले का इन्तज़ार कर रहे हैं।

जेल डायरी राणा के अपने शब्दों में कही गयी उनकी अपनी कहानी है। इसकी शुरुआत तिहाड़ में फ़रारी के दिन से होती है और फिर राणा के बचपन से होती हुई उनके जीवन की बेहद दिलचस्प और रोमांचक दास्तान बयान करती है।

https://t.me/Sahityajunction

हार्पर हिन्दी

(हार्परकॉलिंस पब्लिशर्स इंडिया)

द्वारा 2012 में प्रकाशित

कॉपीराइट लेखक © शेर सिंह राणा

लेखक इस पुस्तक के मूल रचनाकार होने का नैतिक दावा करता है। इस किताब में व्यक्त किये गये सभी विचार और दृष्टिकोण लेखक के अपने हैं और तथ्य जैसे उन्होंने बयाँ किये हैं, और प्रकाशक किसी भी तौर पर इनके लिये ज़िम्मेदार

नहीं है।

हार्पर हिन्दी हार्पर कॉलिंस पब्लिशर्स इंडिया का हिन्दी सम्भाग है

पता : ए-53, सेक्टर-57, नौएडा—201301, उत्तर प्रदेश, भारत

ISBN: 978-93- 5029-328-7

E-ISBN: 978-93-5136-718-5

टाइपसेटिंग : निओ साफ़्टवेयर कन्सलटैंट्स, इलाहाबाद

मुद्रक : थॉम्सन प्रेस (इंडिया) लि.

यह पुस्तक इस शर्त पर विक्रय की जा रही है कि प्रकाशक की लिखित पूर्वानुमति के बिना इसे व्यावसायिक अथवा अन्य किसी भी रूप में उपयोग नहीं किया जा सकता। इसे पुन:प्रकाशित कर बेचा या किराए पर नहीं दिया जा सकता तथा जिल्दबंध या खुले किसी अन्य रूप में पाठकों के मध्य इसका परिचालन नहीं किया जा सकता। ये सभी शर्तें पुस्तक के खरीदार पर भी लागू होती हैं। इस सन्दर्भ में सभी प्रकाशनाधिकार सुरक्षित हैं। इस पुस्तक का आँशिक रूप में पुन: प्रकाशन या पुन: प्रकाशनार्थ अपने रिकॉर्ड में सुरक्षित रखने, इसे पुन:प्रस्तुत करने के प्रति अपनाने, इसका अनुदित रूप तैयार करने अथवा इलैक्ट्रॉनिक, मैकेनिकल, फोटोकॉपी तथा रिकॉर्डिंग आदि किसी भी पद्धति से इसका उपयोग करने हेतु समस्त प्रकाशनाधिकार रखने वाले अधिकारी तथा पुस्तक के प्रकाशक की पूर्वानुमति लेना अनिवार्य है।

https://t.me/Sahityajunction